. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: I

epal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmand

. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: N

कर्म०

epal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmand

. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding:

२४

कर्म.

वे.

epal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmand

. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: I

epal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmand

. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding:

॥ श्री गणेशाय नमः ॥

श्रीदुर्गापूजनपद्धतिः

वि० कर्मकाण्ड

विविधोपयोगिविषयोपेता

मू० ४।-

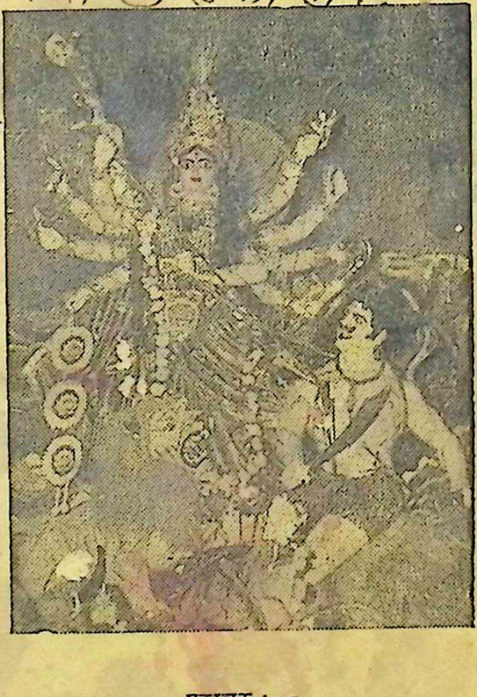

प्रकाशक :—

मोतीलाल केजड़ीवाल

१५९, चित्तरंजन एवेन्यू

कलकत्ता

epal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmanc

. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: I

epal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmand

. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding:

द० नं० ६४४१४
२५६४
वा० व्या० पु०
मू० ४/-

विषय-सूची

पृष्ठ-संख्या

मंगलाचरण	१
शान्तिपाठ	२
संकल्प	३
दीपकपूजन	४
गणेशपूजन	४
कलशपूजन	६
पुण्याहवाचन	१२
नवग्रहपूजन	१६
अधिदेवता	२१
प्रत्यधिदेवता	२२
मातृकापूजा	२४
वसोधारा	२७
रक्षाविधान	२८
गौरीतिलकपूजा	३१
सर्वतोभद्रमंडल	३७
अग्न्युत्तारणविधि	४३
अग्न्युत्तारणमन्त्र	४७
प्राणप्रतिष्ठा	४८
नेत्रोन्मीलन	४८
ध्यान	४६
देवीपूजा	५०
ज्योतिःपूजा	६०
वटुकपूजा	६०
कुमारीपूजा	६१
कलशविसर्जनबिधि	६२

epal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmanc

n Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding

चतुःषष्टि योगिनी	६४
क्षेत्रपाल	७७
आरती	८७
मंत्रपुष्पाञ्जलि	८६
क्षमास्तोत्र	८६
कुण्डंडिका	६१
ध्यान	६३
परिस्तरण	६३
होम	६५
विशेष हवन	६८
बलिदान	१०५
क्षेत्रपालबलि	१०७
पूर्णाहुति	१०८
छायापात्र	१११
मण्डपपरिक्रमा	११२
आशीर्वाद	११३
अवभृथस्नान	११४
त्रिशूलपूजा	११७
श्वेतयवांकुर	११८
आसन शुद्धिः	१२०
भूत शुद्धिः	१२२
स्वप्राणप्रतिष्ठा	१२३
अन्तर्मातृका न्यास	१२५
वहिर्मातृका न्यास	१२६
दुर्गा सप्तशती	
कुण्ड मण्डप गौरी तिलक यन्त्र	

al Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathma

. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding:

क.का. २४

॥卐॥ श्री गणेशाय नमः ॥卐॥

श्रीदुर्गा पूजन पद्धतिः

विविधोपयोगी विषयोपेता

संग्रहीता :—
श्रीमाधोपुर वास्तव्य ज्योतिर्विद पं० नानगराम शर्मणः

दर्ता नं० - ६८८ १४

प्रकाशक :—
मोतीलाल केजड़ीवाल
१५९, चित्तरंजन एवेन्यू,
कलकत्ता

मूल्य सप्रेम पाठ

वैक्रमाब्दः	प्रथम संस्करणम्	ख्रैस्ताब्दः
२०१४	११००	१९५७

epal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmanc

n Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding

294.5574
SHA

समर्पण

श्री जगदम्बाजी !

आपकी अपार अनुकम्पा से प्राप्त असीम सुरभिसमन्वित नाना पुहुपरूप विविध विधान समल्ंकृत 'श्री दुर्गा पूजन पद्धति' नामक यह पुष्पोपहार आप ही के वरदायी अरुणपरागपरिपूरित करकमलों में सादर समर्पण करता हूं।

नम्र निवेदन

इस कराल कलिकाल में पराम्बा भगवती की अराधना ही सम्पूर्ण कामनाओं को देनेवाली है। मेरे बहुत दिनों से यह अभिलाषा थी कि जगद्धात्री श्रीं दुर्गा देवी की अक्षरमालिका द्वारा कुछ सेवा की जाय, परन्तु 'उत्पद्यन्ते विलीयन्ते दरिद्राणाम्मनोरथाः' की तरह मन में ही रही। एक समय दैववश श्रीमाधोपुर निवासी ज्योतिर्विद पण्डित श्री नानगरामजी शर्मा से मिलने का सुअवसर प्राप्त हुआ, उन्होंने मेरी बात का पूर्ण समर्थन किया और शीघ्र ही 'चण्डी हवन विशेष विधान' नाम की पुस्तक कुछेक पृष्ठों में प्रकाशन करवाई। इसे देख विद्वत्समुदाय ने बहुत समादर किया, परन्तु मेरी यही इच्छा रही कि इसका वृहत् पुस्तकाकार रूपमें प्रकाशन हो तो अच्छा हो। यह कार्य कई एक अड़चनों को पार करते हुये भगवती एवं भगवद्भक्तों की कृपा से पूर्ण हुआ। आज यह 'श्री दुर्गा पूजन पद्धति' पाठक महानुभावों की सेवा में उपस्थित की जाती है। इसमें जो कुछ त्रुटियां रह गयी हों उनके लिये मुझे आदेश दें मैं सहर्ष स्वीकार करूंगा। विद्वानों से मेरी प्रार्थना है कि इसे निरन्तर पढ़ें इसी में मेरा परिश्रम सफल होगा।

इस पद्धति के संग्रह करने एवं प्रूफ संशोधन कार्य में पण्डितजी का पूर्ण सहयोग प्राप्त हुआ। अतः वे धन्यवाद के पात्र हैं एवं मैं इनका सदैव आभारी हूं।

कार्तिक शुक्ला
प्रबोधिनी एकादशी
संवत् २०१४

विद्वज्जनकृपाभिलाषी :—
मोतीलाल केजड़ीवाल

pal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathma

. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding:

दर्ता नं ६४०१४

॥ श्री गणेशाय नमः ॥

श्रीमाधोपुर नगरवासिना ज्योतिर्विदा पण्डित श्रीनानगरामशर्मणा सङ्कलितां दुर्गार्चनपद्धतिमवलोक्य कृतार्थतां सर्वेषांसम्भाव्य कत्तु ंरूपकारिता सर्वस्पृहनीयेति परामृशतिः।

श्रीपशुपतिर्ठाकुरः
व्या० न्या० वेदा० आचार्य्यः
दरभङ्गामण्डलान्तर्वर्त्ति बेनीपट्टी पत्रालय
समीपवर्त्ति बरहाग्राम निवासी

श्रीमाधोपुर गोडवंशमणिना ज्योतिर्विदा तत्त्वतो गंगावक्षसुसू नुना द्विजकृते देव्याः सदाप्रीतये। श्रीमन् नानगरामकेण रचिता दुर्गार्चना पद्धति र्भात्वत्रैव सदार्थदा प्रकटिता श्रीमोतीलालार्थ तः ॥१॥ इत्याशीर्यमुनाधरेण विदुषा लाटोपनाम्ना मुदा, दत्ता श्रीपरमेश्वरी सुकृपया सत्यास्तु भूमण्डले। यतत् कर्तृ कुलं सहायककुलं चार्कोयथातिष्ठता देतां कर्मठकानयन्तु सततं यत्कर्मकाण्डेसदा ॥२॥

शुभाशीर्वाददाता
व्याख्यान कलानिधिः पं० यमुनाधरलाटा
नव्यन्याय शास्त्री
रामदुर्ग वास्तव्यः

श्रीमाधोपुरवास्तव्येन होराशास्त्रविदा पण्डित नानगरामशर्म्मणा सङ्कलिता दुर्गापूजनपद्धतिर्मया सम्यगवलोकिता। श्रीदुर्गार्चनेयाज्ञिकानांकृते महादुपकारिणीतिनिश्चपुचं मे ॥

वेदाचार्य याज्ञिकसार्वभौम
चतुर्वेदमार्त्तण्ड पौराणिक रत्न
पण्डित लक्ष्मणदत्त व्याकरण शास्त्री

epal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmand

n Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding

सम्पादक के विनम्र प्रार्थना

श्रीदुर्गा पूजन यज्ञ में शास्त्रमर्यादानुसार अति हित होने पर भी आचार्य वर्ग के द्वारा सर्वत्र सर्वतोभद्रमण्डल पर ही देवी पूजन कराते देख चिरकाल से एक अत्युत्कृष्ट भावना जागृत हो रही थी कि इस अमर्यादित विधान को परिवर्तित कर यथाविधि विविध विधान समलंकृत 'श्रीदुर्गा पूजन पद्धति' प्रकाशित करायी जाय। किन्तु जिस समय श्रीयुत सेठ रामकृष्णजी डालमियां के यहां श्रीलक्षचण्डी यज्ञ में आचार्य श्रीपशुपतिनाथजी झा की अध्यक्षता में याज्ञिक सार्वभौम श्रीलक्ष्मण दत्तजी चतुर्वेदी को सर्वतोभद्रमण्डल पर ही श्रीदेवी पूजन कराते देखा उस समय वह मनोभावना उग्ररूप से जागृत हो उठी।

श्रीदुर्गाजी की असीम कृपासे उसी समय सेठ श्रीयुत मोतीलालजी केजड़ीवाल के हृदय में भी उसी प्रकार के विचार उत्पन्न हुआ और उन्ही विचारों के आधार पर आज यह 'श्रीदुर्गापूजन पद्धति' प्रकाशित होकर आप महानुभावों की सेवा में उपस्थित है।

इस पद्धति के निर्माण कार्य में जिन विद्वानों ने अपना अमूल्य समय प्रदान करने की सहायता की है उनको धन्यवाद प्रदान करना मेरा कर्तव्य है। विशेषकर पं० श्री माणकचन्दजी का नाम उल्लेखनीय है जिन्होंने श्रीगौरी तिलकमण्डल प्रदान कर इस पद्धति को पूर्ण करने में मेरी सहायता की है तथा मथुरा निवासी ज्योतिर्विद पण्डित चन्द्रशेखरजी शास्त्री का नाम विशेष उल्लेखनीय है जिन्होंने इस पद्धति के निर्माणकार्य में मुझे पूर्ण सहयोग प्रदान किया है मैं इनका सदैव आभारी रहूंगा।

श्री नानगराम शर्म्मा ज्योतिर्विद्
श्रीमाधोपुर निवासी

al Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathma

. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding:

प० नं० ६८०९८
वा० क्या० पु०
मू० ४।—
वि० कर्मकाण्डम्
६८०९८

॥ श्री गणेशाय नमः ॥

अथेयमारभ्यते श्री दुर्गापूजा पद्धतिः—

॥※॥ मङ्गलाचरणम् ॥※॥

ज्ञानेन्द्रं बिघ्नहर्तारं ऋद्धिसिद्ध समन्वितम् ।
शिवाय बुद्धि दातारं भजेऽहं गिरिजासुतम् ॥

गणनायक भास्कर चन्द्रकुजाः;
बुधवाक्पति भार्गव मन्दखगाः ।
रविचन्द्र विमर्दन खेटचराः
शुभदाः प्रभवन्तु सदा भवताम् ॥

ॐ अपवित्रः पवित्रो वा सर्वास्थाङ्गतोऽपिवा ।
यः स्मरेत्पुण्डरीकाक्षं स बाह्याभ्यन्तरः शुचिः ॥
आचम्य प्राणानायम्य—

शान्तिपाठः

संङ्कल्पः

epal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmand

n Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding

सम्पादक के विनम्र प्रार्थना

श्रीदुर्गा पूजन यज्ञ में शास्त्रमर्यादानुसार अति हित होने पर भी आचार्य वर्ग के द्वारा सर्वत्र सर्वतोभद्रमण्डल पर ही देवी पूजन कराते देख चिरकाल से एक अत्युत्कृष्ट भावना जागृत हो रही थी कि इस अमर्यादित विधान को परिवर्तित कर यथाविधि विविध विधान समलंकृत 'श्रीदुर्गा पूजन पद्धति' प्रकाशित करायी जाय। किन्तु जिस समय श्रीयुत सेठ रामकृष्णजी डालमियां के यहां श्रीलक्षचण्डी यज्ञ में आचार्य श्रीपशुपतिनाथजी झा की अध्यक्षता में याज्ञिक सार्वभौम श्रीलक्ष्मण दत्तजी चतुर्वेदी को सर्वतोभद्रमण्डल पर ही श्रीदेवी पूजन कराते देखा उस समय वह मनोभावना उग्ररूप से जागृत हो उठी।

श्रीदुर्गाजी की असीम कृपासे उसी समय सेठ श्रीयुत मोतीलालजी केजड़ीवाल के हृदय में भी उसी प्रकार के विचार उत्पन्न हुआ और उन्ही विचारों के आधार पर आज यह 'श्रीदुर्गापूजन पद्धति' प्रकाशित होकर आप महानुभावों की सेवा में उपस्थित है।

इस पद्धति के निर्माण कार्य में जिन विद्वानों ने अपना अमूल्य समय प्रदान करने की सहायता की है उनको धन्यवाद प्रदान करना मेरा कर्तव्य है। विशेषकर पं० श्री माणकचन्दजी का नाम उल्लेखनीय है जिन्होंने श्रीगौरी तिलकमण्डल प्रदान कर इस पद्धति को पूर्ण करने में मेरी सहायता की है तथा मथुरा निवासी ज्योतिर्विद पण्डित चन्द्रशेखरजी शास्त्री का नाम बिशेष उल्लेखनीय है जिन्होंने इस पद्धति के निर्माणकार्य में मुझे पूर्ण सहयोग प्रदान किया है मैं इनका सदैव आभारी रहूंगा।

श्री नानगराम शर्म्मा ज्योतिर्विद्
श्रीमाधोपुर निवासी

al Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathma

. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding:

प० नं० ६८०९८६
वा० क्या० पु०
मू० ४१—
वि० कर्मकाण्डम्
६८०९८

॥ श्री गणेशाय नमः ॥

अथयमारभ्यते श्री दुर्गापूजा पद्धतिः—

॥*॥ मङ्गलाचरणम् ॥*॥

ज्ञानेन्द्रं बिघ्नहर्तारं ऋद्धिसिद्ध समन्वितम् ।
शिवाय बुद्धि दातारं भजेऽहं गिरिजासुतम् ॥

गणनायक भास्कर चन्द्रकुजाः;
बुधवाक्पति भार्गव मन्दखगाः ।
रविचन्द्र विमर्दन खेटचराः
शुभदाः प्रभवन्तु सदा भवताम् ॥

ॐ अपवित्रः पवित्रो वा सर्वास्थाङ्गतोऽपिवा ।
यः स्मरेत्पुण्डरीकाक्षं स बाह्याभ्यन्तरः शुचिः ॥
आचम्य प्राणानायम्य—

शान्तिपाठः

संङ्कल्पः

epal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmanc

n Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding

शान्ति पाठ

ॐ आनोभद्राः क्रतवो यन्तु विश्वतोदब्धासोऽअपरीतासऽउद्भिदः ॥ देवानोयथा सदमिद्वृधेऽअसन्न प्रायुवो रक्षितारो दिवे दिवे ॥१॥ देवानम्भद्रा सुमतिर्ऋजूयतान्देवाना ᳪ रातिरभिनो निवर्तताम् ॥ देवाना ᳪ सख्यमुपसेदिमा व्वयन्देवानऽआयुः प्रतिरन्तु जीवसे ॥२॥ तान् पूर्व्वयानि विदाहूमहेव्वयं भगम्मित्रमदितिन्दक्षयम-स्त्रिधम् ॥ अर्यमणम्वरुण ᳪ सोममश्विना सरस्वतीनः सुभगाम-यस्करत् ॥३॥ तन्नो व्वातो मयो भुवातु भेषजन्माता पृथिवी तत्पिताद्योः ॥ तन्द्रावाणः सोमसुतो मयो भुवस्तदश्विना शृणुत-न्धिष्ण्या युवम् ॥४॥ नमीशानञ्जगतस्तस्थुवष्पतिन्धियञ्जिन्व-मसेहूमहेव्वयम् ॥ पूषानो यथा व्वेद सामसद्वृधे रक्षितापायु रदब्धः स्वस्तये ॥५॥ स्वस्तिनऽइन्द्रो व्वृद्धश्रवाः स्वस्तिनः पूषा व्विश्ववेदाः स्वस्तिनस्तार्क्ष्योऽरिष्टनेमिः स्वस्तिनो बृहस्पतिर्द-धातु ॥६॥ पृषदश्वा मरुतः पृश्निमातरः शुभंय्यावानो व्विदथेषु जग्मयः ॥ अग्नि जिह्वा मानवः सूरचक्षसो व्विश्वेनो देवाऽअवसा गमन्निह ॥७॥ भद्रङ्कर्णेभिः शृणुयामदेवा भद्रम्पश्ये मात्तभिर्य-जत्राः ॥ स्थिरै रङ्गै स्तुष्टुवा ᳪ सस्तनूभिर्व्यशे महिदेवहितं यदायुः ॥८॥ शतमिन्नु शरदोऽन्तिदेवा यत्रा नश्चक्रा जरसन्तनू नाम् ॥ पुत्रासो यत्र पितरो भवन्ति मानो मध्यारीरिषता-युर्गन्तोः ॥९॥ अदितिर्द्यौरदितिरन्तरिक्ष मदितिर्म्माता सपिता सपुत्रः ॥ विश्वेदेवाऽदितिः पञ्चजनाऽदितिर्जातमदितिर्ज्जात-मदितिर्ज्जनित्वम् ॥१०॥ द्यौः शान्ति रन्तरिक्ष ᳪ शान्तिः पृथिवी

al Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathma

. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding:

शान्ति रापः शान्ति रोषधयः शान्तिः॥ वनस्पतयः शान्ति-र्विश्वेदेवाः शान्तिर्ब्रह्म शान्तिः सर्वꣳ शान्तिः शान्तिरेव शान्तिः सामाशान्तिरेधि ॥११॥ यतोयतः समीहसे ततोनोऽभयं-ङ्कुरुशन्नः कुरु प्रजाभ्योऽभयन्नः पशुभ्यः ॥१२॥

(संकल्प)

ॐ विष्णु विष्णु विष्णुः अद्य न मम। श्री परमात्मनः पुराण-पुरुषोत्तमस्य श्री विष्णोराज्ञया प्रवर्तमानस्य श्री ब्रह्मणो द्वितीय-परार्द्धे श्री श्वेतवाराहकल्पे वैवश्वत मन्वन्तरे अष्टाविंशतितमे कलियुगे कलिप्रथम चरणे जम्बूद्वीपे भारतवर्षे भरतखण्डे आर्या-वर्तान्तर्गत ब्रह्मावर्तकदेशे पुण्य क्षेत्रे बौद्धावतारे वर्तमाने यथा नाम संवत्सरे अमुक ऋतौ अमुक मासे अमुक पक्षे अमुक तिथौ अमुक वासरे अमुक नक्षत्रे अमुक योगे अमुक करणे अमुकामुक शरीरस्थ रव्यादि ग्रह स्थित वेलायाममुक गोत्रोत्पन्नामुक शर्म्माऽहं (यजमानस्य) जन्म ग्रहाणां मध्ये वर्ष ग्रहाणां मध्ये गोचर ग्रहाणां मध्ये चतुर्थ अष्टम द्वादश स्थान स्थित सूर्यादि क्रूर ग्रटास्तै सूचितं सूचिष्यमाणं पिशाचोपद्रवादि यत् सर्वा-रिष्टं तत् निवृति पूर्वकं एकादश स्थान स्थित शुभ फल प्राप्त्यर्थं दशा विंशोत्तरी अष्टोत्तरी योगिनी मुग्धादि दशा अन्तर दशा सूक्ष्मान्तर दशा जनितारिष्ट ज्वरदाह पीड़ा नेत्र कर्णोदरादि पीड़ा निवृति पूर्वकं अल्पायु निवृति पूर्वकश्चाधि दैविकाधि भौतिकाध्यात्मिकादिजनित क्लेश कायिक वाचिक मानसिक त्रिविधाघौघ निवृति पूर्वकं शरीरारोग्यं परमेश्वर्यादि प्राप्त्यर्थं

epal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmanc

n Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding

अप्राप्त लक्ष्मी प्राप्त्यर्थं प्राप्त लक्ष्मीं चिरकाल संरक्षणार्थं सकल कत्मना सिद्ध्यर्थं सर्वत्र यशो विजय लाभादि प्राप्त्यर्थं पुत्र पौत्रादि संतते रविच्छिन्न वृद्ध्यर्थं आधिव्याधि त्रिविध तापोप शमनार्थं धमार्थकाममोक्षचतुर्विधपुरुषादि सिद्ध्यर्थं क्षेमायुः सकलैश्वर्यसिद्धि द्वारा अद्य शारदीय नवरात्रे (अथवा चैत्रीय) प्रतिपदि विहितं कलश स्थापनं दुर्गापूजां (चण्डी सप्तशती पाठं) कुमारी पूजाद्युत्सवाख्यं कर्म करिष्ये। तत्रादौ निर्विघ्नता सिद्ध्यर्थं गणपति पूजनं पुण्याह वाचनं चण्डी सप्तशती जपाद्यर्थं ब्राह्मण वरणं च करिष्ये।

दीप पूजन पञ्चोपचार से करें

(प्रार्थना)

भो दीप त्वं ब्रह्म रूप, अन्धकार निवारक ।
इमां मया कृतां पूजा, गृह्णस्तेजः प्रवर्द्धये ॥

॥ अथ श्री गणेश पूजनम् ॥

ॐ सुमुखश्चैकदन्तश्च कपिलो गज कर्णकः ॥
लम्बोदरश्च विकटो विघ्ननाशो विनायकः ॥१॥
धूम्रकेतुर्गणध्यक्षो भाल चन्द्रो गजाननः ॥
द्वादशैतानि नामानि यः पठेच्छृणुयादपि ॥२॥
विद्यारम्भे विवाहे च प्रवेशे निगमे तथा ॥
संग्रामे संकटे चैव विघ्नस्तस्य न जायते ॥३॥
शुक्लाम्बरधरं देवं शशीवर्णं चतुर्भुजम् ॥
प्रसन्नवदनं ध्यायेत्सर्व विघ्नोपशान्तये ॥४॥

pal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathma

. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding:

अभीप्सितार्थ सिद्ध्यर्थं पूजितो यः सुरासुरैः ॥
सर्वविघ्नहरस्तस्मै गणाधिपतये नमः ॥५॥
सर्व मंगल मांगल्यै शिवे सर्वार्थ साधिके ॥
शरण्ये त्र्यम्बके गौरी नारायणि नमोऽस्तुते ॥६॥
सर्वदा सर्व कार्येषु नास्ति तेषा ममंङ्गलम् ॥
येषां हृदिस्थो भगवान् मङ्गलायतनो हरिः ॥७॥
लाभस्तेषां जयस्तेषाँ कुतस्तेषां पराजयः ॥
येषा मिन्दीवर श्यामो हृदयस्थो जनार्दनः ॥८॥
विनायकं गुरूं भानुं ब्रह्म-विष्णु-महेश्वरान् ॥
सरस्वतीं प्रण्यादौ सर्वकार्यार्थ सिद्धये ॥९॥
सर्वेष्वारम्भकार्येषु त्रयस्त्रिभुवनेश्वराः ॥
देवा दिशन्तु नः सिद्धिं ब्रह्मेशान जनार्दनः ॥१०॥
वक्रतुण्ड महाकाय सूर्यकोटि समप्रभः ॥
निर्विघ्नं कुरु मे देव सर्वकार्येषु सर्वदा ॥११॥

हस्ते पुष्पाण्यादाय—ध्यानम्

श्वेताङ्गं श्वेतवस्त्रं सितकुसुमगणैः पूजितं श्वेतगन्धैः,
क्षीराब्धौ रत्नदीपैः सुरतरुविमले रत्नसिंहासनस्थम् ॥
दोर्भिपाशाङ्कुशेष्टा भयधृतिशिवदं चन्द्रमौलिस्त्रिनेत्रम्,
ध्यायेच्छान्त्यर्थमीशं गणपतिममलं श्रीसमेतं प्रसन्नम् ॥१२॥
हे हेरम्ब ! त्वमेत्येहि अम्बिकात्र्यम्बकात्मज !॥
सिद्धि-बुद्धिप्रद त्र्यक्ष लक्ष लाभ पितुः पितः ॥१३॥

epal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmanc

n Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding

नागस्य नागहारत्वं गणराज चतुर्भुजः ॥
भूषितस्त्वायुधै दिव्यैः पाशाङ्कुश परश्वधैः ॥१४॥
आवाहयामि पूजार्थं रक्षार्थंच मम क्रतौ ॥
इहागत्य गृहाणत्वं पूजां क्रतुञ्च रक्ष मे ॥१५॥

ॐ गणानां त्वा गणपतिꣳ हवामहे प्रियाणान्त्वा प्रियपतिꣳ हवामहे निधिनांत्वा निधिपतिꣳहवामहे वसो मम। आहमजानि गर्भधमात्मजासि गर्भधम् ॥ ॐ भूर्भुवः स्वः सिद्धि बुद्धि सहित महागणपतये नमः गणपति मावाहयामि पूजयामि ॥ इत्यावाहयेत् ॥

ॐ पुरुषऽएवेदꣳ सर्व्वं यद्भूतं यच्चभाव्यम्। उतामृतत्स्येशानो यदन्नेनाति रोहति ॥ ॐ भूः० सिद्धि० महागणपतये नमः आसनं समर्पयामि इत्यासनं दद्यात् ॥

ॐ एतावानस्य महिमातो ज्ज्यायांऽश्चपूरुषः। पादोस्य विश्वाभूतानि त्रिपादस्या मृतंदिवि ॥ ॐ भूः० सिद्धि० महा० पद्योपाद्यं स०। इति पाद्यम् ॥

ॐ त्रिपादूर्ध्वऽउदैत्पुरुषः पादोस्येहा भवत्पुनः। ततो विष्वंङ् व्यक्रामत्साशनानशने अभि। ॐ भूः० महा० अर्घ्यं समर्पयामि। इत्यर्घ्यम् ॥

ॐ ततो व्विराडजायत व्विराजो अधिपूरुषः। स जातो अत्यरिच्यत पश्चाद्भूमिमथोपुरः ॥ ॐ भूः०सि०महा० नमः आ०स० ॥

ॐ तस्माद्यज्ञात् सर्वहुतः सम्भृतं पृषदाज्यम्। पशूँस्ताँचक्रे व्वायव्यानरण्या ग्राम्याश्चये ॥ भूः०सि० महा० स्नानं स० ॥

al Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathma

. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding:

ॐ पञ्चनद्यः सरस्वती मपियन्तिसस्रोतसः । सरस्वती तु पञ्चधा सोदेशेऽभवत्सरित् ॥ भूः० सि० महा० पं० स्नानं स० ॥

पुनः शुद्धोदक स्नानम् ॥

ॐ युवा सुवासाः परिवीतऽआगात्सऽउश्रेयान्भवति जायमानः ॥ तं धीरासः कवयऽउन्नयन्ति स्वाध्यो मनसा देव यजन्तः ॥

ॐ भूः० सि० महा० वस्त्रं स० ॥ इति रक्त वस्त्रम् ॥ ततः आचमनम् ॥

ॐ यज्ञोपवीतं परमं पवित्रं प्रजापते र्यत्सहजम्पुरस्तात् ॥ आयुष्य मग्रयं प्रतिमुञ्चशुभ्रं यज्ञोपवीतं वलमस्तुतेज ॥ भू० सि० महा० यज्ञोपवीतं स० । तत आचमनम् ॥

ॐ गंधद्वारां दुराधर्षां नित्य पुष्टां करीषिणीम् । ईश्वरीं सर्व भूतानां तामिहोपह्वये श्रियम् ॥ ॐ० भू० सि० महा० गंधं स० (इति कुंकुमम्)

ॐ अक्षन्नमीमदन्तत्यवप्रिया अधूषतः । अस्तोषत स्वभानवो व्विप्रानविष्टयामतीयो जान्विन्द्रते हरिः ॥ भू० सि० महा० अक्षतान स० ॥

ॐ श्रीश्चते लक्ष्मीश्चपत्न्या बहोरात्रे पार्श्वे नक्षत्राणि रूष मश्विनौव्यातम् ॥ इष्णन्निषाणा मुम्मइषाण सर्वलोकम्म-इषाण ॥ ॐ भू० सि० महा० पु० पुष्पमालां च ॥

ॐ काण्डात्काण्डात्प्ररोहन्ति परुषः परुषस्परि ॥ एवानोदूर्वेप्रतनु सहस्रेण शतेन च ॥ भू० सि० महा० दुर्वाङ्कुरान् स० ॥

epal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmanc

n Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding

ॐ धूरसि धूर्व्व धूर्वतधूर्वतं योस्मान् धूर्वति तं धूर्वयं वयं धूर्वामः। देवानामसि वह्नितमꣳसस्नितमं प्रप्पितमं जुष्ठतमं देवहुतमम्॥ भू० सि० सि० महा० धू० मा०॥

ॐ अग्निर्ज्योति ज्योतिरग्निः स्वाहाः सूर्यो ज्योतिर्ज्योतिः सूर्यः स्वाहाः। अग्निर्वचो ज्योतिर्वचः स्वाहा सूर्योवर्चो ज्योतिर्वर्चः स्वाहाः॥ ज्योतिः सूर्यः सूर्यो ज्योतिः स्वाहाः॥ भू० सि० महा दीपं दर्शयामि। दीपान्ते हस्तप्रचालनम्।

ॐ नाभ्याऽआसिदन्तरिक्षꣳ शीर्ष्णोद्यौः समवर्त्तत। पद्भ्याम्भू-मिर्दिशः श्रोत्रा तथा लोकां२अकल्पयन्। भूः० सि० महा० नैवेद्यं स०॥ तत आचमनम्

ॐ याः फलिनीर्या अफला अपुष्पा याश्च पुष्पिणीः। बृहस्पति प्रसूतास्तानो मुञ्चत्वꣳ हसः॥ भूः० सि० महा० पूङ्गीफलंस०

ॐ हिरण्य गर्भः समवर्ततताग्रे भूतस्य जातः पतिरेक आसीत्। सदाधार पृथिवीं द्यामुते मां कस्मै देवाय हविषा विधेम्। भूः० सि० महा० द० स०॥

अथ विशेषार्घ्यम्—रक्ष रक्ष गणाध्यक्ष रक्ष त्रैलोक्य रक्षकः। भक्तानामभयकर्ता त्राताभव भवार्णवात्॥ भूः० सि० महा० वि० स०॥

द्वैमातुर कृपासिन्धो षण्मातुराग्रज प्रभो॥ वरद त्वं वरं देहि वाञ्छितं वांछितार्थद॥

गृहाणार्घ्यमिदं देव सर्वलोक नमस्कृत। अनेन सफलार्घ्येण फलदोस्तु सदा मम॥ भूः० सि० महा० विशेषार्घ्य स०।

pal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathma

. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding:

अथ प्रार्थना—विघ्नेश्वराय वरदाय सुरप्रियाय
लम्बोदराय सकलाय जगद्धिताय।
नागाननाय शितिकण्ठ विभूषिताय
गौरी सुताय गणनाथ नमो नमस्ते ॥१॥
भक्तार्ति–नाशन--पराय गणेश्वराय
सर्वेश्वराय शुभदाय सुरेश्वराय ॥
विद्याधराय विकटाय च वामनाय
भक्तप्रसन्न वरदाय नमो नमस्ते ॥२॥
त्वां विघ्न शत्रु दलनेति च सुन्दरेति
भक्तप्रियेति सुखदेति वरप्रदेति ॥
विद्याप्रदेत्यघहरेति च ये स्तुवन्ति
तेभ्यो गणेश वरदोभव नित्यमेव ॥३॥
कृतेनानेन पूजनेन ऋद्धिसिद्धि सहितः साङ्गः सपरिवारः श्री मन्महा गणपतिः प्रीयताम् न मम।

* अथ कलश पूजनम् *

भूमिं प्रार्थयेत्—ॐ भूरसि भूमिरसि दितिरसि विश्वधाया विश्वस्य भुवनस्य धर्त्री। पृथिवीं यच्छ पृथिवीं दृꣳह पृथिवीं माहिꣳसीः॥ धान्यमसिधिनुहि देवान्प्राणाय त्वोदानायत्वा व्यानायत्वा। दीर्घामनु प्रसिति-मायुषे धां देवो वः सविता हिरण्यपाणिः प्रतिगृभ्णात्वच्छिद्रेण पाणिना चक्षुषे त्वा महीनाम्पयोऽसि॥ इति मन्त्रेण धान्यं प्रक्षिप्य तत्रैव यवान्वाप्य

epal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmanc

n Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding

(तदुक्तं रुद्रयामले) शुद्धाभि मृत्तिकाभिश्च पूर्वं कृत्वा तु वेदिकाम् । यवान्वापये त्तत्रैव गोधूमैश्च समन्वितान् ॥ तदुपरि आजिघ्रकलशं मह्या त्वा विशन्त्विन्दवः पुनरूर्जा निवर्तस्वसानः सहस्रं धुक्ष्वोरुधारा पयस्वती पुनर्म्मा विशताद्रयिः । इति मन्त्रेषु स्ववर्णादिनिर्मितं कलशं स्थापयेत् । ततस्तस्मिन्—वरुणस्योत्तम्भनमसि वरुणस्य स्कम्भ सर्जनीस्थो वरुणस्य ऋतसदनमसि वरुणस्य ऋतसदनमासीद ॥

इति मन्त्रेण पटपूतं पवित्रं जलमापूर्य कलशे—

ॐ वसोः पवित्रमसि शतधारं वसोः पवित्रमसि सहस्रधारम् । देवस्त्वा सविता पुनातु वसोः पवित्रेण शतधारेण सुप्वा कामधुक्षः ॥ इति मन्त्रेण वस्त्रं वेष्टयित्वा कलशे—

ॐ याꣳफलिनीर्या अफला अपुष्पायाश्च पुष्पिणीः । बृहस्पति प्रसूतास्तानो मुञ्चस्त्वꣳहसः ॥ इतिमन्त्रेण पूगीफलं प्रक्षिप्य तत्र—

ॐ परिवाजपतिः कविरग्निर्हव्यान्यक्रमीत् । दधद्रत्नानि दाशुषे ॥ इति मन्त्रेण वज्रं मौक्तिक वैडूर्य पुष्परागेन्द्रनील पञ्च रत्नानि क्षिपेत् । हिरण्यगर्भः समवर्तताग्रे भूतस्य जातः पतिरेक आसीत् ॥ सदाधार पृथिवीं द्यामुतेमाङ्कस्मैदेवाय हविषा विधेम ॥ सुवर्णं क्षिपेत् ॥

ॐ गंधद्वारां दुराधर्षां नित्यपुष्टां करीषिणीम् । ईश्वरीं सर्व भूतानां तामिहोपह्वये श्रियम् ॥ इति मन्त्रेण गंधम् ।

ॐ या ओषधीः पूर्वा जाता देवेभ्य स्त्रियुगंपुरा । मनैनु बभ्रुणा महꣳशतं धामानि सप्त च ॥ इति मन्त्रेण कुष्ठमासी हरिद्राद्य

al Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathma

. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding:

मुराशैलेय चन्दन वचा चंपक मुन्तदश सर्वौषधि क्षिपेत् ॥
ॐ स्योना पृथिवी नो भवानृक्षरानिवेशनी पच्छानः शर्म्मा सप्रथाः इति मन्त्रेण सप्तमृत्तिका निक्षिपेत् ॥
ॐ काण्डात्काण्डात्प्ररोहन्ती परुषः परुषस्परि । एवानो दूर्वे प्रतनु सहस्रेण शतेन च ॥ इति मन्त्रेण दूर्वा प्रक्षिप्य ।
ॐ अश्वत्थेवो निषदनं पर्णेवो वसतिष्कृता गोभाज इत्किला सथ यत्सनवथ पूरुषम् ॥ इति मन्त्रेण पंच पल्वानि प्रक्षिप्य ।
ॐ पवित्रेस्थो वैष्णव्यौ सवितुर्वः प्रसव उत्पुनाम्यच्छिद्रेण पवित्रेण सूर्यस्य रश्मिभिः । तस्य ते पवित्र पतेपवित्र पूतस्य यत्कामः पुने तच्छकेयम् ॥ इति मन्त्रेण पवित्र क्षिपेत् ।
ततः कलशोपरि, पूर्णादर्वि परापत सुपूर्णा पुनरायत वस्नेव विक्रीणा वहां इषमूर्जᳬ शतक्रतो ॥ इति मन्त्रेण पूर्णपात्रं संस्थाप्य । तत्र ॥ श्रीश्चते लक्ष्मीश्चपत्न्या वहोरात्रे पार्श्वे नक्षत्राणि रूपमश्विनौ व्यात्तम् । इष्णन्निषाणा मुम्मऽइषाण सर्वलोकम्मऽइषाण ॥ इति मन्त्रेण श्रीफलं विन्यस्य ततः ओं मनो जूतिर्जुषतामाज्यस्य वृहस्पतिर्यज्ञमिमं तनो त्वरिष्टं यज्ञᳬ समिमं धतातु विश्वेदेवासइहमादयन्ता मोꣳम्प्रतिष्ठ ॥ इति मन्त्रेण प्रतिष्ठां कुर्यात् । ततः कलशे वरुणमावाहयेत् ॥
ॐ तत्वा यामि ब्रह्मणा बन्दमानस्तदा शास्ते यजमानो हविर्भिः । अहेऽमानो वरूणेह बोध्युरुशᳬ समान आयुः प्रमोषीः ॥
ॐ भूर्भुवः स्व वरुण इह आगच्छ इहतिष्ठ । इत्यावाहनादि-षोडशोपचारैः पूजयेत् ॥ तत्र—

epal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmand

n Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding

सर्वे समुद्राः सरितस्तीर्थानि जलदा नदाः ।
आयान्तु यजमानस्य दुरितक्षयकारकाः ॥
कलशस्य मुखे विष्णुः कण्ठे रुद्रः समाश्रितः ।
मूले तस्य स्थितो ब्रह्मा मध्ये मातृगणाः स्मृताः ॥
कुक्षौतु सागराः सर्वे सप्तद्वीपा वसुन्धरा ।
ऋग्वेदोऽथ यजुर्वेदः सामवेदोत्यथर्वणः ॥
अङ्गैश्च सहिताः सर्वे कलशं तु समाश्रिताः ।
अत्र गायत्री सावित्री शान्तिः पुष्टिकरी तथा ॥
देवदानवसंवादे मथ्यमाने महोदधौ ॥
उत्पन्नोऽसि वेदा कुम्भः विधृतो विष्णुना स्वयम् ॥
त्वत्तोये :सर्वतीर्थानि देवाः सर्वे त्वयि स्थिताः ।
त्वयि तिष्ठन्ति भूतानि त्वयि प्राणाः प्रतिष्ठिताः ॥
शिव स्वयं त्वमेवासि विष्णुस्त्वं च प्रजापतिः ।
आदित्या वसवो रुद्रा विश्वेदेवाः सपैतृकाः ॥
त्वयि तिष्ठन्ति सर्वेपि यतः काम फलप्रदाः ।
त्वत्प्रसादादिमां पूजां कर्तुमीहे जलोद्भवः ॥
सान्निध्यं कुरु मे देव प्रसन्नो भव सर्वदा ॥

॥ इति कलश पजनम् ॥

॥ अथ पुण्याह वाचनम् ॥

संपूज्यगंधमाल्याद्यैर्ब्राह्मणान्स्वस्तिवाचयेत् ॥ धर्म्मकर्मणिमांगल्ये संग्रामेऽद्भुतदर्शने ॥१॥ पुण्याहवाचनं दैवं ब्राह्मणस्य विधी-

al Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathma

. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding:

यते ॥ एतदेवनिरोंकारं कुर्य्यात्क्षत्रियवैश्ययोः ॥२॥ अवनिकृत जानु मंडलः कमल मुकुल सदृश मंजलिं शिरस्याधाय दक्षिणेन-पाणिना सुवर्णपूर्णकलशं धारयित्वा दीर्घाना गानद्योगिरय स्त्रीणि विष्णुपदानि च तेनायुः प्रमाणेनपुण्याहंदीर्घमायुरस्तु ॥ अपां मध्येस्थितादेवाः सर्वमप्सुप्रतिष्ठितम् ॥ ब्राह्मणानांकरेन्यस्ताः शिवाआपोभवंतुताः ॥१॥ शिवाआपः संतु ॥ लक्ष्मीर्वसति पुष्पेषु लक्ष्मीर्वसतिपुष्करे ॥ सामे वसतुवै नित्यं सौमनस्यं तथास्तुनः ॥१॥ सौमनस्यमस्तु ॥ अक्षतंचास्तुमेपुण्यं दीर्घमायुर्य-शोबलम् ॥ यद्यच्छ्रेयस्करं लोकेतत्तदस्तुसदामम ॥१॥ अक्षतं चारिष्टं चास्तु ॥ ब्राह्मणानांहस्तेगंधादिदत्त्वा ॥ गंधः प्रदेयो-देवानामपत्यपुष्टिदश्चनः ॥ गंध द्वारांदुराधर्षामितिमं त्रेणभक्तितः ॥१॥ गंधः पांतुसौमंगल्लंचास्तु ॥ पुष्पाणिपान्तुसौ श्रेयसमस्तु ॥ अक्षताः पांतु आयुष्यमस्तु ॥ तांबूलानि पांतु ऐश्वर्यमस्तु ॥ दक्षिणाः पांतुआरोग्यमस्तु दीर्घमायुः श्रेयः शान्तिः पुष्टिस्तु-ष्टिश्चास्तु ॥ श्रीर्यशोविद्याविनयोवित्तंबहु पुत्रंचारोग्यंचायुष्यं-चास्तु ॥ यंकृत्वासर्ववेद यज्ञक्रियाकरणकर्म्मारंभाः शुभाः शोभनाः प्रवर्तंते तमहमोंकारमादिकृत्वाऋग्यजुः सामाथर्वाशीर्वचनं बहृषि-संमत मनुज्ञातंभवद्भिरनुज्ञातः पुण्यंपुण्याहंवाचयिष्ये ॥ वाच्यताम् ॥ ऋक् ॥ द्रविणोदाद्र विणस्तुरस्य द्रपुिणोदाः सनरस्य प्रियं सत् ॥ द्रविणोदावीरवतीमिषन्नोद्रविणोदारासतेदीर्घमायुः ॥१॥ यजुः ॥ द्रविणोदाः पिपीषतिजुहोतप्रचतिष्ठत ॥ नेष्टादृतुभि-रिष्यत ॥२॥ ऋक् ॥ सवितापश्चात्तात्सविता पुरस्तात्सवितो-

epal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmanc

n Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding

त्तरात्तात्स विताधरात्तात् ॥ सविता नः सुवतु सर्वतातिं सविता नो रासतां दीर्घमायुः ॥१॥ यजुः ॥ सविता त्वा प्रसवानाꣳसुवतामग्निर्गृहपतीनाꣳसोमो वनस्पतीनाम् ॥ बृहस्पतिर्वाच ऽइन्द्रो ज्यैष्ठ्याय रुद्रः पशुभ्यो मित्रः सत्यो वरुणो धर्मपतीनाम् ॥२॥ ऋक् ॥ ॐ नवो नवो भवति जायमानोऽह्नां केतुरुषसामेत्यग्रम् ॥ भागं देवेभ्यो विदधात्यायन् प्रचंद्रमास्तिरते दीर्घमायुः ॥१॥ युजः ॥ ँनतद्रक्षाꣳसिनपि शाचास्तरंतिदेवानामोजः प्रथमजꣳ ह्येतत् ॥ योबिभर्तिदाक्षायणꣳ-हिरण्यꣳ सदेवेषुकृणुतेदीर्घमायुः स मनुष्येषुकृणुतेदीर्घमायुः ॥२॥ ऋक् ॥ ॐ उच्चादि विदक्षिणावन्तो अस्थुर्येअश्वदाः सहतेसूर्येण ॥ हिरण्यदाऽअमृतत्वंभजन्ते वासोदाः सोमप्रतिरन्तऽमायुः ॥१॥ यजुः उच्चातेजातमन्धसो दिविसद्भूम्याददे ॥ उग्रꣳशर्म्ममहिश्रवः ॥ इत्येताऋचꣳपुण्याहे- ब्रूयात् ॥ व्रत नियम तपःस्वाध्याय क्रतु दया दम दान विष्टानां सर्वेषां ब्राह्मणानांमनः समाधीयतम् ॥ समाहितमनसः । स्मः प्रसीदन्तु भवन्तः प्रसन्नताः स्मः ॥ अथपूर्वस्थापितकलशात्ताम्रपात्रे जलमादाय यजमान मूर्धनि दूर्वयासेचनंकुयात् ॥ शान्तिरस्तु पुष्टिरस्तुतुष्टिरस्तुंवृद्धिरस्तुऋद्धिरस्तु अविघ्नमस्तु आयुष्यमस्तु आरोग्यमस्तु शिवमस्तु शिवंकर्म्मास्तु कर्म्म समृद्धिरस्तु धर्मसमृद्धिरस्तु वेदसमृद्धिरस्तु शास्त्रसमृद्धिरस्तु पुत्रपौत्र समृद्धिरस्तु धनधान्य समृद्धिरस्तुइष्ट संपदस्तु अनिष्ट निरसनमस्तु भूमौ ॥ यत्पापंरोगमशुभमकल्याणंतद्दूरेप्रतिहतमस्तु ॥ पात्रे ॥ यच्छ्रेयस्तत्तदस्तु उत्तरेकर्मणानिर्विघ्नमस्तु उत्तरोत्तरमहरहरभिवृद्धि-

pal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathma

. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding:

रस्तु उत्तरोत्तराः क्रियाः शुभाः शोभनाः संपद्यन्तां तिथि करण मुहूर्त्त नक्षत्र ग्रहलग्नसंपदस्तु तिथि करण मुहूर्त्त नक्षत्र ग्रह लग्नाधिदेवताः प्रीयंताम् ॥ तिथि करणेसमुहूर्त्ते सनक्षत्रे सग्रहे-सलग्ने सदैवते प्रीयेतां दुर्गापांचाल्यौ प्रीयेताम् ॥ अग्निपुरोगा-विश्वेदेवाः प्रीयंताम् इन्द्रपुरोगामरुद्गणाः प्रीयंताम् वशिष्ठपुरोगा-ऋषिगणाः प्रीयन्ताम् माहेश्वरीपुरोगा उमामातरः प्रीयंताम् अरु-न्धतीपुरोगा एकपत्न्यः प्रीयंताम् विष्णुपुरोगाः सर्वेदेवाः प्रीयंताम् ब्रह्मपुरोगाः सर्वेवेदाः प्रीयंताम् आदित्यपुरोगाः सर्वे-ग्रहाः प्रीयंताम् ब्रह्मचब्राह्मणाश्च प्रीयंताम् अम्बिकासरस्वत्यौ प्रीयेताम् श्रद्धामेधे प्रीयेताम् भगवती कात्यायनी प्रीयताम् भगवती माहेश्वरी प्रीयताम् भगवती ऋद्धिकरी प्रीयताम् भगवती वृद्धिकरी प्रीयताम् भगवती सिद्धिकरी प्रीयताम् भग-वती पुष्टिकरी प्रीयताम् भगवती तुष्टिकरी प्रीयताम् भगवतौ विघ्नविनायकौ प्रीयेताम् सर्वाः कुलदेवताः प्रयंताम् सर्वाग्राम देवताः प्रयंताम् सर्वाइष्टदेवताः प्रीयंताम् ॥ भूमौ ॥ हताश्च ब्रह्मद्विषः हताश्चपरिपंथिनः ॥ हताश्चविघ्नकर्तारः शत्रवः परा-भवंयान्तु शाम्यन्तु घोराणिशाम्यन्तु पापानि शाम्यन्त्वीतयः पात्रे शुभानिवर्धतान्शिवाआपः सन्तु शिवाऋतवः सन्तु शिवा अग्नयः सन्तु शिवा आहुतयः सन्तु शिवा ओषधयः सन्तु शिवावनस्पतयः सन्तु शिवा अतिथयः सन्तु अहोरात्रे शिवे-स्याताम् ॥ ऋक् ॥ ॐ शन्नः कनिक्रदद्देवः पर्जन्योअभिवतुर्ष ॥ शन्नोद्यात्रा पृथिवीशंप्रजाश्यः शन्नएधि द्विपदे शं चतुष्पदे ॥१॥

epal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmand

n Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding

यजः शाखिनांमन्त्रः ॥ ॐ निकामेनिकामेनः पर्जन्योवर्षतु फलवत्योनऽओषधयः पच्यंतां योगक्षेमोनः कल्पताम् ॥२॥ पूर्णपात्रे जलं क्षिपेत् ॥ शुक्रांगारक बुधबृहस्पतिशनैश्चरराहुकेतुसोम सहिता आदित्य पुरोगाः सर्वेग्रहाः प्रीयंताम् भगवान्नारायणः प्रीयताम्भगवान्स्वामी महासेनः प्रीयताम् पुरोनुवाक्ययायत्पुण्यं तदस्तु याज्ययायत्पुण्यं तदस्तवषट्कारेणयत्पुण्यं तदस्तु प्रातः सूर्योदये यत्पुण्यंतदस्तु एतत्कल्याण युक्तं पुण्यमस्तु पुण्याहकालान्वाचयिष्यो वाच्यताम् ॥ ब्राह्मपुण्यमहर्यच्चसृष्टयु त्पादन कारकम् ॥ वेदवृक्षोद्भवंनित्यंतत्पुण्याहं ब्रुवन्तुनः ॥१॥ भोब्राह्मणाः मम सकुटुम्बस्य सपरिवारस्य गृहेपुण्याहं भवंता ब्रुवंतु ॥३॥ ॐ पुण्याहम् ३ ऋक् ॥ ॐ उद्गातेवशकुने साम गायसि ब्रह्मपुत्र इव सवनेषु शंससि वृषेववाजी शिशुमतीरपीत्या सर्वतोनः शकुने भद्रमावदविश्वतोनः शकुनेपुण्यमावद ॥ यजुः ॥ ॐ पुनन्तुमादेवजनाः पुनन्तुमनसाधियः ॥ पुनन्तुविश्वाभूतानिजातवेदः पुनीहिमा ॥२॥ पृथिव्यांमुद्धृतायांतुयत्कल्याणं पुराकृतम् ॥ ऋषिभिः सिद्धगंधर्वैस्तत्कल्याणं ब्रुवंतुनः ॥१॥ भोब्राह्मणाः मम सकुटुम्बस्य सपरिवारस्य गृहेकल्याणं भवन्तो ब्रुवंतु ॥३॥ ॐ कल्याणम् ॥३॥ ऋक् ॥ ॐ अपासोममस्तमिन्द्रप्रयाहि कल्याणीर्जायासुरणं गृहेते ॥ यात्र रथस्य बृहतो निधानं विमोचनंवाजिनोदक्षिणावत् ॥ १ ॥ यजुः ॥ ॐ यथेमांवाचं कल्याणीमावदानि जनेभ्यः ॥ ब्रह्मराजन्याभ्यां ᳪशूद्रायचार्य्याय च स्वायचारणायच ॥ प्रियोदेवानां दक्षिणायै दातुरिहभूयाः

al Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathma

. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding:

समयम्मेकामः सम्मृद्धयताम्नुपमादोनमतु ॥२॥ सागरस्यतुया-ऋद्धिर्महालक्ष्म्यादिभिः कृता ॥ संपूर्णासुप्रभावाचतां तामृद्धिं ब्रुवंतुनः ॥१॥ भोब्राह्मणाः मम सकुटुम्बस्य सपरिवारस्यगृहे ऋद्धिं भवन्तो ब्रुवंतु ॥३॥ ॐ ऋद्धयताम् ॥३॥ ऋक् ॥ ॐ ऋद्धयामस्तोमंसनुयाम वाजमानो मन्त्रं सरथेहोपयातम् ॥ यशोनपक्वं मधुगोष्वन्तराभूतां सोअश्विनोः काममप्राः ॥१॥ यजुः ॥ ॐ सत्रस्यऽऋद्धिरस्यगन्मज्योतिरमृताऽअभूम ॥ दिवं-पृथिव्याऽअद्ध्यारुहामाविदामदेवान्त्स्वर्ज्योतिः ॥५॥ स्वस्तिस्तु-याविनाशाख्या पुण्य कल्याण वृद्धिदा ॥ विनायक प्रिया नित्यं-तांचस्वस्ति ब्रुवंतुनः ॥१॥ भोब्राह्मणः मम सकुटुम्बस्य सपरि-वारस्यगृहे स्वस्ति भवंतोब्रुवंतु ॥३॥ ॐ स्वस्ति ॥३॥ ऋक् ॥ ॐ स्वस्ति ऋद्धि प्रपथे श्रेष्ठोरक्णस्वत्यभियावाममेति ॥ सानो-अमासो अरेण निपातुस्वावेशा भवतु देवगोपाः ॥१॥ यजुः ॥ ॐ स्वस्तिनऽइन्द्रोवृद्धश्रवाः स्वस्तिनः पूषाविश्ववेदाः ॥ स्वस्तिन-स्तार्क्ष्योऽअरिष्टनेमिः स्वस्तिनोबृहस्पतिर्दधतातु ॥२॥ मृकंड-सूनोरायुर्यद्ध्रुवलोमशयोस्तथा ॥ आयुषातेनसंयुक्ताजीवेमशरदः शतम् ॥१॥ जीवतु भवंतः ॥ ऋक् ॥ ॐ शतञ्जीवशरदोवर्द्ध-मानः शतंहेमंताञ्छतमुवसंतान् ॥ शतमिंद्राग्नि सविताबृहस्पतिः शतायुषाहविषेमंपुनर्दुः ॥ यजुः ॥ ॐ शतमिन्नुशरदोऽअन्तिदेवा यत्रानश्चक्राजरसंतनूनाम ॥ पुत्रासो यत्र पितरोभवंति मानो-मध्यारीरिषतायुर्गन्तोः ॥२॥ शिवगौरीविवाहेया याश्रीरामेनृपा-त्मजे ॥ धनदस्यगृहेयाश्रीरस्माकंसास्तुसद्मनि ॥१॥ भोब्राह्मणाः

epal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmanc

n Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding

मम सकुटुम्बस्य सपरिवारस्य गृहेश्रीरस्त्वितिभवन्तो ब्रुवन्तु ॥३॥ ॐ अस्तुश्रीः ॥३॥ ऋक् ॥ ॐ श्रियजातः श्रियआनिरियाय-श्रियंवयोजरितृभ्यो दधाति ॥ श्रियंवसानाऽअमृतत्व मायन्भवन्ति सत्यासमिथामितद्रौ ॥१॥ यजुः ॥ ॐ मनसः काममाकूतिंवाचः सत्यमशीमयि ॥ पशूनाꣳरूपमन्नस्य रसोयशः श्री श्रयताम्मयि स्वाहा ॥२॥ प्रजापतिर्लोकपालोधाताब्रह्मासदेवराट् ॥ भगवाञ्छा श्वतोनित्यंसनोरक्षतुसर्वतः ॥१॥ भगवान्प्रजापतिः प्रीयताम् ॥ ऋक् ॥ ॐ प्रजापते नत्वदेतान्यन्यो विश्वाजातनि परिताबभूव ॥ यत्कामास्तेजुहुमस्तन्नो अस्तुवयंस्यामपतयीरयीणाम् ॥६॥ यजुः ॥ ॐ प्रजापतेनत्वदेतान्यन्योविश्वारूपाणि परिताबभूव ॥ यत्कामास्ते जुहुमस्तन्नोऽअस्त्वयममुष्य पितासावस्यपितावय ꣳ स्यामपतयो रयीणा ꣳ स्वाहा ।२॥ आयुष्मतेस्वस्तिमतेयजमानायदाशुषे ॥ कृताः सर्वाशिषः संतुऋत्विग्भिर्वेदपारगैः ॥१॥ देवेन्द्रस्ययथा-स्वस्तियथास्वस्तिगुरोर्गृहे ॥ एकलिंगेयथास्वस्तितथास्वस्तिसदा मम ॥२॥ ॐ आयुष्मतेस्वस्ति ॥३॥ ऋक् ॥ ॐ स्वस्तयेवायु-मुपब्रुवामहे सोमंस्वस्तिभुवनस्ययस्पतिः ॥ बृहस्पतिसर्वगणंस्वस्तये स्वस्तयआदित्यासो भवन्तुनः ॥१॥ यजुः ॥ ॐ प्रतिपन्थामप-ग्नहिस्वस्तिगामनेहसम् ॥ येनविश्वाः परिद्विषोवृणक्ति विन्दते-वसु ॥२॥ ऋक् ॐ महो अग्गेसमिधानस्य शर्म्मण्यनागा मित्रे वरुणे स्वस्तये ॥ श्रेष्ठेस्यामसवितुः सवीमनितद्देवानामवो अद्या-वृणीमहे ॥१॥ यजुः ॥ ॐ विश्वानिदेवसवितद्रुरितानिपरासुव ॥ यद्भद्रंतन्नऽआसुव ॥ मन्त्रार्थाः सफलाः सन्तु पूर्णाः सन्तु

pal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathma

. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding:

मनोरथाः ॥ शत्रूणांबुद्धिनाशोऽस्तुमित्राणामुदयोऽस्तुनः ॥१॥ ऋग्वेदोऽथयजुर्वेद सामवेदोह्यथर्वणः ॥ ब्रह्मवक्त्रेस्थितानित्यं-निघ्नंतुत वशात्रवम् ॥२॥ अक्षतान्विप्रहस्तात्तु नित्यंगृह्णन्ति ये नराः ॥ चत्वारितेषांवर्धंते आयुः कीर्तिर्यशोबलम् ॥३॥ श्रीर्वर्च-स्वमायुष्यमारोग्यः ॥४॥ धनवान्पुत्रवाँल्लक्ष्मीवान्भव ॥

इति दानखण्डोक्तं पुण्याहवाचनं सम्पूर्णम् ॥

नवग्रह पूजन

बायां हाथमें अक्षत ले दाहिने हाथ से प्रत्येक मन्त्र से छोड़े

सूर्यमण्डलके मध्यमें (गोलाकार लाल)

ॐ आकृष्णेन रजसा व्वर्तमानो निवेशयन्नमृत्तम्मर्त्यञ्च ॥
हिरण्ययेन सविता रथेना देवोयाति भुवनानि पश्यन् ॥

ॐ भूर्भुवः स्वः सूर्य इहागच्छ इह तिष्ठ। सूर्याय नमः ॥

चन्द्रमण्डल के अग्निकोण में (अर्धचन्द्र श्वेत)।

ॐ इमन्देवा असपत्नँ सुवध्वम्महते क्षत्राय महते ज्यैष्ठयाय महते जानराज्यायेन्द्रस्येन्द्रियाय ॥ इम ममुष्यै पुत्र ममुष्यै पुत्र मस्यै व्विशऽएष वोऽमी राजा सोमोऽस्माकं ब्राह्मणानाँराजा ॥

ॐ भूः० चन्द्र इहागच्छ इह तिष्ठ। सोमाय नमः ॥

मङ्गल मण्डल में दक्षिण में (त्रिकोण लाल)

ॐ अग्निमूर्धा दिवः ककुत्पतिः पृथिव्याऽयम् ॥ आपाँरेताँसि जिन्वति ॥ भूः भौम इहागच्छ इहतिष्ठ ॥ भौः बुध ईशान-कोण में (हरा धनुषाकार)

ॐ उद्बुध्यस्वाग्ने प्रतिजागृहि त्वामिष्टापूर्ते सँसृजेथामयं च।

epal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmand

n Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding

अस्मिन्त्सधस्थेऽध्युतरस्मिन् विश्वेदेवा यजमानश्च सीदत॥ भूः बुधः इहागच्छ इहतिष्ठ॥ बृहस्पति उत्तर में (पीला अष्टदल)

ॐ बृहस्पतेऽअति यदर्योऽअर्हाद्युमद्विभाति क्रतुमज्जनेषु। यद्दी-दयच्छवसऽऋतप्रजा तदस्मासु द्रविणं धेहिचित्रम्॥ भूः बृहस्पति इहागच्छ इहतिष्ठ॥ बृहस्पतये नमः॥ शुक्र पूर्वमें

ॐ अन्नात्परिस्रुतो रसं ब्रह्मणा व्व्यपिवत्क्षत्रंपयः सोमं प्रजा-पतिः। ऋतेन सत्यमिन्द्रियं विपानᳫं शुक्रमन्धसऽ इन्द्रस्येन्द्रियं-मिदं पयोमृतम्मधु॥ भूः शु० इ०॥

शनि पश्चिम में (काला मनुष्य)

ॐ शन्नो देवीरभिष्टयऽआपो भवन्तु पीतये। शंयोरभिस्र-वन्तुनः॥ भूः इ० श०॥

राहु नैऋत्य कोण में काला मकर

ॐ कया नश्चित्रऽआभुवदूती सदावृधः सखा। कया शचिष्ठया वृता। भूः इ० रा० रा०॥

केतु वायव्य कोण में काली ध्वजा

ॐ केतुं कृण्वन्न केतवे पेशोमर्य्या अपेशसे समुषद्भिरजा यथाः। भूः इ० के०॥

पञ्चोपचार या षोडशोपचार से पूजन करके नीचे लिखी प्रार्थना करे।

ब्रह्मा मुरारिस्त्रिपुरान्तकारी भानुः शशि भूमिसुतौ बुधश्च गुरुश्च शुक्रः शनि राहु केतवः सर्वे ग्रहाः शान्तिकरा भवन्तु॥

pal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathma

. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding:

॥ ततोऽधिदेवता स्थापनं ग्रह दक्षिण पार्श्वे ॥

पञ्चवक्त्रं वृषारूढ़ मुमेशञ्च त्रिलोचनम् ॥ आवाहयामीश्वरं तं खट्वाङ्गवर धारिणम् ॥ ॐ त्र्यम्बकं यजामहे सुगन्धिम्पुष्टि वर्द्धनम् ॥ उर्वारुक मिव बन्धनान्मृत्योर्मुक्षीय माऽमृतात् ॥ ॐ भू० ईश्वर इहा० ईश्वराय नमः ॥ ईश्वरं ॥१॥ हेमाद्रि-तनयां देवीं वरदां शङ्कर प्रियाम् ॥ लम्बोदरस्य जननी मुमा-आवाहयाम्यहम् ॥ ॐ श्रीश्चते लक्ष्मीश्च पत्न्या वहोरात्रे पार्श्वे नक्षत्राणि रूपमश्विनौ व्यात्तम् ॥ इष्णन्निषाणामुम्मऽइषाण सर्व्वं लोकमऽइषाण ॐ भू० उमेहा० उमायै नमः ॥ उमां० ॥२॥ रुद्रतेजः समुत्पन्नं देव सेनाग्रगं विभुम् ॥ षण्मुखं कृत्तिका सुनुं स्कन्द मावाहयाम्यहम् ॥ ॐ यदक्रन्नदः प्रथमं जायमानऽउद्यन्त समुद्रादुत वापुरीषात् ॥ श्येनस्य पक्षा हरिणस्य बाहूऽ उपस्तुत्त्यं महिजाततेऽअर्व्वन् ॥ ॐ भू० स्कन्देहा० स्कन्दाय नमः ॥ स्कन्दं ॥३॥ देवदेवं जगन्नाथं भक्तानुग्रहकारकम् ॥ चतुर्भुजं रमा-नाथं विष्णुमावाहयाम्यहम् ॥ ॐ विष्णोरराटमसि विष्णोः श्न-पत्रेस्थो व्विष्णोः स्यूरसि व्विष्णोर्ध्रुवोऽसि वैष्णवमसि व्विष्णवेत्त्वा ॥ ॐ भू० विष्णो इ० विष्णवे नमः ॥ विष्णुं ॥४॥ कृष्णाजिनाऽम्बरधरं पद्म संस्थं चतुर्मुखम् ॥ वेदाधारं निरालम्बं विधिमावाहयाम्यहम् ॥ ॐ आ ब्रह्मन्ब्राह्मणो ब्रह्मवर्च्चसी जायताः माराष्ट्रे राजन्यः शूरऽइषव्योऽति व्याधी महारथो जायतां दोग्ध्री धेनुर्व्वोढानड्वानाशुः सप्तिः पुरन्धिर्योषा जिष्णू रथेष्ठाः सभेयो युवास्य यजमानस्य व्वीरो जायतां निकामे निकामे नः पर्जन्यो

epal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmand

Public Domain. Digitization by eGangotri.Fundin

र्व्वर्षतु फलवत्त्योनऽ ओषधयः पच्यन्नतां योगक्षेमोनः कल्पताम् ॥ ॐ भू० ब्रह्मन् ॰ं ब्रह्मणे नमः ॥ ब्रह्माणं ॥५॥ देवराजं गजारूढं शुनासीरं शतक्रतुम ॥ वज्रहस्तं महाबाहु मिन्द्रणावाहयाम्यहम् ॥ ॐ सजोषाऽइन्द्र सगणो मरुद्भिः सोमं पिबव्वृत्रहाशूर व्विद्वान् जहि शत्रूँ रपयमृधोनुदस्वाथाभयं कृणुतु व्विश्वतोनः। ॐ भू० इन्द्रेहा० इन्द्राय नमः ॥ इन्द्रं० ॥६॥ धर्मराजं महावीर्यं दक्षिणा दिक्पतिं प्रभुम् । रक्ते क्षणं महाबाहुं यमयावाहयाम्यहम् ॥ ॐ यमाय त्वङ्गिरस्वते पितृमते स्वाहा ॥ स्वाहा धर्म्माय स्वाहा धर्मः पित्रे ॥ ॐ भू० यमाय नमः ॥ यम० ॥ ॥७॥ अनाकार मनन्तारयं वर्तमानं दिनेदिने ॥ कलाकाष्ठादि रूपेण कालमायाहयाम्यहम् ॥ ॐ कार्षिरसि समुद्रस्यत्वा क्षित्याऽउन्नयामि ॥ समायोऽअद्भिरम्मतसमोषधी मिरोषधीः ॥ ॐ भू० कालेहा० कालाय नमः ॥ कालं ॥८॥ धर्मराज सभा संस्थं कृताकृत विवेकनम् आवाहये चित्रगुप्तं लेखनी पत्र हस्तकम् ॥ ॐ चित्रावसो स्वस्ति ते पारमसीय। ॐ भू० चित्रगुप्तेहा० चित्रगुप्ताय नमः ॥ चित्रगुप्तं ॥९॥ ततः प्रत्याधिदेवता स्थानं ग्रह वाम पार्श्वे।

॥ प्रत्याधिदेवतः ॥

रक्तमाल्याम्बरधरंरक्त पद्मासनस्थितिम् ॥ वरदाभयदंदेव मग्नि मावाहयाम्यहम् ॥ ॐ अग्निदूतं पुरोदधेहव्यवाहमुपब्रुवे ॥ देवाँऽआसा दयादिह ॥ ॐ भू० अग्ने इ० अग्नेय नमः ॥ अग्निम् ॥१॥ आदिदेव समुद्भूता जगच्छुद्धि कराः शुभाः ॥

al Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathma

. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding:

औषध्याप्यायनकरा अपाम्यावाहयाम्यहम् ॥ ॐ आपोहिष्ठा मयो भुवस्तानुऽऊर्ज्जे दधातन ॥ महेरणाय चक्षसे ॥ ॐ भू० अप इहा० अद्भ्यो नमः ॥ अप आ० ॥२॥ शुक्लवर्णां विशालाक्षीं कूर्मपृष्ठो परिस्थिताम् ॥ सर्वसस्याश्रयांदेवीं धराभावाहयाम्यहम् ॥ ॐ स्योनापृथिविनो भवानृक्षरा निवेशनी ॥ यच्छानः शर्म्मऀ सप्रथाः ॥ ॐ भू० पृथिवी इ० पृथिव्यै नमः ॥ पृथिवीं ॥३॥ शङ्ख चक्र गदा पद्महस्तं गरुड़ वाहनम् ॥ किरीट कुण्डलधरं विष्णु आवाहयाम्यहम् ॥ ॐ इदं विष्णुर्विचक्रमे त्रेधानिदधे पदम् ॥ समूढ़मस्यपाऀसुरे स्वाहा ॥ ॐ भू० विष्णो इ० विष्णवे नमः ॥ विष्णु० ॥४॥ ऐरावत गजारूढ़ं सहस्राक्षं शचीपतिम् । वज्रहस्तं सुराधीश मिन्द्रमावाहयाम्महम् ॥ ॐ इन्द्रऽआसांनेता बृहस्पतिर्दक्षिणा यज्ञः पुरऽएतु सोमः ॥ देवसेनानामभिञ्जतीनां जयन्तीनां मरुतोयन्त्वग्रम् ॥ ॐ भू० इन्द्रेहा० इन्द्राय नमः ॥ इन्द्रमा० ॥५॥ प्रसन्न वदनां देवीं देवराजस्य वल्लभाम् ॥ नानाऽलङ्कार संयुक्तां शची आवाहयाम्यहम् ॥ ॐ आदित्यै रास्मासीन्द्राण्याऽउष्णीषः ॥ पूषासि धर्म्माय दीष्व ॥ ॐ भू० इन्द्राणि इ० इन्द्राण्यै नमः ॥ इन्द्राणी० ॥६॥ आवाहयाम्यहं देवदेवेशं च प्रजापतिम् ॥ अनेक व्रत कर्तारं सर्वेषां च पितामहम् ॥ ॐ प्रजापते नत्वदेतान्यन्यो विश्वा रूपाणि परिता बभूव ॥ यत्कामास्ते जुहुमस्तन्नोऽअस्तु वयऀस्यामपतयो रयीणाम् ॥ ॐ भू० प्रजापते इ० प्रजापते नमः ॥ प्रजापति आ० ।७। अनन्ताद्यान् महाकायान् नानामणि विराजितान् ॥ आवाहयाम्यहं

epal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmanc

Public Domain. Digitization by eGangotri.Fundin

सर्प्पान् फणा सप्तक मण्डितान् ॥ ॐ नमोऽस्तु सर्प्पेभ्योयेकेच पृथिवी मनु । येऽअन्तरिक्षे ये दिवि तेभ्यः सर्प्पेभ्यो नमः ॥ ॐ भू० सर्पा इहाग० सर्प्पेभ्यो नमः ॥ सर्पान्० ॥८॥ हंसपृष्ठ समारूढ़ं देवतागण पूजितम् ॥ आवाहयाम्यहं देवं ब्रह्माणे कमलासमम् ॥ ॐ ब्रह्मयज्ञानं प्रथमं पुरस्ताद्विसीमतः सुरुचोवेनऽ-आनः । स वुध्धन्याऽउपमाऽअस्य विष्ठाः सतश्च योनिमसतश्च विवः ॥ ॐ भू० ब्रह्मन् इ० ब्रह्मणे नमः ॥ ब्रह्माणाम्० ॥६॥

अथ मातृकापूजनम्

आदौ षड्विनायक पूजनम्

ओं मोदाय नमः मोदमावाहयामि । प्रमोदाय नमः प्र० । ओं सुमुखाय नमः सुमु० । ॐ दुर्मुखाय नमः दुर्मु० । ॐ अविघ्नाय नमः अवि० । ॐ विघ्नकर्त्रे नमः विघ्न० ।

आवाहन करके स्थापना करे—

मनोजूतिर्जुषतामाज्यस्य वृहस्पतिर्यज्ञमिमन्तनोत्वरिष्टं यज्ञ ँ समिमन्दधातु । विश्वेदेवासऽइहमादयन्तामोम्प्रतिष्ठ । मोदादि षड्विनायकेभ्यो नमः स्थापयामि । ॐ गणानांत्वा इस मन्त्र से आवाहन करे ।

गौरी आ० मन्त्र

ओं शर्मास्यवधूत ँ रक्षोऽवधूताऽ आरातयोदित्यात्वगसि प्रतित्वादितिर्व्वेतु । अद्रिरसिव्वानस्पत्योग्रावासि पृथुवुध्नः प्रति-त्वादित्यास्त्वग्वेतु ॥ गौर्य्यै नमः गौरीमा० ॥

al Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathma

. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding:

ओं पावकानः सरस्वतीव्वाजेभिर्व्वाजिनीवती। यज्ञंव्वष्टुधियावसुः ॥ पद्मायै नमः प० ॥

ओं निवेशनः सङ्गमनो व्वसूनां विश्वरूपाभिचष्टे शचीभिः॥ देवऽइव सविता सत्यधर्मेन्द्रोनतस्थौ समरेपथीनाम् ॥शच्यै नमः श० ॥

ओं मेधाम्मे व्वरुणो ददातु मेधामग्निः प्रजापतिः : मेधामिन्द्रश्च व्वायुश्च मेधान्धाता ददातु मे स्वाहा। मेधायै नमः मेधामा० ॥

ओं सवितात्वासवानाॅंसुवतामग्निगृहपतिना ॅं सोमोव्वनस्पतिनाम्। व्वृहस्पतिर्व्वाचऽइन्द्रोऽज्यैष्ठयायरुद्रः पशुभ्यो मित्रः सत्यो व्वरुणो धर्मपतीनाम्। सावित्र्यै नमः सावित्रिमा०।

ओं विज्यन्धनुः कपर्दिनो व्विशल्योव्वाणवां उत। अनेशन्नस्य याऽइषवऽआ भुरस्यनिषङ्गधिः। विजयायै नमः विजयामा० ॥

ओं वह्वीनाम्पिता बहूरस्य पुत्रश्चिश्चाकृष्णोति समनावगत्य। इषुधिः सङ्काः पृतनाश्च सर्वाः पृष्ठेनिनद्धो जयति प्रसूतः॥ जयायै नमः जयामा० ॥

ओं इन्द्रऽआसन्नेता वृहस्पतिर्दक्षिणा यज्ञः पुरऽएतुसोमः॥ देवसेनानामभिभञ्जतीनाञ्जयन्तीनाम्मरुतोयन्त्वग्रम्॥ देवसेनायै नमः देवसेना० ॥

ओं पितृभ्यः स्वधायिभ्यः स्वधानमः पितामहेभ्यः स्वधायिभ्यः स्वधानमः प्रपितामहेभ्यः स्वधायिभ्यः स्वधानमः॥ अक्षन्पितरो मीमदन्तापितरोतीपन्तपितरः पितरः शुन्धध्वम् ॥स्वधायै नमःस्व०॥

ओं स्वाहाप्प्राणेभ्यः साधिपतिकेभ्यः।पृथिव्यै स्वाहाग्नये स्वाहा-

epal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmand

Public Domain. Digitization by eGangotri.Fundin

न्तरिक्षाय स्वाहा व्वायवे स्वाहा दिवे स्वाहा सूर्य्याय स्वाहा ॥ स्वाहायै नमः स्वाहा ॥

ओं अनाधृष्टा पुरस्तादग्नेराधिपत्यऽआयुर्म्मेदाः पुत्रवती दक्षिणतऽइन्द्रस्याधिपत्ये प्रजाम्मेदाः ॥ सुषदापश्चाद्देवस्य सवितुराधिपत्ये चक्षुर्म्मेदाऽआश्रुतिरुत्तरतो धातुराधिपत्ये रायस्पोषम्मेदाः ॥ विधृतिरुपरिष्टाद्बृहस्पतेराधिपत्यऽओजो मे दाव्विश्वाभ्योमानाष्ट्राभ्यस्पाहि मनोरश्वासि । मातृभ्यो नमः मातृ० ॥

ओं रयिश्च मे रायश्च मे पुष्टञ्च मे पुष्टिश्च मे विभुच मे प्रभु च मे पूर्णञ्च मे पूर्णतरञ्च मे कुयवञ्च मे क्षितञ्च मे न्नञ्च मे क्षुचमे यज्ञेन कल्पन्ताम् ॥ लोकमातृभ्यो नमः लोक० ॥

ओं भद्रङ्कर्णेभिः शृणुयामदेवा भद्रम्पश्येमाक्षभिर्यजत्राः । स्थिरैरङ्गैस्तुष्टुवा ᳪ सस्तनुभिर्व्यशेमहिदेवहितं यदायुः । हृष्टयै नमः हृष्टिमा० ॥

ओं अङ्गान्यात्मन्भिषजा तदश्विनात्मानमङ्गैः समधात्सरस्वती । इन्द्रस्य रूप ᳪ शतमानमायुश्चन्द्रेणज्योतिरमृतन्दधानः । पुष्ट्यै नमः पुष्टिगा० ॥

ओं जातवेदसे सुनवामसो ममरातीयतो निदहातिव्वेदः सनः पर्षदति दुर्गाणिव्विश्वानावेवसिन्धुन्दुरितात्यग्निः । तुष्ट्यै नमः तुष्टिमा० ॥

ओं प्राणाय स्वाहापानाय स्वाहा व्यानाय स्वाहा ।

अम्बे अम्बिके अम्बालिके नमानयतिकश्चन ससत्यश्वकः सुभद्रिकाङ्काम्पीलवासिनीम् । कुलदेव्यै नमः कुलदेवीमा० । ओं मनो-

al Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathma

. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding:

जूतिर्जुषतामाज्यस्य बृहस्पतिर्यज्ञमिमन्तनोत्वरिष्टं यज्ञ ᳪ समिमन्दधातु । विश्वेदेवासऽइहमादयन्तामोम्प्रतिष्ठ । ओं गौर्यादि षोडशमातृकाभ्यो नमः । स्थापयामि ।

॥ अथ वसोर्द्धारा पूजनम् ॥

ॐ व्वसोः पवित्रमसि शतधारं व्वसोः पवित्रमसि सहस्रधारम् । देवस्त्वा सविता पुनातु व्वसोः पवित्रेण शतधारेण सुप्वा काम धुक्षः इति मन्त्रेण वसोर्द्धाराः कर्तव्याः ॥

ॐ मनसः काम माकूतिं व्वाचः सत्यमशीयमहि । पशूनाᳪरूप मन्नस्य रसोयशः श्रीः श्रयतां मयि स्वाहा ॐ श्रियै नमः श्रिय मा० ॥१॥ ॐ श्रीश्चते लक्ष्मीश्च पत्न्यावहोरात्रे पार्श्वे नक्षत्राणि रूपमश्विनौ व्यात्तम् । इष्णन्निषाणामुम्मऽइषाण सर्व्वलोकम्मऽइषाण ॥ ॐ लक्ष्म्यै नमः लक्ष्मी मा० ॥२॥ ॐ भद्रं कर्णेभिः शृणुयाम देवा भद्रं पश्येमाक्षभिर्यजत्राः स्थिरैरङ्गैस्तुष्टुवाᳪसस्तनूभि र्व्यशेमहिदेवहितं य्यदायुः ॥ ॐ धृत्यै० धृति मा० ॥३॥ ॐ मेधाम्मे व्वरुणो ददातु मेधामग्निः प्प्रजापतिः ॥ मेधा मिन्द्रश्च व्वायुश्च मेधान्धाता ददातु मे स्वाहः ॥ ॐ मेधायै० मेधा मा० ॥४॥ ॐ प्राणाय स्वाहा अपानाय स्वाहा व्यानाय स्वाहा चक्षुषे स्वाहा श्रोत्राय स्वाहा त्वचे स्वाहा मनसे स्वाहा ॐ स्वाहायै० स्वाहा मा० ॥५॥ ॐ आपङ्गौ पृश्निरक्रमीदसदन्नमातरम्मपुरः पितरञ्च प्प्रयन्त्स्वः ॥ ॐ प्रज्ञायै० प्रज्ञमा० ॥६॥ ॐ पावकानः सरस्वतीव्वाजेभि र्व्वाजिनीवति यज्ञं व्वष्टुधियावसुः ॐ सरस्वत्यै० सरस्वतीमा० ॥७॥ ॐ श्री

epal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmand

Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding

लक्ष्मी धृतिर्मेधा स्वाहा प्रज्ञा सरस्वती। माङ्गल्येषु प्रपूज्यन्ते सप्तैताघृतमातरः इति मन्त्रेण वा ॥ ॐ वसोर्द्धारा देवताभ्यो नमः, इत्यावाह्य ॥ ॐ मनो० वसोर्द्धारा देवताः सुप्र० तिष्ठिताः वरदाः भवन्तु ॥ सम्पूज्य प्रार्थयेत् ॥ यदङ्गत्वेन भोदेव्यः पूजिता विधिमार्गतः। कुर्वन्तु कार्य मखिलं निर्विघ्नेन क्रतुद्भवम् ॥ अनया पूजया वसोर्द्धारा देवताः प्रियन्ताम् इति वसोर्द्धारा करणम् ॥

षोडशोपचार से पूजन करे—

॥ अथ रक्षा विधानम् ॥

हाथ में गौरसर्षप ग्रहण करे। अभिमन्त्रण कर सर्वत्र विकीरण करे।

ओं गणाधिपं नमस्कृत्य नमस्कृत्य पितामहम् ॥
विष्णुं रुद्रं श्रियं देवीं वन्दे भक्त्या सरस्वतीम् ॥
स्थानाधिपं नमस्कृत्य ग्रहनाथं निशारकम् ॥
धरणीगर्भसम्भूतं शशिपुपुत्रं बृहस्पतिम् ॥
दैत्याचार्यं नमस्कृत्य सूर्यपुत्रं महाग्रहम् ॥
राहुं केतुं नमस्कृत्य यज्ञारम्भे विशेषतः ॥
शक्राद्या देवताः सर्वा मुनींश्च कथयाम्यहम् ॥
गर्गं मुनिं नमस्कृत्य नारदं मुनि सत्तमम् ॥
वसिष्ठं मुनिशार्दूलं विश्वामित्रं तथैव च ॥
व्यासं मुनिं नमस्कृत्य सर्वशास्त्र विशारदम् ॥
विद्याधिका ये मुनय आचार्यश्च तपोधनाः ॥

al Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathma

. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding:

तान् सर्वान्प्रणमाम्येव यज्ञ रक्षाकरान्सदा ॥
पूर्वे रक्षतु गोविन्द आग्नेयां गरुड़ध्वजः ॥
याम्यां रक्षतु वाराहो नारसिंहस्तु नैऋर्ते ॥
वारुण्यां केशवोरक्षे द्वायव्यां मधुसूदनः ॥
उत्तरे श्रीधरो रक्षेदीशानेतु गदाधरः ॥
उर्द्धं गोवर्धनो रक्षेदधस्ताच्च त्रिविक्रमः ॥
एवं दशदिशो रक्षेद्वासुदेवो जनार्दनः ॥
शङ्खो रक्षेच्च यज्ञाग्रे पृष्ठे खड्ग तथैवच ॥
वामपार्श्वे गदारक्षद्दक्षिणे तु सुदर्शनः ॥
ब्रह्माणं माधवो रक्षेदाचार्यं पातु माधवः ॥
अच्युतोऽवतु ऋग्वेदं यजुर्वेदमधोक्षजः ॥
कृष्णश्च सामगं रक्षेदाथर्विकं च माधवः ॥
उपदेष्टा तु यो विप्रस्तंरुद्रोऽतु सर्वदा ॥
यजमानं सपत्नीकं कमलाक्षश्च रक्षतु ॥
रक्षहीनं तु यत्स्थानं तत्सर्वं रक्षतां हरिः ॥
यदत्र संस्थितं भूतं स्थान माश्रित्य सर्वदा ॥
स्थानं त्यक्त्वा तु तत्सर्वं यत्रस्थं तत्र गच्छतु ॥
अपसर्पन्तु ते भूता ये भूताभूमि संश्रिता ॥
ये भूताविघ्नकर्तारस्ते नश्यन्तु शिवाज्ञया ॥

वैदिक मन्त्राः । रक्षोहणंव्वल गहनं व्वैष्णवीमिद महन्तं व्वल-
गमुत्किरामि यम्मेनिष्ट्यो यममात्योनि चखानेदमहन्तं व्वलग-
मुत्किरामियम्मे समानो यम समानो निचखानेद महन्तं व्वलग-

epal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmand

Public Domain. Digitization by eGangotri.Fundin

मुत्किरामि यम्मे सबन्धुर्यमसबन्धुन्निचखानेद महन्तं व्वलगमु-त्किरामि यम्मे सजातो यम सजातो निचखानोत्क्र त्याङ्किरामि ॥१॥ स्वराडसि सपत्नहा सत्रराडस्य भिमातिहा जनराडसि रक्षोहा सर्वराडस्य मित्रहा ॥२॥ रक्षो हणोवोव्वल गहन प्प्रोक्षामि व्वैष्णवान्रक्षो हणोवोव्वल गहनोऽवनयामि व्वैष्ण-वान्रक्षोहणोवोव्वल गहनो वस्तृणामि व्वैष्णवान्रक्षो हणौवांव्वल गहनाऽउपदधामि वैष्णवीरक्षोहणौवांव्वल गहनो पर्य्यूहामि व्वैष्णविव्वैष्णवमसिव्वैष्णवास्थ ॥३॥ रक्षसाम्भागोऽसि निरस्तठं रक्षऽइदमहठं रक्षोभितिष्ठामीदमहठं रक्षोववाधऽइदमहठं रक्षो-धमन्तमोनयामि । घृतेना द्यावा पृथिवी प्रोर्णुवाथांवायो वेस्तोक्रा-नामग्नि राजस्य व्वेतु स्वाहा स्वाहाकृतेऽऊर्ध्वनभसम्मारुतङ्गच्छ-तम् ॥४॥ रक्षोहा व्विश्वचर्षणि रभियोनिमयोहते द्रोणो सधस्थ मासदत् ॥५॥

इन मन्त्रों से सर्व दिशाओं में सर्षप विकीरण करे ।

ततो देवता त्र्योरक्षासूत्र दानम् ॥ ततो ब्राह्मणानां हस्तेषु रक्षा बन्धनं कर्तव्यं तत्र मन्त्रः ॥ ओं व्रतेन दीक्षामाप्नोति श्रध्यया सत्य माप्यते । ततस्तिलकं कुर्यात् ॥ ओं युञ्जन्ति वध्नमरुषचरंतं परित तस्तस्थुषः रोचंतेरोचनाविनि । युञ्जन्त्यस्य कामस्य हरि विपक्षसारथे शोणाधृष्णूवृवाहसा ॥२॥

॥ अथ यजमान हस्ते रक्षाबन्धनम् ॥

ओं त्वं यविष्ठदाशुषोनॄः पाहिश्रृणुधीगिरः ॥ रक्षातोकमुतत्वमना ॥

al Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathma

. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding:

येनबद्धो बलीराजा दानवेन्द्रो महाबलः तेन त्वां प्रतिबध्नामि रक्षे माचल माचल ॥ इति रक्षा विधानम् ॥

देत्रिमूर्त्ति स्थापने सर्वतो भद्रमंडल स्थाने गौरी तिलकमंडलं ज्ञातव्यम् ॥

(अथ गौरी तिलकमंडल पूजा) प्राच्योदीच्याः कृता रेखा अष्टा दशैवाष्टादश ॥ पदेषु स्थापये द्देवान्नवाशीतिशतद्वयम् ॥ तत्रादौ यज्ञ पुरुषस्य सुवर्ण प्रतिमां बह्वयुतारणं कृत्वा मध्य कलशोपरि स्थापयेत् ॥ कलश समीपे पीतकोष्ठेषु चतुरोदेवान् पूजयेत् ॥ तद्यथा ओं महाविष्णवे नमः (ऐशाने) ओं महालक्ष्म्यै नमः (आग्नेय्याम्) ओं महेश्वराय नमः (नैऋत्याम्) ओं महामायायै नमः (वायव्याम्) ॥ ततषडंगेषु देवान् पूजयेत् । प्रथमं हृदयांगमध्ये चतुर्षु कोष्ठेषु चतुर्वेदान्पूजयेत् । ओं ऋग्वेदाय नमः पूर्वे ॥ ओं यजुर्वेदाय नमः दक्षिणे । ओं सामवेदाय नमः पश्चिमे । ओं अथर्वेदाय नमः उत्तरे ॥ ततो पूर्वादीशान पर्यन्तं श्वेत कोष्ठेषु अष्टदेवान् पूजयेत् ॥ तद्यथा प्रथमं पूर्वे । ओं अद्भो नमः ॥ ओं जलोद्भवाय नमः ॥ ओं ब्रह्मणे नमः ॥ ओं प्रजापतये नमः ॥ ओं शिवाय नमः ॥ अग्निकोणे श्वेत कोष्ठयोः ॥ ओं अनन्ताय नमः । ओं परमेष्ठिने नमः । पुनः अग्निकोणे चतुष्कोष्ठेषु । ओं धात्रे नमः । ओं विधात्रे नमः । ओं अर्य्यम्णे नमः । ओं मित्त्राय नमः ॥ ततो दक्षिणे श्वेतेषु ॥ ओं वरुणाये नमः । ओं अंशुमते नमः । ओं भगाय नमः । ओं इन्द्राय नमः । ओं

epal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmand

Public Domain. Digitization by eGangotri.Fundin

विवस्वते नमः। नैऋत्यकोणयोः–ओं पूष्णे नमः। ओं पर्जन्याय नमः। नैऋत्यकोणे श्वेतेषु ॥ ओं त्वष्ट्रे नमः। ओं दक्षयज्ञाय नमः। ओं देववसवे नमः। ओं महासुताय नमः। पश्चिमे श्वेतेषु ॥ ओं सुधर्मणे नमः। ओं शंखपदे नमः। ओं महाबाहवे नमः। ओं वपुष्मते नमः। ओं अनन्ताय नमः। वायौश्वेतयोः ॥ ओं महेरणाय नमः। ओं विश्वावसवे नमः। वायौश्वेतेषु ॥ ओं सुपर्वणे नमः। ओं विष्टराय नमः। ओं रुरुदेवतायै नमः। ओं ध्रुवाये नमः। उत्तरे श्वेतेषु ॥ ओं धराय नमः। ओं सोमाय नमः। ओं आपवत्साय नमः। ओं नलाय नमः। ओं अनिलाय नमः॥ ईशान्ये श्वेतयोः॥ ओं प्रत्यूषाय नमः। ओं प्रभासाय नमः। ईशानकोणे श्वेतेषु। ओं आवर्त्तायनमः। ओं सावर्तायनमः ओं द्रोणाय नमः। ओं पुष्कराय नमः॥ (इति हृदयाँग पूजा) (अथ शिरोंग शक्ति पूजयेत्) प्रथमतीशाने हरित्कोष्ठेषु॥ ह्रीं कार्यै नमः॥ ओं ह्रीं यै नमः। ओं कात्यायन्यै नमः। ओं चामुण्डायै नमः। ओं महादिव्यायै नमः। ओं महाशब्दायै नमः ओं सिद्धिदायै नमः। ओं ह्रीं कार्यै नमः। ओं ऐं नमः। ओं श्रीं श्रीयै नमः। ओं ह्रीं ह्रियै नमः। ततः ईशानकोण पीतकोष्ठषु ओं लक्ष्म्यै नमः। ओं श्रियै नमः। ओं सुघनाये नमः। ओं मेधाये नमः। ओं प्रज्ञायै नमः। ओं मत्ये नमः। ओं स्वाहायै नमः। ओं सरस्वत्यै नमः। तत अग्निकोणे हरिकोष्ठेषु। ओं गौर्यै नमः। ओं पद्मायै नमः। ओं सच्चे नमः। ओं सुमेध्यायै नमः। ओं सावित्र्यै नमः। ओं विजयायै नमः।

al Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathma

. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding:

ओं देवसेनायै नमः । ओं स्वाहायै नमः । ओं स्वधायै नमः । ओं मात्र्यै नमः । ओं गायत्र्यै नमः । ततः अग्निकोणे पीत-कोष्ठेषु ८ ओं लोकमात्र्यै नमः । ओं धृत्यै नमः । ओं पुष्ट्यै नमः । ओं तुष्ट्यै नमः । ओं आत्मदेवतायै नमः । ओं गणेश्वर्य्यै नमः । ओं कुलमात्र्यै नमः । ओं शान्त्यै नमः । पूर्वार्घ-भागे पीतकोष्ठेषु१०ओं जयन्त्यै नमः । ओं मंगलायै नमः । ओं काल्यै नमः । ओं भद्रकाल्यै नमः । ओं कपालिन्यै नमः । ओं दुर्गायै नमः । ओं क्षमायै नमः । ओं शिवायै नमः । ओं धात्र्यै नमः । ओं स्वाहा स्वधाभ्यां नमः । (इति शिरोंग पूजा) अथ शिखांगदेव पूजा । नैऋतकोणे हरित्कोष्ठेषु११ओं दीप्यमानायै नमः ओं दीप्तायै नमः । ओं सूक्ष्मायै नमः । ओं विभूत्यै नमः । ओं विमलायै नमः । ओं परायै नमः । ओं अमोघायै नमः । ओं विधुतायै नमः । ओं सर्वतोमुख्यै नमः । ओं आनन्दायै ओं नन्दिन्यै नमः । नैऋतकोणे पीतकोष्ठेषु ८ ओं शाक्त्यै नमः । ओं महासूक्ष्मायै नमः । ओं करालिन्यै नमः । ओं भारत्यै नमः । ओं ज्योतिषे नमः । ओं ब्राह्मै नमः । ओं माहेश्वर्यै नमः । ओं कौमार्यै नमः । वायुकोणे हरित्कोष्ठेषु११ ओं वैष्णव्यै नमः । ओं वाराह्यै नमः । ओं इन्द्राण्यै नमः । ओं चण्डिकायै नमः । ओं बुद्ध्यै नमः । ओं लज्जायै नमः । ओं वपुष्मत्यै नमः । ओं शान्त्यै नमः । ओं कान्त्यै नमः । ओं रत्यै नमः । ओं प्रीत्यै नमः । वायुकोणे पीतकोष्ठेषु ८ ओं कीर्त्यै नमः । ओं प्रभायै नमः । ओं काम्यायै नमः । ओं कांतायै नमः । ओं ऋद्ध्यै

epal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmand

Public Domain. Digitization by eGangotri.Fundin

नमः। ओं दयायै नमः। ओं शिवदुत्यै नमः। ओं श्रद्धायै नमः। ततः पश्चिमार्द्ध पीतकोष्ठेषु १० ओं क्षमायै नमः। ओं क्रियायै नमः। ओं विद्यायै नमः। ओं मोहिन्यै नमः। ओं यशोवत्यै नमः। ओं कृपावत्यै नमः। ओं सुशीलायै नमः। ओं सुशीलायै नमः। ओं ईश्वर्यै नमः। ओं सिद्धेश्वर्यै नमः। (इति शिखांग पूजा)। (कवचांगेषुऋषिन्पूजयेत्—) प्रथमं पूर्वेऽरुणकोष्ठयोः। ओं द्वैपायनाय नमः। ओं भारद्वाजाय नमः। दक्षिणेऽरुणकोष्ठयोः। ओं गौतमाय नमः। ओं सुमन्तवे नमः। पश्चिमेऽरुण कोष्ठयोः। ओं देवलाय नमः। ओं व्यासाय नमः। उत्तरेऽरुण कोष्ठयोः॥ ओं वसिष्ठाय नमः। ओं च्यवनाय नमः। ईशाने कृष्णकोष्ठे॥ कण्वाय नमः॥ अग्निकोणे कृष्णकोष्ठे॥ ओं मैत्रेयाय नमः॥ नैऋत्यकोणे कृष्णकोष्ठे॥ ओं कवये नमः॥ वायुकोणे कृष्णकोष्ठे। ओं विश्वामित्राय नमः॥ मध्य पीत-कोष्ठेषु॥ ओं वामदेवाय नमः। ओं सुमन्ताय (तये) नमः। ओं जैमिनये नमः। ओं क्रतवे नमः। ओं पिप्पलादाय नमः। ओं पराशराय नमः। ओं गर्गाय नमः। ओं वैशंपायनाय नमः। मध्ये कृष्णकोष्ठेषु ईशानतः। ओं दत्ताय नमः। ओं मार्कण्डेयाय नमः। ओं मृकंडाय नमः। ओं लोमशाय नमः। ओं पुलहाय नमः। ओं पुलस्त्याय नमः। ओं बृहस्पतये नमः। ओं जमदग्नये नमः। ओं जामदग्न्याय नमः। ओं दाल्भ्याय नमः। ओं शिलोञ्छनाय नमः। ओं गालवाय नमः॥ मध्ये हरितकोष्ठेषु ईशानतः॥ ओं यज्ञवल्क्याय नमः। ओं दुर्वाससे नमः।

al Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathma

. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding:

ओं सौभरये नमः । ओं जाबालये नमः । ओं जाजलये नमः । ओं वाल्मीकये नमः । ओं बह्वृचाय नमः । ओं इन्द्रप्रमितये नमः । ओं देवमित्राय नमः । ओं शाकल्याय नमः । ओं मुद्गलाय नमः । ओं जातूकर्ण्याय नमः । ओं वलाकाय नमः । ओं ओं कृपाचार्याय नमः । ओं सुकर्मणे नमः । ओं कौसल्याय नमः ॥ (इति कवचांग पूजा) ॥ अथ नेत्रांगपूजा ॥ ईशानकोणेऽरुण कोष्ठेषु ॥ ओं ब्रह्मोग्नये नमः । ओं गार्हपत्याग्नये नमः । ओं ईश्वराग्नये नमः । ओं दक्षिणाग्नये नमः । ओं वैष्णवाग्नये नमः । ओं आहवनीयाग्नये नमः । ओं सप्तजिह्वाग्नये नमः । ओं इध्मजिह्वाग्नये नमः । ओं प्रवर्ग्याग्नये नमः । ओं वडवाग्नये नमः । ओं जठराग्नये नमः । ओं लौकिकाग्नये नमः ॥ अग्निकोणे वरुणकोष्ठेषु ॥ ओं सूर्याय नमः । ओं वेदांगाय नमः । ओं भानवे नमः । ओं इन्द्राय नमः । ओं खगाय नमः । ओं गभस्तिने नमः । ओं यमाय नमः । ओं अंशुमते नमः । ओं हिरण्यरेतसे नमः । ओं दिवाकराय नमः । ओं ओं मित्राय नमः । ओं विष्णवे नमः । नैऋत्यकोणेऽरुणकोष्ठेषु ओं शंभवे नमः । ओं गिरिशाय नमः । ओं अजैकपदे नमः । ओं अहिर्बुध्न्याय नमः । ओ पिनाकपाणये नमः । ओं अपराजिताय नमः । ओं भुवनाधीश्वराय नमः । ओं कपालिने नमः । ओं विशांपतये नमः । ओं रुद्राय नमः । ओं वीरभद्राय नमः । औ अश्विनी कुमाराभ्यां नमः ॥ वायुकोणेऽरुणकोष्ठेषु ॥ औ आवहाय नमः । ओं प्रवहाय नमः । ओं

epal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmand

Public Domain. Digitization by eGangotri.Fundin

उध्वहाय नमः। ओं संवहाय नमः। ओं विवहाय नमः। ओं परिवहाय नमः। ओं परीवहाय नमः। ओं धरायै नमः। ओं अद्भ्यो नमः। ओं अग्नये नमः। ओं वायवे नमः। ओं आकाशाय नमः ॥ इति नेत्रांगपूजा ॥ अथास्त्रांगऋषिन्पूजयेत् ॥ ईशानादीशपर्यंतं वाह्यपंक्तौ कृष्णकोष्ठेषु ॥ ओं हिरण्यनाभाय नमः। ओं पुष्पंजयाय नमः। ओं द्रोणाय नमः। ओं शृंगिणे नमः। ओं बादरायणाय नमः। ओं अगस्त्याय नमः। ओं मनवे नमः। ओं कश्यपाय नमः। ओं धोम्याय नमः। ओं भृंगवे नमः। ओं वीतिहोत्राय नमः। ओं मधुच्छंदसे नमः। ओं वीरसेनाय नमः। ओं कृतावृष्णवे नमः। ओं अत्रये नमः। ओं मेधातिथये नमः। ओं अरिष्ठनेमये नमः। ओं अंगिरसाय नमः। ओं इन्द्रप्रमदाय नमः। ओं इध्मबाहवे नमः। ओं पिप्पलादाय नमः। ओं नारदाय नमः। ओं अरिष्ठसेनाय नमः। ओं अरुणाय नमः। ओं सनकाय नमः। ओं सनन्दनाय नमः। ओं सनातनाय नमः। ओं सनत्कुमाराय नमः। ओं कपिलाय नमः। ओं कर्दमाय नमः। ओं मरीचये नमः। ओं क्रतवे नमः ओं प्रचेतसे नमः। ओं उत्तमाय नमः। ओं दधीचये नमः। ओं श्राद्धदेवेभ्यो नमः। ओं गणदेवेभ्यो नमः। ओं विद्याधरेभ्यो नमः। ओं अप्सरोभ्यो नमः। ओं यक्षेभ्यो नमः। ओं रक्षेभ्यो नमः। ओं गंधर्वेभ्यो नमः। ओं पिशाचेभ्यो नमः। ओं गुह्यकेभ्यो नमः। ओं सिद्धदेवेभ्यो नमः। ओं औषधीभ्यो नमः। ओं भूतग्रामाय नमः। ओं चतुर्विध भूतग्रामाय नमः। (इत्यस्त्रांगपू०)

al Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathma

. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding:

अथ स्थापित देवता यथाक्रमं पूजयेत् ॥ गौरीतिलकमण्डले येदेवास्तान् सर्वानावाहयामि स्थापयामि ॥ एव मासनंसः ॥ पाद्यमर्घ्यमाचमनीयं स्नानं वस्त्रं यज्ञोपवीतं गन्धनक्षतान्पुष्प धूपदीपनैवेद्यं ताम्बुलं दक्षिणां मन्त्रपुष्पांजलीं च समर्पयामितिपू० ॥ इति हेमाद्रिकृत गौरीतिलक पूजाविधिः ॥

मण्डल पूजनान्तर वेदी के मध्य में ताम्बेका कलश, (कलश स्थापन विधि पृ० ६) से स्थापित कर, वरुणं साङ्गम् पूजयित्वा दुर्गायाः स्वर्णमयीं प्रतीमाम्र अग्न्युत्तारणपूर्वम् प्राणप्रतिष्ठाम् कृत्वा कलशोपरि सन्निधाय पट्टवस्त्रैराच्छाद्य श्रीसुक्तेन पुराणोक्त मन्त्रेण वा सम्पूज्य प्रार्थयेत् । खडग चक्रमिति० अक्षस्त्रमिति० घटाशूलेति ।

॥ सर्वतो भद्रमण्डल पूजा ॥

ॐ ब्रह्मयज्ञानम्प्रथमम्पुरस्ताद्विसीमतः सुरुचोव्वेनऽआवः । सबुध्न्याऽउपमाऽअस्यविष्ठाः सतश्चयोनिमसतश्चव्विवः । त्वं वै चतुर्मुखो ब्रह्मा सत्यलोके पितामहः । आगच्छ मण्डले चास्मिन् मम सर्वार्थ सिद्धये ॥ ॐ भूर्भुवः स्वः ब्रह्मन् इहागच्छ इहतिष्ठ ॥ ब्रह्मणे नमः ॥ ब्रह्माणमावाहयामि ॥ ॐ व्वय ँ सोमव्रते तव मनस्तनूषु विभ्रतः ॥ प्रजावन्तः सचेमहि । क्षीरोदार्णव सम्भूतं लक्ष्मीबन्धु निशाकरम् ॥ मण्डले स्थापयाम्यत्र सोमं सर्वार्थ सिद्धये ॥ ॐ भूः स्वः ई० ॥

ॐ तमीशानञ्जगतस्तस्थुषस्पतिन्धियञ्जिन्व मवसेहू महेव्वयम् ॥ पूषानोयथाव्वेदसामसद् वृधे रक्षिता पायुरदब्धः स्वस्तये ॥ ईशानी

epal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmand

Public Domain. Digitization by eGangotri.Fundin

पालकं श्रेष्ठं सर्वलोक भयंकरम् ॥ मण्डले स्थापयामीह ईशानं सर्व सिद्धये (ॐ भू० ईशान इ०) ॥ ॐ त्राता रमिन्द्रमविता रमिन्द्रᳬंहवेहवे सुहवᳬं शूरमिन्द्रम् ॥ ह्वयामि शक्रम्पुरुहूतमिन्द्रᳬं स्वस्तिनो मघवाधात्विन्द्रः सर्वलोकाधिकं श्रेष्ठं देवर्षीणांच पालकम् ॥ पूर्वदिक्पालकं देव राजं वैस्थापयाम्यहम् ॥ ॐ भू० इन्द्र इ० ॥ ॐ त्वन्नोऽअग्ने वरुणस्य विद्वान्देवस्य हेडोऽअवया सिसीष्ठाः ॥ यजिष्ठोव्वह्नितमः शोशुचानो व्विश्वेद्वेषाᳬंसि प्रमुमुग्ध्यस्मत् ॥ त्रिपादं मेषवाहं च त्रिशिखं च त्रिलोचनम् ॥ आग्नेय्यां स्थापयाम्यत्र ह्यग्निपुरुषमुत्तमम् ॥ ॐ भू० अग्ने इ० ॥ ॐ सुगन्तुपन्थाम्प्रदिशन्नऽएहि ज्योतिष्मध्येह्यजरन्नऽआयुः ॥ अपैतु मृत्युरमृतम्मऽ आगाद्वैवस्वतोनोऽ अभयंकृणोतुनः स्वाहाः ॥ अन्तकः सर्वलोकानां धर्मराज इति श्रुतः ॥ अतस्त्वां स्थापयाम्यत्र दक्षिणस्यां स्थिरो भव ॥ ॐ भू० यमः इ० ॥ ॐ आसुन्वन्त मयजमानमिच्छस्तेनस्येत्यामन्विहि तस्करस्य ॥ अन्यमस्मदिच्छ सातऽइत्यानमोदेविनिऋते तुभ्य मस्तु ॥ नैऋत्यां वसतिर्यस्य घोररूपी सदाहि यः ॥ निऋतिं स्थापयाम्यत्र नैऋत्यांमण्डले शुभे ॥ ओं भू० निऋते इ० ॥ ॐ इमम्मे व्वरुण श्रुधीहवमद्या च मृडय। त्वामवस्युराचके ॥ अपाम्पतिं पाशधरं यादसाम्पत्तिमुत्तमम् ॥ वरुणं स्थापयाम्यत्र वारुण्यां मण्डले शुभे ॥ ओं भू० वरुण इ० ॥ ॐ आनोनियुद्भिः शतिनीभिरद्ध्वरᳬं सहस्त्रिणी भिरुपयाहि यज्ञम् ॥ वायोऽअस्मिन्त्सवने मादयस्व यूयम्पातस्वस्तिभिः सदानः आशुगं स्पर्शबोधं च गन्धवाहं सुशीतलम् ॥ मण्डले स्थापयामीह

al Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathma

. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding:

वायव्यां वायुमुत्तमम् ॥ ओं भू० वायो इ० ॥ ॐ व्वसोः पवित्र-मसि शतधारं व्वसोः पवित्रमसि सहस्रधारम् ॥ देवस्त्वा सविता पुनातुव्वसोः पवित्रेण शतधारेण सुप्त्वाकामधुक्षः ॥ धरो ध्रुवश्च सोमश्चाप्यांशुगश्चानिलोऽनलः ॥ प्रत्यूषश्च प्रभासश्च वस्वष्टक-मिह स्थिरम् ॥ ओं अष्टौवसव इ० ॥ ॐ नमस्ते रुद्रमन्न्यवऽ उतोतऽइषवे नमः ॥ बाहुभ्यामुतते नमः ॥ त्रिनेत्राय त्रिरूपाय त्रिजटाय महात्मने नमस्कृत्वा स्थापयामि मराडलोपरिमध्यतः ॥ ओं भू० रुद्र इ० ॥ ॐ अदितिर्द्यौरदितिरन्तरिक्ष मदितिर्म्माता सपिता सपुत्रः विश्वेदेवाऽअदितिः पञ्चजनाऽअदितिर्ज्जात मदिति र्ज्जनित्वम् ॥ आदित्यं भास्करं चैव प्रभाकर दिवाकरौ ॥ सूर्य्यं ग्रहपतिंचैव ब्रध्नं तेजोहरिद्धरिम् ॥ ओं भू० आदित्या इ० ॥ ॐ अश्विना तेजसा चक्षुः प्राणेन सरस्वती बीर्य्यम् ॥ व्वाचेन्द्रो वलेनेन्द्राय दधुरिन्द्रियम् ॥ अश्विनौदेववैद्यौच सर्गस्थित्यन्त कारकौ ॥

मण्डले स्थापयित्वातु पूजयाभीष्ट सिद्धये । ओं भू० अश्विनौ इ० । ओं विश्वेदेवासऽआगत श्रृणुतामऽइमठं हवम् ॥ एदम्वर्हिन्निषी-दत ॥ दैवे कर्माणी पित्र्ये च ये मुख्यास्सर्वदा शुभा ॥ मण्डले स्थापयामीह सुखानुष्ठान सिद्धये ॥ ओं भू० विश्वेदेवा इ० ॥ ओं आयन्तुनः पितरः सौत्यासौऽग्निष्वाताः पथिभिर्देवयानैः ॥ अस्मिन् यज्ञे स्वधयामदन्तोऽधि ब्रुवन्तुतेवन्त्वस्मान् ॥ यदृच्छया पर्यटति यक्षराजा महीतले ॥ कौतुकं प्रेक्षितुं चास्मिन् मण्डले सन्तु सुस्थिरा ॥ ओं भू० पितर इ० ॥ ओं सप्तऋषयः प्रतिहिताः

epal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmand

Public Domain. Digitization by eGangotri.Fundin

शरीरे सप्त रक्षन्ति सदमप्रमादम् ॥ सप्तापः स्वपतो लोकमीयुस्तत्र जागृतोऽ अस्वप्नजौसत्र सदौचदेवौः ॥ अनन्तो वासुकिश्चैव कालियो मणिभद्रकः शंखश्च शंखपालश्च कर्कोटक धनञ्जयौ ॥ धृतराष्ट्रश्च नागेशाः प्रगृह्णन्तु ममार्चनम् ॥ ॐसप्त ऋषयः इ० ॥ ॐ भूतायत्वा नारातयेस्वरभिविक्ख्येषन्दृ॑ठ हन्त्यान्दुर्य्याः पृथिव्या मुर्व्वन्तरिक्ष मन्नवेमि पृथिव्यास्त्वा नाभौ सादयाम्यदित्याऽउप- स्थेग्ने हव्यठ॑ रक्ष । उर्वशी प्रमुखाः सर्वास्त्ववेंश्याः शक्र पूजिताः । गन्धर्वैश्च सहायास्तुमण्डलेऽस्मिन्सुशोभनाः ॥ ॐ भूतानि इ० ॥ नमोस्तु सर्प्पेभ्यो येकेच पृथिवी मनु । येऽअन्तरिक्षे ये दिवि- तेभ्यः सर्प्पेभ्यो नमः ॥ त्र्यम्बकं त्रिपुरुषं नीलकण्ठं सदाशिवम् ॥ मण्डले स्थापयामीह सुखानुष्ठान सिद्धये ॥ ॐ भू० सर्प्पा इ० ॥ ॐ गन्धर्वस्त्वा व्विश्वावसुः परिदधातु विश्वस्यारिष्ट्यै यजमा- नस्य परिधिरस्यग्निरिडऽईडितः ॥ इन्द्रस्य व्वाहुरसि दक्षिणो विश्वस्यारिष्ट्यै यजमानस्य परिधिरस्यग्निरिडऽईडितः ॥ मित्रा व्वरुणौ त्वोत्तरतः परिधत्तान्ध्रुवेणधर्म्मणा व्विश्वस्यारिष्ट्यै यजमानस्य परिधिरस्यग्निरिडऽईडितः ॥ षडाननं चतुर्हस्तं स्कन्धं गौरीसुतं शुभम् ॥ इहैव पूजयिष्यामि सर्वकामार्थ सिद्धये ॥ ॐभू० गन्धर्वा इ० ॥ ॐ अयम्पुरोहरिकेशः सूर्यरश्मिस्तस्य रथगृत्सश्च रथौजाश्च सेनानिग्रामण्यौ॥पुञ्जिकस्थलाचक्रतुस्थला चाप्सरसौदङ्- क्ष्णवः पशवोहेतिः पौरुषेयोव्वधः प्रहेतिस्तेभ्यो नमोऽअस्तुतेनोऽ- वन्तुतेनो मृडयन्तुते यश्चनोद्वेष्टि तमेषाञ्जम्भेदध्मः ॥ शिवद्वार गतस्त्वं च शिववाहन मुत्तमम् ॥ पार्वत्यां प्रीतिकृन्नित्यमिहागच्छ

al Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathma

. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding:

स्थिरोभव ॥ ॐ भू० अप्सरस इ० ॥ ॐ यदक्रन्दः प्रथमञ्जायमानऽउद्यन्तसमुद्रादुतवा पुरीषात् ॥ श्येनस्य पक्षा हरिणस्यबाहू उपस्तुत्यम्महिजातन्तेऽअर्व्वन् ॥ अदिति देवमाता त्वं दक्षपुत्री सुशोभना ॥ मण्डलेऽस्मिन् समागच्छ यावत्पूजा स्थिरोभव ॥ ॐ भूस्कन्ध इ० ॥ ॐ आशुः शिशानो वृषभोनभीमोघनाघनः क्षोभणश्चर्षणीनाम् । सङ्क्रन्दनो निमिषऽएकवीरः शतᳫं सेनाऽअजयत्साकमिन्द्रः ॥ दक्षोऽसि सर्वकार्येषु महायज्ञकरप्रियः ॥ ऋषिश्च सर्वदा दक्षमण्डलेस्मिन् स्थिरो भव ॥ ॐ भू० नन्दिन् इ० ॥ ॐ कार्षिरसि समुद्रस्यत्वाक्षित्याऽउन्नयामि ॥ समापोऽअद्भिरग्मत समोषधीभिरोषधीः तामग्निवर्णां तपसाज्वलन्तीं सर्वदा शुभाम् ॥ भक्तानां वरदानित्यां दुर्गामावाहयांम्यहम् ॥ ॐ भू० शूल महाकालौ इ० ॥ ॐ स्वैर्द्दक्षैर्द्दक्षपिते हसीहदेवानाᳫं सुम्नेवृहतेरणाय ॥ पितेवैधि सूनवऽआशुषेवास्वावेशा तन्नवासं व्विशस्वाश्विनाद्ध्वर्य्यू सादयतामिहत्वा ॥ कृष्णाय गोपीनाथाय चक्रिणे मुरवैरिणे नमस्तुभ्यं जगद्धातर्मण्डलेऽस्मिन् स्थिरोभव ॥ ॐ भू० दक्षादय इ० ॥ ॐ सदसस्यपतिमद्भुतं प्रियामिन्द्रस्य काम्यम् । सनिम्मेधामयासिषᳫं स्वाहा ॥ ॐ जयन्ती मङ्गलाकाली भद्रकाली कपालिनी ॥ दुर्गाक्षमाशिवाधात्री स्वाहा स्वधा नमोऽस्तुते ॥ ॐ भू० दुर्गे इ० ॥ ॐ इदम्विष्णु व्विचक्रमेत्रेधा निदधेपदम् समूढमस्यपाᳫंसुरे स्वाहा ॥ मृत्युरोगान्तकान्दूतान् प्रेष्यान्प्राणहरान्गणान् ॥ मण्डले स्थापयामीह पूजार्थं लोकनाशकान् ॥ ॐ विष्णो इ० ॥ ॐ अग्नेव्वाजजिद्वा जन्त्वा सरिष्यन्तं व्वाजजितᳫं

epal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmand

Public Domain. Digitization by eGangotri.Fundin

सम्मार्जितम् ॥ नमो देवेभ्यः स्वधा पितृभ्यः सुयमेमेभूयास्तम् ॥ कुंकुमाभंसदानन्दं भक्त सङ्कट नाशनम् ॥ चतुर्बाहुं त्रिनेत्रंच मण्डले स्थापयाम्यहम् ॥ ॐ भू० स्वधे इ० ॥ ॐ अन्यबापोऽर्द्ध मासानामृश्योमयूरः सुपर्णस्ते गन्धर्व्वाणामपामुद्रो मासाङ्कश्य-पोरोहित् कुण्ड्रणाची गोलतिकाते ऽप्सरसो मृत्यवेऽसितः ॥ पावना सर्वलोकानां निमग्नाः शुद्धिकारकाः सर्वपापहराः श्रेष्ठा मण्डले स्थापयाम्यहम् ॥ ॐ भू० मृत्यो इ० ॥ ॐ ककुभᳩ रूप वृषभस्य रोचते बृहच्छुक्रः शुक्रस्यपुरोगाः सोमः सोमस्य पुरोगाः यत्ते सोमादाभ्यन्नामजागृवि तस्मैत्वा गृहणामि तस्मैतेसोमसोमाय स्वाहा ॥ ॐ भू० रोगा इ० ॥ ॐ गणान्त्वा० ॐ भू० वसु विघ्नौ इ० ॥ ॐ अपोऽअद्यान्वचारिषᳩ रसेन समसृद्महि पयस्वानग्नऽ आगमन्तम्मासᳩ सृजव्वर्च्चसा प्रजयाच धनेनच ॥ ॐ भू० अप इ० ॥ ॐ बृहदिन्द्रायगायत मरुतोवृत्रहन्तमम् ॥ येनज्योतिरजनयन्नृता वृधो देवन्देवायजागृवि सुगन्धिनश्च शैलाग्रामन्दमन्दवहाः सदा ॥ तानहं स्थापयामीह मरुतो मण्डल शुभ ॥ ॐ भू० मरुत इ० ॥ महीद्यौः पृथिवीचनऽ इमं यज्ञम्मि-मक्षतम् ॥ षिपृतान्नोभरीममिः ॥ पृथिव्यां धार्यते विश्वंदुर्ग्रहं सागरैर्नरैः अतस्त्वां स्थापयामीह ब्रह्मणो मण्डलेपदे ॥ ॐ भू० पृथिव्यो इ० ॥ ॐ नदीभ्यः पौञ्जिष्ठ मृत्तिकाभ्यो नैपादम्पुरुष व्याघ्राय दुर्म्मदङ्गन्धर्व्वाप्सरोभ्यो व्रातम्प्रयुग्भ्यऽउन्मतᳩ सर्प्पदेव जनेभ्यो प्रतिपदमयेभ्यः कितवमोर्य्यतायाऽअकितवम्पिशाचेभ्यो विदलकारीं यातुधानेभ्यः कण्टकीकारीम् ॥ गंगे च यमुने चैव

al Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathma

. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding:

गोदावरी सरस्वती ॥ नर्मदे सिन्धुकावेरी मण्डले स्थापयाम्यहम् ॥ ॐ भू० नद्य इ० ॥ ॐ समुद्रोसि नभस्वानार्द्रदानुः शम्भूर्म्मयो भूरभिमावाहि स्वाहा ॥ मारुतोऽसि मारुताङ्गणः शम्भूर्म्मयो भूरभिमाव्वाहि स्वाहा वस्युरसिटुवस्वाञ्छम्भूर्म्मयो भूरभिमाव्वाहि स्वाहा । समुद्राः सर्वतोयेषु श्रेष्ठा वैहरिवल्लभाः ॥ मण्डले स्थापयामीह तान्यदीशान्सुखाप्तये ॥ ॐ भू० समुद्रा इ० ॥ ॐ पर्व्वतस्य व्वृषभस्य पृष्ठान्नावश्चरन्ति स्वसिचऽइयानाः ॥ ताऽआववृत्रन्नधरागुदक्ताअहिम्बुध्न्य मनुरीयमाणाः ॥ व्विष्णोः व्विक्क्रमणमसि व्विष्णो व्विक्रान्तमसि व्विष्णोः क्रान्तमसि कर्णिका परिधौ ॥ ॐ भू० मेरवे नमः मेरु० ॥ अथ सोमादिक्रमेण ॥ ॐ गणानांत्वा० ॥ सत्त्ववाह्यपरिधौ ॐ भू० गदायै नमः ॥ गदां ॥ ॐ त्रिᳫंशद्धाम व्विराजति व्वाक्क् पतङ्गाय धीयते ॥ प्रतिवस्तोरह द्युभिः ॥ ईशान्याम् ॥ ॐ भू० त्रिशूलाय० ॥ त्रिशूलं ॐ महाँ२ इन्द्रो व्रज्र हस्तः षोडशो शर्म्मयच्छतु हन्तु पाप्मानं योऽस्मान्द्र द्वेष्टि ॥ उपयामगृहीतोऽसि महेन्द्रायत्त्वैषते योनिमहेन्द्रायत्वा ॥ पूर्वे ॥ ॐ भू बज्राय नमः ॥ बज्र मा० ॥ ॐ वसुचमे वसतिश्चमे कर्म्मचमे शक्तिश्चमेऽर्थश्चमे एमश्चमे इत्याचमे यज्ञेन कल्पताम् ॥ आग्नेय्याम् ॥ ॐ भू० शक्तये नमः ॥ शक्ति मा० ॥ ॐ इडऽएह्यदितऽएहि काम्म्याऽएत ॥ मपिवः काम धरणं भयात् । दक्षिणे ॥ ॐ भू० दण्डाय नमः ॥ दण्डं ॥ खड्गो वैश्वदेवः श्वाकृष्णः कृर्णो गर्दभस्तरक्षुस्ते रक्षसामिन्द्राय सूकरः सिᳫंहो मारुतः कृकलासः पिप्पकाशकुनिस्ते शरव्यायै विश्वेषां देवानां

epal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmand

Public Domain. Digitization by eGangotri.Fundin

पृषतः ॥ नैऋत्याम् ॥ ॐ भू० खड्गाय नमः ॥ खड्गं० ॥ ॐ उदुत्तमं व्वरुणपाश मस्म्मदवाधमं विमध्यमᳬश्रथाय अथाव्वयमादित्य व्रतेतवानागसोऽअदितयेस्याम ॥ पश्चिमे ॥ ॐ भू पाशाय नमः ॥ पाशं ॥ ॐ अᳬशुश्चमे रश्मिश्चमेऽदाब्भ्यश्चमेऽधिपतिश्चमऽउपाᳬ शुश्चमेऽन्तर्य्यामश्चमऽऐन्द्रवायवश्चमे मैत्रावरुणश्चमऽआश्विनश्चमे ष्प्रतिप्रस्थानश्चमे शुक्रश्चमे मन्थीचमे यज्ञेन कल्पताम् ॥ वायव्याम् ॥ ॐ भू० अङ्कशाय नमः ॥ अङ्कुशं ॥ ॐ आयं गौःपृश्निरक्रमी दसदन्मातरंपुरः ॥ पितरञ्च त्प्रपन्त्स्वः तद्वाह्ये उत्तरे रक्तपरिधौ सोमादिः ॥ ॐ भू० गौतमाय नमः ॥ गौतमं ॥ ॐ अयंदक्षिणा व्विश्वकर्मा तस्यमनो व्वैश्वकर्म्मणं ग्रीष्मोमानसस्त्रिष्टुब्ग्रैष्म्मी त्रिष्टुभः स्वारᳬस्वारादन्तर्य्यामोन्तर्य्या मात्पञ्चदशः पञ्चदशाद्वृहद्भरद्वाजऽऋषिः प्प्रजापति गृहीतया त्वयामनो गृहन्तमि प्रजाब्भ्यः ॥ ईशान्याम् ॥ ॐ भू० भरद्वाजाय नमः ॥ भरद्वाज० ॥ ॐ इदमुत्तरात्स्वस्तस्य श्श्रोत्रᳬ सौवᳬशरच्छ्रौ त्र्यनुष्टुप् शारद्यनुष्टुभऽऐडमैडन्नमन्थी मन्थिनऽ एक विᳬशऽएकविᳬ शाद्वैराजं व्विश्वामित्रऽऋषिः प्प्रजापति गृहीतया त्वयाश्श्रोत्रं गृह्णामि प्प्रजाब्भ्यः ॥ पूर्वे ॥ ॐ भू० विश्वा मित्राय नमः ॥ विश्वामित्रं ॥ ॐ त्र्यायुषं ज्जमदग्नेः कश्यपस्य त्र्यायुषम् ॥ यद्देवेषु त्र्यायुषं तन्नोऽ अस्तुत्र्यायुषम् ॥ आग्नेय्याम् ॥ ॐ भू० कश्यपाय नमः ॥ कश्यपं ॥ ॐ अयं पश्चाद्विश्व व्यचास्तस्यचक्षु व्वैश्वव्यचसं वर्षाश्चाक्षुष्यो जगती व्वार्षीजगत्पाऽऋक्समममृक्समाच्छुक्रः शुक्रात्सप्तः दशः सप्त-

al Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathma

. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding:

दशाद्द्वैरूपं ज्जमदग्निऋर्षिः प्प्रजापति गृहीतया त्वया चक्षुग्गृ-
ह्णामि प्प्रजाब्भ्यः ॥ दक्षिणे ॥ ॐ भू० जमदग्नये नमः ॥
जमदग्नि० ॥ ॐ अयं पुरो भुवस्तस्य प्प्राणो भौवायनो व्वसन्तः
प्प्राणायनो गायत्री व्वासन्ती गायत्र्यै गायत्रं गायत्त्रादुपाᳫं
शुरुपाᳫंशोस्त्रिवृत्त्रिवृतो रथन्तरं व्वसिष्ठऽऋषिः प्प्रजापति
गृहीतया त्वया प्प्राणं गृह्णामि प्प्रजाब्भ्यः ॥ नैऋत्याम् ॥ ॐभू०
वसिष्ठाय नमः ॥ वसिष्ठं ॥ ॐ अत्र पितरो मादयद्ध्वं य्यथाभा-
गमावृषायद्ध्वम् ॥ अमीमदन्त पितरो यथाभागमावृषायिषत ॥
पश्चिमे ॥ ॐ भू० अत्रये नमः ॥ अत्रि ॥ ॐ तं पत्नीभिरनु-
गच्छेमदेवाः पुत्रैर्भ्रातृभिरुतवा हिरण्यैः नाकं गृभ्णानाः सुकृतस्य
लोके तृतीये पृष्ठेऽअधिरोचने दिवः ॥ वायव्याम् ॥ ॐ भू० अरु-
न्धत्यै नमः ॥ अरुन्धतीं० ॥ तद्वाह्येकृष्णपरिधौ पूर्वादिक्रमेण ॥
ॐ आदित्यै रास्स्नासीन्द्राण्याऽउष्णीषः ॥ पूषासि धर्म्मायदीष्व
॥ पूर्वे ॥ ॐ भू० ऐन्द्यै नमः ॥ ऐन्द्रीं० ॥ ओं अम्बेऽअम्बि० ॥
आग्नेय्याम् ॥ ओं भू० कौमार्यै नमः ॥ कौमारीं० ॥ ओं इन्द्रा-
याहिधियेषितो व्विप्प्रजूतः सुतावतः ॥ उपब्रह्माणि व्वाग्घतः ॥
दक्षिणे ॥ ओं भू० ब्राह्मयै नमः ॥ ब्राह्मीमा० ॥ ओं इन्द्रस्य
क्रोडोऽदित्यै पाजस्यंदिशां जत्रवोऽदित्यै भसज्जीमूतान्हृदयौपशे
नान्तरिक्षं पुरीततानभऽउदर्य्येण चक्रवोको मतस्नाभ्यां दिवं
व्वृक्काब्भ्यां गिरीन्प्लाशिभिरुपलान्प्लीन्हा व्वल्मीकान्क्लोमभि-
र्ग्लौभि र्ग्गुल्म्मान्हिराभिः स्त्रवन्तीर्ह्रदान्कुक्षिब्भ्याᳫंसमुद्रमुद-
रेण वैश्वानरं भस्म्मना ॥ नैऋर्त्याम् ॥ ओं भू० वाराह्यै नमः

epal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmand

Public Domain. Digitization by eGangotri.Fundin

॥ वाराहीम० ॥ ओं अम्बेऽअम्बिकेऽम्बालिके नमानयतिकश्चन ॥ ससस्त्यश्वकः सुभद्रिकां काम्पीलवासिनीम् ॥ पश्चिमे ॥ चामुण्डायै नमः ॥ चामुण्डा मा० ॥ ओं आप्यायस्व समेतुते विश्वतः सोमवृष्ण्यम् ॥ भवा व्वाजस्य सङ्गथे ॥ वायव्ये ॥ ओं भू० वैष्णव्यै नमः ॥ वैष्णवी मा० ॥ ओं याते रुद्रशिवातनूरघोराऽपापकाशिनी ॥ तयानस्तन्न्वा शन्तमया गिरिशन्ताभिचाकशीहि ॥ उत्तरे ॥ ओं भू० माहेश्वर्यै नमः ॥ माहेश्वरी मा० ॥ ओं समक्ख्ये देव्व्याधिपा सन्दक्षिणयोरुचक्षसा ॥ मामऽआयुःप्प्रमोषीम्मोऽअहंतव व्वीरं व्विदेयतवदेवि सन्दशि ॥ ईशान्याम् ॥ ओं भू० वैनायक्यै नमः ॥ वैनायकीं ॥

अरुन्धतीं० ॥५२॥ ऐन्द्र्यं ऐन्द्री ॥५३॥ कौमार्यै० कौमारी ॥५४॥ ब्राह्म्यै० ब्राह्मी ॥ ५५॥ वाराह्यै० वाराही ॥५६॥ चामुण्डायै० चामुण्डामा० ॥५७॥ वैष्णव्यै० वैष्णवीं ॥५८॥ कौवेर्यै० कौवेरी ॥५९॥

एवं सर्वतोभद्रमण्डले ब्रह्मापि देवता आवाह्य गन्धादिभिः संपूज्य ॥ तदुपरि ६ पृष्ठोक्त विधिना कलशं संस्थाप्य वरुणं सांगं पूजयित्वा दुर्गायाः स्वर्णमयीं प्रतिमां अग्न्युत्तारणपूर्वकं प्राणप्रतिष्ठां कृत्वा कलशोपरि सन्निधाय पट्टवस्त्रैराच्छाद्य श्रीसुक्तेन पुराणोक्त मन्त्रेण वा संपूज्य प्रार्थयेत् ।

॥ अथाग्न्युत्तारण विधिः ॥

तत्र तावत्साचार्यो यजमानः ॥ देशकालौ संकीर्त्य अस्या स्वर्णमयी श्रीदुर्गा प्रतिमायाः घटनादिदोषपरिहारार्थं अग्न्युत्तरण पूर्वकं

al Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathma

. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding:

प्राण प्रतिष्ठां करिष्ये मूर्त्तिं घृतेनाभ्यज्य ॥ तदुपरि दुग्धमिश्रित जलधारां कुर्यात् पातयेद्वा ॥

॥ अग्न्युत्तारण मन्त्राः ॥

ओं समुद्रस्यत्वा व्वकयाग्ने परिव्ययामसि ॥ पावकोऽअस्मभ्यᳬं शिवोभव ॥१॥ ओं हिमस्यत्वा जरायुणाग्ने परिव्ययामसि ॥ पावकोऽअस्मभ्यᳬं शिवोभव ॥२॥ ओं उपज्मन्नुपवेतसेवतर नदीष्वा ॥ अग्नेपित्तमपामसि मण्डूकिताभिरागहि सेमन्नो यज्ञं पावक वर्णᳬं शिवंकृधि ॥३॥ ओं अपामिदंन्ययनᳬं समुद्रस्य निवेशनम् ॥ अन्यांस्तेऽअस्मत्तपन्तु हेतयः पावको अस्मभ्यᳬं शिवोभव ॥४॥ ओं अग्नेपावकरोचिषामन्द्रयादेव जिह्वया ॥ आदेवान्वक्षियक्षिच ॥५॥ ओं सनः पावकदी दिवोग्नेदेवां२ऽ इहावह ॥ उपयज्ञᳬं हविश्चनः ॥६॥ ओं पावक या याश्चियन्त्या कृपाक्षामनूरुरुचऽउषसोनु भानुना ॥ तूर्वन्नयामन्नेतशस्यनूरणऽ आयोघृणेनततृषाणोऽअजरः ॥७॥ ओं नमस्ते हरसेशोचिषे नमस्तेऽअस्त्वर्चिषे अन्यांस्ते अस्मत्तपन्तुहेतयः पावकोअस्मभ्यᳬं शिवोभव ॥८॥ ओं नृषदेव्वेडप्सुषदेव्वेड्वर्हिषदेव्वेड्वनसदेव्वेड स्वर्विदेवेट ॥९॥ ओं येदेवादेवानां यज्ञिया यज्ञियानाᳬं संवत्सरी-णामुपभागमासते ॥ अहुतादोहविषोयज्ञेअस्मिन्त्स्वयं पिवन्तु मधुनोघृतस्य ॥१०॥ ओं ये देवादेवेष्वधि देवत्वमायन्ये ब्रह्मणः पुरऽएतारोऽअवस्य ॥ येभ्योनऽऋते पवतेधाम किञ्चननतेदिवोन पृथिव्याऽअधिस्नुषु ॥ ११॥ ओं प्राणदाऽ अपानदा व्यानदा

epal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmand

Public Domain. Digitization by eGangotri.Fundin

स्त्वचोंदा वरिवोदाः ॥ अन्याँस्तेऽअस्मत्तपन्तुहेतयः पावकोऽ अस्मभ्यँ शिवोभव ॥१२॥

॥ ततः प्राण प्रतिष्ठां कुर्यात् ॥

ॐ आं ह्रीं क्रों यं रं लं त्वं शं पं सं हं लं क्षं हं सः सोहम् अस्याः श्रीदुर्गा प्रतिमायाः प्राणा इह प्राणाः ॥ ॐ आं ह्रीं क्रों यं रं लं वं शं पं सं हं लं क्षं हं सः सोहं अस्याः श्रीदुर्गा प्रतिमाया जीव इहस्थितः ॥ ओं आं ह्रीं क्रों यं रं लं वं शं पं सं हं लं क्षं हं सः सोहम् अस्याः श्रीदुर्गा प्रतिमाया सर्वेन्द्रियाणि वाङ्मनस्त्वक् चक्षुः श्रोत्र जिह्वाघ्राणपाणिपाद पायूपस्थानि इहै-वागत्य सुखंचिरन्तिष्ठन्तु स्वाहा ॥ ओं मनोजूतिजुर्षतामाज्यस्य वृहस्पतिर्यज्ञ मिमतन्तनो त्वरिष्टं यज्ञँसमिमन्दधातु ॥ विश्वे देवासऽइहमादयन्तामो३ प्रतिष्ठ एषवै प्रतिष्ठा नामयज्ञा यत्रैतेन यज्ञेन यजन्ते सर्वमेव प्रतिष्ठितम्भवति ॥ इति प्रतिष्ठाप्य ॥

॥ अथ नेत्रोन्मीलनम् ॥

ओं वृत्रस्यासि कनीनकश्चक्षुर्दाऽअसिचक्षुर्मेदेहि गंधादि पञ्चोप-चारान्दत्वा संस्कार सिद्धये षोडषप्रणवावृर्त्ति कुर्यात् ॥ अनेन अस्याः श्रीदुर्गा प्रतिमायाः गर्भाधानादि षोडश संस्कारान्संपाद-यामि ॥ इति वदेत् ॥ ततः श्रीदुर्गा प्रतिमां प्रधान कलशोपरि धृत्वा षोडशोपचारै पञ्चोपचारैर्वा पूजयेत् ॥

॥ फूल हाथोंमें लेकर अपने हृदय में ध्यान करना ॥

ओं जटाजूट समायुक्ता मर्द्धेन्दुकृतलक्षणाम् ॥ लोचनत्रय संयु-क्ताम्पद्मेन्दु सदृशाननाम् ॥१॥ अनसीपुष्पवर्णाभां सुप्रतिष्ठां

al Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathma

. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding:

सुलोचनाम् ॥ नवयौवन संपनां सर्वाभरण भूषिताम् ॥२॥ सुचारु वदनां तद्वत्पीनोन्न तपयोधराम् ॥ त्रिभङ्गस्थान संस्थान महिषासुर मर्दिनीम् ॥३॥ त्रिशूलं दक्षिणेदद्यात्खड्गंचक्रं क्रमादधः ॥ तीक्ष्ण वाणं तथा शक्ति वामतोपि निवोधत ॥४॥ खेटकं पूर्ण चापंच पाशमं कुशमूर्द्ध्वजम् ॥ घंटां वा परशुं वापिवामतः सन्निवेदयेत् ॥५॥ अधस्तान्महिषं तद्वदद्विशिरस्कं प्रदर्शयेत् शिरश्छेदोद् भवंतद्वद्दानवं खड्गपाणिनम् ॥६॥ हृदिशूलेन निर्भिन्नं निर्दयन्त्रविभूषितम् ॥ रक्तरक्तीकृताङ्गश्च रक्तविस्फारितेक्षणम् ॥७॥ वेष्ठितं नागपाशेन भ्रुकुटी भीषणाननम् । सपाश वामहस्तेन धृतकेशं च दुर्गया ॥८॥ वमद्रुधिरवक्त्रश्च देव्याः सिंहं प्रदर्शयेत् । देव्यास्तु दक्षिणं पादं समं सिंहोपरि स्थितम् ॥९॥ किंचिदूर्ध्वं तथा वाममंगुष्ठो महिषोपरि । स्तूय मानश्च तद्रूपममसन्निवेशयेत् ॥१०॥ उग्रचण्डा प्रचण्डा च चण्डोग्रा चण्डनायका । चण्डाचण्डवतीचैव चंडरूपातिचण्डिका ॥११॥ आभिः शक्तिभिरष्टाभिः सततं परिवेष्ठितम् । चिन्तयेत्सततं देवीं धर्मकर्मार्थ मोक्षदाम् ॥१२॥ सिंहादुथाय कोपात् धधड् धड् धड़ा धावमाना भवानी । शत्रूणां शस्त्रपातै ततड्तड् तड़ात्रोटयन्ती शिरांसि । तेषां रक्तंपिवन्ति घूघूट घूटघूटाघोटयन्ती पिशश्चान् । तृप्तास्तृप्ता हसन्ति खखल खलखला शाम्भवीवः पुनातु ॥१३॥

ध्यानम्

ॐ महिषघ्नां महादेवीं कुमारीं सिंहवाहिनीम् । दानवांस्तर्जयन्तीश्च सर्वकाम दुघांशिवाम् ॥१॥ ध्यायामि मनसा दुर्गां नाभि

epal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmand

Public Domain. Digitization by eGangotri.Fundin

मध्ये व्यवस्थिताम्। आगच्छ वरदे देवि दैत्यदर्प निपातिनी ॥२॥ पूजाँ गृहाण सुमुखि नमस्ते शङ्करप्रिये। सर्वतीर्थमयंवारि सर्वदेव समन्वितम् ॥३॥ इमं घटं समागच्छतिष्ठ देवगणैः सह। दुर्गेदेवि समागच्छ सान्निध्यमिह कल्पय ॥४॥ बलि पूजां गृहाणत्वमष्टाभिः शक्तिभिः सह। अस्मिन् घटे समागच्छ स्थितिं मत्कृपया कुरु ॥५॥ रक्षां कुरु सदा भद्रे विश्वेश्वरि नमोस्तुते। एह्येहि दुर्गे दुरतौघनाशिनि प्रचण्ड दैत्योघ विनाश कारिणी। उमे महेशार्द्धशरीर धारिणी स्थिरा भवत्वं मम यज्ञ कर्मणि एहि दुर्गे महाभागे रक्षार्थं मम सर्वदा। आवाहयाम्यहं देवि सर्वकामार्थ सिद्धये॥

॥ अथ वेदोक्त दुर्गा पूजन विधिः ॥

अथ आवाहनम्

ॐ हिरण्यवर्णां हरिणीं सुवर्ण रजतस्रजां। चन्द्रां हिरण्मयीं लक्ष्मीं जातवेदो ममावह॥ आगच्छेहमहादेवि सर्वसम्पत्प्रदा-यिनि। यावद्व्रतं समाप्येत तावत्वं सन्निधोभव॥ इत्यावाहनम्॥

आसनम्

ॐ तां म आवह जातवेदो लक्ष्मीं मनपगामिनीम्। यस्यां हिरण्यं विन्देयं गामश्वं पुरुषानहम्॥ दुर्गेदेवि सुरेशानि ज्ञान मार्गप्रदे शिवे। आसनं मणिभूषाढ्यं गृहाणत्वं सुरेश्वरि॥ इत्यासनम्॥

पाद्यम्

ॐ अश्वपूर्णां (र्वां) रथ मध्यां हस्तिनाद प्रमोदिनीम्। श्रियं देवी मुपह्वये श्रीर्मादेवी जुषताम्॥ कात्यायनि महादुर्गे चामुण्डे

al Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathma

. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding:

शङ्करप्रिये। पाद्यं गृहाण चेदेवेशि भद्रकाली नमोस्तुते॥

अर्घ्यम्

ॐ कांसोस्मितां हिरण्य प्राकारामाद्रीं ज्वलन्तीं तृप्तां तर्पयन्तीम्। पद्मेस्थितां पद्मवर्णां तामिहोपह्वये श्रियम्॥ जगत्पूज्ये त्रिलोकेशि सर्वदानवभंजिनि। अष्टांगार्घं गृहाणत्वं देवि विश्वार्ति हारिणि॥ इत्यर्घम्॥

मधुपर्कम्

ॐ मधुव्वाता ऋतायते मधुक्षरन्ति सिन्धवः। माध्वीर्नः सन्त्वोषधीः॥ दधि मधु घृत समायुक्तं पात्र युग्मसमन्वितम्। मधुपर्कं गृहाणत्वं शुभदा भवशोभने॥ इति मधु०॥

आचमनम्

ॐ चन्द्रां प्रभासां यशसा ज्वलन्तीं श्रियं लोकेदेव जुष्टामुदारां। तां पद्मनेमिं शरणमहंप्रपद्ये अलक्ष्मीर्मेनश्यतां त्वां वृणे॥ पूरितं स्वर्ण पात्रे च गांगेयं निर्मलं जलम्। ददाम्याचमनं तुभ्यं स्वस्ति कुरू महेश्वरि॥ इत्याचमनम्॥

स्नानम्

ॐ आदित्यवर्णे तपसोधिजातो वनस्पतिरतव वृक्षोऽथ विल्वः तस्य फलानि तपसानुदन्तु मायान्तरायाश्च वाह्या अलक्ष्मीः॥ ज्ञान मूर्ते भद्रकालि दिव्यमूर्ते सुरेश्वरी। स्नानं गृहाणदेवेशि तीर्थोदक विभूषितम्॥ इति स्नानम्॥

पुनराचमनीयम्

ॐ उच्छिष्टोप्य शुचिर्वापि यस्य स्मरणमात्रतः। शुद्धिमाप्नोति

epal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmand

Public Domain. Digitization by eGangotri.Fundin

तस्मै ते पुनराचमनीयम् । स्नानवस्त्रोपवीतान्तेऽपितत्स्मृतम् ॥

सुगन्धित तैल व इत्र मलकर स्नान कराना

ॐ अᳬंशुनातेऽअᳬंशुः पृच्यतां परुषापरुः ॥ गन्धस्तेसोमभवतु मदायरसोऽअच्युतः ॥ स्नेहं गृहाण स्नेहेन लोकेश्वरि महानघे । सर्वलोकेषु शुद्धात्मन् ददामि स्नेहमुत्तमम् ॥

दुग्ध स्नानम्

ॐ पयः पृथिव्यांपयऽओषधीषु पयोदिव्यन्तरिक्षे पयोधाः । पयस्वतीः प्रदिशः सन्तुमह्यम् ॥ कामधेनु समुद्भूतं सर्वेषां जीवनं परम् । पावनं यज्ञहेतुश्च पयः स्नानार्थमर्पितम् ॥ शुद्ध जल से स्नान कराना ॥

दधि स्नानम्

ॐ दधि क्राव्णो अकारिषं जिष्णोरश्वस्य वाजिनसुरभिनो मुखा करत्प्रण आयुᳬं षितारिषत् । पयसस्तु समुद्भूतं मधुराम्लं शशि प्रभम् ॥ दध्यानीतं मयादेवि स्नानार्थं प्रतिगृह्यताम् ॥ शुद्ध जल से स्नान कराना ॥

घृत से स्नान कराना

ॐ घृतं घृत पावानः पिबत व्वसांवसा पावानः पिबतान्तरिक्षस्य हविरसि स्वाहा ॥ दिशः प्रदिशऽआदिशो विदिश उदिशोदिग्भ्यः स्वाहा ॥ नवनीत समुत्पन्नं सर्वसन्तोषकारकम् । घृतं तुभ्यं प्रदास्यामि स्नानार्थं प्रति गृह्यताम् ॥ शुद्ध जल से स्नान कराना ॥

al Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathma

. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding:

शहद से स्नान कराना

ॐ मधुनक्तमुतोषसो मधुमत्पार्थिवꣳ रजः मधुद्यौ रस्तुनः पिता ॥ तरु पुष्प समुभूतं सुस्वादुमधुरंमधु । तेजः पुष्टिकरं दिव्यं स्नानार्थं प्रतिगृह्यताम् ॥ शुद्ध जल से स्नान कराना ॥

शर्करा से स्नान कराना

ॐ अपाꣳ रसमुद्वयसꣳ सूर्यें सन्तꣳ समाहितम् । अपाꣳ रसस्ययो रसस्तंवो गृह्णाम्युत्तममुपयामगृहीतो सीन्द्रायत्वा जुष्टं गृह्णाम्येषतेयोनिरिन्द्रा यत्वा जुष्टतमम् ॥ इक्षुसार सद्भूताशर्करा पुष्टिकारिका । मलापहारिका दिव्या स्नानार्थं प्रतिगृह्यताम् ॥ शुद्ध जल से स्नान कराना ॥

पञ्चामृत स्नानम्

ॐ पञ्चनद्यः सरस्वती मपियन्तिसस्रोतसः ॥ सरस्वती तु पंचछासोदेशे भवत्सरित् ॥ पयोदधिघृतंचैव मधुचशर्कराान्वितम् । पंचामृतंमयानीतं स्नानार्थं प्रतिगृह्यताम् ॥ शुद्ध जलसे स्नान कराना

गन्ध से स्नान कराना

ॐ गन्ध द्वारां दुराधर्षां नित्यपुष्टां करीषिणीम् । ईश्वरीं सर्व भूतानां तामिहोपह्वयेश्रियम् ॥ मलयाचलं सम्भूतं चन्दनागरु सम्भवम् । चन्दनं देवदेवेशि स्नानार्थं प्रतिगृह्यताम् ॥

॥ फिर शुद्ध जल से स्नान कराना ॥

सुगन्धित (उबटना) लगाकर स्नान कराना

ॐ अꣳशुनातेऽअꣳशुः पृच्यताम्परुषापरुः । गन्धस्ते सोममवतु मदायरसोऽअच्युतः ॥

epal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmand

Public Domain. Digitization by eGangotri.Fundin

नाना सुगन्धि द्रव्यं च चन्दनं रजनीयुतम् ॥
उद्वर्तनं मयादत्तं स्नानार्थं प्रतिगृह्यताम् ॥

अब शुद्ध जल से स्नान करना

ॐ शुद्ध बालः सर्व शुद्ध वालोमणि बालस्तऽआश्विनाः श्येतः श्येताक्षोरुणस्ते रुद्राय पशुपतये कर्णायामाऽअवलिप्ता रौद्रा नभौ रूपाः पार्जन्याः ॥

दो वस्त्र

ॐ उपैतु मां देव सखः कीर्तिश्च मणिना सह। प्रादुर्भूतो सुराष्ट्रेस्मिन् कीर्तिं वृद्धिं ददातुमे॥ पट्टकूलयुगं देवि कंचुकेन समन्वितम्। परिधेहि कृपां कृत्वा दुर्गेदुर्गति नाशिनि॥ इति युग्म वस्त्रम्॥ पुनः आचमनम्॥

यज्ञोपवीतम्

ॐ क्षुत्पिपासामलां जेष्ठामलक्ष्मीं नाशयाम्यहं। अभूतिमसमृद्धिं च सर्वान्निर्णुदमेगृहात्॥ स्वर्ण सूत्रमयं दिव्यं ब्रह्मणा निर्मितं पुरा। उपवीतं मयादत्तं गृहाण परमेश्वरि॥ यज्ञोपवीत के बाद आचमनम्॥

चन्दन चढ़ाना

ॐ गन्ध द्वारां दुराधर्षां नित्यपुष्टां करीषिणीम्। ईश्वरीं सर्व भूतानां तामिहोपह्वये श्रियम्॥ श्रीखंडागरूकस्तूरि शेचनाभि सुसंयुतम्। गृहाण गंधं देवेशि सर्वकाम फलप्रदेः॥ इति चन्दनम्

सौभाग्य सूत्र दानम्

ॐ सौभाग्य सूत्रं वरदे। सुवर्ण-मणि सुंयतम् कंठे बध्नामि

al Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathma

. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding:

देवेशि सौभाग्यं देहिमेसदा ।। कंठ सूत्रं समर्पयामि ।।

अक्षत चढ़ाना

ॐ अक्षन्नमीमदन्तह्यवप्रियाऽअधूषत । अस्तोषतस्व भानवोविप्रानविष्ठयामतीयोजान्विन्द्रते हरी ॥ अक्षतान्निर्मलान् शुद्धान् मुक्ता मणि समन्वितान् । गृहाणे मान्महादेवि देहिमे निर्मलां धियम् ।। इत्यक्षतान् ।।

हरिद्रा चूर्ण चढ़ाना

हरिद्रा रञ्जिते देवि सुख सौभाग्यदायिनी ।। तस्मा त्वां पूजयाम्यत्र सुखं शान्ति प्रयच्छमे ।। हरिद्रा चूर्ण समर्पयामि नमः ।।

गुलाल चढ़ाना

कुङ्कुमं कान्तिदं दिव्यं कामिनी काम सम्भवम् कुङ्कुमेनार्चिते देवि प्रसीद परमेश्वरि ।। इति गुलालं स०

सिन्दूर

सिन्दूर मरुणाभासं जपाकुसुम सन्निभम् । अर्पितं ते मया देवि प्रसीद परमेश्वरि ।। सिन्दूरं स० नमः ।।

कज्जल चढ़ाना

चक्षुर्भ्यां कज्जलं रम्यं सुभगे शान्तिकारकम् । कर्पूर ज्योतिरुत्पन्नं गृहाण परमेश्वरि ।। इति नेत्रे कज्जलं स० नमः ।।

दुर्वाङ्कुर चढ़ाना

ॐ आर्द्रां पुष्करिणीं पुष्टिं पिंगलांपद्ममालिनीम् । चन्द्रां हिरण्यमयीं लक्ष्मीं जातवेदो मआवह ।। दुर्वादलेश्यामले त्वं महीरूपे हरिप्रिये । अतोदुर्वाभिर्भवतीं पूजयामि सदाशिवे ।। इति दुर्वा० स० नमः

epal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmand

Public Domain. Digitization by eGangotri.Fundin

विल्वपत्र अर्पण करना

ॐ आर्द्रां यः कारिणीं यष्टिं सुवर्णां हेममालिनीम्। सूर्यां हिरण्यमयीं लक्ष्मीं जातवेदोमआवह ॥ अमृतोद्भवः श्रीवृक्षो महादेव प्रियः सदा। विल्वपत्रं प्रयच्छामि पवित्रं ते सुरेश्वरि ॥ इति विल्वपत्राणि स० नमः

पल्लव अर्पण करना

ॐ तांमआवह जातवेदो लक्ष्मीमनपगामिनीम्। यस्यां हिरण्यं प्रभूतिं गावोदास्योश्वान् विन्देयंपुरुषानहम्। गृहद्वारे चोग्रमपि दुष्टासुरनिवर्हिणी। पूजां करोमि चार्वङ्गि पल्लवैर्नंदनोद्भवैः ॥ इति पल्ल० स० नमः

फल माला अर्पण करना

ॐ महादेवी च विद्महे विष्णु पत्नीं च धीमहि तन्नोदेवीं प्रचोदयात्। शरत्काले समुद्भूतां निशुम्भासुर मर्दिनी ॥ फल मालां वरांदेवि गृहाणसुरपूजिते ॥ इति फल मालां स० नमः

रत्नमाला धारण करना

ॐ परिवाजपतिः कविरग्निर्हव्यान्यक्रमीत्। दधद्ररत्नानिदाशुषे ॥ मुक्ताफलयुतांमालां रत्नवैडूर्यसुप्रभाम्। माणिक्य स्वर्णग्रथिता गृह्यतां वरदे नमः ॥ इति रत्न० स० नमः

फूलों की माला धारण करना

ॐ आपः स्रजन्तुस्निग्धानिचिक्लीत वसमेगृहे। निचदेवीं मातरं श्रियंवासयमेकुले ॥ पद्मशंखज पुष्पादि शतपत्रैर्विचित्रताम्। पुष्प मालां प्रयच्छामि गृहाणत्वं सुरेश्वरि ॥ इति पुष्पमालां स० नमः

al Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathma

. In Public Domain. Digitization by eGangotri. Funding:

पुष्प चढ़ाना

ॐ मनसः काममाकूतिंवाचः सत्यमशीमहि। पशूनां रूपमन्नस्य मपि श्रीः श्रयतांयशः ॥ नाना पुष्प विचित्राढ्यां पुष्पमालां सुशोभनाम्। प्रेयच्छामि सुष्पाणि गृहाणत्वं सुरेश्वरि ॥ इति पुष्पाणि स० नमः

दुर्गा प्रदेय पुष्पाणि

कुन्दमन्दारं पुन्नागपाटलीनागकेशरम्। आरग्वधंकर्णिकारं जयन्ती नवमल्लिका ॥ सौगन्धिकं सकंकोलं पुन्नागाशोक मल्लिका ॥ अन्यान्यपि सुगन्धीनि पुष्पपत्राणिदेशिकै ॥ इति शक्ति प०

अलङ्कारम्

हार कंकक्ण केयूरमेखलाकुण्डलादिभिः। रत्नाढ्यकुण्डलोपेतं भूषणं प्रतिगृह्यताम् ॥ अलंकारम् स० नमः

सुगन्धित इत्र चढ़ाना

ॐ अहिरिव भोगैः पर्येति वाहुंज्यायाहेतिं परिवाधमानः। हस्तघ्नोविश्वाव्वयुना निविद्वान्पुमान्पुमाँ सम्परिपातु विश्वतः ॥ चन्दनागरु कर्पूर कुङ्कमं रोचनं तथा। कस्तूर्यादि सुगन्धांश्च सर्वांगेषु विलेपयेत् ॥ इति परिमल (इत्र) द्रव्यं स० नमः

मालान्त पूजन के बाद अङ्ग पूजा करना

ॐ दुर्गायै नमः पादौ पूजयामि नमः। ओं महाकाल्यै ममः गुल्फौ पूजयामि नमः। ओं मंगलायै नमः जानुद्वयं पूजयामि नमः। कात्यायन्यै नमः उरूद्वयं पूजयामि नमः। ओं भद्रकाल्यै नमः कटि पूजयामि नमः। ओं कमलवासिन्यै नमः नाभि पूज-

epal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmand

Public Domain. Digitization by eGangotri.Fundin

यामि नमः । ओं शिवायै नमः उदरं पूजयामि नमः । ओं क्षमायै नमः हृदयं पूजयामि नमः । ओं कौमार्यै नमः स्तनौ पूजयामि नमः । ओं उमायै नमः हस्तौ पूजयामि नमः । ओं महागौर्यै नमः दक्षिणबाहुं पूजयामि नमः । ओं वैष्णव्यै नमः वामबाहुं पूजयामि नमः । ओं रमायै नमः स्कन्धौ पूजयामि नमः । ओं स्कन्धमात्रे नमः कंठं पूजयामि नमः । ओं महिषमर्दिन्यै नमः नेत्रे पूजयामि नमः । ओं सिंहवाहिन्यै नमः मुखं पूजयामि नमः । ओं माहेश्वर्यै नमः शिरः पूजयामि नमः । ओं कात्यायन्यै नमः सर्वाङ्ग पूजयामि नमः ॥ इत्यङ्ग पूजनम् ॥

धूप करना

ॐ यः शुचिः प्रयतो भूत्वा जुहुयादाज्यमन्वहम् । सूक्तं पंच दशर्चञ्च श्रीकामः सततं जपेत् ॥ गुग्गुलौगन्ध संयुक्त मगर्वादि समायुतम् । दशाङ्गंगृह्यधूपंतु भद्रकाली नमोऽस्तुते ॥ धूपमाघ्रापयामि नमः

॥ दीपकम् ॥

ॐ सरसिजनिलये सरोजहस्ते धवलतरांशुक गन्धमाल्यशोभे भगवति हरिवल्भे मनोज्ञे त्रिभुवन भूतिकरि प्रसीद मह्यम् ॥ सुरक्त सूत्रसद्धर्ती गोघृतेन च पूरितम् । दीपं गृहाण देवेशि नमः त्रैलोक्य सुन्दरि ॥ दीपं दर्शयामि नमः

॥ अथ नैवेद्यम् ॥

दिंव्यान्नरस संपुष्टं नाना भक्ष्यैस्तु संस्कृतम् । चोष्यपेय समायुक्त मन्नंदेवि गृहाणमे ॥ इति नैवेद्यं स०

al Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathma

. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding:

॥ अथ आचमनम् ॥

आचम्यतां त्वया देवि भक्तिमेह्यचलां कुरु। ईप्सितं मे वरं देहि परत्र च परांगतिम् ॥ आचमनं समर्पयामि

करोद्धर्तनम्

करोद्धतनकं देवि सुगन्धैः परिवासितैः ॥
ईप्सितं मे वरं देहि परत्र च पराङ्गतिम् ॥

करोद्धर्तनार्थे गन्धं समर्पयामि नमः ॥

हस्तप्रक्षालनार्थे जलम्

गन्धतोयं समानीतं सुवर्ण कलशेस्थितम् ॥
हस्तप्रक्षानार्थाय पानीयं ते निवेदये ॥

इति हस्तप्रक्षालनम् ॥

॥ अथ ऋतु फलम् ॥

ॐ याः फलिनीर्या अफला अपुष्पायाश्च पुष्पिणीः। वृहस्पति प्रसूतास्तानो मुञ्चन्त्वꣳहसः ॥ नाना फलानि दिव्यानि ऋतुदेश भवानि च। पूर्ण फलैश्च सहितान्यंवत्वामर्पयाम्यहम् ॥ इति फलम्

॥ अथ ताम्बूल पुङ्गीफलम् ॥

ॐ तांमआवह जातवेदो लक्ष्मीमनपगामिनीम्। यस्या हिरण्यं प्रभूतिं गावोदास्योश्वान्विन्देयं पुरुषानहम्। गृहाणदेवि ताम्बूलं कर्पूरेण सुवासितम्। पुङ्गीफल समायुक्तं सचूर्णमुखमंडनम् ॥ इति ताम्वुलम् ॥

॥ दक्षिणा द्रव्यम् ॥

ॐ हिरण्यगर्भः समावर्तताग्रे भूतस्य जातः पतिरेकऽआसीत्। सदाधार पृथिवींद्यामुतेमां कस्मै देवाय हविषाविधेम्। पूजायाः

epal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmand

Public Domain. Digitization by eGangotri.Fundin

सद्ग्रहार्थंतु दक्षिणा दीयते मया। ताम् गृहाण महेशानि पूजां मे सफलां कुरू ॥ इति दक्षिणां समर्पयामि नमः

॥ अथ ध्यानम् ॥

दुर्गेस्मृता हरसि भीतिमशेषजन्तोः स्वस्थैस्मृता मतिमतीव शुभां ददासि। दारिद्र्य दुःख भयहारिणि कात्वदन्या सर्वोपकारकरणाय सदार्द्र चित्ता ॥ इति नत्वा ॥

॥ ज्योतिः पूजनम् ॥

ओं भूर्भुवः स्वः आद्यासवसुरौ जोद्भव तेज स्वरूप श्री दुर्गायै नमः ओं जातवेदसे सुनवामसोमरातीयतो निदहाति वेदः ॥ सनपर्षदति दुर्गाणि विश्वानामेव सिन्धुं दुरिता त्यग्निः ॥ पाद्यादिभिः पूजनं विधाय ॥

॥ ध्यानम् ॥

प्रधान साधार विकल्प सत्ता स्वभाव भावाद्भुवनत्रयस्य ॥ सा विद्यया व्यक्तमपीह माया ज्योतिः परापातु जगन्ति नित्यम् ॥ देशकालौ संकीर्त्य नवदुर्गा महोत्सवे ॥ श्री दुर्गा प्रसाद सिद्धि द्वारा सर्वापच्छन्तिपूर्वकं ममाभीष्टसिद्धये निर्विघ्नपूर्वकं समाप्त्यर्थं वटुक गणेशादि सहितं कुमारी पूजनं करिष्ये ॥

॥ वटुक पूजनम् ॥

ओं वं वटुकाय नमः पाद्यादि पूजनं विधाय ॥ ओं करकलित कपालकुण्डली दण्डपाणिस्तरुणतिमिर नीलव्यालयज्ञोपवीती ॥ क्रतु समय सपर्या विघ्नविच्छेदहेतुर्जयति वटुकनाथः सिद्धिदः साधकानाम् ॥

al Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathma

. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding:

॥ अथ कुमारी पूजा ॥

यजमानः पूजयेच्च कन्यानां नवकं शुभं ॥ द्विवर्षाद्या दशा द्वांताः कुमारीः परिपूजयेत् ॥१॥ अर्थादेकहायनाल्प वयस्का वर्ज्याः ॥ ता आसने उपवेश्यावाहयेत् मन्त्रेण ॥ मन्त्राक्षरमयीं लक्ष्मीं मातृणाम् रूपधारिणीम् । नवदुर्गात्मिकां साक्षात्कन्यामावाहयाम्यहम् ॥ अनेनैव मन्त्रेण नवापि आवहयेत् ॥ अशक्तौ यथाशक्ति एकामपि अथ नवानाम् पूजा वन्त्राः ॥ द्विहायना कुमारि संज्ञका ॥ सर्वस्वरूपे सर्वेशे सर्वशक्ति स्वरूपीणि ॥ पूजां गृहाण कौमारि जगन्मातर्नमोस्तुते ॥ २ ॥ त्रिहायना त्रिमूर्तिस्तन्मन्त्रः ॥ त्रिपुरां त्रिपुरा धारां त्रिवर्ग ज्ञानरूपिणीं ॥ त्रैलोक्य वंदितां देवी त्रिमूर्ति पूजयाम्यहम् ॥३॥ चतुवर्षा कल्याणि तत्पूजा मन्त्रः ॥ कलात्मिकां कलातीतां कारूण्यहृदयां शिवां ॥ कल्याण जननीं देवी कल्याणीं पूजयाम्यहं ॥४॥ पंचवर्षा रोहिणोतत् पूजा मन्त्रः ॥ अणिमादि गुणाधारा मकाराद्यक्षरात्मिकाम्॥ अनन्तां शक्तिकां लक्ष्मीं रोहिणीं पूजयाम्यहम् ॥ ५ ॥ षडवर्षाकालिका तत्पूजा मन्त्रः । कामचारां शुभां कांतां कालचक्र स्वरूपिणीं ॥ कामदां करुणोदारां कालिकां पूजयाम्यहम् ॥ ॥६॥ सप्तवर्षा चंडिका ततपूजा मन्त्रः ॥ चंडवीरां चंडमायां चंडमुण्ड प्रभंजनीं ॥ पूजयामि सदा देवीं चंडिकां चंड विक्रमाम् ॥७॥ अष्टवर्षाशांभवी तत् पूजा मन्त्रः ॥ सदानन्दकरीं शांतां सर्वदेव नमस्कृताम् ॥ सर्वभूतात्मिकां लक्ष्मीं शांभवीं पूजयाम्यहम् ॥ नवहायनादुर्गा तत् पूजा मन्त्रः ॥ दुर्गमे दुस्तरे कार्ये भवदुःखविनाशिनीं ॥ पूजयामि सदा भक्त्या दुर्गां दुर्गति नाशी-

epal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmanc

Public Domain. Digitization by eGangotri.Fundin

नीम् ॥८॥ दशवर्षा सुभद्रा तत् पूजा मन्त्रः । सुन्दरीं स्वर्णवर्णाभां सुखसौभाग्यदायिनीम् ॥ सुभद्र जननीं देवीं सुभद्रांपूजयाम्यहम्॥१०॥ इति प्रत्येक मन्त्रान्ते तत्तनाम मन्त्रेण नवापि षोडशोपचारैः पंचोपचारैर्वा पूजयेत् इति ॥

॥ कलश विसर्जन विधिः ॥

स यजमानो स्वस्तिवाचनपूर्वकं संकल्पं विधाय ॥ देशकालौ संकीर्त्य प्रतिपदि गणपत्यादि स्थापितानाम् नारिकेल बलि-सहित उत्तर पूजनमहं करिष्ये ॥ इति प्रतिज्ञांकृत्वा यथोपचारसहितं गणपत्यादि देवान् प्रपूज्य । ततो शुद्धनारिकेलं, कूष्माडं वा गृहीत्वा तं संपूज्य तत्र जीवन्यासादिकं कृत्वा ॥ ओं महामाये जगन्मातः सर्वकामप्रदायिनि । ददामि नारिकेल कूष्मांड बलिः प्रसिद्ध वरदाभव ॥ अर्द्ध भागम् देव्याग्रे संस्थाप्य पुनः ओं प्राणाय स्वाहा ॥ ओं अपानाय स्वाहा ॥ ओं उदानाय स्वाहा ॥ ओं व्यानाय स्वाबा ॥ ओं समानाय स्वाहा ॥ एभिः स्वाहान्त मन्त्रैः पंच आहुतिं ज्योतिरग्नौ जुहुयात् ॥

टिप्पणी निरुत्तर । तत्र पूजया लभते पूजाम् जपसिद्धिर्मसंशयः । होमेन सिद्धिस्याचास्मात् त्रितयमर्चयेत् ॥ बलि हीनेतु दुर्भिक्षं गन्धहींनेत्वभाग्यताम् ॥ धूप हीने ततोद्वेगम् वस्त्र होने धन क्षयम् ॥

al Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathma

. In Public Domain. Digitization by eGangotri Funding:

अथ बलिदानं मूलांते श्रीमहालक्ष्म्यै नमः पायसबलिं समर्पयामि ॥ इति महाकाल्यादि योगिन्यंतयंत्रस्थावरण देवताभ्यः प्रत्येकं सर्वेभ्यो बलिंदद्यात् ॥ अथ कूष्मांड बलिविधानं ॥ आचम्य प्राणानायम्य देशाद्युच्चार्य ममसकुटुम्बस्य सर्वारिष्ट प्रशांति सर्वाभीष्ट सिद्धि कल्पोक्तफलावाप्ति द्वारा श्रीमहाकाली देवता प्रीत्यर्थं कूष्मांड बलिदानं करिष्ये तदंगत्वेन पंचोपचारैः पूजनं बलि पूजनं च करिष्ये ॥ मूलेन मुख्य देवतां पंचोपचारैः संपूज्यतत् पुरतः स्वय मुदङ्मुखो बलिं प्राङ्मुखं पीठे वस्त्रगुंठितं कूष्मांडंनिधाय ओं कूष्मांड बलये नमः इति आवाहन वस्त्र गन्धादिभि संपूज्य अभिमन्त्रयेत् ॥ पशुस्त्वं बलिरूपेण ममभाग्यादवस्थितः ॥ प्रण मामि ततः सर्वरूपिणं बलिरूपिणं ॥१॥ चण्डिका प्रीतिदानेन दातुरापद्विनाशनं ॥ चामुण्डा बलिरूपाय बलेतुभ्यं नमोस्तुते ॥२॥ यज्ञार्थं बलयः सृष्टाः स्वयमेव स्वयंभुवा ॥ अतःस्त्वां घातया-म्यद्ययस्माद्यज्ञेमतोबधः ॥ इति ॥ ततः शस्त्रं गन्धादिना संपूज्य अभिमन्त्रयेत् ॥ ऐं ह्रीं श्रीं रसनात्वं चण्डिकायाः सुरलोक प्रसा-धकः ॥ इति ह्रां ह्रीं खड्ग आंहुं फट् इति हस्ते शस्त्रं गृहीत्वा ओं कालिकालि बज्रेश्वरि लोहदंडायै नमः इति पठन् छित्वा छेदनावसरेनबिलोकयेत् ॥ कौशिकिरुधिरेणाप्यायतामिति देव्यैः अर्धंनिवेद्य अवशिष्टार्धस्य पंचभागान् कृत्वापूतनायै बलिभागं निवेदयामि चरक्यैबलिः बिदार्यैबलिः पापराक्षस्यैवलिः ततोमाष पिष्टपशुं शत्रुं शस्त्रेण छित्वा स्कंदायपश्वर्धं समर्पयामि विशि-खाय पश्वर्धंसः इति समर्प्य शेषं रक्षोभ्योहरेत् ॥ मन्त्रास्तु ओं

epal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmand

Public Domain. Digitization by eGangotri.Fundin

ह्रीं स्फुर स्फुर ओं क्रीं ओं ह्रूं फट् मर्द मर्द हुं इति तच्छेषं वहिर्दद्यात् ॥ बलिं गृहंत्विमेदेवा आदित्या वसवस्तथा ॥ मरुतश्चाश्विनौ रुद्रासुपर्णाः पन्नगाग्रहाः ॥ असुरा यातुधानाश्च पिशाचोरगराक्षसाः ॥ डाकिन्यो यक्षवेताला योगिन्यः पुतनाः शिवाः ॥ जृम्भकासिद्धः गन्धर्वाः सोध्या विद्याधरानगाः ॥ दिक्पाला लोकपालाश्चयेच विघ्नविनायकाः ॥ जगतांशान्तिकर्तारो ब्रह्माद्याश्च महर्षयः ॥ मापिघ्नां माचमेपापं मासन्तु परिपंथिनः ॥ सोम्या भवन्तु तृप्तास्ते भूतप्रेतसुखावहाः भूतानिं यानीबहसन्तितानि बलिं गृहीत्वा विधिवत् प्रयुक्तं ॥ अन्यत्रवासं परिकल्पयन्तु रक्षन्तुमांतानिसदैवचात्रेति ॥ ततः स्नात्वा कृततिलकोदेवीं प्रार्थयेत् खड्डनीशुः ॥ शूलेनपा० ४ सर्वस्वरूपे० ५ रूपंदेहि जयंदेहि भगंभगवतिदेहिमे ॥ पुत्रान् देहि धनं देहि सर्वकामांश्च देहिमे ॥ महिषघ्नि महामाये चामुण्डे मुण्डमालिनी ॥ आयुरारोग्यमैश्वर्यं देहिदेवि नमोस्तुते ॥ इति प्रार्थयेत् एतद्बलिदानं होमांगंतच्च होमोत्तरमेव ॥

॥ अथ चतुःषष्टि योगिनीः पूजनम् ॥

ततः चतुः षष्टि योगिनीः प्रागन्तारा आवाहयेत् तत्रावाहन मन्त्रा ॥ ॐ तमीशानञ्जगतस्तस्थुषस्पतिन्धियञ्जिन्व मवसेहूमहे व्वयम् ॥ पूषानोयथा व्वेदसामसद्वृधे रक्षितापायुरदब्धः स्वस्तये॥ (आवाहयामि तान्देवीन्दिव्यानान्मेति विश्रुताम् ॥ यजमान हितार्थाय कोष्ठेचाद्ये प्रपूजयेत् ॥) ॐ भू० दिव्ययोगिन्यै० दिव्य योगिनी मा० ॥१॥ ॐ आब्रह्मन् ब्राह्मणो ब्रह्मवर्चसी जायता

al Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathma

. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding:

माराष्ट्रे राजन्यः शूरऽइषव्योति व्याधी महारथो जायतान् दोग्ध्री धेनुर्व्वोढ़ा नड्वानाशुः सप्तिः पुरन्ध्रिर्य्योषा जिष्णू रथेष्ठा सभेयो युवास्य यजमानस्य व्वीरो जायतान्निकामेनिकामेनः पर्ज्जन्यो व्वर्षतु फलवत्योनऽओषधयः पच्यन्ताञ्योगोक्षेमोनः कल्पताम् ॥ (आवाहयामि तां देवीम्महाशब्देति विश्रुताम् ॥ सर्वसिद्धिप्रदां पूज्यां कोष्ठेचैव द्वितीयके ॥) ॐ भू० महायोगिन्यै० महायोगिनी मा० ॥२। ॐ महाँ२ऽइन्द्रो व्वज्र हस्तः षोडशी शर्म्म यच्छतु । हन्तु पाप्मानं योस्मान्द्वेष्टि उपयामगृहीतोसि महेन्द्राय त्वैषते योनिर्म्महेन्द्रायत्वा ॥ (आवाहयामि तां देवीं सिद्धि पूर्वेति विश्रुताम् । महासिद्धिकरांदेवीम्पूज्यां कोष्ठे तृतीयके) ॐ भू० सिद्धि योगिन्यै० सिद्धि योगिनी मा० ॥३॥ ओं आयङ्गौ पृश्निरक्रमी दसदन्मातरम्पुरः ॥ पितरञ्चप्रयत्स्वः ॥ (आवाहयामि तान्देवीम्माहेश्वरीतिवास्वयम् । यजमानहितार्थाय पूज्या कोष्ठे चतुर्थके) ओं माहेश्वर्यै० माहेश्वरीं मा ॥ ४ ॥ ॐ आदित्यङ्गर्भम्पयसा समङ्ग्धि सहस्रस्य प्रतिमां व्विश्वरूपम् । परिवृङ्ग्धि हरसामाभिमꣳस्थाः शतायुषङ्कृणुहिचीयमानः ॥ आवाहयामि तान्देवीम्प्रेताक्षीनाम विश्रुताम् । महाभयहरीन्देवीं पूजयेत्पञ्चमेदले ॥ ॐ भू० प्रेताक्ष्यै० प्रेतक्षीमा० ॥५॥ ॐ स्वर्ण धर्म्मः स्वाहा स्वर्णार्कः स्वाहा स्वर्ण शुक्रः स्वाहा स्वर्णज्योतिः स्वाहा स्वर्ण सूर्य्यः स्वाहा ॥ आवाहयामि तान्देवीं डाकिनीनाम विश्रुताम् । सर्वरोगहरान्देवीं षष्ठे कोष्ठे प्रपूजयेत् ॥ ॐ भू०

epal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmand

Public Domain. Digitization by eGangotri.Fundin

डाकिन्यै नमः डाकिनीमावाहयामि ॥६॥ ॐ सत्यंचमे श्रद्धाचमे जगच्चमे धनञ्चमे विश्वञ्चमे महश्चमे क्रीडाचमे मोदश्चमे जातञ्चमे जानिष्यमाणञ्चमे सुक्तंचमे सुकृतञ्चमेयज्ञेनकल्पताम् ॥ आवाहयामि तान्देवीं कालोंकिलवलप्रदाम् । प्रसन्नां सर्वकालेच पूजयेत्सप्तमेदले ॥ ॐ भू० काल्यै नमः कालीमावा० ॥७॥ ॐ भायैदार्व्वाहारम्प्रभाया॑ऽ अग्न्येधम्त्रघ्नस्य व्विष्टपायाभिषेक्तारं स्वर्षिष्ठायनाकाय परिवेष्टारन्देवलोकाय पेशितारम्मनुष्यलोकाय प्प्रकरितारꣳ सर्वेभ्यो लोकेभ्यऽउपसेक्तारमत्रऋत्यै व्वधायोमन्थि-तोरम्मेधायव्वासः पल्पुलीम्प्रकामायरजयित्रीम् ॥ आवाहयामि तान्देवीङ्कालरात्रीति विश्रुताम् । सर्वदासुखदान्देवीङ्कोष्ठे वाष्ट मिते तथा ॥ ॐ भू० कालरात्र्यै नमः कालरात्रीमा० ॥८॥ इति प्रथमाष्टक पंक्तिः ॥ जिह्वामेभद्रं व्वाङ्महो मनोमन्न्युः स्वराड्भामः । मोदाः प्प्रमोदाऽअङ्गुलीरङ्गानि मित्रम्मेसहः ॥ आवाहयामि तान्देवीन्निशाकरीति विश्रुताम् । यजमानहितार्थाय पूजयेत्प्रथमेदले ॥ ॐ भू० निशाकर्यै० निशाकरीमा० ॥१॥ ॐ हिङ्कारायस्वाहा हिङ्कृतायस्वाहा क्रन्दतेस्वाहा वक्रन्दायस्वाहा प्प्रोथतेस्वाहा प्रप्प्रोथायस्वाहा गन्धायस्वाहा घ्रातायस्वाहा निवि-ष्टायस्वाहोपविष्टायस्वाहा सन्दितायस्वाहा व्वल्गतेस्वाहा सीनाय स्वाहा शयनायस्वाहा स्वपतेस्वाहा जाग्रतेस्वाहा कूजतेस्वाहा प्प्रबुद्धायस्वाहा व्विजृम्भमाणायस्वाहा व्विचृतायस्वाहा सꣳहानाय स्वाहोपस्थितायस्वाहा यनायस्वाहा प्प्रायणायस्वाहा ॥ आवाहया-मितान्देवीं हुङ्कारीनाम विश्रुताम् । यजमान हितार्थाय पूज्याकोष्ठे

al Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathma

. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding:

द्वितीयके ॥ ॐ भू० हुङ्कार्यै० हुङ्कारीमा० ॥२॥ ॐ अग्निश्चमे घर्मश्चमेऽर्कश्चमे सूर्यश्चमे प्राणश्चमे श्श्वमेधश्चमे पृथिवीचमे दितिश्चमेदितिश्चमे द्यौश्चमेङ्गुलयः शक्करयो दिशश्चमे यज्ञेन कल्पताम् ॥ आवाहयामि तान्देवीं सिद्धिवैतालिकां शुभाम् । यज्ञसिद्धि करान्दवीम्पूजयेत्तां तृतीयके ॥ ॐ भू० सिद्धि वैतालिकायै० सिद्धिवैतालिकामा० ॥३॥ ॐ पूषन्तवव्रते व्वयन्न-रिष्येमकदाचन । स्तोतारस्तऽइहस्मसि ॥ आवाहयामि तान्देवीं ह्रींकारीनाम विश्रुताम् । यजमानहितार्थाय पूज्याकोष्ठे चतुर्थके ॥ ॐ भू० ह्रीं कार्य्यै नमः ह्रीं कारीमा० ॥४॥ ॐ व्वेद्याव्वेदिः समाप्यते वर्हिषावर्हिरिन्द्रियम् । यूपेनयूपऽआप्यतेप्रणीतोऽ आग्निराग्निना ॥ आवाहयामि तान्देवीं नामतोभूतडामराम् । भूतरक्षाकरीन्देवीम्पूजयेत्पंचभेदले ॥ ॐ भू० भूतडामरायै० भूत-डामरामा० ॥५॥ ॐ अयमग्निः सहस्रिणो व्वाजस्यशतिनस्पतिः । मूर्द्धाकवीरयीणाम् । आवाहयामि तान्देवीमूर्ध्वकेशीति विश्रुताम् । सर्वशत्रु विनाशाय षण्ठे कोष्ठे प्रपूजयेत् ॥ ओं भू० ऊर्ध्वकेश्यै नमः उर्ध्वकेशीमा० ॥६॥ ओं इमम्मे व्वरुणश्रुधीहवमद्याचमृडय ॥ त्वामवस्युराचके ॥ आवाहयामि तान्देवीम्विरूपाक्षीति विश्रुताम् । यजमानहितार्थाय पूजयेत्सप्तमेदले ॥ ओं भू० विरूपाक्ष्यै० विरु-पाक्षीमा० ॥७॥ ओं यमाययमसूमथर्व्वभ्योवतोकाँ संव्वत्सराय पर्य्यायिणीम्परिवत्सराया विजातामिदात्वत्सरायातीत्वरी मिद्ध-त्सरायातिष्कद्वरीं व्वत्सरायैं त्रिजर्जराँ संव्वत्सराय पलिक्क्नी मृभुभ्यो ज़िनसन्धँ साद्धय ब्भश्चर्म्मम्मनम् ॥

epal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmand

Public Domain. Digitization by eGangotri.Fundin

आवाहयामि तान्देवीं शुष्काङ्गीनामतः शुभाम् । सर्वकार्य्य करान्देवीङ्कोष्ठे चैव तथाष्टमे ॥ ॐ भू० शुष्काङ्ग्यै० शुष्काङ्गी मा० ॥८॥ इति द्वितीयाष्टक पङ्क्तिः । ॐ असियमोऽअस्यादित्योऽअर्व्वन्नसि त्रितो गुह्येन व्व्रतेन । असिसोमेन-समयाव्विपृक्तऽआहुस्तेत्रीणिदिवि बन्धनानि ॥ आवाहयामि तान्देवीं सुग्रीतान्नरभोजनीम् । सुमुखे यजमानस्य पूजयेत्प्रथमे-दले ॥ ॐ भू० नरभोजन्यैः नरभोजीमा० ॥१॥ ॐ मित्रस्य चर्षणीधृतोऽवोदेवस्यसानसि । द्युम्मश्चित्र श्रवस्तमम् ॥ आवाह-यामि तान्देवीम्फेत्कारी नामतोमताम् । यज्ञे विघ्नहरादेवी पूज्या कोष्ठे द्वितीयके ॥ ओं भू० फेत्कार्यै० फेत्कारीमा० ॥२॥ ओं अग्रे वृहन्नुषसामूर्द्धोऽअस्थान्निर्जगन्वान्तमसोज्ज्योतिषागात् । अग्निर्भानुनारुशता स्वङ्गऽआजातो व्विश्वासद्मान्यप्राः ॥ आवा-हयामि तान्देवीम्वीरभद्रेति विश्रुताम् । वीरभद्रकरीन्देवीम्पूज-येच्च तृतीयके ॥ ओं भू० वीरभद्रायै० वीरभद्रमा० ॥ ओं भग-प्प्रणेतर्भगसत्यराधो भगेमान्धियमुदवाददन्नः । भगप्प्रनोजनय गोभिरश्वैर्भग प्प्रनृभिर्न्नृवन्तः स्याम ॥ आवाहयामि तान्देवी-न्धूम्राक्षीन्धूम्रलोचनाम् । यजमान हितार्थाय पूज्यकोष्ठे चतुर्थके ॥ ओं भू० धूम्राक्ष्यै० धूम्राक्षी० ॥४॥ ओं सुपर्णोसि गरुत्मांस्त्रि-वृते शिरो गायत्रञ्चक्षुर्वृहद्रथन्तरे पक्षौस्तोमऽआत्माछन्दाᳪ स्यङ्गानि यजूᳪषिनाम् । सामते तनूर्व्वामदेव्यं य्यज्ञायज्ञियम्पु-च्छन्धिष्ण्याः शफाः सुपर्णोसि गरुत्मान्दिवङ्गच्छस्वः पत ॥ आवाहयामि तान्देवीं सुपूज्याङ्कलह प्रियाम् यज्ञदोष हरान्देवीम्पूज-

al Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathma

. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding:

येत्पञ्चमे दले ॥ ओं भू० कलह प्रियायै० कलप्रियामा० ॥५॥ ओं पितृभ्यः स्वधायिभ्यः स्वधा नमः पितामहेभ्यः स्वधायिभ्यः स्वधा नमः प्रपितामहेभ्यः स्वधायिभ्यः स्वधा नमः। अक्षन्पितरोमीमदन्त पितरोती तृपन्त पितरः पितरः शुन्धध्वम् ॥ आवाहयामि तान्देवीं राक्षसीं राक्षसप्रियाम् ॥ रक्षार्थं यजमानस्य षष्ठे कोष्ठे प्रपूजयेत् ॥ ओं भू० राक्षस्यै० राक्षसी० ॥१६॥ ओं वरुणस्योत्तम्भनमसि व्वरुणस्य स्कम्भसर्ज्जनीस्थो व्वरुणस्यऽऋत सदन्यसि व्वरुणस्यऽऋतसदनमसि व्वरुणस्यऽऋतसदनमासीद ॥ आवाहयामि तान्देवीं रक्ताक्षींघोरपूर्वकाम। महाभय हरान्देवीम्पूजयेत्सप्तमेदले ॥ ओं भू० घोररक्ताक्ष्यै० घोररक्तक्षीमा० ॥७॥ ओं व्वरुणः प्राविता भुवन्मित्रो व्विश्वाभिरूतिभिः। करतान्नः सुराधसः ॥ आवाहयामि तान्देवीम्विशालाक्षीति विश्रुताम्। विशालां सर्व कार्येषु कोष्ठे चैव तथाष्टके ॥ ओं भू० विशालाक्ष्यै० विशालाक्षीं० ॥८॥ इति तृतीयाष्टक पंक्तिः ॥ ओं हꣳसः शुचिषद्वसुरन्तरिक्ष सद्धोता व्वेदिषदतिथिर्दुरोणसत्। नृषद्वरसदृत सद्व्योमसदब्जा गोजाऽऋतजाऽअद्रिजाऽऋतम्बृहत् ॥ आवाहयामि तान्देवीं कौमारींचैव विश्रुताम् ॥ वरपुष्टिकरान्देवीम्पूजयेत्प्रथमेदले ॥ ओं भू० कौमार्यै० कौमारीमा० ॥१॥ ओं सुसन्दृशन्त्वा व्वयमघवन्वन्दिषीमहि। प्रन्नम्पूर्ण बन्धुरस्तुतोयासि वशांꣲऽअनुयोजान्विन्द्रतेहरी ॥ आवाहयामि तान्देवीन्नाम्ना चण्डीं च विश्रुताम्। अभयां सर्वभक्तानाम्पूजयेद्द्वितीये दले। ओं भू० चण्डायै० चण्डीमा० ॥२॥ ओं प्रतिपदसि प्रतिपदे

epal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmand

Public Domain. Digitization by eGangotri.Fundin

त्वानुपदस्यनुपदेत्वा सम्पदसि सम्पदेत्वा तेजोसि तेजसेत्वा ॥ आवाहयामि तान्देवीं वाराहीनाम विश्रुताम् । पुत्रपौत्र सुखार्थाय पूजयेत्तान्तृतीयके ॥ ओं भू० वाराह्यै० वाराहीमा० ॥ ओं देवी रापोऽअपान्नपाद्योत्रऽऊर्म्मिर्हविष्यऽइन्द्रियावान्मदिन्तमः । तन्देवेभ्यो देवत्रादत्तशुक्रपेभ्यो येषाम्भागस्थ स्वाहा ॥ आवाहयामि तान्देवीं मुण्डधारिणि विश्रुताम् । सर्वशत्रु विनाशायतुर्य्ये कोष्ठे प्रपजयेत् ॥ ओं भू०मुण्डधारिण्यै० मुण्डधारिणीः ॥ ओं देवी द्वारोऽअश्विनाभिषजेन्द्रे सरस्वती ॥ प्राणन्नवीर्यन्न सिद्द्वारो-दधुरिन्द्रियंवसुवनेव्वसुधेयस्यव्यन्तुयज ॥ आवाहयामि तान्देवीम्भैरवीम्भैरवप्रियाम् । यजमान हितार्थाय पूजयेत्पञ्चमेदले ॥ ओं भू० भैरव्यै० भैरवीमा० ॥५॥ ओं देवीजोष्ट्री सरस्वत्यश्विनेन्द्रम वर्द्धयन् । श्रोत्रन्नकर्णयोर्य्यशो जोष्ट्रीब्भ्यान्दधुरिन्द्रियं व्वसुवने व्वसुधेयस्य व्यन्तुयज ॥ आवाहयामि तान्देवीम्वीराम्वीर बलप्रदाम् । वीरपुष्टिकरीन्देवीं षष्ठे कोष्ठे प्रपूजयेत् ॥ ओं भू० वीरायै० वीरामा० ॥६॥ ओं देवस्यत्वा सवितुः प्रसवेश्विनो र्व्वाहुब्भ्याम्पूष्णो हस्ताब्भ्याम् ॥ अश्विनोर्ब्भैषज्येन तेजसे ब्रह्म वर्च्चसायाभिषिञ्चामि सरस्वत्यै भैषज्ज्येन व्वीर्य्यायान्नाद्याया भिषिञ्चचामीन्द्रस्येन्द्रियेण वलायश्रियैयशसेभिषिञ्चामि ॥ आवाहयामि तान्देवीन्नाम्नाचैव भयङ्करीम् । अभयां सर्वभक्तानां पूजयेत्सप्तमे दले ॥ ओं भू० भयङ्कर्य्यै० भयङ्करीमा० ॥७॥ ओं कदश्चनस्तरीर सिनेन्द्रसश्च सिदाशुषे । उपोपेन्नुमघवन्भूयऽ इन्नुतेदानन्देवस्यपृच्यते ॥ आवाहयामि तान्देवीम्वज्रणीम्व्रज-

al Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathma

. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding:

धारिणीम् । इन्द्रप्रियाम्महादेवीम्पूजयेदष्टमेदले ॥ ओं भू० बज्र-धारिण्यै० बज्रधारिणीमा० ॥८॥ इति चतुर्थाष्टक पंक्तिः ॥ ओं भद्रं कर्णेभिः शृणुयामदेवा भद्रम्पश्येमाक्षभिर्य्यजत्राः । स्थिरैरङ्गैस्तुष्टुवाꣳ सस्तनूभि र्व्यशेमहि देवहितं य्यदायुः ॥ आवाहयामि तान्देवीङ्क्रोधानाम्नेति विश्रुताम् । वैरिणामुपरि क्रुद्धाम्पूजयेत्प्रथमे दले ॥ ओं भू० क्रोधायै० क्रोधामा० ॥१॥ ओं इषेत्वोर्जेत्वा व्वायवस्थदेवोवः सविताप्प्रार्पयतुश्रेष्ठतमाय कर्म्मणऽआप्या यद्ध्वमघ्न्याऽइन्द्राय भागम्प्रजावती रनमीवाऽअय-क्ष्मामावस्तेनऽईशत माघशꣳ सोध्रू वाऽअस्मिन्गोपतौस्यात बह्वीर्यजमानस्यपशून्पाहि ॥ आवाहयामि तान्देवीन्दुर्मुखां सुमुख-प्रियाम् । सर्वविघ्नहरांदेवीम्पूज्या कोष्ठे द्वितीयके ॥ ओं भू० दुर्मुख्यै० दुर्मुखी मा० ॥२॥ ओं देवीद्यावा पृथिवीमखस्य वामघशिरोराद्ध्यासन्देवयजने पृथिव्याः ॥ मखायत्वा मखस्यत्वा शीर्ष्णे ॥ आवाहयामि तान्देवीन्नाम्ना वै प्रेतवाहिनीम् । सर्वरोग हरान्देवीम्पूज्या कोष्ठे तृतीयके ॥ ओं भू० प्रेतवाहिन्यै० प्रेत वाहिनी० ॥ ॐ विश्वानिदेव सवितदु रितानि परासुव । यद्भद्र-न्तन्नऽआसुव ॥ आवाहयामि तान्देवीङ्काकाँ नाम नामतोमताम् । यजमान हितार्थाय पूज्या कोष्ठे चतुर्थके ॥ ओं भू० कर्कायै नमः कर्कामा० ॥४॥ ॐ असुन्वन्तम यजमान मिच्छस्तेनस्येत्या-मन्विहितस्करस्य । अन्यमस्मदिच्छसातऽइत्यानमोदेवि निर्ऋते तुभ्यमस्तु ॥ आवाहयामि तांदेवीं दीर्घलम्बोष्ठ पूर्विकाम् । यज-मान हितार्थाय पूज्या सा पञ्चमे दले ॥ ओं दीर्घ लम्बोष्ठयै०

epal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmanc

Public Domain. Digitization by eGangotri.Fundin

दीर्घलम्बोष्ठी मा० ॥५॥ ॐ अग्निश्चमे धर्म्मश्चमे० ॥ आवाहयामि तान्देवीम्मालिनीङ्गण शालिनीम् । रूपलावण्य संयुक्तां षष्ठे कोष्ठे प्रपूजयेत् ॥ ओं भू० मालिन्यै० मालिनीमा० ॥६॥ ओं बह्वीनाम्पिताब्बहुरस्य पुत्रश्चिश्चाकृणोति समनावगत्य । इषुधिः सङ्काः पृतनाश्चसर्वाः पृष्ठेनिनद्धो जयतिप्रसूतः ॥ आवाहयामि तान्देवीं योगिनीम्मन्त्र पूर्विकाम् ॥ सिद्ध्यर्थं मन्त्र बीजानाम्पूजयेत्सप्तमेदले ॥ ओं भू० मन्त्र योगिन्यै० मन्त्र योगिनीमा० ॥७॥ ॐ नमस्ते रुद्रमन्न्यवऽउतोतऽइषवे नमः ॥ बाहुभ्यामुतते नमः ॥ आवाहयामि तान्देवीं कालाग्निमग्नि मोहिनीम् । सुख हर्षप्रदान देवीम्पूज्या साचाष्टमेदले ॥ ओं भू० कालाग्नि मोहिन्यै० कालाग्नि मोहिनीमा० ॥८॥ इति पञ्चमाष्टक पंक्तिः ॥ ॐ ऋतञ्चमे मृतञ्चमे यक्ष्मञ्चमे नामयञ्चमे जीवातुश्चमे दीर्घायुत्वञ्चमे न मित्रञ्चमे भयञ्चमे सुखञ्चमे शयनञ्चमे सूषाश्चमे सुदिनञ्चमे यज्ञेन कल्पताम् ॥ आवाहयामि तान्देवीम्मोहिनोम्विश्वमोहिनीम् । यजमान हितार्थाय पूज्यातुप्रथमे दले ॥ ओं भू० मोहिन्यै० मोहिनीमा० ॥१॥ ॐ तेऽआचरन्तीसमने वयोषामातेव पुत्रम्बिभृतामुपस्थे । अपशत्रूँन्विद्ध्यताᳪ सम्विदानेऽआर्त्नीऽइमे विष्फुरन्तीऽअमित्रान् ॥ आवाहयामि तान्देवीञ्चक्रानामेतिविश्रुताम् । नित्यं शत्रुगणेवक्राम्पूजयेत्तां द्वितीयके ॥ ॐ भू० चक्रायै० चक्रामा० ॥२॥ ॐ वेद्यावेदिः समाप्यते बर्हिषाबर्हिरिन्द्रियम् । यूपेनयूपऽ आप्यतेप्रणीतोऽअग्निरग्निना ॥ आवाहयामि तान्देवीं कुण्डलि

al Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathma

. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding:

नीनामतोमताम् । शोभिते कुण्डले यस्या पूज्याकोष्ठे तृतीयके ॥ ॐ भू० कुण्डलिन्यै० कुण्डलीमा० ॥३॥ ॐ पावकानः सरस्वती व्वाजेभिर्व्वाजिनीवति । यज्ञम्वष्टुधियाव्वसुः ॥ आवाहयामि तान्देवीम्वालुकां सूक्ष्मरूपिणीम् । सुखदान्धनदान्देवीन्तुर्येकोष्ठे प्रपूजयेत् ॥ ओं भू० बालुकायै० बालुकामा० ॥४॥ ओं अस्कन्न मद्यदेवेभ्यऽआज्यꣳ सम्भ्रिया समङ्घ्रिणा ꣳविष्णोमात्वावक्र मिषंव्वसुमती मग्नेतेच्छाया मुपस्थेयं व्विष्णोस्थानमसीतऽइन्द्रो व्वीर्यमकृणोदूर्द्धोद्धरऽआस्थात् । आवाहयामि तान्देवीङ्कौबेरी नामतोमताम् । धनधान्य प्रदादेवी सम्पूज्या पञ्चमे दले ॥ ओं भू० कौबेर्यै० कौवेरी मा० ॥५॥ ॐ तेऽआचरन्ती समने- वयोषामातेव पुत्रम्विभृता मुपस्थे । अपशत्रून्विन्व्यताꣳ संवि- दानेऽआर्त्नीऽइमे व्विष्फुरन्तोऽअमित्रान् ॥ आवाहयामि तांदेवीं यमदूतीति विश्रुताम् । यजमान सुखार्थाय षष्टे कोष्ठे प्रपूजयेत् ॥ ओं भू० यमदूत्यै० यमदूतीमा० ॥६॥ ओं महीद्यौः पृथिवीचनऽ इमंयज्ञम्मिमिक्षताम् । पिपृतान्नोभरीमभिः ॥ आवाहयामि तान्देवीं शुभाम्वापि करालिनीम् । ऋत्विजां क्षेमकामाय पूजयेत् सप्तमे दले ॥ ओं भू० कारालिन्यै० करालिनी० ॥७॥ ओं उपयाम गृहीतोसिसावित्रोसि चनोधाश्चनोधाऽअसिचनोमयिधेहि । जिन्व- यज्ञञ्जिन्वयज्ञपतिम्भगाय देवायत्वासवित्रे ॥ आवाहयामि तान्देवी ङ्कौशिकीनामतोमताम् ॥ षष्ठि चत्वारिंकेस्थाने पूजयेदष्टमे दले ॥ ओं भू० कौशिक्यै० कौशिकीमा० ॥८॥ इति षष्टाष्टक ओं आप्यायस्व समेतुते व्विश्वतः सोमव्वृष्ण्यम् । भवाव्वाजस्य

epal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmand

Public.Domain. Digitization by eGangotri.Fundin

सङ्गथे ॥ आवाहयामि तान्देवी यक्षिणीं यक्षबल्लभाम् । अवलाञ्च महाकायाम्पूजयेत्प्रथमे दले ॥ ओं भू० यक्षिन्यै० यक्षिणीमा० ।१। ओं कार्षिरसि समुद्रस्यत्वा क्षित्याऽउन्नयामि । समापोऽअद्भि-रग्मत समोषधीभिरोषधीः ॥ आवाहयामि तान्देवीम्पञ्चाशत्स्थान संस्थिनाम् । भक्षिणीनाम या प्रोक्ता पूज्याकोष्ठे द्वितीयके)। ॐ भू० भक्षिण्यैः भक्षिणी मा० ॥ २ ॥ ॐ त्र्यम्बकं यजामहे सुगन्धिम्पुष्टि वर्द्धनम् । उर्व्वारुकमिवबन्धनान्मृत्योर्मुक्षीय मामृतात् ॥ त्र्यम्बकं यजामहे सुगन्धिम्पति वेदनम् ॥ उर्वारुक मिव बन्धनादितो मुक्षीयमामुतः ॥ (आवाहयामि तान्देवीङ्कौमारीङ्काम रूपिणीम् । पुत्रकाम समृद्ध्यर्थं पूज्या कोष्ठे तृतीयके) ॐ भू० कौमार्य्यैं० कौमारी मा० ॥ ३ ॥ ॐ श्रीश्चते लक्ष्मीश्च पत्न्या चहो रात्रे पाश्र्वे नक्षत्राणि रूप मश्विनौ व्यात्तम् । इष्णन्निषाणामुम्मऽइषाण सर्व्वं लोकम्मऽइषाण ॥ (आवाहयामि तान्देवीन्नाम्ना या मन्त्र वाहिनी । मन्त्राणिसकलार्थायपूज्या कोष्ठे चतुर्थके) ॐ भू० मन्त्रवाहिन्यै० मन्त्रवाहिनी मा० ॥ ४॥ ॐ विष्णोरराट मसिव्विष्णोः श्नप्त्रेस्थो व्विष्णोः स्यूरसि व्विष्णोर्ध्रुवोसि । व्वैष्णवमसि विष्णवेत्वा (आवाहयामितान्देवीम्विशालाम्विश्वतोमुखाम् । उपरागाय विश्वेषां पूजयेत्पञ्चमे दले) ॐ भू० विशालायै० विशाला मा० ॥ ५ ॥

ॐ ब्राह्मण मद्यव्विदेयम्पितृ मन्तम्पैतृमत्यमृषिमार्षेयᳬ सुधातु दक्षिणाम् । अस्मद्राता देवत्त्रागच्छत प्रदातारमाविशत (आवाहयामि तान्देवीङ्कामुकी नाम विश्रुताम् । उपरागाय विश्वेषां-

al Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathma

. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding:

षष्ठे कोष्ठे प्रपूजयेत्) ॐ भू० कामुकयै० कामुकीमा० ॥६॥ ॐ भद्रंकर्णेभिः श्रुणुयामदेवा भद्रम्पश्ये माक्षभिर्यजत्राः । स्थिरै रङ्गैस्तुष्टुवाᳬसस्तनूभि र्व्यशेमहि देवहितंयदायुः (आवाहयामि तान्देवीं व्याघ्री नामेति विश्रुताम् । यजमान हितार्थाय पूजिता सप्तमे दले) ॐ भू० व्याघ्यै नमः व्याघ्रीमावाह० ॥७॥ ॐ एकाचमे तिस्रश्चमे तिस्रश्चमे पञ्चचमे पञ्चचमे सप्तचमे सप्तचमे नवचमे नवचमऽएकादशचमऽएकादशचमे त्रयोदशचमे त्रयोदशचमे पञ्चदशचमे पञ्चदशचमे सप्तदशचमे सप्तदशचमे नवदशचमे नवदशचमऽएकविᳬशतिश्चमेऽएकविᳬ शतिश्चमे त्रयोविᳬशतिश्चमे त्रयोविᳬशतिश्चमे पञ्चविᳬशतिश्चमे पञ्च विᳬशतिश्चमे सप्तविᳬशतिश्चमे सप्तविᳬशतिश्चमे नवविᳬ शतिश्चमे नवविᳬशतिश्चमेऽएकत्रिᳬशच्चमऽ एकत्रिᳬ शच्चमे त्रयस्त्रिᳬ शच्चमे यज्ञेन कल्पन्ताम् (आवाहयामितान्देवीम्महा पूर्वान्तु राक्षसीम् रक्षो भयहरान्देवीम्पूजयेदष्टमे दले) ॐ भू० महाराक्षस्यै० महाराक्षसीमा० ॥८॥ इति सप्तमाष्टक पंक्तिः ॥

ॐ प्रेता जयता नरऽइन्द्रो वः शर्म्म यच्छतु । उग्राव: सन्तु वाहवो ना धृष्या यथासथ (आवाहयामि तान्देवीन्नाम्ना या प्रेत भक्षिणी । सर्वरोग हरान्देवी पूजयेत्प्रथमे दले) ॐ भू० प्रेत भक्षिणी मा० ॥ १ ॥ ॐ असंख्याता सहस्राणि ये रुद्राऽ अधि भूम्याम् । तेषाᳬसहस्रयोजनेवधन्वानितन्मसि ॥ आवाहयामि तान्देवीन्धूर्जटां जटिलां सदा । यजमान हितार्थाय पूज्या कोष्ठे द्वितीयके ॥ ॐ भू० धूर्जट्यै ० धूर्जटीं० ॥२॥ सुपर्णोसि

epal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmand

Public Domain. Digitization by eGangotri.Fundin

गरुत्मांस्त्रिवृत्ते शिरो गायत्रञ्चक्षुर्बृहद्रथन्तरे पक्षौ। स्तोमऽ आत्मा छन्दांᳬसयङ्गानि यजूᳬषिनाम। सामते तनूर्व्वामदेव्यं यज्ञायज्ञियम्पुच्छन्धिष्ण्याः शफाः सुपर्णोसि गरुत्त्मान्दिव गच्छ-स्वः पत॥ आवाहयामि तान्देवीम्बिकटान्नामतो मताम्॥ सर्व-दोषेषु विकटा पूज्या कोष्ठे तृतीयके॥ ॐ भू० विकटायै० विकटा मा० ॥३॥ ॐ याते रुद्र शिवातनूरघोरा पापकाशिनी। तयानस्तन्वा शन्तमया गिरिशन्ताभिचाकशीहि॥ आवाहयामि तान्देवीं षष्ठिस्थाने स्थितांशुभाम्। घोररूपां महाकायांतूर्यकोष्ठे प्रपूजयेत्॥ ॐ भू० घोररूपायै० घोररूपा मा० ॥४॥ ॐ देवी द्यावा पृथिवी मखस्यवामद्यशिरोराद्ध्या सन्देवयजने पृथिव्याः। मखायत्वा मखस्यत्वा शीर्ष्णे॥ आवाहयामि तान्देवीं सकपा-लिक पालिकाम्। यजमान हितार्थाय पूजयेत्पञ्चमेदले॥ ॐ भू० कपालिकायै० कपालिका मा० ॥५॥ ॐ इदम्विष्णु०॥ आवा-हयामि तान्देवीं निकला सकलां शुभाम्। सकलाभीष्टदां देवीं षष्ठकोष्ठे प्रपूजयेत्॥ ॐ भू० निकलायै० निकल मा० ॥६॥ ॐ व्वृष्णऽऊर्म्मिरसि राष्ट्रदा राष्ट्रम्मे देहि स्वाहा। वृष्णाऽ ऊर्म्मिरसि राष्ट्रदा राष्ट्रममुष्मै देहि व्वृषसेनोसि राष्ट्रदा राष्ट्रम्मे देहि स्वाहा व्वृषसेनोसि राष्ट्रदा राष्ट्रममुष्मै देहि॥ आवाहयामि तान्देवी ममलाम्बल संयुताम्। यज्ञेस्मिनिर्मलां स्थाप्या पूज्या सा सप्तमे दले॥ ओं भू० अमलायै० अमालामा० ॥७॥ ओं भायैदा व्वाहाराम्प्रभायाऽअग्न्येधम्म्रघ्नस्य व्विष्टपायाभिषेक्तारं व्वर्षिष्ठा-यनाकाय परिवेष्टारन्देवलोकायपेशितारम्मनुष्य लोकायप्रकरि

al Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathma

. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding:

तारᳪं सर्व्वेंभ्योलोकेभ्यऽ उपसेक्तारमवऽऋत्यै व्वधायोपमन्थिता रम्मेधायव्वासः पल्पूलीम्प्रक्रामाय रजयित्रीम् ॥ आवाहयामि तान्देवीं सर्वदा सर्वसिद्धिदाम् । यजमान हितार्थाय पूज्या कोष्ठेऽष्टमेदले ॥ ओं भू० सिद्धि प्रदायै० सिद्धिप्रदा मा० ॥८॥ इति अष्टमाष्टक पंक्तिः ॥

ईशाने जयायै० जयां० ॥ पूर्वे विजायायै० विजयामा० ॥ आग्नेये अजितायै० अजिता मा० ॥ दक्षिणे अपराजितायै० अपराजितामा० ॥ नैऋत्यै चेमकर्त्र्यै० चेमकर्त्री मा० ॥ पश्चिमे लक्ष्म्यै० लक्ष्मी मा० ॥

वायव्ये वैष्णव्यै० वैष्णवीमा० ॥ उत्तरे पार्वत्यै० पार्वती मा० ॥ ओं मनोजूतिंर्जुषतामाज्ज्यस्य वृहस्पतिर्यज्ञ मिमन्तनो त्वरिष्टं यज्ञᳪं समिमन्दधातु ॥ विश्वेदेवासऽइहमादयन्तामोᳪं प्रतिष्ठ ॥ साङ्गा सपपरिवाराः सायुधाः सशक्तिकाः सवाहनाः दिव्यादि चतुःषष्टियोगिन्यः सुप्रतिष्ठिताः वरदा भवन्तु ॥ ततः षोडशोपचारैः पंचोपचारैर्वा पूजयेत् ॥ इति योगिनी पूजनं समाप्तम् ॥

॥ अथ अजरादि चेत्रपाल पूजनम् ॥

ॐ इमौ ते पक्षावजरौ पतत्रिणौ याब्भ्याᳪं रक्षाᳪं स्यपहᳪं स्यग्ने । ताब्भ्याम्पते मसुकृतामुलोकं यत्र ऋषयोजग्मुः प्रथमजाः पुराणाः ॥ (एह्येहि सर्वा मम रक्षककत्वं सः चेत्रपालः प्रथमो मतो यः । तं चेत्र रक्षाकर मुख्य पूज्यं समाह्वये त्वाजरनामधेयम् ॥) ओं भू० अजराय नमः अजरामावाहयामि ॥१॥ ओं

epal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmand

Public Domain. Digitization by eGangotri.Fundin

प्रथमावाꣳ सरथिना सुवर्णादेवौपश्यन्तौ भुवनानि व्विश्वा।
अपिप्रपश्चोदनावाम्मिमानाहोतारा ज्ज्योतिः प्प्रदिशादिशन्ता॥
(एह्येहि सद्वयापित सर्वलोक व्यापश्वयं रक्षति जीवलोकम्।
सद्वयापकाख्याय महाभुजाय क्षेत्राधिनाथाय नमोनमस्ते॥) ओं भू०
व्यापकाख्याय० व्यापकाख्यं० ॥२॥ ओं इन्द्रस्य व्वज्रोसि मित्रा
व्वरुणयोस्त्वा प्प्रशास्त्रोः प्प्रशिषायुनज्मि। अव्यथायै त्वा स्वधायै
त्वारिष्टोऽअर्ज्जुनो मरुताम्प्रसवेन जयापाम मनसोक्षमिन्द्रियेण
(एह्येहि विघ्नाह्वि विनाशयत्वं रक्षाङ्कुरुष्वाखिल भूतयेभ्यः।
सदीन्द्रचौराद्वयकाय तस्मै क्षेत्राधिनाथाय नमोनमस्ते)॥
ॐ इन्द्रचौराय० इन्द्रचौर मा० ॥३॥ ॐ एवेदिन्द्रं व्वृषणंव्रज
व्वाहुंव्वसिष्ठासोऽअभ्यर्च्चन्त्यर्कैः। सनस्तुतो व्वीरवद्धातु गोमद्यू-
यम्पात स्वस्तिभिः सदानः॥ एह्येहि वृत्रासुरनाशाय महाभयाया-
सुरघातिने च। सदिन्द्रमूर्तेस्फुरदाह्वयाय सत्क्षेत्रपालाधिपते
नमस्ते॥ ॐ भू० इन्द्रमूर्तये० इन्द्रमूर्त्तिं० ॥४॥ ॐ उक्षा
समुद्रोऽअरुणः सुपर्ण्णः पूर्वस्य योनिम्पितुराविवेश। मद्ध्ये दिवो
निहितः पृश्निरश्माविचक्रमे रजसस्पात्यन्तौ॥ एह्येहि सर्वा-
मरवंदितांघ्रे दैवीकृपालोचनवर्द्धिताय। कठोरशव्दाखिलभीति
कर्त्रे उक्षाभिधानाय नमोनमस्ते॥ ॐ भू० उक्षाभिधाय०
उक्षाभिधमा० ॥५॥ ॐ यदेवादेव हेडनन्देवासश्चकृमावयम्।
अग्निर्मातस्मादेन सोविश्वान्मुञ्चत्वꣳ हसः॥ एह्येहि कूष्माण्ड
महानुभावरक्षो गणान्नाशय नाशयत्वम्। क्षेत्रेशमार्य्यादि महा-
भयेभ्यः त्रायस्व त्रायस्व विभो नमस्ते॥ ॐ भू० कूष्माण्डाय०

al Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathma

. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding:

कूष्माण्ड मा० ॥६॥ ॐ सनऽइन्द्राययज्जवे वरुणाय मरुद्भ्यः। व्वरिवोवित् परिस्रव ॥ एह्येहि विख्यात यशोधिपुञ्ज विवेक विद्या विनयाधिवास। क्षेत्राधिपं विघ्नविनाशशीलं महानुभावं वरुणप्रणौमि ॥ ॐ भू० वरुणाय० वरुणमा० ॥७॥ ॐ व्वाहूमेबल मिन्द्रियꣳ हस्तौ मे कर्म्म वीर्यम् । आत्माक्षत्र मुरोमम ॥ एह्येहि बौद्धादिमतापहारीन्हराशु वन्दीजन बन्धनानि। तं बाहु काख्यं वटुबुद्धिपुञ्जं क्षेत्राधिपत्वां भगवन्नमामि ॥ ॐ भू० बाहु काख्याय० बाहुकाख्यं० ॥८॥ ओं मुंचन्तुमाश पथ्यादथो व्वरुण्या-दुत। अथ यमस्य पड्वीशात्सर्वस्माद्देव किल्विषात् ॥ एह्येहि वैकुण्ठ पदाब्ज भृङ्ग विवेक विद्या विनयाम्बुराशे विमुक्त संज्ञाय वराय तस्मै क्षेत्राधिनाथाय नमोनमस्ते ॥ ओं भू० विमुक्ताय विमुक्त या० ॥९॥ ओं कुर्वन्नेवेह कर्म्माणि जिजीविषेच्छतꣳ समाः। एवन्त्वयि नान्यथेतोस्ति न कर्म्म लिप्यते नरे ॥ एह्येहि लीलालयलिप्तकाय कस्तूरिकाचन्दनचर्च्चिताय। लक्ष्मीपते लोल-विलोचनाय क्षेत्राधिनाथाय नमोनमस्ते ॥ ओं भू० लिप्तकाय० लिप्तकमा० ॥१०॥ ओं सन्नः सिन्धुरवभृथायोद्यतः समुद्रोऽभ्यव ह्रियमाणः सलिलः प्रप्लुतोययोरोजसास्कभितारजाꣳसिवीर्य्येभि वीरतमाशविष्ठा यापत्येतेऽअप्रतीता सहोभिर्विष्णुऽअगन्वरुणा पूर्व्वहूतौ ॥ एह्येहि लीलाकसुनामधेय लोकाधिनाथैरभिपूजि-तस्त्वम्। लूतादिविस्फोटक भीतिहंत्रे लीलाकसंज्ञाय नमोनमस्ते ॥ ओं भू० लोलालोकाय० लीलालोकमा० ॥११॥ नमो गणेभ्यो गणपतिभ्यश्चवो नमो नमोव्रातेभ्यो व्रातपतिभ्यश्चवो नमो नमो

epal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmand

Public Domain. Digitization by eGangotri.Fundin

गृत्सेभ्योगृत्सपतिभ्यश्चवो नमोनमोऽविरूपेभ्यो विश्वरूपेभ्यश्चवो नमः ॥ एह्येहि दीर्घास्य कठोर नेत्रत्रयेण विद्रावितभूत जाल। महोग्रदंष्ट्रा विकरालधाम्ने सदेकदंष्ट्राय नमो नमस्ते ॥ ओं भू० एक दंष्ट्राय० एक दंष्ट्रमा० ॥१२॥ ओं अम्मेंभ्योहस्ति पञ्चवा-याश्वयम्पुष्ट्यै गोपालं वीर्य्यापाविपालन्तेजसेजपालमिरायै कीना-शङ्कीलालाय सुराकारम्भद्राय गृहपॐश्रेयसेवित्त धमाध्यत्त्याया-नुत्त्तारम् ॥ एह्येहि शक्रस्य सुवाहनाय चतुर्महादन्त विरा-जिताय। ऐरावताख्या रिपुप्रहर्त्रे सत्त्वेत्रपालाय नमो नमस्ते ॥ ओं भू० ऐरावताख्याय० ऐरावताख्यं ॥१३॥ ओं याऽओषधीः पूर्वाज्जातादेवेभ्यऽस्त्रियुगम्पुरा। मनैनुबभ्रूणामहॐ शतंधामानि सप्तश्च ॥ एह्येह्यनात्चाररतान्हराशु त्वामोषधीघ्नं प्रणमामि सिद्ध्यै। सदौषधी वीर्यहरायतस्मै महौषधीघ्नाय नमो नमस्ते ॥ ओं भू० औषधीघ्नाय० औषधीघ्नं ॥१४॥ ॐ त्र्यम्बकं यजामहे० एह्येहि विद्याधर बुद्धिदातः सद्बाणत्राणासनहस्तयुग्मः ॥ कराल दोर्दण्ड विवाधतारिन्तं बन्धनाख्यं प्रणतोऽहमस्मि ॥ ओं भू० बन्धनाख्याय० बन्धनाख्यं० ॥१५॥ ओं देवसवितः प्रसुवयज्ञम्प्र-सुव यज्ञपतिम्भगाय। दिब्भ्यो गन्धर्वः केतपूः केतन्नः पुनातु ब्वाचस्पतिर्वाचन्नः स्वदतु ॥ एह्येहि दीर्घास्य कठोर नेत्र दोर्दण्ड संत्रासित दैत्यवृन्द। मम दुख दारिद्र्य विनाशनाय आदिव्यका-याय नमो नमस्ते ॥ ॐ भू० दिव्यकायाय० दिव्यकायं ॥ १६ ॥ ॐ सीसेनतन्त्रम्मनसा मनीषिणऽऊर्णा सूत्रेण कवयोवयन्ति ॥ अश्विनायज्ञॐ सविता सरस्वतीन्द्रस्य रूपं वरुणोभिषज्ज्यन् ॥

al Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathma

. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding:

कस्तूरि विलिप्तकाय दोर्दण्ड विद्रावित कोटिदैत्य । काश्मीरशतकंवलशोभिताय शतकंवलाख्याय नमो नमस्ते ॥ ॐ भू॰ कंवलाख्याय॰ कम्बलाख्यं ॥१७॥ ॐ आशुः शिशानो व्वृषभोनभीमोघनाघनः क्षोभणश्चर्षणीनाम् । सङ्क्रन्दनोनिमिषऽ एकवीरः शतᳬ सेनाऽअजयत्साकमिन्द्रः ॥ एह्येहि शूराधिप गीतकीर्तें संक्षोभयत्वं विघ्नान्हि शीघ्रम् । क्षुद्रारिपुञ्जक्षयकाय तस्मै संक्षोभणाख्याय नमो नमस्ते ॥ ॐ भू॰ क्षोभणाख्याय क्षोभणाख्यं॰ ॥१८॥ ॐ इमᳬ साहस्रᳬ शतधारमुत्सं व्यच्च्यमानᳬ सरिरस्य मध्ये । घृतन्दुहाना मदितिञ्जानायाग्नेमाहिᳬसीः परमेव्योमन् ॥ गवयमारण्यमनुते दिशामि तेन चिन्वानस्तन्वो निषीद । गवयन्ते शुगृच्छतु यन्द्विष्मस्तन्तेशु गृच्छतु ॥ स्वरावविद्रावित सर्वभूतकांतार नाना पशुपालकाय ॥ गोतुल्यरूपाय गरिष्ठधाम्ने क्षेत्राधिनाथाय नमो नमस्ते ॥ ॐ भू॰ गवे गवां॰ ॥१९॥ ॐ कुम्भोवनिष्ठुज्जंनिता शचीभिर्यस्मिन्नग्रेयोन्याङ्गर्भोऽअन्तः । प्लाशिर्व्यक्तः शतधारऽउत्सोदुहेन कुम्भीस्वधाम्पितृभ्यः ॥ घोरारवाघर्घरितस्वराय घोरास्य दंष्ट्राय करालधाम्ने । क्षेत्राधिनाथाय घटाभिधाय महानुभावाय नमो नमस्ते ॥ ॐ भू॰ घंटाभिधाय॰ घंटाभिध मा॰ ॥२०॥ ॐ आक्रन्दय वलमोजोनऽआधानिष्ठ निहिदुरितावाधमानः । अपप्प्रोथदुन्दुभेदुच्छुनाऽइतइन्द्रस्य मुष्टिरसिवीडयस्व ॥ एह्येहि पाथोनिधि मन्दिराय विशाल नेत्राय वरिष्ठधाम्ने । नागाधि-

epal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmand

Public Domain. Digitization by eGangotri.Fundin

नाथाय विरोधहन्त्रे व्यालाभिधानाय नमो नमस्ते ॥ ॐ भू० व्यालाय व्यालमा० ॥२१॥ ॐ इन्द्रायाहितूतुजानऽउपब्रह्माणि-हरिवः । सुतेदधिष्वनश्चनः ॥ एह्येहि वीराधिपवन्दितांघ्रे सूक्ष्मातिसूक्ष्मस्वकरूप धर्त्रे । अरिष्टहर्त्रे परमाणुनाम्ने ह्यणुस्वरूपाय नमो नमस्ते ॥ ॐ भू० अणुस्वरूपाय० अणुस्वरूप मा० ॥२२॥ ॐ चन्द्रमाऽअप्स्वन्तरा सुपर्णो धावतेदिवि । रविम्पिशङ्गम्ब-हुलम्पुरूस्पृहꣳ हरिरेतिक्रनिक्रदत् ॥ प्रचण्ड भुजदण्डायद्यति क्रान्तेन्दुकान्तये । चन्द्रवारुण संज्ञाय क्षेत्राधिपतये नमः ॥ ॐ भू० चन्द्रवारुणाय० चन्द्रवण मा० ॥२३॥ ॐ प्रतिश्रुत्का-याऽ अर्तनङ्घोषाय भषमन्ताय बहुवादिन मनन्ताय मूकꣳ शब्दायादुम्बरा घातम्महसे वीणावादङ्क्रोशाय तूणवध्मममवरस्पराय शङ्खध्मंवनायवनपमन्यतोरण्या यदावयम् ॥ फेत्कारविद्रावित सर्वभूतं पापघ्न कायं हनुउग्रदेहम् । देवंफटा-टोपसुनामधेयं क्षेत्राधिनाथं शिरसा नमामि ॥ ॐ भू० फटाटोपाय० फटटोप मा० ॥२४॥ ॐ उग्रँलोहितेन मित्त्रꣳसौव्रत्येन रुद्रन्दौर्व्रत्येनन्द्रम्प्रक्रीडेन मरुतोबलेन साद्ध्यान्प्रमुदा ॥ भवस्य कण्ठयꣳ रुद्रस्यान्तः पार्श्व्यम्महादेवस्य यकृच्छर्वस्य वनिष्ठुः पशुपतेः पुरीतत् ॥ स्फुरज्जटाजूट विराजिताय जाड्यान्ध-काराय शरीरधाम्ने ॥ जगज्जनानन्दकराय तस्मै जटाल संज्ञाय नमो नमस्ते ॥ ॐ भू० जटालाय जटालमा० ॥२५॥ ॐ पवि-त्रेणपुनीहिमा शुक्रेण देवदीद्यत् ॥ अग्ग्ने क्रत्वाक्रतूँरनु० ॥ कृपा कटाक्ष युक्ताय कर्ण कुण्डल शोभिने ॥ कुठारपाणेय क्षेत्र स्वामिने

al Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathma

. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding:

क्रतवे नमः ॥ ॐ भू० क्रतवे० क्रतुं० ॥२६॥ ॐ आजिघ्र कलशं० ॥ घंटारवध्वस्त दिगन्तभीति घोरांस्य संदर्षरितस्वरंच ॥ घण्टेश्वरं पाप विनाशकत्वं चेत्राधिनाथं भगवन्तमीडे ॥ ॐ घण्टे श्वराय० घण्टेश्वरमा० ॥२७॥ ॐ व्वायो शुक्रोऽअयामिते मद्धोऽअग्रन्दिविष्ट्विषु ॥ आयाहिसोमपीतये स्पाहोंदेवनियुत्वता ॥ एह्येहि वीरेन्द्र सुवन्दितांघ्रे विख्यातनाम्ने विततोग्रधाम्ने ॥ वामप्रियायाथ विनोद कर्त्रे विटंक संज्ञाय नमो नमस्ते ॥ ॐ भू० विटंकाय० विटंकमा० ॥२८॥ ॐ दैव्व्याहोताराऽऊर्द्ध्वमद्धरन्नो ग्नेर्जिह्वामभि गृणीतम् ॥ कृणुतन्नः स्विष्टिम् ॥ एह्येहि नाना मणि संयुताय मारीगणाक्षाय मनोहराय ॥ मुनीन्द्र वन्द्याय च मोहहर्त्रे नमोस्तु तस्मै मणि मन्दिराय ॥ ॐ भू० मणि मतये० मणिमतिमा० ॥२९॥ ॐ त्रीणितऽआहुर्द्दिवि बन्धनानि त्रीण्यप्सुत्रीण्यन्तः समुद्रे ॥ उतेवमेव्वरुणश्छन्त्स्यर्व्वन्न्यत्त्रातऽ आहुः परमञ्जनित्त्रम् ॥ एह्येहि गौरीप्रिय कारिकाय गणेश विघ्नौघ विनाशकारिन् ॥ गान प्रियायाथ गुहा गृहाय गणौध बन्धाय नमो नमस्ते ॥ ॐ भू० गणबन्धाय०गणबन्धमा० ॥३०॥ ॐ प्रतिश्रुत्कायाऽअर्त्तनङ्घोषाय भषमन्ताय बहुवादिनमनन्ताय मूकॐ शद्धायादुम्बराघातम्महसेव्वीणा वादङ्क्रोशाय तूणवध्ध्म मवरस्थराय शंखध्ध्मं व्वनाय व्वनपमन्न्यतो रण्यायदावयम् ॥ प्रचण्डको दण्डल सत्कराय कराल रूपाय कुमारंकाय ॥ कादम्बरी पानरताय तस्मै सत्डामराख्याय नमो नमस्ते ॥ ॐ भू० डाम- राय० डामरमा० ॥३१॥ ॐ शुद्धवालः सर्वशुद्धवालो मणि

epal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmand

Public Domain. Digitization by eGangotri.Fundin

वालस्तऽआश्विनाः श्येतः श्येताक्षो रूणस्तेरूद्रायपशुतयेकर्णा यामा अवलिप्तारोद्रानभौरूपाः पार्ज्जन्न्याः ॥ एह्येहि ढुंकार चक्रप्रियाय भयापहाराय निवाशिनेच कुमारमित्राय विराजिताय सढुण्ढि कर्णाय नमो नमस्ते ॥ ॐ भू० ढुण्ढि कर्णाय० ढुण्ढिकर्ण मा० ॥३२॥ ॐ व्वनस्प्पते व्वीड्वङ्गोहि भूयाऽ अस्म्मतसखाप्प्रतरणः सुवीरः। गोभिः सन्नद्धोऽअसि व्वीडयस्वास्त्थातातेजयतुजेत्वानि ॥ स्वस्थान संस्थाय सुवेषकाय सुरारि हंत्रे च गरिष्ठ धाम्ने। नेत्रार्चिपादीपितवासधाम्ने नमो नमस्ते स्थविराभिधाय ॥ ॐ भू० स्थविराय० स्थविरमा० ।३३। सुपर्णं व्वस्ते मृगोऽअस्यादन्तो गोभिः सन्नद्धापतति प्प्रसूता। यत्रानरः सञ्चव्विचद्द्रवन्ति तत्रास्म्मब्भ्यमिषव शर्म्मयꣳ सन् ॥ विशालेदंष्ट्रा विकरालरूपं दन्तप्रभानुन्नमहान्धकार ॥ दारिद्र्य कान्तारसु धूमकेतो नमोस्तुते दन्तुरनामधेयम् ॥ ॐ भू० दन्तुराय० दन्तुरमा० ॥३४॥ ॐ अग्ग्नेऽअच्छावदेहनः प्प्रतिनः सुमनाभव प्रनोयच्छ सहस्रजित्वꣳ हिधनदाऽअसि स्वाहा ॥ एह्येहि धर्मात्मज तुल्य रूप धराधिनाथस्तुत विक्रमप्रभो ॥ धन प्रदायाथ धुरन्धराय घनेश संज्ञाय नमो नमस्ते ॥ ॐ भू० धनदाय० धनदमा० ॥३५॥ ॐ भद्रं कर्णेभिः श्रृणु० ॥ एह्येहि नानाविध विक्रमस्त्वं सुरेन्द्र नागाधिप गीतकीर्ते ॥ नारायणाख्या नरताय तस्मै संनाग कर्णाय नमो नमस्ते ॥ ओं भू० नागकर्णाय० नागकर्णमा० ॥३६॥ ओं बाहूमेबल मिन्द्रियꣳ हस्तौमे कर्म्म व्वीर्य्यम् ॥ आत्त्मात्त्र मुरोमम ॥ एह्येहि मारीगण नाश-

al Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathma

. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding:

नाप मुनि प्रवन्द्याय मनोहराय ॥ दुःख प्रहर्त्रे च खलौघ हर्त्रे महाभुजायाथ नमो नमस्ते ॥ ओं भू० मारीगणाय० मारीगण मा० ॥३७॥ ओं अपाम्फेनेन नमुचेः शिरऽइन्द्रोदवर्त्तयः ॥ व्विश्श्वायदजयष्टधः ॥ एह्येहि फेत्कार महानुभाव दारिद्र्य दुःखौघ विनाशकारिन् ॥ येन प्रभाय प्रभवे सुराणां फत्कार संज्ञाय नमो नमस्ते ॥ ओं फेत्आराय० फेत्कारमा० ॥३८॥ ओं इदꣳ हविः प्रजननम्मेऽअस्तु दशव्वीरꣳ सर्व्वगणꣳ स्वस्तये ॥ आत्म्मसनि प्प्रजासनि पशुसनि ल्लोकसन्य भयसनि अग्निः प्प्रजाम्बहुलाम्मे करोत्वन्नम्पयोरेतोऽअस्म्मासुधत्त ॥ एह्येहि चातुर्थ्य समुद्र मूर्त्ते चञ्चत्करास्फालन शोभिताङ्ग ॥ सुतप्त कार्तस्वरभास्वराङ्ग तं चीकराख्यम्भगवन्तमीडे ॥ ओं भू० चीक-राय० चीकरमा० ॥३९॥ ओं याव्याघ्रं व्विशूचिकोभौ व्वृकञ्च रक्षति श्येनम्पतत्त्रिणꣳ सिꣳ हꣳ सेमम्पात्वꣳ हसः ॥ सिंहा-कृति तिग्मकरालदंष्ट्रं नखायुधं भीतिकरं गजानाम् ॥ नागेन्द्र नीराजितपादपद्मं क्षेत्राधिपं सिंहवरं नमामि ॥ ओं भू० सिंहा कृतये० सिंहाकृतिमा० ॥४०॥ ओं मृगोनभीमः कुचरोगिरिष्ठाः परावतऽआजगन्था परस्याः ॥ सृकꣳ सꣳ शायपविमिन्द्रतिग्मं व्विशत्रून्ताढि व्विमृधोनुदस्व ॥ एह्येहि मारीगण नाशनाय महेश पादार्चन तत्पराय ॥ मद प्रमत्तौघ मदप्रहर्त्रे मृगाभिधानाय नमो नमस्ते ॥ ओं भू० मृगाय० मृगमा० ॥४१॥ ओं इन्दुर्दक्षः श्येनऽ ऋतावाहिरण्यपक्षः शकुनोभुरण्युः महान्त्सधस्त्थेद्ध्रुवऽआनि-षत्तोऽनमस्तेऽअस्तुमा माहिꣳ सीः ॥ एह्येहि पाथोधि विलास

epal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmand

Public Domain. Digitization by eGangotri.Fundin

कर्त्रे रुद्राक्षमाला विलसद्दलाय ॥ यत्तप्रभामण्डित भूतलाय यत्नमाभिधानाय नमो नमस्ते ॥ ॐ भू० यत्नमप्रियाय० यक्ष्म प्रियमा० ॥४२॥ ॐ जीमूतस्येवभवति प्प्रतीकं य्यद्दम्मीर्याति समदामुपस्थे ॥ अनाविद्धयातन्न्वा जयत्वॅं सत्वाव्वम्मणो महि- मापिपत्तु ॥ एह्येहिकारुण्य सुधा समुद्रस्वकीय भासाहतचन्द्र- कान्ते ॥ मेघाख्यकं वाहननामधेयं त्त्रेत्राधिनाथ प्रवरं नमामि ॥ ॐ भू० मेघवाहनाय० मेघवाहनमा० ॥४३॥ ॐ तीव्रान्घोषा- न्कृण्ण्वते व्वृषपाणयोश्चारथेभिः सहन्वाजयन्तः अव क्रामन्तः प्प्रपेदै रामित्रान्न्चिणन्ति शत्रूँ १ रनपव्ययन्तः ॥ एह्येहितीक्ष्णो- ष्ट्रमहानुभाव जयाप्रसूत प्रतिमोग्रतेज । नाना विभूषारुचिराय तस्मै तीक्ष्णोष्ट्र संज्ञाय नमो नमस्ते ॥ ॐ भू० तीक्ष्णोष्ट्राय० तीक्ष्णोष्टमा० ॥४४॥ ॐ घ्वायुष्ट्वा पचतैरवत्व सितग्रीव- श्छाग्रैन्न्यग्ग्रोधश्चमसैः शल्मलि व्वृद्धया ॥ एषस्य रात्थ्यीव्वृषा पड्भिश्चतुर्भिरेदगन्त्रह्मा कृष्णश्चनोवतुनमोग्नये ॥ एह्येहिराति व्रजनाशनाय खड्गोग्र धाराक्षतदुर्जनाय । अग्निस्वरूपाय गुणैक धाम्नेऽनलाभिधानाय नमो नमस्ते ॥ ॐ भू० अनलाय० अनलं० ॥४५॥ ॐ आदित्यास्त्वा पृष्ठे सादयाम्म्यन्तरिक्षस्य धर्त्री व्विष्टम्भनीन्दिशामधि पत्नीम्भुवनानाम् । ऊर्म्मिर्द्दप्सो- अपामसि व्विश्वकर्म्मातऽऋषि रश्विनाद्ध्वर्य्यू सादयतामिहत्वा ॥ एह्येहि कोटीन्दु समप्रभाय शुद्धाम्वराकल्प विराजिताय । शरीर सामर्थ्ययुताय तस्मै तच्छुक्लतुण्डाय नमो नमस्ते ॥ ॐ भू० शुक्लतुण्डाय० शुक्लतुण्डं० ॥४६॥ ॐ द्यौस्ते पृथिव्यन्तरिक्षं

al Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathma

. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding:

व्वायुश्छिद्रं पृणातुते ॥ सूर्य्यस्ते नक्षत्रैः सहलोकङ्कृणोतु साधुया । एह्येहि सुधालाप संसार भयहारक सुख प्रदाय भक्तानां क्षेत्रपालाय ते नमः ॥ ॐ भू० अन्तरिक्षाय० अन्तरिक्षं० ॥४७॥ ॐ सम्बर्हिरङ्क्ताᳪ हविषाघृतेन समादित्यै र्व्वसुभिः सम्भरुद्भिः ॥ समिन्द्रो व्विश्वदेवेभिरङ्क्तान्दिव्यन्नभोगच्छतु यत्स्वाहा ॥ एह्येहि वन्दीगण बन्धमोचनं बुद्धिप्रदं बाहुबल प्रकाशम् । बोधप्रदं वर्वरकाभिधानं क्षेत्राधिनाथं शिरसा नमामि ॥ ॐ वर्वरकाय० वर्वरकं० ॥४८॥ ॐ पवमानः सोऽअद्यनः पवित्रेण व्विचर्षणिः ॥ यः पोतासपुनातुमा ॥ एह्येहि राकापति तुल्यवक्त्रस्वएव सम्पूरितदिक्तटाय । पुतात्मने सत्यवनाभिधाय क्षेत्राधिनाथाय नमो नमस्ते ॥ ॐ भू० पावनाय नमः पावनमावाहयामि ॥४९॥ ॐ मनोज्ज्यूति० इति अजरादि पावनान्ताः क्षेत्रपालाः सुप्रतिष्ठिताः वरदा भवन्तु ॥ ॐ अजरादि पावनान्त क्षेत्रपालेभ्यो नमः इति पूजयेत् ॥ नव कोष्ठानि कृत्वा मध्ये कोष्ठे पावनं पूजयेत् । दिक्षु विदिक्षु अष्टसु कोष्ठेषु पञ्चकोणं कृत्वा मध्ये वृत्तं पूर्वादिक्रमेण अजरादि स्थापनं मध्ये पावन मितिक्रमः ॥ इति क्षेत्रपाल पूजनं समाप्तम् ॥

॥ आर्तिक्यम् ॥

जय अम्बे गौरी मैया श्यामा गौरी ॥ मैया जय मंगलकरणी मैया जय आनन्दकरणी ॥ तुमको निशिदिन ध्यावत हरि ब्रह्मा शिवरी ॥ जय० ॥१॥ मांग सिन्दूर विराजत टीको मृगमदको ॥ ॥ मैया टको ॥ उज्ज्वल से दोऊ नैना, चन्द्र वदन नीको ॥

epal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmand

Public Domain. Digitization by eGangotri.Fundin

॥ जय अम्बे० ॥२॥ कनक समान कलेवर रक्ताम्बर राजै ॥ ॥ मैया रक्ता० ॥ रक्त पुष्प गल माला कण्ठन पर साजै ॥ ॥ जय अम्बे० ॥३॥ केहरि वाहन राजत, खड्ग खप्पर धारी ॥ ॥ मैया खड्ग खप्र० ॥ सुर नर मुनि जन सेवत तिनके दुःख हारी ॥ जय अम्बे० ॥४॥ कानन कुण्डल शोभित, नासाग्रे मोती ॥ मैया नासाग्रे० ॥ कोटिक चन्द्र दिवाकर राजत सम ज्योति ॥ जय अम्बे० ॥५॥ शुम्भ निशुम्भ बिदारे, महिषासुर घाती ॥ मैया महिषा० ॥ धूम्र विलोचन नैना, निशिदिन मद माती ॥ जय अम्बे० ॥६॥ चण्ड मुण्ड संहारे शोणित बीज हरे ॥ मैया शो० ॥ मधुकैटभ दोऊ मारे सुर भयहीन करे ॥ जय अम्बे० ॥७॥ ब्रह्माणी रुद्राणी तुम कमला रानी ॥ मैया तुम० ॥ आगम निगम बखानी तुम शिव पटरानी ॥ जय अम्बे० ॥८॥ चौंसठ योगिनी गावत, नृत्य करत भैरों ॥ मैया नृत्य० ॥ बाजत ताल मृदंगा और बाजत डमरू ॥ जय अम्बे० ॥९॥ तुम ही जग की माता तुम ही हो भरता ॥ मैया तुम० ॥ भक्तन की दुःख हरता ॥ सुख सम्पत्ति करता ॥ जय अम्बे० ॥१०॥ भुजा चार अति शोभित, वर अभय धारी ॥ मैया वर० ॥ मन वांछित फल पावत, सेवत नरनारी ॥ जय० ॥११॥ कंचन थाल विराजत अगर कपूर बाती ॥ मैया अगर० ॥ श्रीमाल केतुमें राजत कोटि रतन ज्योति ॥ जय अम्बे० ॥१२॥ माँ अम्बेजी की आरति, जो कोई नर गावै ॥ मैया जो० ॥ भणत शिवानन्द स्वामी, सुख सम्पति पावे ॥ जय अम्बे गौरी ॥१३॥

al Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathma

. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding:

॥ मन्त्र पुष्पांजलिः ॥

ॐ यज्ञेन यज्ञमयजन्त देवास्तानि धर्म्माणि प्रथमान्यासन् । तेह-नाकम्महिमानः सचन्तयत्र पूर्वे साध्याः सन्तिदेवाः ॥ ॐ राजा-धिराजाय प्रसह्यसाहिने नमोवयंवैश्रवणायकुर्महे ॥ समेकामान्कामाय मह्यं ॥ कामेश्वरो वैश्रवणोददातु कुवेराय वैश्रवणाय राजाधिराजाय महाराजाय नमः ॥ ॐ स्वस्ति साम्राज्यं भोज्यं स्वाराज्यं वैराज्यं पारमेष्ठ्यं राज्यंमहाराज्यमाधिपत्यमयं समन्त पर्यायी स्यात् सार्वभौमः सर्वायुष आन्तादापरार्धात् ॥ पृथिव्यै समुद्र पर्यान्ताया एकराडिति तदप्येष श्लोकोभिगीतो मरुतः परिवेष्टारो मरुत्तस्या वसन् गृहे ॥ आवीक्षितस्य कामप्रेर्विश्वेदेवाः सभासद इति ॥ ॐ विश्वतश्चक्षुरुत विश्वतोमुखो वाहुरुत विश्व तस्पात् ॥ सम्बाहुभ्यान्धमति सम्पतत्रैर्द्यावा भूमीजनयन्देवएकः ॥ मन्त्र पुष्पाञ्जलिं समर्पयामि नमः ॥ सेवन्तिका वकुल चम्पक पाट–लाब्जैः ॥ पुन्नागजाति करवीर रसाल पुष्पैः । विल्वप्रवाल तुलसीदल मंजरीभि ॥ त्वां पूजयामि जगदीश्वरी मे प्रसीद ॥ पापोहं पाप कर्म्माहं पापात्मा पाप सम्भवः ॥ त्राहि मां सर्वदा मातः सर्व पाप हरोभव ॥ अतः परंउत्तराङ्गपूजा विसर्जनादीनि ॥

॥ अथ देव्यापराध क्षमापन स्तोत्रम् ॥

श्री गणेशाय नमः ॥ न मंत्रं नो यंत्रं तदपि च न जाने स्तुति महो न चाह्वानं ध्यानं तदपि च न जाने स्तुति कथाः ॥ न जाने

epal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmand

Public Domain. Digitization by eGangotri.Fundin

मुद्रास्ते तदपि च न जाने विलपनं परंजाने मातस्त्वदनुसरणं क्लेश हरणम् ॥१॥ विधेरज्ञानेन द्रविण विरहेणालसतया विधेयाशक्यत्वात्तव चरणयोर्या च्युतिरभूत ॥ तदेतत्चन्तव्यं जननि सकलोद्धारिणि शिवे कुपुत्रो जायेत क्वचिदपि कुमाता न भवति ॥२॥ पृथिव्यां पुत्रास्ते जननि बहव सन्ति सरलाः परं तेषां मध्ये विरल तरलोऽहं तवसुतः ॥ मदीयोयं त्यागः समुचित मिदं नो तव शिवे कुपुत्रोजायेत क्वचिदपि कुमाता न भवति ॥३॥ जगन्मातर्मातस्तव चरणसेवा न रचिता न वादत्तं देवि द्रविणमपि भूयस्तवमया । तथापि त्वं स्नेहं मयिनिरूपमंयत्प्रकुरूषे कुपुत्रो जायेत क्वचिदपि कुमाता न भवति ॥ ४ ॥ परित्यक्त्वा देवान्विविध विधसेवा कुलतया मया पञ्चाशीते रधिकमुपनीते तु वयसि ॥ इदानीं चेन्मातस्तव यदिकृपा नापि भविता निरालम्बो लम्बोदर जननिकं यामि शरणम् ॥५॥ श्वपाको जल्पाको भवति मधुपाकोपमगिरा निरातंको रंको विहरतिचिरं कोटि कनकैः ॥ तपावर्णे कर्णे विशति मनुवर्णे फलमिदं जनः कोजानीते जननि जपनीयं जपविधौ ॥६॥ चिताभस्मा लेपो गरलमशनं दिक्पट धरो जटाधारी कण्ठे भुजगपतिहारी पशुपतिः ॥ कपाली भूतेशो भजति जगदीशैक पदवीं ॥ भवानि त्वत्पाणि ग्रहणपरिपाटी फलमिदम् ॥७॥ न मोक्षस्याकांक्षा न च विभववांछापि चन्मे न विज्ञानापेक्षा शशिमुखि सुखेच्छापि न पुनः ॥ अतस्त्वां संयाचे जननि जननं यातु मम वै मृडानी रुद्राणी शिव शिव भवानीति जपतः ॥८॥ नाराधितासि विधिना

al Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathma

. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding:

विविधोपचारैः किं रुद्धचिन्तन परैर्नकृतं वचोभिः ॥ श्यामे त्वमेव यदिकिंचन मय्यनाथे धत्सेकृपा मुचितमम्ब परं तवैव ॥९॥ आपत्सु मग्नः स्मरणं त्वदीयं करोमि दुर्गे करुणार्णिवेशि नैतच्छ-ठत्वं मम भावयेथा क्षुधातृषार्ता जननीं स्मरन्ति ॥१०॥ जगदम्ब विचित्रमत्र किं परिपूर्णा करुणास्ति चेन्मयि । अपराधपरं परावृतं नहि माता समुपेक्षते सुतम् ॥११॥ मत्समः पातकी नास्ति पापघ्नी त्वत्समानहि । एवं ज्ञात्वा महादेवि यथायोग्यं तथा कुरु ॥१२॥ इति ॥

॥ अथ कुशकण्डिका ॥

आचार्यादिनांवरण ॥ अमुक गोत्रोऽमुकनामा करिष्यमाण कर्मणि अमुक गोत्र अमुक शर्माणं एभिवरण द्रव्यैस्त्वामहमाचार्य त्वेन वृणे ॥ आचार्य० । वृतोस्मि ॥ यथा शक्रस्य वागीश आचार्यः सर्व कर्मसु । तथा मया त्वमाचार्यो वृतोस्मिन् शुभ कर्मणि ॥ ॐ अद्य कर्त्तव्यास्मिन्होम कर्मणि कृता कृतावेक्षणरूप ब्रह्म कर्म कर्तु अमुक गोत्रं अमुक शर्म्माणं ब्राह्मणमेभिर्द्रव्याक्षत पूगीफल वासोभिर्ब्रह्मत्वेन त्वामहं वृणे ॥ वृतोस्मीति प्रतिवचनम् (कर्ता) यथा विहितं कर्म्म कुरु (ब्रह्मा) यथा ज्ञानं करवाणि अस्मिन् कर्म्मणि त्वम्मे ब्रह्मा१ भव (ब्रह्मा) भवानि ॥ अथाचार्यो

---

(१) उत्तरे सर्व पात्राणि प्रणीतादीन्यनुक्रमात् ।
पूर्वेणैव द्विजातसर्वे ब्रह्मा किमुतदक्षिणे ॥ इति प्रश्ना ॥
दक्षिणे दानवाः प्रोक्ताः पिशाचोरगराक्षसाः ।
तेषां दूरी करणार्थाय ब्रह्मा तिष्ठति दक्षिणे ॥

epal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmand

Public Domain. Digitization by eGangotri.Fundin

स्थण्डिले कुण्डे वा पञ्च भू० संस्कारान्कृत्वा लौकिकाग्निं स्थापयेत् ॥ अथ पञ्चभू संस्काराः ॥ तत् त्रिकुशैर्हस्त परिमितां चतुरस्रां२ भूमिं परिसमुह्य (३ बार) तान्कुशानेशान्यां निक्षिप्य॥ गोमयोदकेनोपलिप्य३ ॥ स्रुवमूलेन प्रादेशमात्र उत्तरोत्तरक्रमेण प्रागग्रं त्रिरूल्लिख्य उल्लेखन क्रमेणानामिकाअंगुष्ठाभ्यां मृदमुद्धृत्य (३ बार) वारिणातं देशमभ्युक्ष्य (३ बार) कांस्य पात्रस्थं लौकिकाग्नि मग्नि कोणादानीय सुवासिनी द्वारा प्रत्यङमुख मुपसमाधाय क्रव्यादांशंत्यजेदनेन मन्त्रेण ॥ ॐ क्रव्यादमग्निं प्रहिणोमि दूरं यम राज्यं गच्छतुरिप्रवाहः ॥ इहैवायमितरो जात वेदा देवेभ्यो हव्यं वहन्तु प्रजानन् ॥ अथावाहनम् ॥ ॐ अग्निं दूतं पुरोदधे हव्यवाहमुपब्रुवे ॥ देवांऽआसादयादिह ॥ अग्न्यानीत पात्रे साक्षतोदकं निषिञ्चेत् ॥ संमुखी करणम् ॥ ॐ चत्वारि श्रृङ्गात्रयोऽअस्य पादाद्वशीर्षे सप्तहस्तासोऽअस्य ॥ त्रिधाबद्धो वृषभोरोरवीति महादेवो मर्त्याऽआविवेश ॥ भो अग्ने वैश्वानर शांडिल्य गोत्र शांडिल्यासित देवलेति त्रिप्रवरान्वित भूमि मातः वरुणपितः मेषध्वज प्राङमुख मम संमुखो भव ॥ वरदनामाग्निं प्रतिष्ठाप्य ॥ वरदना माग्नये नमः ॥ इति नाम मन्त्रेण वायव्य कोणे स्थंडिलाद्वहिरग्नि पूजनं विधाय ॥

---

(२) परिसमू० कृमिकीट पतंगाश्च विचरन्ति महीतला।
तेषां संरक्षणार्थाय परि समुह्येति कथ्यते ॥

(३) पुरा इन्द्रेण वज्रेण हतोवृतो महासुर ।
व्यापितायेसाद पृथ्वी तदर्थमनु लेपनम् ॥

al Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathma

. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding:

॥ अथ ध्यानम् ॥

ॐ (१) रुद्रतेज समुद्भूतं द्विमूर्द्धानं द्विनासिकम् । षण्नेत्रं च चतुःश्रोत्रं त्रिपादं सप्तहस्तकम् ॥ याम्यभागे चतुर्हस्तं सव्यभागे त्रिहस्तकम् । श्रुवं श्रुतिं च शक्तिश्च अक्षमालां च दक्षिणे ॥ तोमरं व्यञ्जनं चैव घृतपात्रं तुवामके ॥ विभ्रंतं सप्तभिर्हस्तै द्विमुखं सप्त जिह्वकम् ॥ दक्षिणे च चतुर्जिह्वं त्रिजिह्वं चोत्तरे मुखे द्वात्रिंशत्कोटि मूर्त्याख्यं द्विपंचाशत्कलायुतं ॥ स्वाहा स्वधा वषट् कारैरङ्कितं मेषवाहनम् ॥ रक्तमाल्याम्बरं रक्त रक्तपद्मासने स्थितं रुद्रं त्वां शुभनामाहं वह्निमावाहयाम्यहम् ॥ त्वं मुखे सर्वदेवानां सप्तार्चिरमितद्युते ॥ आगच्छ भगवन्नग्ने यज्ञेस्मिन्सन्निधं कुरु ॥ ॐ अग्निं प्रज्वलितं वन्दे जातवेदं हुताशनम् ॥ हिरण्यवर्णमनलं समृद्धं विश्वतोमुखम् ॥ तत आचार्योग्नेर्दक्षिणतः परिस्तरण भूमिं-त्यक्त्वा ब्राह्मणे आसनं दत्वा तदुपरि प्रागग्रानुदगग्रान्कुशानास्तीर्य ब्रह्माणमग्नि प्रदक्षिण क्रमेणानीय अस्मिन्दुर्गाहवनकर्मणि त्वं मे ब्रह्माभव ॥ इत्यभिधाय ॥ वरण कर्मणा पूर्व संपादितं ब्राह्मणं तदभावे ५० पंचाशत्कुशर्निर्मितं [ब्रह्माणं] कल्पितासने उदङ्मुखं उपवेशयेत् पूजयेच्च ॥ ततः प्रणीतापात्रं पुरुतः कृत्वा जलेनापूर्य कुशत्रयेणाच्छाद्य ब्रह्मणोमुखमवलोक्य ॥ अग्नेरुत्तरतः कुशोपरि-निदध्यात् ॥

॥ ततः परिस्तरणम् ॥

वर्हिषश्चतुर्थ (१६) भागमादाय चतुर्भिर्दर्भैं पूर्वाग्रैराग्न्येयादीशा-नान्तम् ॥४॥ प्रागग्रैर्ब्रह्मणोग्नि पर्यन्तम् ॥४॥ प्रागग्रै नैरृत्याद्वाय

epal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmand

Public Domain. Digitization by eGangotri.Fundin

व्यान्तम् ॥४॥ प्रागग्रैरग्नितः प्रणीता पर्यन्तम् ॥४॥ परिस्तरणं कृत्वा ॥ ततः अग्नेरुत्तरतः पश्चिमदिशि पवित्रछेदनार्थं कुश-त्रयम् ॥ पवित्र करणार्थं साग्रममन्तर्गर्भेद्वेकुशपत्रे ॥ प्रोक्षणी पात्रम् ॥ आज्यस्थाली ॥ चरुस्थाली संमार्जनकुशाः पञ्चउपयमन कुशाः सप्त ॥ वेणीरूप कुशात्रयम् समिधस्तिस्रः पालाश्यः प्रादेश मात्राः ॥ स्रुवः१ खादिरो हस्तमात्रः ॥ आज्यं२ गव्यम् ॥ शोधितास्तन्दुलाः पूर्ण पात्रम् ॥ दक्षिणा वरोवा ॥ पवित्र छेदन कुशानां पूर्वदिशि क्रमेणासादनीयम् ॥ ततः पवित्र छेदनैः पवित्र करणम् ॥ द्वयाः पवित्रयोरुपरि पवित्रत्रयंनिधाय ॥ अग्रतः प्रादेश मात्रं विहाय त्रिभिकुशर्द्वेकुशतरुणेप्रच्छिद्य ॥ द्वयोमूलं त्रीणिचो-त्तरतः क्षिपेत् ॥ ततः सपवित्र पवित्रे गृहीत्वा त्रिसत्यवनम् ॥ प्रोक्षणी पात्रस्य सव्यहस्तेकरणं अनामिकांगुष्ठाभ्यां पवित्रे गृहीत्वा त्रिरूदिङ्गनम् ॥ ततः प्रणीतोदकेन प्रोक्षणी प्रोक्षणम् ॥ प्रोक्षणी जलेन आज्यस्थाल्यादीनि पूर्णपात्र पर्यन्तानि क्रमेणकेशः प्रोक्ष्य ॥ असञ्चरो प्रणीताग्न्योरन्तराले प्रोक्षणीपात्रं निधाय ॥ आसादितमाज्यं पश्चादग्ने र्निहितायांमाज्य स्थाल्यां प्रक्षिप्य ॥

---

(१) अग्रेकृत्वा तु वैधव्यं मध्ये धृत्वा प्रजाक्षयः ।
मूले च म्रियते होता स्रुवस्थानं कथं भवेत् ॥ इति प्र० ॥
अग्रान्मध्यस्तु यन्मध्यं मूलान्मध्यस्तु मध्यमम् ।
स्रुवं च धारयेद्विद्वायायु रारोग्यपदं सदा ॥

(२) उत्तमं गो घृतं प्रोक्तं मध्यमं महिषा भवम् ।
अधमंछागली जात तस्माद् गव्यं प्रशस्यते ॥

al Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathma

. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding.

चरुस्थाल्यां प्रणीतोदकमासिंच्य ॥ आसादितांस्तंडुलान्प्रक्षिप्य ॥ तत्राज्यं ब्रह्माधिश्रयति तदुत्तरतः स्वयं चरुमेव युग पदग्नावारोप्य ईषच्छृतेचरौज्वदुल्मकं प्रदक्षिणं आज्यचर्वोः समन्ताद् भ्रामयेत् ॥ दक्षिणपाणिना स्रुवमादाय ॥ अधोमुखमग्नौ तापयित्वा सव्यपाणौ कृत्वा ॥ दक्षिणेन संमार्जनाग्रैर्मूलतोग्र पर्यन्त मूलैरग्रमारभ्य अधस्तान्मूल पर्यन्तं ॥ स्रुवं संमृज्य प्रणीतोदकेनाभिषिञ्च्य ॥ पुनः प्रतप्य दक्षिणतो निदध्यात् ॥ ततः आज्यमुत्थाप्य ॥ चरोः पूर्वेण नीत्वाग्नेरुत्तरतः स्थापयित्वा ॥ चरुमुत्थाप्य ॥ आज्यस्य पश्चिमतोनीत्वाज्यस्योत्तरतः स्थापयित्वा आज्यमग्नेः पश्चादानीय ॥ चरुं चानीय ॥ आज्यस्योत्तरतो निदध्यात् ॥ ततः पूर्ववत्पवित्राभ्यामाज्यमुत्पूर्य ॥ अवलोक्य ॥ तस्मादपद्रव्यनिरसनं पुनः प्रोक्षिण्युत्पवनं ॥ ततः उपमयन कुशानादाय उत्तिष्ठन् प्रजापतिम्मनसा ध्यात्वा ॥ तूष्णीमग्नौ घृताक्ताः समिधस्तिस्रः प्रक्षिपेत् ॥ ततः उपविश्य ॥ प्रोक्षिण्युदकेन सपवित्रेणाग्नि मीशानादिउदवपर्यन्तं परिषिच्य ॥ दक्षिण जान्वाच्य ॥ ब्रह्मणान्वारब्धः यजमाने नान्वारब्धश्च समिद्धतमेग्नौस्रुवेणाज्याहुतीर्जुहुयात् ॥ तत्राधारावाज्यभागौ च हुत्वा अनन्तरं स्रुवावस्थितहुतशेषं घृतस्य प्रोक्षणीपात्रे प्रक्षेपः ॥

॥ अथ होमः ॥

अग्नेरुत्तर भागे ॥ ॐ (नमः) प्रजापतये स्वाहा, प्रजापतये इदं नमम ॥ अग्ने दक्षिणा भागे ॥ ॐ इन्द्राय स्वाहा, इन्द्रायेदन्नमन ॥

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

Public Domain. Digitization by eGangotri.Fundin

इत्या घोरो ॥ मध्ये समिद्धतमे ॥ ॐ अग्नये स्वाहा, अग्नये-दन्नमम ॥ ॐ सोमाय स्वाहा, सोमायेदन्नमम ॥ इत्याज्यभागौ ॥ अथाचार्योऽग्निंसम्पूज्य ॥ ततः गणेशादि मण्डल स्थापित देवानां हवनं कुर्यात्तथैव गौरीतिलकसर्वतोभद्रमण्डलस्थ देवानामपिकुर्यात् ॥ पुनः कवचार्गला कीलकं पठित्वा नवार्ण न्यासान्विधाय नवार्णे-नापि १०८ हुत्वा ततः सप्तशती न्यासान्कृत्वा पुनः मार्कण्डेय उवाच इत्यारम्भ ॐ सावर्णिर्भविताममु रित्यन्तं हुत्वा ॥ पुनरु-त्तरन्यासान्विधाय १०८ नवार्ण च जुहुयात् ॥ ततो हुतशेष हविर्द्रव्यं गृहीत्वा ब्रह्मणान्वारब्धः स्विष्टकृद्धोमं कुर्यात् ॥ ॐ अग्नये स्विष्टकृते स्वाहा, इदमग्नये० ॥ ततो भूराद्यानवाहुतयः ॐ भू० स्वाहा, इदमग्नये ॥ ॐ भुवः स्वाहा, इदं वायवे ॥ ॐ स्वः स्वाहा, इदमग्निवायु सूर्येभ्यः ॥ ॐ त्वन्नो अग्ने वरुस्य विद्वान्देवस्यहेडोऽअवयासिसीष्ठः यजिष्ठो वह्नितमः शोशु-चनो विश्वेदेवा ᳪसि प्रमुमुग्ध्यस्मत्स्वाहा, इदमग्नी वरुणाभ्याम् ॥ ॐ सत्वन्नोऽअग्नेवमो भवोतीनेदिष्ठो अस्याऽउषसोव्युष्टौ अवयत्त्वेना वरुणᳪ रराणोवीहि मृडीकᳪ सुहवो नऽएधि स्वाहा, इदमग्नी वरुणाभ्याम् ॥ ॐ अयाश्चग्नेस्य नभिशास्तिपाश्चसत्व मित्वमयाऽअसि ॥ अयानो यज्ञं वहास्ययानो धेहिभेषजᳪ स्वाहा, इदं अपसेऽअग्नये ॥ ॐ येतेशतं वरुणये सहस्रं यज्ञिया पाशा वितता महान्तः ॥ तेभिर्नोऽअद्यसवितो त विष्णुर्मुचन्तु मरुतः स्वर्काः स्वाहा, इदं वरुणाय सवित्रे विष्णवे विश्वेभ्यो देवेभ्यो

al Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathma

. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding.

मरुद्भ्यः स्वर्केभ्यश्च ॥ ॐ उदुत्तमं वरुण पाश भस्मदवाधमं विमध्यमꣳश्रथाय अथावयमादित्य ब्रते तवानागसो अदितये स्याम स्वाहा ॥ इदं वरुणाय ॥ ॐ प्रजापतये स्वाहा, इदं प्रजापतये ॥ ॐ अग्नये स्विष्टकृते स्वाहा, इदमग्नये स्विष्टकृते ॥

epal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmand

Public Domain. Digitization by eGangotri.Fundin

॥ श्री गणेशाय नमः ॥

अथ देव्या विशेष हवन विधानम्

दुर्गोपनिषत्कल्पद्रुमादुद्धृतम्

अ०	मन्त्राणि	संख्या	वस्तुनाम
१	बलादाकृष्यमोहाय—	५६	शर्करा
१	आस्तीर्य शेषमभजत्—	६७	कमलबीज कमलगट्टा
१	वञ्चिताभ्यामिति तदा—	१००	कर्पूर
१	बिलोक्यताभ्यांगदितो—	१०१	कमलगट्टा
१	तथेत्युकत्वा भगवता···	१०३	मधु-केला गुग्गुल नागर पान

अध्याय में कबच का मन्त्र खड्गिनी से लेकर पांच मन्त्रों का हवन न करके उसके बदले में मूल मन्त्र से हवन करे। ये मन्त्र ८० मन्त्र से ८४ मन्त्र तक हैं।

अध्याय के अन्त में ओं सांगायै वाग्भववीजाधिष्ठातृ महाकाल्यै नमः स्वाहा" इस मन्त्र से प्रथमाध्याय के अन्त में मधु पुष्प द्वारा एकाहुति देवे।

अ०	मन्त्राणि	संख्या	वस्तुनाम
२	अस्त्राण्यनेकरूपाणि	२८	कर्पूर
२	श्येनानुकारिणः प्रणान्	६०	सरसों
२	क्षणेन तन्महासैन्य···	६७	राई
२	देव्यागणैश्च तै सै–	६९	पुष्प बिल्वपत्र

"ओं सांगायै बीजाधिष्ठात्र्यै महालक्ष्म्यै नमः स्वाहा" इस मन्त्र से गुग्गुल की आहुति एक देवे।

al Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathma

. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding:

अ०	मन्त्राणि	संख्या	वस्तुनाम
३	बिडालस्यासिना···	२०	निम्बू कागजी
३	ततः क्रुद्धा जगन्माता—	३४	गुड़ दुग्ध
३	गर्ज गर्ज क्षणं मूढ—	३८	मधु
३	अर्धं निष्क्रान्त एवासौ	४२	घिया (लौकी)
३	तुष्टुवुस्तां सुरादेवीं···	४४	पान – सुपारी

इस अध्याय के अन्त में "ओं सांगायै अष्टविंशति वर्णात्मिकायै महालक्ष्म्यै नमः स्वाहा" इस मन्त्र द्वारा गुग्गुल, उड़द, दही और खोआ की आहुति एक देवे।

अ०	मन्त्राणि	संख्या	वस्तुनाम
४	देव्या ययाततमिदं जगदा—	३	कदली फल
४	हेतुःसमस्त जगतां त्रिगु···	७	बिल्व फल
४	यस्या समस्तसुरतासमु···	८	श्वेतचन्दन
४	मेधासिदेवि वितिता···	११	कर्पूर
४	त्रैलोक्यमेतदखिलंरि···	२३	शरीफा (सीताफल)

शूलेन पाहिनो देवि इस मन्त्र से लेकर खड्गशूलगदादीनि इस मन्त्र तक मूल मन्त्र से बड़ी एलायची से हवन करे। प्रथम मन्त्र से लेकर २७ मन्त्र तक खीर अथवा हलवा की आहुति देवे। ऐसे भी प्रमाणित लेख है।

अ०	मन्त्राणि	संख्या	वस्तुनाम
४	एवंस्तुता सुरदैव्यैः····	२६	रक्तचन्दन
४	भक्त्या समस्तैस्त्रि···	३०	धूप
४	रक्षणाय च लोकानां···	४२	तिल - धूप - मधु

इस अध्याय के अन्त में घृत-खीर मिश्रित अथवा हलुवा से "ओं सांगायै वर्णात्मिकायै त्रिशक्तयै महा लक्ष्म्यै नमः स्वाहा" इस मन्त्र से एक आहुति देवे।

epal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmand

Public Domain. Digitization by eGangotri.Fundin

अ०	मन्त्राणि	संख्या	वस्तुनाम
५	नमो देव्यै महादेव्यै—	९	हलुवा
५	रौद्रायै नमो नित्यायै—	१०	आमला
५	कल्याण्यै प्रणतांवृद्ध्यै—	११	भोजपत्र
५	निर्ऋत्यै महापद्म—	६६	कमलगट्टा
५	यो मां जयति संग्रामे—	१२०	कज्जल
५	तदागच्छतु शुम्भोत्र—	१२१	हिंगुल
५	सत्वं गच्छ—	१२६	ताम्बूल - सुपारी इक्षु

इस अध्याय के अन्त में सफेद चन्दन रोली बिल्वपत्र पर रख कर "ओं सांगायै विष्णुमायादि त्रयोविंशति देव्यै सरस्वत्यै नमः स्वाहा" इस मन्त्र से एकाहुति देवे।

अ०	मन्त्राणि	संख्या	वस्तुनाम
६	हे धूम्रलोचनाशु त्वं स्वसै—	४	गुग्गुल
६	इत्युक्त्व सोऽभ्यधावत्ताम्—	१३	निम्बूविजौरा
६	विच्छिन्न बाहुशिरसा—	१८	केसर
६	क्षणेन तद्वलं सर्वं—	१९	राई
६	श्रुत्वा तमसुरं देव्या—	२०	सुपारी - लोहवान् कमलगट्टा
६	केशेष्वाकृष्य बध्वावा—	२३	भोजपत्र
६	तस्यां हतायां दुष्टायाम्—	२४	इक्षु - कनेर - पुष्प

इस अध्याय के अन्त में कूष्माण्ड से "ओं सांगायै धूम्राक्ष्यै शक्त्यै नमः स्वाहा" इस मन्त्र द्वारा एकाहुति देवे।

al Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathma

. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding:

अ०	मन्त्राणि	संख्या	वस्तुनाम
७	ततः कोर्प-चकार—	५	कस्तूरी
७	उत्थाय च महासिंहं—	१६	कदलीफल
७	शिरश्चण्डस्य काली च—	२३	निम्बूविजौरा
७	तावानीतौ ततो दृष्ट्वा—	२६	कमलगट्टा
७	यस्माच्चण्डञ्च मुण्डञ्च—	२७	चिरौंजी

इस अध्याय के अन्त में "ओं सांगायैक पूर्वबीजाधिष्ठात्र्यै कालीचामुण्डायै देव्यै नमः स्वाहा" इस मन्त्र से चिरञ्जीदाना, मिसरी, बादाम अथवा लज्जवंती के पुष्पों से एकाहुति देवे।

अ०	मन्त्राणि	संख्या	वस्तुनाम
८	इति मातृगणं क्रुद्धं—	३६	सरसों
८	रक्तविन्दुर्यदाभूमौ—	४१	लाल चन्दन
८	भक्ष्यमाणात्वा चोग्रा—	५६	लाल चन्दन
८	मुखेनकाली जगृहे—	५७	लाल चन्दन
८	तांश्चखादाथ चामुण्डा	६०	इक्ष
८	जघान रक्तबीज—	६१	लाल चन्दन
८	नीरक्तश्च महीपाल—	६२	बिजौर निम्बू

इस अध्याय के अन्त में लाल चन्दन और सहत से और "ओं सांगायै प्रष्टमातृ सहितायै रक्ताख्यै देव्यै नमः स्वाहा" इस मन्त्र द्वारा एक आहुति देवे। ३६ से ६१ मन्त्र तक केवल लाल चन्दन की हवन होता है।

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

Public Domain. Digitization by eGangotri.Fundin

अ०	मन्त्राणि	संख्या	वस्तुनाम
६	विचित्र मिदमाख्यातम्–	२	निम्बू विजौरा
६	ततः परशुहस्तं तमायान्तं—	१६	कपीठ (चूक)
६	पूरयामास कुकुभोनिज—	२०	केशर
६	भिन्नस्य तस्य शूलेन—	३५	निम्बू विजौरा
६	तस्य निष्क्रामतो देवी—	३६	कण गुग्गुल और इन्द्र जौ
६	केचिद्दिने सुरसुराःके—	४१	पान – सुपारी बेलगिरी

इस अध्यायके अन्तमें बिजौरा निम्बू जावित्री से "ओं साङ्गायै भैरव्यै देव्यै नमः स्वाहा" इस मन्त्र द्वारा एक आहुति देवे।

अ०	मन्त्राणि	संख्या	वस्तुनाम
१०	निशुम्भं निहितं—	२	केशर कस्तूरी
१०	तमायान्तं ततो देवी—	२६	पका केला
१०	सगतासु पपातोर्व्याम्—	२७	भोजपत्र
१०	जज्ज्वलुश्चाग्नयः—	३२	इन्द्र जौ कमलगट्टा बटपत्रमें देवे

इस अध्याय के अन्त में कस्तूरी से "ओं साङ्गायै सिंहासनाधिष्ठात्र्यै त्रिशूलधारिण्यै देव्यै नमः स्वाहा" इस मन्त्र द्वारा।

al Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathma

. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding:

अ०	मन्त्राणि	संख्या	वस्तुनाम
११	त्वं वैष्णवी शक्तिरयन्त—	५	बिजौरा निम्बू
११	रोगानशेषानपहंसि—	२६	राई या काली मिर्चा गिलोय
११	सर्वावाधा प्रशमनंत्रै—	३६	काली मिर्चा
११	वैवस्वतेन्तरे प्राप्तऽष्टाविंश—	४१	सरसों
११	मक्षयन्त्याश्चातानुग्रान्—	४४	अनार पुष्प या दाना
११	तनो मां देवता स्वर्गे—	४५	मज़ीठ
११	भूयश्चशंतवार्षिक्यां—	४६	नारङ्गी
११	ततःशतेन नेत्राणां—	४७	कमलगट्टा
११	शाकम्भरीति विख्यातिं—	४९	सोआ पालक
११	भ्रामरीति मां लोका—	५४	काली मर्चा
११	तदा तदावतीर्याहं—	५५	सरसों

इस अध्यायके अन्तमें कपूर या खीर या शर्करा या घृतसे 'ओंसाङ्गायै नारायण्यै देव्यै नशः स्वाहा' इस मन्त्र द्वारा एक आहुति देवे। इसी अध्यायमें प्रथम मन्त्रसे लेकर २८ मन्त्र तक खीर या हलुवा की आहुति देवे। इसी अध्याय में २४ मंत्रसे २८ मंत्र तक मूलमन्त्र से हवन करे।

अ०	मन्त्राणि	संख्या	वस्तुनाम
१२	एभिस्तवैश्च मां नित्यं—	२	अगर
१२	बलिप्रदाने पूजायां—	१०	पेडा
१२	सर्वावाधा विनिर्मुक्तो—	१३	छोटी एलायची
१२	उपसर्गाशमंयान्ति—	१७	भोजपत्र
१२	सर्वं ममैतन्माहात्म्यम्—	२०	लौंग–बिजौरा–पुष्प कपूर
१२	पश्यतामेवदेवानां तत्रैवान्तर–	३३	सर्वौषधि
१२	सैवकाले महामारी—	३६	अनार फल का छिलका
१२	स्तुताः सम्पूजिताः पुष्पैः—	४६	पुष्प

epal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmand

Public Domain. Digitization by eGangotri.Fundin

इस अध्याय की समाप्ति पर अगर-केशर-कस्तूरी पुष्प सम्मिश्रित कर "ओं साङ्गायै वालायै त्रिपुर सुन्दर्यै देव्यै नमः स्वाहा" इस मन्त्र से एक आहुति देवे।

अ०	मन्त्राणि	संख्या	वस्तुनाम
१३	ददतस्तु बलञ्चैव—	१२	गुड पुष्प
१३	ततो बव्रे नृपो राज्यं—	१७	काली मर्चा
१३	सूर्य्याज्जन्म समासाद्य—	२६	पान - सुपारी

इस अध्याय के पूर्ण होने पर सफेद तिल, केशर, कपूर और श्वेत पुष्पों से "ओं साङ्गायै श्रियै त्रिपुर सुन्दर्य्यै महावैष्णव्यै देव्यै नमः स्वाहा" इस मन्त्र द्वारा एक आहुति देवे।

सप्तशती में जितने भी उवाच हैं उनमें किसी भी फल से आहुति देनी चाहिये। यह भी किसी आचार्य्य का मत है।

al Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathma

. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding:

॥ अथ बलिदानम् ॥

अद्य कृतस्य कर्मणसांगता सिद्ध्यर्थं दिग्पालपूर्वकं आदित्यादिग्रह-मण्डल स्थापित देवताभ्यो बलिदानंच करिष्ये ॥ पूर्वे ॥ ॐ त्राता रमिन्द्र मविता रमिन्द्रᳫं हवेहवे सुहवᳫं शूरमिन्द्रम् ह्वयामिशक्रं पुरुहूतमिन्द्रᳫं स्वस्तिनो मघवाधात्विन्द्रः ॥ इन्द्राय नमः सर्वो-पचारार्थे गन्धाक्षत पुष्पादिना संपूज्य एव सर्वत्र ॥ ॐ इन्द्राय सांगायसपरिवाराय सायुधाय सशक्तिकाय इमं सदीप दधिमाष भक्त बलिं समर्पयामि ॥ भो इन्द्रदिशं रक्ष बलिं भुङ्क्ष्व मम सकुटुम्बस्य अभ्युदयंकुरु आयुकर्ता क्षेमकर्ता शान्तिकर्ता पुष्टिकर्ता तुष्टिकर्ता निर्विघ्नकर्ता वरदोभव । अनेनबलिदानेन इन्द्रप्रीयताम् । अग्निकोणे ॥ ॐ त्वन्नोऽअग्ने तवदेव पायुभिर्मघोनो रक्षतन्वश्च वन्द्य ॥ त्रातातो कस्यतनये गवामस्य निमेषᳫं रक्षमाणस्तवव्रते ॥ अग्नये नमः ॥ अग्नये सा० ॥ भो अग्नेदिशं० ॥ दक्षिणेयमम् ॥ ॐ यमाय त्वांगिरश्वते पितृमते स्वाहा ॥ स्वाहा घर्माय स्वाहा घर्मः पित्रे ॥ यमाय नमः ॥ भो यम० ॥ नैरृत्यां ॥ ओं असु-न्वन्तम यजमान मिच्छस्तेनस्येत्यामान्वहि तस्करस्य ॥ अन्य मस्मदिच्छसातऽइत्यानमोदेवि निरृते तुभ्यमस्तु ॥ निरृतये नमः ॥ पश्चिमे ॥ ॐ तत्वायामि ब्रह्मणा वन्दमानस्तदाशास्ते यजमानो हविर्भिः ॥ अहेडमानो वरुणेहवोध्युरुशᳫं समानऽआयुः प्रमोषीः ॥ वरुणाय नमः ॥ वायव्यां ॥ ॐ आनोनियुद्भिः शतिनीभिरध्वरᳫं सहस्रीणीभि रूपयाहियज्ञम् वायोऽअस्मिन्त्सत्र नेमा यस्वं यूयं पातस्वस्तिभिः सदानः ॥ वायवे० ॥ उत्तरे ॥ ॐ

epal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmand

Public Domain. Digitization by eGangotri.Fundin

वयᳬ सोमव्रते तवमनस्तनूषु विभ्रतः ॥ प्रजावन्तः सचेमहि ॥ सोमाय० ॥ ईशान्यां ॥ ॐ तमीशानं जगतस्तस्थुषस्पतिन्धियं जिन्वमवसेहूमहे वयम् ॥ पूषानो यथा वेदसामसद्वृधे रक्षिता पायुरदब्धः ॥ स्वस्तये॥ ईश्वराय०॥ पूर्वेशानयोर्मध्ये ॥ ऊर्ध्वे ॥ ॐ अस्मे रुद्रामेहना पर्वतासो वृत्रहत्येभरहूतौसजोषाः ॥ यः शᳬ सतेस्तु वतेधायि वज्र इन्द्रोज्येष्ठाऽअस्मांऽप्रवन्तु देवाः ॥ ब्रह्मणे० निर्ऋति पश्चिमयोर्मध्ये अधोभागे ॥ ॐ स्योना पृथिविनो भवान्नृत्तरानिवेशनी ॥ यच्छानः शर्म स प्रथाः ॥ अनन्ताय० ॥ ततो ग्रहवेदि समीपे सूर्यादि ग्रहाणां बलिः ॥ ॐ आकृष्णेन रजसा० ॥ सूर्यादि ग्रहेभ्यः अधिदेवता प्रयधिदेवता सहितेभ्यः सांगेभ्यः सप० सश: इमं सदीपदधिमाषभक्त बलिं समर्पयामि ॥ भो भो सूर्यादि देवताः दिशा रक्षतबलिंभत्तत दीपानि पश्यत ॥ मम (यजमानस्य) सकुटुम्बस्याभ्युदयं कुरुत ॥ आयुः कर्तारः क्षेम कर्तारः शान्तिकर्तारः पुष्टिकर्तारः तुष्टिकर्तारः निर्विघ्नकर्तारः वरदो भवत ॥ अनेन बलिदानेन सूर्यादिग्रहाः प्रीयन्ताम् ॥ ततो १६ मातृणामेक बलिं दद्यात् ॥ ॐ समख्ये देव्याधियासं दक्षिणायो रुचक्षसा ॥ मामऽआयुः प्रमोषोमोंऽअहन्तववीरम्विदेय तवदेवि संहशि ॥ गौर्यादि मातृभ्य इमं सदीपमाषभक्त बलिं समर्पयामि भो भो गौर्यादि मातर इमं बलिं गृह्णीत मम (यजमानस्य) सकुटुम्बस्याभ्युदयं कुरुत आयुः कर्त्र्यः क्षेमकर्त्र्यः शान्तिकर्त्र्यः पुष्टि कर्त्र्यः तुष्टिकर्त्र्यः निर्विघ्नकर्त्र्यः वरदाभवन्तु ॥ बलिदानेनानेन गौर्यादि षोडशमातरः प्रीयन्ताम् ॥ ततः प्रधान बलिः भो दुर्गा

al Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathma

. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding:

दिशं रक्ष बलिं भक्ष मम सकुटुम्बस्य अभ्युदयं कुरु आयुष्कर्ता क्षेमकर्ता शान्तिकर्ता पुष्टिकर्ता तुष्टिकर्ता निर्विघ्नकर्ता वरदोभव ॥

॥ अथ क्षेत्रपाल बलिदान विधिः ॥

ॐ अद्येत्यादि० सकलारिष्ट शान्तिपूर्वकं प्रारीप्सितस्यकर्मणः सांगतासिद्ध्यर्थं क्षेत्रपाल पूजनं बलिदानं च करिष्ये ॥ इति प्रतिज्ञा ॥ अक्षतान्गृहीत्वा ॥ ओं नहि स्पर्श मविदन्नन्यमस्मा–द्वैश्वानरात्पुरऽएतारमग्नेः ॥ एमेनमवृधन्नमृताऽअमर्त्यं वैश्वानरं क्षत्रजित्यायदेवाः ॥ ॐ ह्रीं (क्षं) क्षेत्रपालाय नमः इति मन्त्रेण यथोपचारैः सम्पूज्य ध्यायेत् ॥

ॐ नीलाञ्जनाद्रि निभमूर्ध्व पिशंग केशम् ।
वृत्तोग्रलोचन मुदान्तगदा कपालम् ॥
आशाम्बरं भुजग भूषण मुग्र दंष्ट्रं ।
क्षेत्रेशमद्भुत तनुं प्रणमामिदेवम् ॥१॥
ॐ करकलितकपाल कुण्डलीदण्डपाणि ।
तरुण तिमिर नील ब्यालयज्ञोपवीति ॥
क्रतु समयसपर्या विघ्न विच्छेदहेतु ।
जयति बटुकनाथः सिद्धदः साधकानाम् ॥२॥
ॐ क्षेत्रपाल महाबाहो महाबलपराक्रम ।
क्षेत्राणां रक्षणार्थाय बलिं गृह्ण नमोस्तुते ॥

क्षं क्षेत्रपालाय सांगाय भूत–प्रेत पिशाच डाकिनी--शाकिनी वेतालादि परिवारयुताय सायुधाय सशक्तिकाय सवाहनाय इमं

epal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

Public Domain. Digitization by eGangotri.Fundin

सदीय दधिमाषभक्तबलिं समर्पयामि नमः ॥ भो भो क्षेत्रपाल सर्वतोदिशं रक्षबलिं भक्ष दीपं पश्य मम (यजमानस्य) सकुटुम्बस्य अभ्युदयंकुरु आयुः कर्त्ता क्षेमकर्त्ता शान्तिकर्त्ता पुष्टिकर्त्ता तुष्टि कर्त्ता, निर्विघ्नकर्ता शुभदो वरदोभव। बलिदानेन क्षेत्रपः प्रीयताम् ॥

॥ अथ पूर्णाहुतिः ॥

पूजाश्विष्टं नवाहुत्यो बलिः पूर्णाहुतिस्तथा ॥
आशीर्वाद प्रदानं च अभिषेको विसर्जनम् ॥

ततो यजमान पत्नीमाहूय ग्रन्थि बन्धनं कृत्वा तद्दक्षिणे स्थित्वा गणेशादि देवताभ्यो नमः ॥ इत्यनेन गंधाक्षताभिः सम्पूज्य ॥ पश्चात् ॐ अग्नेनय सुपथारायेऽअस्मान्विश्वानि देवव्वयुनानि व्विद्वान् युयोध्यस्मज्जुहू राणमेनो भूयिष्ठान्तेनमऽउक्तिविधेम् ॥ मृडाग्नये नमः इति गन्धादिभि संपूज्य ॥ ॐ अद्येत्यादि० कृतस्य दुर्गाहवन कर्मणः साङ्गाता सिद्ध्यर्थ वसोद्धारा समन्वितं पूर्णाहुति होमं करिष्ये ॥ ततः पात्रान्तरे स्रुवेण चतुर्गृहीताज्यं द्वादशवारं गृहीतं वा गृहीत्वा पात्रोपरि वस्त्रवेष्ठितं श्रीफलं धृत्वा फल ताम्बूल गंधमाल्यादिभिरलंकृत्य गृहीत्वा पात्रं श्रुच्युपरि निधाय धृत्वोभय पाणिभ्यां यजमानस्तिष्ठेत् ॥ ॐ समुद्राद्रूर्म्मिमधुमाँ२ उदारदुपाँ२ शुनासम मृतत्वमानट् ॥ घृतस्य नाम गुह्यन्तदस्ति जिह्वा देवानाम मृतस्यनाभिः ॥१॥ चत्वारि शृङ्गात्रयोऽअस्यपादा द्वेशीर्षे सप्तहस्तासोऽअस्य ॥ त्रिधाबद्धा वृष भोरोरवीति महोदेवो मर्त्या २ आविवेश ॥२॥ पुनस्त्वा दित्या रुद्राव्वसवः समिन्धताम्पुनर्ब्रह्माणो व्वसुनीथ यज्ञैः ॥ घृतेनत्वन्वं

al Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathma

. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding:

च्वर्धयस्व सत्याः सन्तु यजमानस्यकामाः ॥३॥ सप्तते अग्नेसमिधः सप्तजिह्वाः सप्तऽऋषयः सप्तधाम प्रियाणि ॥ सप्तहोत्राः सप्तधात्वा यजन्ति सप्तयोनीरा पृणस्वघृतेन स्वाहा ॥४॥ पूर्णादर्विपरापत सुपूर्णापुनरायत ॥ व्वस्नेनविक्रीणावहाऽइषमूर्जꣳ शतक्रतो स्वाहा ॥५॥ इदमग्नये वैश्वनराय वसुरुद्रादित्येभ्यः शतक्रतवे सप्तवते अग्नये अद्भ्यश्चनमम ॥ वरुण कलशे त्यागः ॥ ततो वसो-र्द्धाराज्जुहुयात ॥ सप्तते ऽअग्ने समधि० ॥ वसोपवित्रमसि शतधारं वसोः पवित्रमसि सहस्रधारम् ॥ देवस्त्वा सवितापुनातु वसोः पवित्रेण शतधारेण सुप्वाकामधुक्षः स्वाहा ॥ ततः अग्नि प्रार्थना ॥ श्रद्धांमेधां यशः प्रज्ञां विद्यां पुष्टिं श्रियं बलम् ॥ तेज आयुष्य मारोग्यं देहि मे हव्यवाहन ॥ भो भो अग्ने महाशक्ते सर्व कर्म प्रसाधन ॥ कर्मान्तरेपि संप्राप्ते सान्निध्यं कुरुः सर्वदा ॥ त्र्यायुष करणम् ॥ ॐ त्र्यायुषं यमदग्नेरितिललाटे ॥ ॐ कश्यपस्य त्र्यायु-षमिति ग्रीवायाम् ॥ ॐ यद्देवेषु त्र्यायुषामिति दक्षिणांसे ॥ ॐ तन्नो अस्तु त्र्यायुषमितिहृदि ॥ वामस्कन्धे च ततः संस्रव प्राश-नम् ॥ तद्यथा, अद्येत्यादि पठित्वा पवित्राभ्यां मार्जनम् ॥ अग्नौ पवित्र प्रतिपत्तिः ॥ ब्रह्मणे पूर्ण पात्रदानम् ॥ तद्यथा अद्येत्यादि पठित्वा ॥ अद्य कृतैतद् दुर्गाहवनाख्य कर्मणि हवन कर्म प्रति-ष्ठार्थमिदं पूर्णपात्रं सदक्षिणम् ॥ प्रजापति दैवत्तममुक गोत्राय ॥ अमुक शर्म्मणे ब्राह्मणाय ब्रह्मणे तुभ्यमहं संप्रददे ॥ ॐ स्वस्तीति प्रतिवचनम् ॥ ततो ब्रह्मग्रन्थि विमोकः ॥ ततः प्रणीतोदकेन ॥ ॐ सुमित्रियानऽआपऽओषधयः सन्त्विति ॥ ॐ आष शिरा

epal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmand

Public Domain. Digitization by eGangotri.Fundin

शिवतमाः शान्ताशान्ततमाः तास्ते कृन्वन्तु भेषजमिति ॥ यजमान मूर्धानमभिषिञ्चति ॥ तत दुर्मित्रियास्तस्मै सन्तुयोस्मान्द्वेष्ठियं च वयंद्विष्मः इति ईशान्यां प्रणीतांन्युब्जीकुर्यात् ॥ तत परिस्तरणम् क्रमेण वर्हिरुस्थाप्याज्येनाभिर्धाय । ओं देवागातु विदोगातुं वित्वा गातुमित ॥ मनसस्पतऽइमं देव यज्ञꣳ स्वाहा वातेधाः स्वाहा ॥ इति मन्त्रेण हस्तनैवजुहुयात् ॥ ततः कलशजलं एकस्मिन्पात्रे निधाय दूर्वया यजमान (१) मूर्द्धानमभिसिंचति ॥ आपोहिष्ठे-त्यादि ३ मन्त्रैः ॥ आपोऽअस्मान्मातरः शुन्धयन्तुघृतेननौ घृतप्वः पुनन्तु ॥ विश्वꣳ हिरिप्रम्प्रवहन्तिदेवी रुदिदाभ्यः शुचिरापूतऽ एभि ॥४॥ इदमापः प्रवहताव्वद्यञ्च मलञ्चयत् ॥ यच्चाभिदुद्रोहा नृतन्यच्चशेपेऽअभीरुणम् आपोमातस्मादेनसः पवमानञ्चमुञ्चतु ॥५॥ शिरोमे श्रीर्यशोमुखन्तिपिः केशाश्चश्मश्रूणि ॥ राजामे प्राणोऽअमृतꣳ सम्राट चक्षुर्विराट श्रोत्रम् ॥६॥ जिह्वा मे भद्रं वाङ् महोमनो मन्युः स्वराड् भामः ॥ मोदाः प्रमोदाऽअंगुली रङ्गानिमित्रम्मे सह ॥७॥ वाहूमे वलमिन्द्रियꣳ हस्तौ मे कर्म्म वीर्यम् ॥ आत्माक्षत्र मुरोमम ॥८॥ पृष्ठीमे राष्ट्रमुदरमꣳ सौग्री-वाश्च श्रोणी ॥ ऊरू अरत्नी जानुनी विशोमेङ्गानि सर्वतः ॥९॥ नाभिर्मेचित्तम्विज्ञानम्पायुर्मेपचितिर्भसत् आनन्दनन्दा वाराण्डौमे-भगः सौभाग्यम्पसः ॥ जङ्घाभ्यांपद्भ्यां धर्मोस्मिविशिराजा प्रतिष्ठितः ॥१०॥ यतोयतः सहीहसे ततोनोऽअभयङ्कुरुशन्नः कुरु प्रजाभ्यो भयन्नः पशुभ्यः ॥११॥ अथ पुराणोक्त मन्त्राः ॥ सुरास्त्वामभिषिञ्चन्तु व्रह्म विष्णु महेश्वराः वासुदेवो जगन्नाथ-

al Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathma

. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding:

स्तस्थासंकर्षणो विभुः ॥१॥ प्रद्युम्नश्चानिरुद्धश्च भवन्तु विजयायते आखण्डलोग्नि भगवान्यमौवे निऋतिस्थता ॥२॥ वरुण पवनश्चैव धनाध्यक्षस्तथाशिवः ब्रह्मणा सहिताः सर्वे दिग्पालाः पान्तु ते सदाकीर्तिर्लक्ष्मीर्धृतिर्मेधा पुष्टि श्रद्धा क्रियामतिः ॥ बुद्धिर्लज्जावपुः शान्तिस्तुष्टिः कान्तिश्चमातरः ॥४॥ एतास्त्वामभिषिञ्चन्तु देवपत्न्यः समागताः ॥ आदित्यश्चन्द्रमो भौमवुधजीव सितार्कजा ॥५॥ ग्रहास्त्वामभिषिञ्चन्तु राहुकेतुश्चतर्पिताः ॥ देव दानव गन्धर्वाः यक्ष राक्षस पन्नगा ॥६॥ ऋषयोमनवोगावो देव मातरएवच ॥ देव पत्न्योद्रुमानागा दैत्याश्चाप्सरसांगणा ॥७॥ अस्त्राणि सर्व शस्त्राणि राजानोवाहनानिच ॥ औषधानि च रत्नानि कालस्यावयवाश्चमे ॥८॥ सरितः सागराः शैलास्तीर्थानि जलदानदाः एतेत्वामभिष्षिञ्चन्तु सर्वकामार्थ सिद्धये ॥ ॐ द्यौः शान्तिरिक्षॅं शान्तिः० ॥

॥ अथ छाया पात्र दानम् ॥

कांस्यपात्रे स्थिताज्यं च आत्मरूपं निरीक्ष्यतु ॥
ससुवर्णन्तु यो दद्यात्सर्व विघ्नोपशान्तये ॥१॥

मन्त्र ॥ ॐ रूपॅंरूपं प्रतिरूपो वभूव तस्यरूपं प्रतिचक्षणाय इन्द्रोमायाभिः पुरुरूपऽएते युक्तह्यस्यहरयः शतादशोत्पर्यंवै हरपोयं दश च सहस्राणि बहूनि च नन्तातदेतद् ब्रह्मपूर्व मनवाह्यजमनुः सर्वानुशासनम् ॥ इत्याज्ये मुखमलोक्य ॥ संकल्प ॥ अद्येत्यादि० ममै तच्छरीरावच्छिन्न समस्त पापक्षय सर्वग्रहपीड़ा शान्ति शरी–

epal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

Public Domain. Digitization by eGangotri.Fundin

रोत्थार्त्तिनाशाय प्रासाद वांछायुरारोग्यादि सर्वसौभाग्यप्राप्तये सर्वसौख्यप्राप्तये च इदं स्वदेहच्छायाविच्छिताज्यपूरित कांस्यपात्रं ससुवर्ण (तदक्षिणाकं) विष्णु दैवतं अमुक गोत्राय अमुक शर्मणे ब्राह्मणाय सुपूजिताय तुभ्यमहं संप्रददतेन मम ॥

॥ मन्त्रौ ॥

याऽलक्ष्मीर्यच्चमे दौस्थ्यं सर्वाङ्ग समुपस्थितम् ॥
तत्सर्वं नाशयाज्य त्वं प्रियमायुश्च वर्द्धय ॥१॥
आज्यं सुराणामाहारः सर्वमाज्ये प्रतिष्ठितम् ॥
आज्य पात्र प्रदानेन शान्तिरस्तु सदामम ॥२॥

इति छायापात्र दानविधि

॥ अथ मण्डप परिक्रमा ॥

ॐ ये तीर्थानि प्रचरन्ति सृकाहस्तानिषङ्गिणः ॥ तेषाᳩं सहस्र योजने वधन्वानितन्मसि ॥१॥ यानिकानि च पापानि जन्मान्तर कृतानि च । तानि तानि प्रणश्यन्ति प्रदत्तिण पदे पदे ॥२॥ पापोहं पापकर्माहम् पापात्मा पाप सम्भव । त्राहि मां चण्डिके देवि सर्व पाप हरोभव ॥ गोचारिणी दत्तिणा ॥ अद्येत्यादि कृतस्य दुर्गाहवनास्य कर्मणि अपूर्ण पूर्णार्थं न्यूनातिरिक्त द.प परिहारार्थं गौरभावे गौचारिणीं (गोदुग्धपानार्थ वा) दत्तिणां अमुक गोत्राय अमुक शर्म्मणे सपूजिताय ब्राह्मणाय तुभ्यमहं संप्रददे ॥ कृतस्य दुर्गाहवन कर्मणि सांगता सिद्धयर्थं गोत्रेभ्यः अस्चार्यादि ऋत्विग्भ्यो दक्षिणां यथा यथा विभज्ययुष्माभ्यमह

al Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathma

. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding

मुत्सृजे ॥ भूयसी दानम् ॥ कृतस्य दुर्गाहवन कर्मणः सांगता सिद्धयार्थं अपूर्णपूर्णार्थं भूयसीं दक्षिणां नानानां गोत्रेभ्यो ब्राह्मणेभ्यो दीनानाथेभ्यो अन्धपंगुभ्यश्च यथायथा विभज्यदातुमहमुत्सृजेत् ॥

॥ आशीर्वादः ॥

पुत्रवती दक्षिणतऽइन्द्रस्याधिपत्ये प्रजाम्मेदाः पुत्रवती दक्षिणतऽ इति नात्रति रोहतमिवास्तीन्द्रस्याधिपत्यऽइतीन्द्र रेवास्याऽअधिपतिङ्करोति नाष्ट्राणां रक्षसामपहत्ये प्रजाम्मेदाऽइति प्रजामेव पशून्नात्मन्धत्ते तमोह पुत्री पशुमान् भवति ॥ शतंभवति शतायुर्वै पुरुषः शतेन्द्रि यऽआयुरेवेन्द्रियं वीर्यमात्मन्धत्ते ॥१॥ ध्रुवासि ध्रुवोयं यजमानोस्मिन् पतने प्रजयापशुभिर्भूयात् ॥२॥ अथैनमभि पद्यवाययसि ध्रुवासिध्रुवोयं यजमानो स्मिन्नायतने प्रजयाभूदिति पशुभिरितिवैवं यं कामं कामये तस्मैकामः समृध्यते शतंभवति शतायुर्वै पुरुषः शतेन्द्रियऽआयुरेवेन्द्रियं वीर्यमात्मन्धत्ते ॥१॥ ॐ स्वस्तिनऽइन्द्रो० ॥ श्रीवर्चस्वमा० ॥ पुनस्त्वा रुद्रादित्या० ॥ मन्त्रार्था सफलाः सन्तुपूर्णा सन्तुमनोरथा । शत्रूणां बुद्धिनाशोस्तु मित्राणांमुदयस्तथा ॥ आयुष्कामोः यशस्कामो पुत्रपौत्रस्तथैवच ॥ आरोग्यं धनकामश्च सर्वेकामा भवन्तु मे ॥ आशिशोगृहूणीयात् ॥ ततो देवताग्नि विसर्जनम् ॥ यान्तु देवगणाः सर्वे स्वशक्तया पूजिता मया ॥ इष्ट काम प्रसिद्धयर्थं पुनरागमनायच ॥ गच्छ गच्छ सुरश्रेष्ठ स्वस्थाने परमेश्वर । यत्रब्रह्मादयोदेवास्तत्र गच्छ हुताशन ॥

८

epal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmand

Public Domain. Digitization by eGangotri.Fundin

॥ अथावभृथस्नानम् ॥

हय शीर्षे ॥ अतः परंप्रवक्ष्यामि देवस्या वभृथंतव ॥ शोधयेद्गो मयैर्विप्र यागस्थानंतु सर्वतः ॥१॥ सिक्त्वा गन्धोदकेनाथ पंचगव्येन शोधयेत् ॥ विकिरैः शोधयेद्भूमिं वितानेन विभूषयेत् ॥२॥ पुष्पदाम्ना त्वधोश्चोर्ध्वं पार्श्वतश्चापि शोभयेत् ॥ जूहुयाद्वैष्णवोवह्नौघृतमष्टोतरं शतम् ॥३॥ विष्णोनुकंवीर्याणि प्रवोचंप्पः पार्थिवानिविमम मेरजाꣳसि ॥ योऽअस्कभायदुत्तर सधस्थ विचक्रमाणस्त्र धोरूगायो विष्णवेत्वा ॥ मन्त्रेण समीधोऽष्टतथा शतम् ॥ विद्यामालिख्य विधिना एकाशीते पदावुधः ॥४॥ वैष्णवं कलशंमध्य आजिघ्र कलशंमह्यात्वाविशंत्विन्दवः पुनरूर्जानि वर्तस्वसानः ॥ सहस्रं धुक्ष्वोरूधारा पयस्वतीपुनर्माविशताद्रविः [निवेशयेत्] ॥ एकाशीति पदेकुंभान् श्रीसूक्तेन निवेशयेत् ॥ ॐ हिरण्यवर्णां हरिणीं सुवर्ण रजतस्रजाम् ॥ चन्द्रां हिरण्यमयी लक्ष्मीं जातवेदोमऽआवह ॥१॥ तां मऽआहव जातवेदो लक्ष्मी मनपगामिनीम् ॥ यस्यां हिरण्यं विन्देयंगामश्वं पुरुषानहम् ॥२॥ अश्वपूर्वां रथमध्यां हस्तिनाद प्रबोधिनीम् ॥ श्रियं देवीमुपह्वये श्रीर्मादेवी जुषताम् ॥३॥ कांसोस्मितां हिरण्यप्रकारामार्द्रां ज्वलन्तातृप्तां तर्पयन्तीम् ॥ पद्मे स्थितां पद्मवर्णां तामिहोपह्वये श्रियम् ॥४॥ चन्द्रां प्रभासां यशसाज्वलन्तीं श्रियंलोके देवजुष्टा मुदाराम् ॥ तां पद्मनेमिं शरणमह प्रपद्ये अलक्ष्मीर्मे नश्यतां त्वां वृणोमि ॥५॥ आदित्यवर्णे तपसोऽधिजातो वनस्पतिस्तव वृक्षोऽथ विल्वः ॥ तस्य फलानि तपसानुदन्तुमार्या तरायाश्चवाह्याऽ

al Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathma

. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding

अलक्ष्मीः ॥६॥ उपैतु मां देवसखः कीर्तिश्च मणिनासह ॥ प्रादुर्भूतोऽस्मि राष्ट्रेस्मिन् कीर्तिं मृद्धिंददातुमे ॥७॥ क्षुत्पिपासा मलां जेष्टामलक्ष्मीं नाशयाम्यहम् ॥ अभूतिमसमृद्धिञ्च सर्वान्निर्णुदमेगृहात् ॥८॥ गन्धद्वारां दुराधर्षां नित्यपुष्टां करीषिणीम् ॥ ईश्वरीं सर्वभूतानां तामिहोपह्वयेश्रियम् ॥९॥ मनसःकाममाकूतिं वाचसत्यमशीमहि ॥ पशुनां रूपमन्नस्यमयि श्री श्रयतां यशः कर्दमेन प्रजाभूतामयिसम्भ कर्दम ॥ श्रियं वासयमेकुले मातरं पद्ममालिनीम् ॥११॥ आपसृजन्तु स्निग्धानिचिक्लीत वसमेगृहे ॥ निचदेवीं मातरंश्रियं वासयमेकुले ॥१२॥ आर्द्रांपुस्करिणीं पुष्टिं पिंगलां पद्ममालिनीम् ॥ चन्द्रां हिरण्यमयीं लक्ष्मीं जातवेदो म आवह ॥१३॥ आर्द्रां यः कारिणीं यष्ठि सुवर्णां हेममालिनीम् ॥ सूर्यां हिरण्यमयीं लक्ष्मीं जातवेदो मऽआवह ॥१४॥ तां मऽआवह जातवेदो लक्ष्मीमनपगामिनीम् ॥ यस्यां हिरण्यं प्रभूतिं गावो दास्योऽश्वान् विन्देयं पुरुषानहम् ॥१५॥ य शुचिःप्रयतो भूत्वा जुहुयादाज्यमन्वहम् ॥ सूक्तं पंचदशर्चं च श्रीकामः सततं जपेत् ॥१६॥ शन्नोदेवी रभिष्टय आपोभवन्तुपीतये ॥ शंयोरभिस्रवन्तुनः ॥ इति मन्त्रेण कलशानभिमंत्रयेत् ॥ कलशे विन्यसेत्पंच गव्यम् मन्त्रैर्विशेषतः ॥ फलं पुष्पंन्यसेतत्र द्रावितं कदली जलम् ॥ मन्त्रयेतद्वयंचैतद्याः ॥ या फलिनीर्या अफला अपुष्पायाश्च पुष्पिणीः ॥ बृहस्पति प्रसूतास्तानोमुञ्चत्वᳪ हसः ॥ परिवाजपतिः कविरग्निर्हव्यान्यक्रमीत् ॥ दधद्रत्नानिदाशुषे ॥ इति फलम् ॥ अक्षरं च रसं विद्वान् यादिव्या आपः पयसासं बभूवुर्या अन्त-

epal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmand

Public Domain. Digitization by eGangotri.Fundin

रिद्मा उतपार्थिवीर्याः हिरण्यवर्णायज्ञियास्तानऽआपशिवाः शस्यो- नासुहावा भवन्तु निवेशयेत् मन्त्रतोयन्यन्सेन्मध्येनवकानां सुरोत्तम तवभ्रमासऽआशुयापत्न्यैनुस्पृशधृषता शोशुचानः तपुंज्ञ्मेजुह्वान सन्दितोविपवगुल्का ॥ इत्यृचा विद्वान् वस्त्रपूतं समाहितः॥ नदीनद तडागोत्थैः शेषंतौयैप्रपूरयेत् ॥ अपराजितेन मन्त्रेण सर्वानेवाभिः मन्त्रयेत् ॥ नवेन शुक्ल वस्त्रेण सर्वानेवाभि मन्त्र- येत् ॥ गायत्रीं वैष्णवींजप्त्वा मूलमन्त्रं शतंजपेत् ॥ जप्त्वाध्यायं हरिं सम्यक् प्रविलाप्यन्तरंशुचि ॥ कृण्णोशीति च निर्माल्यं विष्वक्सेनाय निक्षिपेत् ॥ अर्घ्यं दत्वा शुद्धवत्या शुद्धतोयेन सेच- येत् ॥ अग्निर्मुर्द्धादिव ककुत्पति पृथिव्या अयम् ॥ अपांऽरेतासि जिन्वति इति उष्णजलैः स्नपनंतत्रकारयेत् ॥ हरिं प्रक्षाल्य गोमूत्रैः गोमयेनविलेपयेत् ॥ क्षीरेणस्नापयेत्पश्चात् वध्नावैतदनंतदनतरम्॥ घृतैः संस्नाप्य विधिना धूपंदद्यात्सगुग्गुलम् ॥ प्रक्षाल्यचोष्णतोयेन फलतोयेनसेचयेत् ॥ स्नापयेत् कदलीतोयैस्तदास्त्विक्षुरसेन च॥ यै मंत्रैमंत्र ये तोयम् तै मन्त्रैः स्नापयेद्धरिम् ॥ पंचनद्यः सरस्वती मपियंतिसस्त्रोतसः ॥ सरस्वतीतु पंचधासोदेशे भवत्सरित् इति ऋचापश्चान्नदीनदतडागैःस्नापयित्वा विधानेन वस्त्रयुग्म मुपाहरेत् ॥ कार्पासपट्ट सूत्रं वा कोशेयंवाथ भूषितम् ॥ वृहस्पते इति हरिपरिधायार्चयेत् क्रमात् ॥ गन्धादिभिः समभ्यर्च्य पार्षदान् पूजयेत्ततः ॥निवेदयेत नैवेद्यं भक्ष्यंभोज्यं च पुस्कलम् ॥ पेयंचोष्यं तथा लेह्यं प्रभूतम् द्विज सत्तमः ॥ बलिंविनिक्षिपेत् पश्चात् दिशास्तु विदेशासु च ॥ ॐ नमः पार्षदेभ्योऽबलिंपीठेविनिः

al Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathma

. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding:

क्षिपेत् ॥ ततः प्रदक्षिणीकृत्य मण्डलं ब्रह्मणेनतु ॥ प्रविश्य भवनं भूयः सर्वमावश्यकं पठेत् ॥ पौराणैश्चस्तवैः स्तुत्वा महापुरुष पूर्वकैः । दण्डवत् प्रणमेत् पश्चान्नृत्यगीतादिकंचरेत् ॥ दद्यात् सुवर्णगांवस्त्रं दक्षिणांदेशिकायतु ॥ वैष्णवान पूजयेत् शक्त्या ब्राह्मणेभ्यश्च दक्षिणाम् ॥ यावत् सन्तोष्यचाचार्यं सन्ध्यायां बलि माहरेत् बलिकर्म विधिश्चायं हयशीर्षंच विस्तरात् ॥ उक्तोऽति व्यक्तमेकत्र ज्ञेयः स्यात् पंचरात्रके ॥ इत्यवभृथस्नानम् ॥

[यज्ञ मण्डपमें जाकर ब्राह्मण भोजन कराये पश्चात् दक्षिणा देवे । ब्राह्मणोंसे आशीर्वाद लेवे ॥]

॥ अथ त्रिशूल पूजा ॥

भविष्यपुराणे ॥ सर्वदेवमयीदेवी साक्षाच्छूलेऽव्यवस्थिताम् ॥ अनु ग्रहायलोकानां तस्मात्तां नित्यमर्चयेत् ॥ ततस्तु पूजयेतन्नित्यं चण्डिकाम् शूलरूपिणीम् ॥ धमार्थकाममोक्षाणाम् सनरोभाजन भवेत् । आलयं सर्वभूतानाम् त्रिशूलंदेव पूजितम् । तस्मात् तां पूजयेद्वीरज्येष्ठेमासे विशेषतः ॥ सुमन्तरुवाच ॥ इदंत्वयोक्तं परमं रहस्यं पापनाशनम् । धर्म्यं यशस्यमायुष्यं सर्वदेवैरनुष्ठितम् ॥ काष्ठं वा काञ्चनम् वापित्रिशूलं चण्डिकात्मजम् । स्नापयित्वातु विधिनाकुङ्कुमेन विलिप्य च ॥ श्वेतैर्विकसितैः पुष्पैः पूजयित्वा प्रणम्य च । गजे रथे हयवापि वृषभे वा नराधिप ॥ आरोप्य तं महाबाहो मणिकाञ्चन भूषितम् । नानावादित्रनिर्घोषैः ब्रह्मघोषैश्च पूष्कलैः ॥ नयेदायतनेदेव्याः कृतशोभां समन्ततः ॥ दुर्गायापुरतः

epal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmand

Public Domain. Digitization by eGangotri.Fundin

स्थाप्य विल्वपत्रैश्च पूजयेत् । प्रणम्य शिरसा देवीं स्तुत्वाचैव क्षमापयेत् । अनेन विधिनादेवीं पूजयित्वातु चण्डिकाम् ॥ ब्रह्मेन्द्र विष्णु रुद्राद्यैः प्राप्तं तुपरमंपदम् । यं एवं नूजयेद्देवीं त्रिशूलं कृतिमादरात् ॥ मुच्यतेसनरः पापै ब्रह्मलोकं स गच्छति । एतद् व्रतं महापुण्यं शूलपूजारव्यमुत्तमम् ॥ भक्तस्य ते मयारख्यातं महा पोतक नाशनम् ॥ तथा ॥ कृत्वा हेममयं शूलं हेमपात्रादिषु स्थितम् । पुष्पमाला परिक्षितं वितानपरिशोभितम् ॥ कृत्वातु तद्व्रजेद्वीर चण्डिकायतनं परम् । धारयेत् शिरसापात्रं नानावादि त्रिभिर्युतम् ॥ कुर्यात् प्रदक्षिणंवापि प्रणम्य शिरसा शिवाम् ॥ विन्यसेत् विधिवत् वीरत्रिशूलं पूरतोनृप । सगच्छति परंस्थानं यत्र देवश्चतुर्भुजः ॥

॥ अथ श्वेत यवांकुर पूजाविधिः ॥

स्थिरलक्ष्मीप्रापिका श्वेतयवांकुर पूजा कात्यायनि तन्त्रे शिव उवाच ॥ यवांकुरं प्रवक्षामि श्वेतं सिद्धिकरं परम् । एतेन विधिनादेवि ग्राहीतव्यम् महास्तुतौ ॥ आश्विने शुक्ल पक्षस्य अष्टमी नवमी दिने । तथैव चैत्रमासे वै गन्धपुष्पै स दीपकैः ॥ श्वेतयवांकुरं गौरी पूर्वेद्युरभिमन्त्रयेत् ॥ मन्त्रोयथा ॥ येन त्वा- मानयिस्यामि सर्वसिद्धि करोभव ॥ इति द्वितीये दिवसे—पुष्पं धूपंच दीपंच नैवेद्यंच सदक्षिणाम् । एकीकृत्वातु सध्यायेत् महा श्वेतयवांकुरम् ॥ तमर्चयेद्विधानेन वित्तशाठ्याविवर्जितः । त्वं मया च विभूतिस्त्वं त्वमेव प्रकृतिःपुरा॥ त्वमर्चयप्रयत्नेन सर्वसिद्धि

al Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathma

. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding

करोभव। इति प्रार्थयेत् ॥ ततः ये नमः श्वेतयवांकुराय यं ह्रीं ह्रू ह्रं सः जूं स्वाहा इत्यनेन मन्त्रेण समुद्धरेदिति ॥ यवांकुरं समुद्धृत्य सुवर्णस्य सालाकया। संस्थाप्य स्वर्णमध्येतु धारयेत् दक्षिणेभुजे ॥ द्विदिवा धारयेद्धीमान् गृहेलक्ष्मी स्थिराभवेत्। रिपुक्षयो भवेन्तस्य न रोगाप्रभवंतिहि ॥ अष्टगन्धेन संपूज्य अष्टमी नवमीदिने ॥ राजद्वारे समान्यः स्यात् सदा लक्ष्मी स्थिराभवेत् ॥ इति श्वेतयवांकुर पूजाविधिः ॥

॥ सिद्धान्तशेखरोक्त यवांकुर परीक्षा ॥

यजमानाभि वृद्धयर्थमकुराणि परीक्षयेत्। सम्यगूर्द्धवं प्ररूढानिकोमलानि सितानि च ॥ धूम्रवर्णान्य पूर्वाणि तथातिर्यग्गतानि च। श्यामलानि च कुब्जानि वर्जयेदशुभानि च ॥

॥ यवांकुर से फलज्ञान ॥

अवृष्टिं कुरुते कृष्णं धूम्राभं कलहं तथा अपूर्णं जननाशं च दुर्भिक्षं श्यामलांकुरम् ॥ तिर्यग्गते भवत् व्याधिः कुब्जे शत्रुभयं तथा ॥ अशुभे चांकुरेजाते शान्तिहोमं समाचरेत ॥ मूलमन्त्रेणजुहुयात् गुरुमूर्तिधरैःसह ॥ अघोरास्त्रेण चास्त्रेण शतंवाथ सहस्रकम् ॥

॥ सारस्वतेपि ॥

प्ररूढैरंकुरैः कर्तुर्निर्दिशेच्च शुभाशुभं ॥ श्यामैः कृष्णैरंकुरैरर्थ हानिस्तिर्यग्रूढैः व्याधिरांदोलितैस्तैः कुब्जैर्दुखं दुष्प्ररूढैर्मृतिंच रोगंभुग्नैः स्थानदेशेष्टहानिः ॥

epal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmand

Public Domain. Digitization by eGangotri.Fundin

॥ आसन शुद्धिः ॥

ॐ तीक्ष्ण दंष्ट्र महाकाय कल्पान्त दहनोपम ॥ भैरवाय नमस्तुभ्य मनुज्ञां दातुमर्हसि इति भैरवाज्ञां गृहीत्वा ॥ ॐ रक्ष रक्ष हुंफट् स्वाहेति भूमिं परिषिंच्य ॥ ॐ पवित्र हूँ हूँ फट् स्वाहेति भूमिमभिमन्त्र्य ॥ ॐ आसुरेखे वज्ररेखे हुंफट् स्वाहेति भूमौ त्रिकोण मण्डलं कृत्वा ॥ ॐ ह्रीं आधारशक्ति कमलासनाय नमः ॥ इति संपूज्य ॥ तत्र कंबलाद्यासनं स्थाप्य ॥ आग्नेयादि कोणेषु प्रादक्षिण्येन गणेशाय नमः ॥ सरस्वत्यै नमः ॥ दुर्गायै नमः ॥ क्षेत्रपालाय नमः ॥ इत्यासनं संपूज्य हस्तंधृत्वा ॥ आसन मन्त्रस्य मेरुपृष्ठ ऋषिः सुतलं छन्दः कूर्मो देवता आसनोपवेशने विनियोगः ॥ ॐ पृथ्वित्वया धृतालोका देवि त्वं विष्णुनाधृता ॥ त्वं च धारय मां देवि पवित्रं कुरु चासनम् ॥ इति पठित्वाऽधोभागे विष्टरं दत्वा वीराद्यासनेनोदङ् मुखं उपविशेत् ॥ ततः पूजा द्रव्यं स्वीकृत्य ॥ दक्षे गुं गुरुभ्यो नमः ॥ वामे गं गणपतये नमः ॥ मध्ये चण्डिका देव्यै नमः ॥ इति नत्वा ॥ वामे अर्घ्य संस्थाप्य ॥ किंचिज्जलंप्रोक्षणी पात्रे निधाय तेन जलेनात्मानं पूजोपकरणं प्रोक्ष्य ॥ स्व दक्षभागे पुष्पादिकं ॥ स्व पृष्ठभागे कर प्रक्षालनार्थं पात्रम् ॥ देवी पृष्ठभागे पूजा द्रव्याणि संस्थाप्य ॥ ॐ पुष्प केतु राजार्हत शताय सम्यक् संबद्धाय ॥ ॐ पुष्पे पुष्पे महापुष्पे सुपुष्पे पुष्प सम्भवे ॥ पुष्पं च यावकीर्ण हुंफट् स्वाहेति मन्त्रेण पुष्प शुद्धिं विधाय ॥ ॐ ह्रीं हुंफट् इति मन्त्रेण नाराच मुद्रया सम दृष्ट्यावलोकनेन च गन्धादि सर्व संभार शुद्धिं विधाय ॥

al Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathma

. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding:

रमिति दीपशिखां स्पृष्ट्वा ॥ ॐ हुंफट् स्वाहेति मन्त्रेण काय वाक् चित्तशोधनं विधाय ॥ रक्ष रक्ष हुंफट् स्वाहेति हृदि हस्तं दत्वा आत्मरक्षां विधाय ॥ चन्दनाक्तानि पुष्पाणि कराभ्यां मर्दयित्वा तानि वामहस्ते समादायाघ्राय ॥ ते सर्वे विलयं यान्तु ये मां हिंसति हिंसकाः ॥ मृत्यु रोग भय क्लेशाः पतन्तु रिपु मस्तके ॥ इति मन्त्रेण ईशान्यांदिशि दूरतः क्षिप्त्वा ॥ नवार्णेन तालत्रयं दिग्बन्धनं च कृत्वा ॥ काली कूर्चं वधूर्माया फडन्ता परमेश्वरि ॥ पंचाक्षरी चण्डिकायाकुल्लुका परिकीर्तिता ॥ इति विशुद्धेश्वर तन्त्रे ॥ इति कुल्लुकांमूर्द्ध्नि विचिन्त्य आचमनं कुर्यात् मूलं आत्मतत्वाय स्वाहा ॥१॥ मूलं विद्या तत्वाय स्वाहा ॥२॥ मूलं शिव तत्वाय स्वाहा ॥३॥ इत्याचम्य ॥ मूलेन इति द्विरोष्ठावुन्मृज्य ॥ मूलेन इति करं प्रक्षाल्य जलेन सप्त छिद्राण्युपस्पृशेत् ॥ ॐ महाकाल्यै नमः आस्ये ॥ ॐ महालक्ष्म्यै नमः ॥ ॐ महासरस्वत्यै नमः नसो ॥ ॐ नन्दजायै नमः ॥ ॐ रक्त दन्तिकायै नमः नेत्रयोः ॥ ॐ शाकम्भर्य्यै नमः ॥ ॐ दुर्गायै नमः श्रोत्रयोः ॥ ॐ भीमायै नमः नाभौ ॥ भ्रामर्यै नमः उरसि ॥ ॐ अष्टादश भुजायै नमः शिरसि ॥ ॐ अष्टभुजायै नमः ॥ ॐ दश भुजायै नमः भुजयोः ॥ एवं अङ्गानि स्पृष्ट्वा ॥ हुं हं ह्रीं अस्त्राय फट् ॥ अनेन दिग्बन्धनं कृत्वा प्राणायामं कुर्यात् ॥ यथा मूलाधारे मनः संयोज्य दक्षिणांगुष्ठेन दक्षिणनासा पुटं धृत्वा प्रणवं मूलाद्यबीजं वा षोडश वारं जपन् वाम नासया वायुमापूर्य कनिष्ठानामिकाभ्यां वाम नासापुटं धृत्वा चतुःषष्ठि (६४)

epal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmand

Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding

वारं जपन् वायुं स्तंभयित्वा ॥ दक्षिण नासया द्वात्रिंशद्वारं (३२) जपन् रेचयेदित्येकः ॥ पुनस्तेनैव मानेन दक्षिण नासापुटं प्रपूर्य कुम्भयित्वा वामेन रेचयेदिति द्वितीयः ॥ पुनराद्यवत्तृतीयः मूलेन चेदेकेन पूरकं चतुर्भिः कुम्भकं द्वाभ्यां रेचकमित्येवं प्राणायामं विधाय ॥

॥ भूत शुद्धिं कुर्यात् ॥

यथा हूँकारेण मूलाधारात्कुण्डलिनीमुत्थाप्य जीवात्मना संयोज्य हंस इति मन्त्रेण परमात्मनि विलापयेत् ॥ ततः पादादि जानु-पर्यन्तं स्थितां पृथ्वीं जान्वादि नाभि पर्यन्तं स्थितामप्सु प्रवि-लाप्यन्ताः ॥ नाभ्यादि हृदयान्त स्थितेवह्नौ तं च हृदयादिभ्रू मध्यान्तं प्रकृतौ तां च ब्रह्मणि विलापयेत् ॥ ततः पुरुषनिभं पापमनादि भवसंचितं ॥ ब्रह्महत्या शिरः स्कन्धं स्वर्णस्तेय भुज-द्वयम् ॥ सुरापान हृदायुक्तं गुरुतल्प कटिद्वयम् ॥ तत्संयोगिपद द्वंद्वमंगप्रत्यंग पातकम् ॥ उपपातक रोमाणां रक्तश्मश्रुविलोचनम् । खड्गचर्म धरं पापमंगुष्ठ परिमाणकम् ॥ अधोमुखं कृष्णवर्णं वाम कुक्षौ विचिंतयेत् ॥ इति पाप पुरुषं विचिन्त्ययमिति बीजेन षोड-शवारमावृतेन वाम नासया वायुमापूर्यनाभौ संयोज्य तत्र यं संचित्य सपापं देहं विशोष्य रमिति चतुषष्ठि वारमावृतेनबीजेन कुम्भक प्रयोगेन मूलाधारे संयोज्य रं संचित्य सपापंदेहं भस्मान्तं संदह्य पुनर्यमितिबीजेन द्वात्रिंशद्वारमावृतेन दक्षिण नासया पाप पुरुष भस्म रेचयेत् ॥ ततोवमिति बीजजपात् ललाटे चन्द्रान्मातृका वर्णमयीममृत वृष्टि निपात्य भस्माप्लाव्य न्यासक्रमेणावयवान्

al Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathma

. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding:

निष्पाद्य ॥ लमितिजपाद्दृढीकृत्य ॥ परमात्मनः प्रकृतिं तस्याः महत्तत्वं ततोऽहंकारं तस्मादाकाशं ततो वायुं तस्मात्तेजस्तस्माज्जलं तस्मात्पृथिवीं निगम्य स्व स्व स्थाने स्थापयित्वा ब्रह्मरंध्रस्थ परमात्मनः सकाशात् सोहमिति मन्त्रेण जीवात्मानं प्रदीप कलिकाकारं कुण्डलिनी द्वार हृदय कमल मानीय कुण्डलिनीं मूलाधारे स्थापयित्वा स्वशरीरं निरस्त समस्त किल्वषं देवताराधन योग्यं विभावयेदितिभूतशुद्धिः ॥ एवं भूत शुद्धिं कृत्वा स्वशरीरे चण्डिकायाः प्राणान्प्रतिष्ठापयेत् ॥

॥ अथ स्व प्राण प्रतिष्ठा प्रकारः ॥

ॐ अस्य स्व प्राणप्रतिष्ठा मन्त्रस्य ब्रह्मविष्णु महेश्वराऋषयः ऋग्यजुःसामानि छन्दांसि प्राणशक्तिर्देवता आँबीजं ह्रींशक्तिः क्रों कीलकं स्वशरीरे चण्डिका देवता प्राणप्रतिष्ठापने विनियोगः ॥ अथ ऋष्यादिन्यासः ॥ ॐ ब्रह्मविष्णुमहेश्वरऋषिभ्यो नमः शिरसि ॥ ॐ ऋग्यजुस्सामानि छन्देभ्यो नमः मुखे ॥ ॐ प्राणशक्त्यै नमो हृदि ॥ ॐ आँ बीजाय नमो गुह्ये ॥ ॐ ह्रीं शक्तये नमः पादयोः ॥ ॐ क्रः कीलकाय नमः सर्वांगे ॥ इति ऋष्यादि न्यासः ॥ अथ करन्यासः ॥ ॐ ङं कं खं घं गं नमो वाय्वग्निवाभूम्यात्मने अंगुष्ठाभ्यान्नमः ॥ (हृदयाय नमः) ॐ ञं चं छं झं जं शब्द स्पर्श रूप रस गन्धात्मने तर्जनीभ्यान्नमः ॥ (शिरसे स्वाहा) ॐ णं टं ठं ढं डं श्रोत्र त्वङ्नयन जिह्वा घ्राणात्मने मध्यमाभ्यां नमः (शिखायैवषट्) ॥ ॐ नं तं थं धं दं वाक्पाणीपादपायूपस्थात्मने अनामिकाभ्यान्नमः ॥ (कवचायहुं) ॐ मं पं फं

epal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmand

Public Domain. Digitization by eGangotri.Fundin

भं वं वक्तव्यादान गमन विसर्गानन्दात्मने कनिष्ठिकाभ्यां नमः ॥ (नेत्रत्रयायवौषट्) ॐ शं यं रं वं लं हं षं क्षं सं लं वक्तव्याद्या बुद्धिमनोहंकारचित्तात्मने करतलकरपृष्ठाभ्यां नमः (अस्त्रायफट्) इति षडंग न्यासः एवं हृदयादि कर षडंग न्यासान् कृत्वा ॥ नाभेरारभ्य पादान्तम् (आँ इति पाश बीजं स्मरेत् ॥ हृदयदारभ्य नाभ्यन्तम् (ह्रीं) इति शक्ति बीजं न्यसेत् ॥२॥ मस्तकादारभ्य हृदयान्तम् (क्रों) इति सृणि बीजं स्मरेत् ॥३॥ ॐ यँ त्वगात्मने नमः ॥ ॐ रँ असृगात्मने नमः ॥ ॐ लँ मांसात्मने नमः ॥ ॐ वं मेदात्मने नमः ॥ ॐ शं अस्थ्यात्मने नमः ॥ ॐ षं मज्ञात्मने नमः ॥ ॐ सं शुक्रात्मने नमः ॥ ॐ हों ओजात्मने नमः ॥ ॐ हं प्राणात्मने नमः ॥ ॐ सं जीवात्मने नमः ॥ इति दृष्टया हृदि विन्यसेत् ॥ ॐ यं रं लं वं शं षं सं हं क्षं इति मूर्द्धादि चरणावधि व्यापकं कुर्यात् ॥४॥ ततः ॐ मण्डूकादि पर-तत्वांत पीठदेवताभ्यो नमः ॥१॥ ॐ जयादि शक्तिभ्यो नमः ।२। इति नत्वा ॥ ॐ आँ ह्रीं क्रों पीठाय नमः इति पीठे प्राणशक्तिं देवीं ध्यायेत ॥ ध्यानम् ॥ ॐ पाशंचापा सृक्कपाले श्रृणीपूच्छूलं हस्तैर्बिभ्रतीं रक्तवर्णाम् ॥ रक्तो दिन्वतपोतरक्तांबुजस्थां देवीं ध्याये प्राणशक्तिं त्रिनेत्रां ॥ इति ध्यात्वा हृदि करं निधाय ॥ ॐ आँ ह्रीं क्रों यं रं लं वं शं षं सं हौं हंसः ॥ ॐ मम शरीरे चण्डिका देवतायाः जीव इह स्थितः (जीवः) ॥ ॐ आँ ह्रीं क्रों यं रं लं वं शं षं सं हौं हं सः ॥ ॐ मम शरीरे चण्डिका देवतायाः सर्वे-न्द्रियाणि वाङ् मनश्चक्षुः श्रोत्र जिह्वा घ्राण पाद पायूपस्थानि

al Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathma

. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding.

इहैवागत्य सुखं चिरन्तिष्ठन्तु स्वाहा ॥३॥ इति वार त्रयेण स्व-शरीरे चण्डिका देवतायाः प्राणान् प्रतिष्ठाप्य ॥ ततः ॐ इति प्रणवेन १५ पञ्चदशावृत्तिं कृत्वा अनेन मम देहस्था चण्डिकायाः गर्भाधानादि पञ्चदश संस्कारान्संपादयामि ॥ एवं प्राणान्प्रति-ष्ठाप्य ॥ देवी भूत्वा देवींजयेत् चण्डिकारूपमात्मानं भावयेदिति प्राणप्रतिष्ठा ॥

॥ अथ अन्तरमातृका न्यासः ॥

अथान्तरमातृका न्यास मन्त्रस्य ब्रह्मऋषिः गायत्रीछन्दः मातृका सरस्वतीदेवता हलो वीजानि स्वराः शक्तयः क्षं कीलकं अखिला-प्तये न्यासे विनियोगः ॥ इति जलं भूमौ निक्षिप्य प्राणायामं कुर्यात् ॥ तथा च इड़या ॥ अ इ उ ऋ लृ ए ऐ ओ औ अं अः एभिः स्वरैः पूरयेत् ॥ पुनः कु चु टु तु पु इति पञ्चवर्गकेन कुम्भयेत् ॥ पुनः य र ल व श ष स ह एभिरष्टवर्णैः रेचयेत् ॥ इति प्राणायामं कृत्वा ऋष्यादि न्यासं कुर्यात् ॥ तथा च ॐ अं ब्रह्मणे ऋषये नमः आंशिरसि ॥ ॐ इं गायत्रीछन्दसे नमः ईं मुखे ॥ ॐ उँ सरस्वती देवतायै नमः ऊँ हृदये ॥ ॐ एं हल्भ्यो बीजेभ्यो नमः ऐं गुह्ये ॥ ॐ ओं स्वरेभ्यो शक्तिभ्यो नमः औं पादयोः ॥ ॐ अं क्षं कीलकाय नमः अः सर्वाङ्गे ॥ इति ऋष्यादि न्यासः ॥ ॐ अं कं खं गं घं ङं आँ अंगुष्ठाभ्यां (हृदयाय) नमः ॐ इं चं छं जं झं ञं ईं तर्जनीभ्यां नमः (शिरसे स्वाहा)॥ ॐ उं टं ठं डं ढं णं ऊं मध्यमाभ्यां नमः (शिखायै वषट्)॥ ॐ एं तं थं दं धं नं ऐं अनामिकाभ्यां नमः [कवचाय हुं]॥

epal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmand

Public Domain. Digitization by eGangotri.Fundin

ॐ ओं पं फं बं भं मं औं कनिष्ठाभ्यां नमः [नेत्र त्रयाय वौषट्] ॐ अं यं रं लं वं शं षं सं हं लं क्षं अः करतल करपृष्ठाभ्यां नमः [अस्त्रायफट्] ॥ इति करन्यासः ॥ एवं हृदयादि कर षडंग न्यसान् कृत्वा ॥ ततः कण्ठस्थ षोडष दल पद्मे [ॐ अं नमः एवं क्रमेण सर्वत्र] ॐ आं इँ ईं उँ ऊँ ऋँ ॠँ लृं लॄं एं ऐं ओं औं अँ अः इति षोडष स्वरान्न्यसेत् ॥ पुनः हृदिस्थ द्वादशदले ॐ कँ नमः एवं खँगँघँङँ चँछँजँझँञँ टँठँ नमः ॥ इति द्वादश वर्णान् विन्यसेत् ॥ ततः नाभौ दशदले—ॐ डँ नमः इति एवं ढँणँतँथँदँधँनँ पँफँ नमः इति दशवर्णान्न्यसेत् ॥ दधोल्लिंगे षड्दले ॐ बँ नमः एवं ॐ भँमँयँरँ लँ इति षड्वर्णान् विन्यसेत् ॥ आधारे [गुदे] चतुर्दले—ॐ वँ नमः एवं शंषँसँ इति चतुर्वर्णान्न्यसेत् ॥ पुनः ललाटे द्विदले—ॐ हँ नमः ॐ क्षँ नमः द्वौवर्णौन्न्यसेत् ॥ इति न्यासं कृत्वा ध्यायेत् ॥ आधारे लिंगनाभ प्रकटित हृदये तालुमूले—ललाटे द्वेपत्रे षोडशारे द्विदश दशदले द्वादशार्द्ध चतुष्के ॥ वासान्तेबालमध्ये डफकठसहिते कंठदेशेस्वराणां क्षत-त्वाथयुक्तं सकलदलगतं वर्णरूपं नमामि ॥ इत्यंतरमातृमान्यासः ॥

॥ अथ वहिर्मातृका न्यासः ॥

जयार्थं सर्वदेवानां विन्यासे च लिपेर्विना ॥ कृतेतद्विफलं विद्या-त्तदादौतु लिपिन्न्येसेत् ॥ ॐ अस्य श्रीवहिर्मातृकान्यासमन्त्रस्य ब्रह्माऋषिः गायत्रीछन्दः मातृका सरस्वती देवीदेवता हलोबीजानि स्वराः शक्तयः क्षं कीलकं अखिलाप्तये न्यासे विनियोगः ॥ प्राणायामकुर्यात् ॥ तथा च इड़या अ इ उ ऋ लृ ए ऐ ओ औ

al Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathma

. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding:

अँ अः एभिः स्वरैः पूरयेत् ॥ पुनः कु चु टु तु पु एभिः पञ्चवर्गकेन कुम्भयेत् ॥ पुनः अष्टभिः ॥ य र ल व श ष स ह आदिना रेचयेत् ॥ इति प्राणायामं कृत्वा ऋष्यादिन्यासं कुर्यात् ॥ तथा च ॐ अँ ब्रह्मणे ऋषये नमः आँ शिरसि ॥ ॐ इँ गायत्री छन्दसे नमः ईं मुखे ॥ ॐ उँ सरस्वती देवतायै नमः ऊँ हृदि ॐ एँ हल्भ्यो वीजेभ्यो नमः ऐँ गुह्ये ॥ ॐ ओं स्वरेभ्यो शक्तिभ्यो नमः औं पादयोः ॥ ॐ अँ चँ कीलकाय नमः अः सर्वाङ्गे ॥ इति ऋष्यादिन्यासः ॥ ॐ अँ कँ ५ आं अँगुष्ठाभ्यां नमः, हृदयाय० ॥ ॐ इँ चँ ५ ईं तर्जनी० शिरसे स्वाहा ॥ ॐ उँ टँ ५ ऊँ मध्यमा० शिखायै वषट् ॥ ॐ एँ तँ ५ ऐं अनामिका० कवचायहुं ॥ ॐ पँ ५ औं कनिष्ठिका० नेत्र त्रयाय वौषट् ॐ अँ यँरँलँवँशँ षँसँहँल्ँक्षँ अः करतल करपृष्ठा०, अस्त्राय फट् ॥ ध्यानम्॥ मृगवालं वरं विद्यामक्ष सूत्रंदधत्करैः ॥ माला विद्या लसद्धस्तां वहन्ध्येयः शिवोगिरः ॥ ततः वहिर्मातृकान्यासं कुर्यात् ॥ ॐ नमः शिरसि ॥ ॐ आँ नमः मुखे ॥ ओं इं नमः दक्षिण नेत्रे ॥ ओं ईं नमः वामनेत्रे ॥ ओं उँ नमः दक्षिण कर्णे ॥ ओं ऊँ नमः वामकर्णे ॥ ओं ऋँ नमः दक्षिण नासापुटे ओं ॠँ नमः वामनासापुटे ॥ ओं लृँ नमः दक्षिणकपोले ॥ ओं लॄँ नमः वामकपोले ॥ ओं एँ नमः ऊर्ध्वोष्ठे ॥ ओं ऐं नमः अधरोष्ठे ॥ ॐ ओं नमः ऊर्ध्वदन्तपंक्तौ ॥ ॐ औं नमः अधोदन्तपंक्तौ ॥ ओं अं नमः मूर्द्धनि ॥ ओं अः नमः मुखवृत्ते ॥ ओं कँ नमः दक्षिण बाहुमूले ॥ ओं खँ नमः द० कूर्परे ॥ ओं गँ

epal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmand

Public Domain. Digitization by eGangotri.Fundin

नमः द० मणिबँधे ॥ ओं घं नमः द० हस्तांगुलिमूले ॥ ङँ नमः हस्तांगुल्यग्रे ॥ ओं चँ नमः वामबाहुमूले ॥ ओं छँ नमः वा० कूर्परे ॥ ओं जँ नमः वा० मणिबँधे ॥ ओं झँ नमः वा० हस्तांगुलिमूले ॥ ओं ञँ नमः वामहस्तांगुल्यग्रे ॥ ओं टँ नमः दक्षिण पादमूले ॥ ओं ठँ नमः द० जानुनि ॥ ओं डँ नमः द० गुल्फे ॥ ओं ढँ नमः द० पादांगुलिमूले ॥ ओं णँ नमः द० पादांगुल्यग्रे ॥ ओं तँ नमः वामपादमूले ॥ ओं थँ नमः वामजानुनि ॥ ओं दँ नमः वामगुल्फे ॥ ओं धँ नमः वामपादांगुलिमूले ॥ ओं नँ नमः वा० पादांगुल्यग्रे ॥ ओं पँ नमः दक्षिणपार्श्वे ॥ ओं फँ नमः वाम पार्श्वे ॥ ओं वँ नमः पृष्ठे ॥ ओं भँ नमः नाभौ ॥ ओं मँ नमः उदरे ॥ ओं यँ त्वगात्मने नमः हृदि ॥ ओं रँ असृगात्मने नमः दक्षांसे ॥ लँ मांसात्मने नमः ककुदि [गर्दनमें] ओं वँ मेदात्मने नमः वामांसे ॥ ओं शँ अस्थ्यात्मने नमः हृदयादि दक्षहस्तांतम् ॥ ओं षँ मज्जात्मने नमः हृदयादि वामहस्तांतम् ॥ ओं सँ शुक्रात्मने नमः हृदयादि दक्षपादान्तम् ॥ ओं हँ आत्मने नमः हृदयादि वामपादान्तम् ॥ ओं लँ परमात्मने नमः जठरे ॥ ओं क्षँ प्राणात्मने नमः मुखे ॥ इति विन्यस्य ॥ अथ ध्यानम् ॥

ॐ पञ्चाशल्लिपिभिर्विभक्तमुखदोः यत्सन्धिवक्षस्थलां भास्वन्मौलिनिबद्धचन्द्रशकलामापीनतुङ्गस्तनीम् ॥ मुद्रामक्ष गुणन्सुदाढ्य कलशांविद्यां च हस्तांबुजैर्बिभ्राणांविशद प्रभाँ त्रिनयनाँ वाग्देवतामाश्रये ॥१॥ इति बहिर्मातृकान्यासः ॥

al Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathma

. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding:

॥ पाठविधिः ॥

आधारं स्थापयित्वातु पुस्तकं वाचयेत्ततः । हस्त संस्थापनाद् देवि भवेदर्ध फलं यतः ॥ यावन्नपूर्यतेऽध्याय स्तावन्नविरमेत्पठन् । यदि प्रमादादध्याये विरामो भवतिप्रिये । पुनरध्यायमारभ्य पठेत् सर्वं मुहुर्मुहुः । अनुक्रमात्पठेद् देवि शिरः कम्पादिकंत्यजेत् ॥

॥ वाराहीतन्त्रे ॥

देह संरक्षणार्थाय कवचमादौततोऽर्गलाम् ततः कीलकंपठेत् पश्चात् सप्तशत्यास्स्तवंजपेत् ॥१॥ रात्रिसूक्तं जपेदादौ मध्ये सप्तशती-स्तवम् । अन्ते तु जपनीयं वै देवीसूक्त मिदिक्रमः ॥१॥ एवं संपुटितं स्तोत्रं सर्वकामार्थ सिद्धिदम् ॥२॥ पञ्चावृत्तौ स्वर्णमेकं त्रिरावृत्तौ तदर्धकम् । एकावृत्तौ पादमेकं दद्या द्वाशक्तितोवुधः ॥२॥ अन्यः अर्गलं कीलकंचादौ जपित्वा कवचं पठेत् । जपेत्सप्तशतीं पश्चाद्क्रमएष शिवोदितः ॥१॥ प्रथमं चरितं प्रोक्तं मधुकैटभ नाशनम् । द्वितीयं विद्धिचरितं महिषासुर घातनम् ॥१॥ उत्तमं चरितं ज्ञेयं शुम्भदैत्य वधान्वितम् । चरितानिजपेत् त्रीणि सरहस्यान्यतन्द्रितः ॥२॥ तथा शतमादौ शतं चान्ते जपेन्मन्त्रं नवार्णकम् । चण्डी सप्तशती मध्ये सम्पुटोऽयमुदाहृतः ॥१॥ सकामः सम्पुटोजाप्यो निष्कामः सम्पुटं विना ॥

॥ अथ सरस्वती ध्यानम् ॥

देवीकदम्ब वनगामरुण त्रिकोणसंस्थासितां सितवराम्वुजकर्णिकस्थाम् । सत्पुस्तकाक्षवलयाङ्कित पादपद्मां वागीश्वरीं कुलगुरूं प्रणमामिभक्त्या ॥१॥ "ॐ नमोदेव्यै" इस मन्त्र से पञ्चोपचार

epal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmand

Public Domain. Digitization by eGangotri.Fundin

पूजा करके इन सब देवताओं को नमस्कार करे ॥ ॐ नारायणाय नमः । ॐ नराय नमः । ॐ सरस्वत्यै नमः । ॐ वेदव्यासाय नमः ॥ "अन्त्याद्यार्कद्विरुद्रत्रिवाणाब्ध्यङ्केष्विभर्तवः । अश्वोऽश्व इति सर्गाणां शापोद्धारो मनोः क्रमः उत्कीलने चरित्राणां मध्याद्यन्त मितिक्रमः" ॥२॥

॥ शापोद्धार मन्त्रः ॥

ॐ ह्रीं क्लीं श्रीं क्रां क्रीं चण्डिके देवि शापानुग्रहं कुरु कुरु स्वाहा।
इति सप्तवारं जपेत् ॥

ॐ श्रीं क्लीं ह्रीं सप्तशति चण्डिके उत्कीलनं कुरु कुरु स्वाहा।
२१ वारं पठादौ पाठान्ते जपेत् ॥

॥ संकल्पः ॥

ॐ विष्णुर्विष्णुर्विष्णुः ॥ श्रीमद्भगवतो महापुरुषस्य विष्णोराज्ञया प्रवर्तमानस्य अद्य ब्रह्मणो द्वितीयेपरार्धे श्रीश्वेतवाराहकल्पे (सप्तमे) वैवस्वतमन्वन्तरे अष्टाविंशतितमे कलियुगे कलिप्रथम चरणे भूर्लोके भारतवर्षे भरतखण्डे आर्यावर्तान्तर्गत ब्रह्मावर्तस्य अमुकैक देशे अमुके श्रीशालिवाहनशाके अमुक नाम सम्वत्सरे तथा च अमुके श्रीविक्रमवर्षे अमुक संवत्सरे अमुकायने अमुकर्तौ अमुकमासे अमुकपक्षे अमुकतिथौ अमुकवासरे अमुक नक्षत्रे अमुकयोगे अमुक करणे अमुक राशिस्थिते चन्द्रे अमुकराशिस्थिते श्रीसूर्ये अमुक राशिस्थिते देवगुरौ शेषेषुग्रहेषु यथा यथा राशिस्थानास्थितेषुसत्सु एवं ग्रहगुणविशेषण विशिष्टायां शुभ पुण्यतिथौ मम अमुक गोत्रोत्पन्नस्य अमुक शर्मणाः (वर्मणाः गुप्तस्य दासस्य वा) सप-

al Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathma

. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding:

रिवारस्य आत्मनः श्रुतिस्मृतिपुराणोक्त पुण्यफलावाप्त्यर्थं मम ऐश्वर्याभि वृद्धयर्थं अप्राप्तलक्ष्मी प्राप्त्यर्थं प्राप्त्यलक्ष्म्याश्चिरकाल-संरक्षणार्थं सकलमन ईप्सितकामना संसिद्धयर्थं लोकेवासभायां राजद्वारे वा सर्वत्र यशोविजयलाभादि प्राप्त्यर्थं तथा च मम सभार्यस्य सपुत्रस्य अखिल कुटुम्बसहितस्य स पशोः समस्त भय व्याधिजरापीडामृत्यु परिहारद्वारा आयुरारोग्यैश्वर्याभि वृद्धयर्थं तथा च मम जन्मराशेरखिलकुटुम्बस्थ वा जन्मराशेः सकाशाद्ये-केचिद्विरुद्धचतुर्थाष्ट मस्थानस्थिताः क्रूरग्रहाः तैः सूचितंसूचयि-स्यमाणंच यत्सर्वारिष्टमद्विनाशद्वारा सर्वदा तृतीये द्वादशस्थाना-स्थ तवच्छुभ फल प्राप्त्यर्थं पुत्रपौत्रादि सन्ततेरविच्छिन्न वृद्धयर्थं आदित्यादि नवग्रहानुकूलतासिद्धयर्थं इन्द्रादि दशादिग्पाल प्रसन्नता सिद्धयर्थं आधिदैविकाऽधिभौतिकाध्यात्मिक त्रिविधतापोपशमनार्थं धर्मार्थकाममोक्ष फलावाप्त्यर्थं अद्य वा अद्यारभ्य अमुककाल्यपर्यन्तं त्रिगुणात्मिका श्रीदुर्गा प्रीतिद्वारा मनोभिलषित कामना संसिद्धयर्थं यथासम्पादित सामग्रया पूजन पूर्वकं यथा संख्यक श्रीदुर्गा सप्त-शती पाठाख्यं कर्मकरिष्ये। तदंगत्वेनादौ कवचार्गला कीलक नवार्णमन्त्रजपं रात्रिसूक्तं चरितत्रयस्य न्यासादिकंविधाय सप्तशती पाठान्त उत्तर न्यासादिके नर्वाणमन्त्रजपं देवीसूक्तं तथा च रहस्य त्रय पाठं च करिष्ये।

॥ अथ देव्याः कवचं प्रारभ्यते ॥

ॐ अस्य श्रीदेवी कवचं स्तोत्रस्य ब्रह्मऋषिः अनुष्टुप् छन्दः श्रीमहाकाली देवता ब्रह्मऋृषिः ऐं बीजं ह्रीं शक्तिः क्लीं कीलकं चण्डिका प्रीत्यर्थें जपे (पाठे) विनियोगः।

epal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmand

Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding

॥ अथ ध्यानम् ॥

सृष्टौ संस्थापनाय त्वप हरणविधौ मोहनेऽनुग्रहेपि।
सर्वेषामर्गलानां निज महिषवधाद् क्रमेणैव यालम् ॥
नित्यं क्रीडा प्रसक्ता रचयति सकलं स्वात्मशक्त्या प्रपञ्चम्।
सानस्त्राणाय भूयादभिमतफलदा भद्रकाली च काली ॥१॥
अष्टादशभुजां सिद्धां सर्व तेजोंश सम्भवाम्।
त्रिगुणान्तां महालक्ष्मीं वन्दे महिष मर्दिनीम् ॥ २ ॥
ॐ महिषघ्नि महामाये चामुण्डे मुण्डमालिनि।
काम्यादि चिन्तितं देवि देहिमे ब्रह्मचारिणी ॥ ३ ॥

ॐ नमश्चण्डिकायै।

मार्कण्डेय उवाच।

ॐ यद्गुह्यं परमं लोके सर्वरक्षाकरं नृणाम् ॥ यन्न कस्यचिदाख्यातं तन्मे ब्रूहि पितामह ॥१॥

ब्रह्मोवाच

अस्ति गुह्यतमं विप्र सर्वभूतोपकारकम् ॥ देव्यास्तु कवचं पुण्यं तच्छृणुष्व महामुने ॥ २ ॥ प्रथमं शैलपुत्रीति द्वितीयं ब्रह्मचारिणी। तृतीयं चन्द्रघण्टेति कूष्माण्डेति चतुर्थकम् ॥३॥ पञ्चमं स्कंदमातेति षष्ठं कात्यायनीति च। सप्तमं कालरात्रीति महा गौरीति चाष्टमम् ॥४॥ नवमं सिद्धिदात्री च नवदुर्गाः प्रकीर्तिताः। उक्तान्येतानि नामानि ब्रह्मणैव महात्मना ॥५॥ अग्निना दह्यमानस्तु शत्रुमध्ये गतो रणे। विषमे दुर्गमे चैव भयार्ताः शरणं

al Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathma

. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding:

गताः ॥६॥ न तेषां जायते किंचिदशुभं रणसंकटे। नापदं तस्य पश्यामि शोकदुःखभयं नहि ॥७॥ यैस्तु भक्त्या स्मृतानूनं तेषां वृद्धिः प्रजायते। (ये त्वां स्मरन्ति देवेशि रक्षसेतान्न संशयः)।८। प्रेतसंस्था तु चामुण्डा वाराही महिषासना। ऐन्द्री गजसमारूढा वैष्णवी गरुडासना ॥९॥ माहेश्वरी वृषारूढा कौमारी शिखिवाहना। लक्ष्मीः पद्मासनादेवी पद्महस्ता हरिप्रिया ॥१०॥ श्वेत रूपधरा देवी ईश्वरी वृषवाहना। ब्राह्मी हंससमारूढा सर्वाभरण भूषिता ॥११॥ इत्येता मातरः सर्वाः सर्वयोगसमन्विताः)। नाना भरण शोभाढ्या नाना रत्नोपशोभिताः ॥१२॥ दृश्यन्ते रथमारूढा देव्यः क्रोधसमाकुलाः। शंखं चक्रं गदां शक्तिं हलं च मुसलायुधम्। १३॥ खेटकं तोमरं चैव परशु पाशमेव च। कुन्तायुधं त्रिशूलं च शार्ङ्गमायुधमुत्तमम् ॥ १४ ॥ दैत्यानां देहनाशाय भक्तानामभयाय च। धारयन्त्यायुधानीत्थं देवानां च हिताय व ॥१५॥ (नमस्तेऽस्तु महारौद्रे महाघोर पराक्रमे)। महाबले महोत्साहे महाभयविनाशिनी ॥१६॥ त्राहि मां देवि दुष्प्रेक्ष्ये शत्रूणां भयवर्धिनी। प्राच्यां रक्षतु मामैन्द्री आग्नेय्यामग्निदेवता ॥१७ दक्षिणे रक्ष वाराही नैर्ऋत्यां खड्गधारिणी। प्रतीच्यां वारुणी रक्षेद्वायव्यां मृगवाहिनी ॥१८॥ उदीच्यां रक्ष कौमारी ईशान्यां शूलधारिणी। उर्ध्वं ब्रह्माणि मे रक्षेदधस्ताद्वैष्णवी तथा ॥१९॥ एवं दश दिशो रक्षेचामुण्डा शववाहना। जया मे चाग्रतः पातु विजयः पातु पृष्ठतः ॥२०॥ अजिता वामपार्श्वे तु दक्षिणे चापराजिता। शिखामुद्योतिनी रक्षेदुमामूर्ध्नि व्यवस्थिता ॥२१॥

epal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmand

Public Domain. Digitization by eGangotri.Fundin

मालाधरी ललाटे च भ्रुवौ रक्षेद्यशस्विनी । त्रिनेत्रा च भ्रुवोर्मध्ये यमघण्टा च नासिके ॥२२॥ शंखिनी चक्षुषोर्मध्ये श्रोत्रयोर्द्वार-वासिनी । कपोलौ कालिका रक्षेत्कर्णमूले तु शाङ्करी ॥ २३ ॥ नासिकायां सुगन्धा च उत्तरोष्ठे च चर्चिका । अधरे चामृतकला जिह्वायां च सरस्वती ॥२४॥ दन्तान् रक्षतु कौमारी कण्ठदेशे तु चण्डिका । घण्टिकां चित्रघण्टा च महामाया च तालुके ॥२५॥ कामाक्षी चिबुकं रक्षेद्वाचं मे सर्वमङ्गला । ग्रीवायाँ भद्रकाली च पृष्ठवंशे धनुर्धरी ॥२६॥ नीलग्रीवा बहिः कण्ठे नलिकां नल-कूबरी । खड्गधारिण्युभौ स्कंधौ वाहूमेवज्रधारिणी ॥ २७ ॥ हस्तयोर्दण्डिनी रक्षेदम्बिका चांगुलीषु च । नखाञ्छूलेश्वरी रक्षेत्कुक्षौ रक्षेत्कुलेश्वरी ॥२८॥ स्तनौ रक्षेन्महादेवी मनः शोक-विनाशिनी । हृदये ललिता देवी उदरे शूलधारिणी ॥ २९ ॥ नाभौ च कामिनी रक्षेद्गुह्यं गुह्येश्वरी तथा । भूतनाथा च मेढ्रं मे गुदे महिष-वाहिनी ॥३०॥ कट्यां भगवती रक्षेज्जानुनी विंध्य-वासिनी । जंघेमहाबलाप्रोक्ता जानुमध्येविनायकी ॥३१॥ गुल्फ-योर्नारसिंही च पादपृष्ठेऽमितौजसी । पादांगुलीः श्रीधरी च पादाधस्तलवासिनी ॥३२॥ नखान्दंष्ट्राकराली च केशांश्चैवोर्ध्व-केशिनी । रोमकूपेऽ कौमारी त्वचं वागीश्वरी तथा ॥ ३३ ॥ रक्तमज्जावसामांसान्यस्थिमेदांसि पार्वती । अन्त्राणि कालरात्रिश्च पित्तं च मुकुटेश्वरी ॥३४॥ पद्मावती पद्मकोशे कफे चूडामणि-स्तथा । ज्वालामुखी नखज्वालामभेद्या सर्वसन्धिषु ॥ ३५ ॥ शुक्रं ब्रह्माणि मे रक्षेच्छायां छत्रेश्वरी तथा । अहङ्कारम्मनो बुद्धिं

al Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathma

. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding:

रक्षेन्मे धर्म्मचारिणी ॥ ३६ ॥ प्राणापानौ तथा व्यानमुदानञ्च समानकम् । (वज्रहस्ता च मेरक्षेत्प्राणं कल्याण शोभना) ॥ ३७ ॥ रसे रूपे च गन्धे च शब्दे स्पर्शे च योगिनी । सत्त्वं रजस्तमश्चैव रक्षेन्नारायणी सदा ॥३८॥ आयू रक्षतु वाराही धर्म रक्षतु वैष्णवी । यशः कीर्तिं च लक्ष्मा च धनं विद्यां च चक्रिणी ॥३६॥ गोत्रमिन्द्राणि मे रक्षेत्पशून्मे रक्ष चण्डिके । पुत्रान् रक्षेन्महालक्ष्मीभर्य्यां रक्षतु भैरवी ॥४०॥ पंन्थानं सुपथा रक्षेन्मार्गं क्षेमकरी तथा । राजद्वारे महालक्ष्मीर्विजया सर्वतः स्थिता ॥४१॥ रक्षाहीनं तु यत्स्थानं वर्जितं कवचेन तु । तत्सर्वं रक्ष मे देवी जयन्ती पाप नाशिनी ॥४२॥ पदमेकन्न गच्छेत्तु यदीच्छेच्छुभमात्मनः । कवचे नावृतो नित्यं यत्र यत्रैव गच्छति ॥ ४३ ॥ तत्र तत्रार्थलाभश्च विजयः सार्वकामिकः । यं यं चिन्तयते कामं तं तं प्राप्नोति निश्चितम् । परमैश्वर्य्यमतुलं प्राप्स्यते भूतले पुमान् ॥ ४४ ॥ निर्भयो जायते मर्त्यः संग्रामेष्वपराजितः । त्रैलोक्ये तु भवेत्पूज्यः कवचेनावृतः पुमान् ॥ ४५ ॥ इदं तु देव्याः कवचं देवानामपि दुर्लभम् । यः पठेत्प्रयतो नित्यं त्रिसन्ध्यं श्रद्धयान्वितः ॥ ४६ ॥ दैवीकला भवेत्तस्य त्रैलोक्येष्वपराजितः । जीवेत् वर्षशतं साग्रमपमृत्युविवर्जितः ॥ ४७ ॥ नश्यन्ति व्याधयः सर्वे लूताविस्फोटकादयः स्थावरं जङ्गमंचैव कृत्रिमञ्चापि यद्विषम् ॥४८॥ अभिचाराणि सर्वाणि मन्त्रयन्त्राणि भूतले । भूचराः खेचराश्चैव कुलजाश्चोपदेशिकाः ॥ ४६ ॥ सहजाः कुलजा माला डाकिनीशाकिनी तथा । अन्तरिक्षचरा घोरा डाकिन्यश्च महाबलाः ॥५०॥ ग्रहभूत

epal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmand

Public Domain. Digitization by eGangotri.Fundin

पिशाचाश्च यक्ष–गन्धर्व–राक्षसाः। ब्रह्मराक्षसवेतालाः कूष्माण्डा भैरवादयः ॥५१॥ नश्यन्ति दर्शनात्तस्य कवचे हृदि संस्थिते। मानोन्नतिर्भवेद्राज्ञस्तेजो वृद्धिकरम्परम् ॥ ५२ ॥ यशसा वर्द्धते सोऽपि कीर्तिमण्डितभूतले। जपेत्सप्तशतीं चण्डीं कृत्वा तु कवचम्पुरा ॥५३॥ यावद्भूमण्डलं धत्ते सशैलवनकाननम्। तावत्तिष्ठति मेदिन्यां सन्ततिः पुत्रपौत्रिकी ॥५४॥ देहान्ते परमं स्थानं यत्सुरैरपि दुर्लभम्। प्राप्नोति पुरुषो नित्यं महामाया प्रसादतः ॥५५॥ (लभते परमं रूपं शिवेन सह मोदते) ॥५६॥

इति देव्याः कवचं

॥ अथ अर्गलास्तोत्रम् ॥

ॐ अस्य श्री अर्गला स्तोत्रस्य विष्णुः ऋषिः अनुष्टुप्छन्दः श्रीदुर्गा देवता ह्रां वीजं ह्रीं शक्तिः स्वाहा कीलकं श्रीत्रिगुणात्मिका चण्डिका दुर्गा प्रीत्यर्थे जपे विनियोगः।

॥ अथ ध्यानम् ॥

दत्तेचक्रशरासनं च फलकं मुद्रांकरैस्तर्जनीं।
वामे संदधतीं दलेषु सहितं खड्गंत्रिशूलंगदाम् ॥
सन्नद्धा विविधायुधैः परिवृतां मन्त्रैः कुमारैर्जनैः।
ध्यायेदीप्सितदायिनीं त्रिनयनां सिंहाधिरूढांशिवाम् ॥
याच्छापि त्रिविधाख्याता सप्तधासैव लोचना ॥
यस्या भेदाद्यनन्ताश्च तन्माहात्म्यं समुच्यताम् ॥

al Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathma

. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding:

ॐ नमश्चण्डिकायै ।

जयन्ती मङ्गला काली भद्रकाली कपालिनी । दुर्गा क्षमा शिवा धात्री स्वाहा स्वधा नमोस्तुते ॥१॥ जय त्वन्देवि चामुण्डे जय भूतार्तिहारिणि । जय सर्वगते देवि कालरात्रि नमोस्तुते ॥२॥ मधुकैटभविद्रावि विधातृवरदे नमः ॥ रूपं देहि जयं देहि यशो देहि द्विषो जहि ॥३॥ महिषासुरनिर्णाशि भक्तानाँ सुखदे नमः । रूपं देहि जयं देहि यशो देहि द्विषो जहि ॥४॥ रक्तबीजवधे देवि चण्डमुण्ड विनाशिनी । रूपं देहि जयं देहि यशो देहि द्विषो जहि ॥ ५ ॥ शुम्भस्यैव निशुम्भस्य धूम्राक्षस्य च मर्दिनि । रूपं देहि जयं देहि यशो देहि द्विषो जहि ॥६॥ वन्दिताँघ्रियुगे देवि सर्वसौभाग्य दायिनी । रूपं देहि जयं देहि यशो देहि द्विषो जहि ॥७॥ अचिन्त्य—रूपचरिते सर्वशत्रु विनाशिनी । रूपं देहि जयं देहि यशो देहि द्विषो जहि ॥ ८ ॥ नतेभ्यः सर्वदा भक्त्या चण्डिके दुरितापहे । रूपं देहि जयं देहि यशो देहि द्विषो जहि ॥९॥ स्तुवद्भ्यो भक्तिपूर्वं त्वां चण्डिके व्याधिनाशिनि । रूपं देहि जयं देहि यशो देहि द्विषो जहि ॥१०॥ चण्डिके सततं ये त्वामर्चयन्तीह भक्तितः । रूपं देहि जयं देहि यशो देहि द्विषो जहि ॥११॥ देहि सौभाग्यमारोग्यं देहि मे परमं सुखम् । रूपं देहि जयं देहि यशो देहि द्विषो जहि ॥१२॥ विधेहि द्विषतां नाशं विधेहि बलमुच्चकैः । रूपं देहि जयं देहि यशो देहि द्विषो जहि ॥ १३ ॥ विधेहि देवि कल्याणं विधेहि परमां श्रियम् । रूपं देहि जयं देहि यशो देहि द्विषो जहि ॥१४॥ सुरासुर शिरोरत्न निघृष्टचरणेऽ—

epal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmand

Public Domain. Digitization by eGangotri.Fundin

म्बिके। रूपं देहि जयं देहि यशो देहि द्विषो जहि ॥१५॥ विद्यावन्तं यशस्वन्तं लक्ष्मीवन्तं जनंकुरु। रूपं देहि जयं देहि यशो देहि द्विषो जहि ॥१६॥ प्रचण्डदैत्यदर्पघ्ने चण्डिके प्रणताय मे। रूपं देहि जयं देहि यशो देहि द्विषो जहि ॥१७॥ चतुर्भुजे चतुर्वक्त्र—संस्तुते परमेश्वरि। रूपं देहि जयं दहि यशो देहि द्विषो जहि ॥१८॥ कृष्णेन संस्तुते देवि शश्वद्भक्त्या सदाम्बिके। रूपं देहि जयं देहि यशो देहि द्वषो जहि ॥१९॥ हिमाचल सुतानाथ संस्तुते परमेश्वरि। रूपंदेहि जयं देहि यशो देहि द्विषोजंहि।२०। इन्द्राणी—पतिसद्भावपूजिते परमेश्वरि। रूपं देहि जयं देहि यशो देहि द्विषो जहि ॥२१॥ देवि प्रचण्डदोर्दण्ड—दैत्यदर्प—विनाशिनि। रूपं देहि जयं देहि यशो देहि द्विषो जहि ॥२२॥ देवि भक्तजनोद्दाम दत्तानन्दोदयेऽम्बिके। रूपं देहि जयं देहि यशो देहि द्विषो जहि ॥२३॥ पत्नीं मनोरमांदेहि मनोवृत्तानुसारिणीम्। तारिणीं दुर्गसंसार सागरस्यकुलोद्भवाम् ॥२४॥ इदं स्तोत्रं पठित्वा तु महास्तोत्रं पठेन्नरः। स तु सप्तशती संख्या वरमाप्नोति सम्पदाम् ॥२५॥ इति मार्कण्डेय पुराणे अर्गलास्तोत्रं समाप्तम्।

॥ अथ कीलक स्तोत्रम् ॥

ॐ अस्य श्रीकीलक स्तोत्रमन्त्रस्य ईश्वर ऋषिः अनुष्टुप्छन्दः त्रिगुणात्मिका चण्डिका देवता विशुद्धज्ञान देहायेति वीजं त्रिवेदीतिशक्तिः दिव्य चक्षुष इति कीलकम् श्रीत्रिगुणात्मिका प्रीत्यर्थे जपे (पाठे) विनियोगः ॥

al Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathma

. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding:

॥ अथ ध्यानम् ॥

शोणप्रभं सोमकलावतंसं पाणिस्फुरत्वं च शरेषु चापम् ।
पाणिप्रियं नौमि पिनाकपाणिंकोणत्रयस्थं कुल देवतां च ॥

ॐ नमश्चण्डिकायै ॥ मार्कण्डेय उवाच

विशुद्धज्ञानदेहाय त्रिवेदी दिव्यचक्षुषे । श्रेयः प्राप्तिनिमित्ताय नमः सोमार्द्धधारिणे ॥१॥ सर्वमेतद्विजानीयान्मन्त्राणामपिकील-कम् । सोपिक्षेममवाप्नोति सततं जाप्यतत्परः ॥२॥ सिध्यन्त्यु-च्चाटनादीनि वस्तूनि सकलान्यपि । एतेनस्तुवतांदेवी स्तोत्रमात्रेण सिध्यति ॥३॥ न मन्त्रोनौषधं तत्र न किञ्चिदपि विद्यते । विना जाप्येन सिध्येत सर्वमुच्चाटनादिकम् ॥४॥ समग्राण्यपि सिद्धयन्ति लोकशंकामिमांहरः । कृत्वा निमन्त्रयामास सर्वमेवमिदं शुभम्॥५॥ स्तोत्रं वै चण्डिकायास्तु तच्च गुप्तश्चकार सः । समाप्नोति सुपुण्येन तां यथावन्नियन्त्रणाम् ॥६॥ सोऽपि क्षेममवाप्नोति सर्वमेव न संशयः । कृष्णायां वा चतुर्दश्यामष्टम्यां वा समाहितः ॥७॥ ददाति प्रतिगृह्णाति नान्यथैषा प्रसीदति । इत्थं रूपेण कीलेन महादेवेन कीलितम् ॥८॥ यो निष्कीलांविधायैनां नित्यं जपति संस्फुटम् । स सिद्धः स गणः सोऽपि गन्धर्वोजायतेनरः ॥९॥ न चैवाप्यटतस्तस्य भयं क्वापीह जायते । नापमृत्युवशंयाति मृतो मो.क्षमवाप्नुयात् ॥१०॥ ज्ञात्वा प्रारभ्य कुर्वीत ह्यकुर्वाणो विन-श्यति । ततो ज्ञात्वैव सम्पन्नमिदं प्रारभ्यते बुधैः ॥११॥ सौभा ग्यादि च यत्किञ्चिद्दृश्यते ललनाजने । तत्सर्वं तत्प्रसादेन तेन

epal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmand

Public Domain. Digitization by eGangotri.Fundin

जाप्यमिदं शुभम् ॥१२॥ शनैस्तु जप्यमानेऽस्मिन् स्तोत्रे सम्पत्ति रुच्चकैः। भवत्येव समग्रापि ततः प्रारभ्यमेव तत् ॥१३॥ ऐश्वर्यं यत्प्रसादेन सौभाग्यारोग्यसम्पदः। शत्रुहानिः परोमोक्षः स्तूयते सा न किञ्जनैः ॥१४॥

इति भगवत्याः कीलकस्तोत्रं समाप्तम्।

श्रीगणपतिर्जयति ॥ ॐ अस्यश्रीनवार्ण मन्त्रस्य ब्रह्मविष्णुरुद्रा ऋषयः गायत्र्युष्णिगनुष्टुप्छन्दांसि श्रीमहाकाली महालक्ष्मी महासरस्वत्यो देवताः ऐँ वीजम् ह्रीं शक्तिः क्लीं कीलकम् श्रीमहाकाली महालक्ष्मी महासरस्वती प्रीत्यर्थे जपे विनियोगः ॥ ब्रह्मविष्णुरुद्रऋषिभ्यो नमः शिरसि । गायत्र्युष्णिगनुष्टुप्छन्देभ्यो नमो मुखे। महाकाली महालक्ष्मी महासरस्वती देवताभ्यो नमो हृदि। ऐं वीजाय नमः गुह्ये। ह्रीं शक्तये नमः पादयो। क्लीं कीलकाय नमः नाभौ। इति मूलेन करौ संशोध्य। ॐ ऐं अंगुष्ठाभ्यां नमः। ॐ ह्रीं तर्जनीभ्यां नमः। ॐ क्लीं मध्यमा० नमः। ॐ चामुंडायै अनामिकाभ्यां नमः। ॐ विच्चे कनिष्ठिकाभ्यां नमः। ॐ ऐं ह्रीं क्लीं चामुण्डायै विच्चेकरतलकरपृष्ठा० नमः। एवं हृदयादि। ततोऽक्षरन्यासः ऐं नमः शिखायाम्। ॐ ह्रीं नमः दक्षिणनेत्रे। ॐ क्लीं नमः वामनेत्रे ॐ चां नमः दक्षिणकर्णे। ॐ मुं नमः वामकर्णे। ॐ डां नमः दक्षिण नासायाम्। ॐ यैं नमः वाम नासायाम्। ॐ विं नमः मुखे। ॐ च्चें नमः गुह्ये। एवं विन्यस्याष्टवारंमूलेन व्यापकं कुर्यात्।

al Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathma

. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding

ॐ ऐं प्राच्यै नमः। ॐ ऐं आग्नेय्यै नमः। ॐ ह्रीं दक्षिणायै नमः। ॐ ह्रीं नैऋत्यै नमः। ॐ क्लीं प्रतीच्यै नमः ॐ क्लीं वायव्यै नमः। ॐ चामुण्डायै उदीच्यै नमः। ॐ विच्चे ईशान्यै नमः। ॐ ऐं ह्रीं क्लीं चामुण्डायै विच्चे ऊर्ध्वायै नमः। ॐ ऐं ह्रीं क्लीं चामुण्डायै विच्चै भूम्यै नमः।

॥ अथ ध्यानम् ॥

खड्गं चक्रगदेषुचापपरिघाञ्छूलं भुशुण्डीं शिरः शंखं सन्दधतीं करैस्त्रिनयनां सर्वाङ्गभूषावृताम्। नीलाश्म द्युतिमास्यपाददशकां सेवे महाकालिकां यामस्तौत्स्वपिते हरौ कमलजो हन्तुम्मधुं कैटभम् ॥१॥ अक्षस्रक्परशुङ्गदेषुकुलिशं पद्मं धनुः कुण्डिकां दण्डं शक्तिमसिञ्च चर्म्मजलजंघण्टां सुराभाजनम्। शूलम्पाश सुदर्शने च दधतीं हस्तैः प्रसन्नाननां सेवे सैरिभमर्दिनीमिह महालक्ष्मीं सरोजस्थिताम् ॥२॥ घण्टाशूलहलानि शंखमुसले चक्रन्धनुः सायकं हस्ताब्जैर्दधतीं घनान्तविलसच्छीतांशु तुल्यप्रभाम्। गौरी देहसमुद्भवां त्रिनयनामाधारभूतां महापूर्वामत्रसरस्वतीमनुभजे शुम्भादिदैत्यार्दिनीम् ॥३॥

॥ अथ नवार्ण मन्त्रोद्धारः ॥

ऐं बीजमादीन्दुसमानदीप्तिं ह्रीं सूर्य तेजोद्युतिमद् द्वितीयम्।
क्लीं चापिवैश्वानर तुल्यरूपं तृतीयमानन्त्य सुखाय चिन्त्यम्॥
चा शुद्ध जाम्बूनदकान्ति तुल्यं मुं पञ्चमं वेदतरं प्रकल्प्यम्।
डां षष्ठमुग्रार्ति हरं सुनीत्वं यै सप्तमं कृष्णतरं रिपुघ्नम्॥

epal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmand

Public Domain. Digitization by eGangotri.Fundin

ततः मालां संपूज्य प्रार्थयेत् ।

माले माले महामाये सर्वशक्ति स्वरूपिणी ।
चतुर्वर्गस्त्वयिन्यस्तस्तस्मान्मां सिद्धिदा भव ॥

इति मालां संप्रार्थ्य ॥ ॐ सिद्ध्यै नमः इतिमालां नत्वा (ॐ ऐं ह्रीं क्लीं चामुण्डायै विच्चे) इति मन्त्रम् अष्टोत्तर शतं १०८ सहस्रं १००० अयुतं १०००० यथाशक्ति वा (महासरस्वत्यादि रूपे, चित्सदानन्द मये, चण्डिके त्वां ब्रह्मविद्या प्राप्त्यर्थं वयं सर्वदा ध्यायामः) इत्यर्थानु सन्धान पूर्वकं जपेत् ।

॥ अथ रात्रिसूक्तम् ॥

विश्वेश्वरीं जगद्धात्रीं स्थितिसंहारकारिणीम् ।
निद्रां भगवतीं विष्णोरतुलां तेजसः प्रभुः ॥१॥

॥ ब्रह्मोवाच ॥

त्वं स्वाहा त्वं स्वधा त्वं हि वषट्कारः स्वरात्मिका । सुधात्वमक्षरे नित्ये त्रिधा मात्रात्मिका स्थिता ॥२॥ अर्धमात्रास्थिता नित्या यानुच्चार्या विशेषतः । त्वमेव सन्ध्या सावित्री त्वं देवि जननी परा ॥३॥ त्वयैतद्धार्यते विश्वं त्वयैतत्सृज्यते जगत् । त्वयैतत्पाल्यते देवि त्वमत्स्यन्ते च सर्वदा ॥४॥ विसृष्टौ सृष्टिरूपा त्वं स्थितिरूपा च पालने । तथा संहृतिरूपान्ते जगतोऽस्य जगन्मये ॥५॥ महाविद्या महामाया महामेधा महास्मृतिः । प्रकृतिस्त्वञ्च सर्वस्य गुणत्रयविभाविनी । कालरात्रि र्महारात्रि र्मोहरात्रिश्च

al Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathma

. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding:

दारुणा ॥७॥ त्वं श्रीस्त्वमीश्वरी त्वं ह्रीस्त्वं बुद्धिर्बोधलक्षणा। लज्जा पुष्टिस्तथा तुष्टिस्त्वं शांतिःक्षान्तिरेवच ॥८॥ खड्गिनी शूलिनी घोरा गदिनी चक्रिणी तथा। शंखिनी चापिनी बाण भुशुण्डीपरिघायुधा ॥९॥ सौम्या सौम्यतराशेष सौम्येभ्यस्त्वति सुन्दरी। परापराणां परमा त्वमेव परमेश्वरी ॥ १० ॥ यच्च किंचित्क्वचिद्वस्तु सदद्वाखिलात्मिके। तस्य सर्वस्य या शक्तिः सात्वं किंस्तूयसे तदा ॥ ११ ॥ यया त्वया जगत्स्रष्टा जगत्पा- त्यत्ति यो जगत्। सोऽपि निद्रावशंनीतः कःस्त्वां स्तोतुमिहेश्वरः ॥१२॥ विष्णुः शरीरग्रहण महमीशान एव च। कारितास्ते यतोऽतस्त्वां कःस्तोतुं शक्तिमान्भवेत् ॥१३॥ सा त्वमित्थं प्रभावैः स्वरुदारैर्देवि संस्तुता। मोहयैतौ दुराधर्षावसुरौ मधुकैटभौ ॥१४॥ प्रबोधञ्च जगत्स्वामी नीयतामच्युतोलघु। बोधश्च क्रियतामस्य हन्तुमेतौ महासुरौ ॥१५॥

* इति रात्रिसूक्तम् *

अथे सप्तशती न्यासः ॥ अथ प्रथममध्यमोत्तमचरित्राणां ब्रह्म- विष्णुरुद्राऋषयः श्रीमहाकाली महालक्ष्मी महासरस्वत्यो देवताः गायत्र्युष्णिगनुष्टुप्छन्दांसिनन्दशाकम्भरीभीमाशक्तयः रक्तदन्तिका दुर्गाभ्रामयोबीजानि अग्निर्वायुस्सूर्यस्तत्त्वानि ऋग्यजुस्सामवेदा ध्यानानि मम सकलकामनासिद्धये श्रीमहाकाली महालक्ष्मी महा- सरस्वती देवी प्रीत्यर्थे जपे विनियोगः ॥ तत्रादौ न्यासः ॥ ॐ

epal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmand

Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding

खड्गिनी शूलिनी घोरा० अंगुष्ठाभ्यां नमः । ॐ शूलेनपाहिनो देवि० तर्जनीभ्यां नमः ॥ ॐ प्राच्यांरक्षप्रतीच्यांच० मध्यमाभ्यां नमः ॥ ॐ सौम्यानियानि रूपाणि० अनामिकाभ्यां नमः ॥ ॐ खड्गशूलगदादीनि० कनिष्ठिकाभ्यां नमः ॥ ॐ सर्व्वस्व-रूपे सर्व्वेशे० करतलकर पृष्ठाभ्यां नमः ॥ एवं हृदयादि न्यासः ॥ ॐ खड्गिनी शूलिनी घोरा० हृदयाय नमः ॥ ॐ शूलेनपाहिनो देवि० शिरसे स्वाहा ॥ ॐ प्राच्यां रक्षप्रतीच्यांच० शिखायै वषट् ॥ ॐ सौम्यानियानि रूपाणि० कवचाय हुं ॥ ॐ खड्गशूल गदादीनि० नेत्रत्रयाय वौषट् ॥ ॐ सर्व्वस्वरूपे सर्वेशे० अस्त्रायफट् ॥

. In Public Domain. Digitization by eGangotri. Funding:

॥ ध्यानम् ॥

विद्युद्दाम समप्रभां मृगपतिस्कन्ध स्थितां भीषणां।
कन्याभिः करवाल खेटविलसद्धस्ताभिरासेविताम् ॥
हस्तैश्चक्रधरालिखेट विशिखांश्चापं गुणं तर्जनीं।
बिभ्राणामनलात्मिकां शशिधरां दुर्गां त्रिनेत्रां भजे ॥

॥*॥ अथ श्री दुर्गासप्तशती ॥*॥

॥ प्रथमोऽध्यायः ॥

प्रथम चरित्रस्य ब्रह्माऋषिः महाकाली देवता गायत्रीछन्दः नंदाशक्तिः ऐं रक्तदन्तिकाबीजं अग्निस्तत्वं ऋग्वेदस्वरूपं श्रीमहाकाली प्रीत्यर्थे प्रथम चरित्र जपे विनियोगः ॥

खड्गंचक्रगदेषु चापपरिघाञ्छूलम्भुशुण्डीं शिरः।
शंखं संदधतीं करैस्त्रिनयनां सर्वाङ्गभूषावृताम् ॥
यां हन्तुं मधुकैटभौ जलजभूस्तुष्टाव सुप्ते हरौ।
नीलाश्मद्युतिमास्यपाददशकां सेवे महाकालिकाम् ॥

ॐ नमश्चण्डिकायै ॥ मार्कण्डेय उवाच ॥१॥

सावर्णिस्सूर्य तनयो यो मनुः कथ्यतेऽष्टमः। निशामय तदुत्पत्तिं
विस्तराद्गदतोमम ॥२॥ महामायानुभावेन यथा मन्वन्तराधिपः।
स बभूवमहाभागस्सावर्णिस्तनयो रवेः ॥ ३ ॥ स्वारोचिषेन्तरे
पूर्वंचैत्रवंशसमुद्भवः। सुरथो नाम राजाभूत्समस्ते क्षितिमण्डले

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding

॥४॥ तस्यपालयतः सम्यक्प्रजाः पुत्रानिवौरसान् । बभूवुः शत्रवो भूपाः कोलाविध्वंसिनस्तदा ॥ ५ ॥ तस्य तैरभवद्युद्धमति प्रवल दण्डिनः । न्यूनैरपि सतैर्युद्धे कोलाविध्वंसिभिर्जितः ॥६॥ ततः स्वपुरमायातो निजदेशाधिपोऽभवत् । आक्रान्तस्समहाभागस्तैस्तदा प्रवलारिभिः ॥ ७ ॥ अमात्यैर्वलिभिर्दुष्टैर्दुर्वलस्य दुरात्मभिः । कोशोवलञ्चापहृतं तत्रापि स्वपुरे ततः ॥८॥ ततो मृगया व्याजेन हृतस्वाम्यः स भूपतिः । एकाकी हयमारुह्य जगाम गहनं वनम् ॥९॥ स तत्राश्रममद्राक्षीद् द्विजवर्यस्य मेधसः । प्रशान्तश्वापदाकीर्णं मुनिशिष्योपशोभितम् ॥ १० ॥ तस्थौ कंचित्स कालं च मुनिना तेन सत्कृतः । इतश्चेतश्च विचरंस्तस्मिन्मुनिवराश्रमे॥११॥ सोऽचिन्तयत्तदा तत्र ममत्वाकृष्टचेतनः । मत्पूर्वैः पालितं पूर्वं मया हीनं पुरं हि तत् ॥ १२ ॥ मद्भृत्यैस्तैरसद्वृत्तैर्धर्मतः पाल्यते न वा । न जाने स प्रधानो मे शूरहस्ती सदामदः ॥ १३ ॥ मम वैरिवशं यातः कान्भोगानुपलप्स्यते । ये ममानुगतानित्यं प्रसाद धनभोजनैः ॥ १४ ॥ अनुवृत्तिं ध्रुवं तेऽद्य कुर्वन्त्यन्यमहीभृताम् । असम्यग्व्ययशीलैस्तैः कुर्वद्भिः सततं व्ययम् ॥ १५ ॥ संचितः सोऽतिदुःखेन क्षयंकोशो गमिष्यति । एतच्चान्यच्च सततं चिन्तयामास पार्थिवः ॥ १६ ॥ तत्र विप्राश्रमाभ्याशे वैश्यमेकं ददर्श सः । स पृष्टस्तेन कस्त्वं भो हेतुश्चागमनेऽत्रकः ॥१७॥ सशोक इव कस्मात्त्वं दुर्मना इव लक्ष्यसे । इत्याकर्ण्य वचस्तस्य भूपतेः प्रणयोदितम् ॥१८॥ प्रत्युवाच स तं वैश्यः प्रश्रयावनतो नृपम्॥१९॥

al Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathma

. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding:

वैश्य उवाच ॥२०॥

समाधिर्नाम वैश्योऽहमुत्पन्नो धनिनां कुले ॥ २१ ॥ पुत्रदारैर्निरस्तश्च धनलोभादसाधुभिः । विहीनश्च धनैर्दारैः पुत्रैरादाय मे धनम् ॥२२॥ वनमभ्यागतो दुःखी निरस्तश्चाप्तबन्धुभिः । सोऽहं न्न वेद्मि पुत्राणां कुशलाकुशलात्मिकाम् ॥२३॥ प्रवृत्तिं स्वजनानां च दाराणां चात्र संस्थितः । किं नु तेषां गृहे क्षेममक्षेमं किं नु साम्प्रतम् ॥२४॥ कथं ते किं नु सद्वृत्ता दुर्वृताः किं नु मे सुताः ।२५।

राजोवाच ॥२६॥

यैर्निरस्तो भवाँल्लुब्धैः पुत्रदारादिभिर्धनैः ॥२७॥ तेषु किं भवतः स्नेहमनुबध्नाति मानसम् ॥२८॥

वैश्य उवाच ॥२९॥

एवमेतद्यथा प्राह भवानस्मद्गतं वचः ॥ ३० ॥ किं करोमि न बध्नाति मम निष्ठुरतां मनः । यैः संत्यज्य पितृस्नेहं धनलुब्धैर्निराकृतः ॥ ३१ ॥ पतिस्वजनहार्दञ्च हार्दि तेष्वेव मे मनः । किमेतन्नाभिजानामि जानन्नपि महामते ॥ ३२ ॥ यत्प्रेमप्रवणं चित्तं विगुणेष्वपि बन्धुषु । तेषां कृते मे निःश्वासो दौर्मनस्यं च जायते ॥३३॥ करोमि किं यन्न मनस्तेष्वप्रीतिषु निष्ठुरम् ।३४।

मार्कण्डेय उवाच ॥३५॥

ततस्तौ सहितौ विप्र तं मुनिं समुपस्थितौ ॥३६॥ समाधिर्नाम वैश्योऽसौ स च पार्थिवसत्तमः । कृत्वा तु तौ यथान्यायं यथार्हं तेन संविदम् ॥३७॥ उपविष्टौ कथाः काश्चिच्चक्रतुर्वैश्यपार्थिवौ।३८

epal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmand

Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding

राजोवाच ॥३९॥

भगवंस्त्वामहं प्रष्टुमिच्छाम्येकं वदस्व तत् ॥४०॥ दुःखाय यन्मे मनसः स्वचित्तायत्ततांविना । ममत्वं गतराज्यस्य राज्याङ्गेष्व खिलेष्वपि ॥४१ जानतोऽपि यथाज्ञस्य किमेतन्मुनिसत्तम । अयं च निकृतः पुत्रैर्दारैर्भृत्यैस्तथोज्झितः ॥४२॥ स्वजनेन च संत्यक्तस्तेषु हार्दी तथाप्यति । एवमेष तथाहं च द्वाप्यत्यन्तदुःखितौ ॥४३॥ दृष्टदोषेऽपि विषये ममत्वाकृष्टमानसौ । तत्किमेतन्महाभाग यन्मोहो ज्ञानिनोरपि ॥४४॥ ममास्य च भवत्येषा विवेकान्धस्य मूढता ॥४५॥

ऋषिरुवाच ॥४६॥

ज्ञानमस्ति समस्तस्य जन्तोर्विषयगोचरे ॥ ४७ ॥ विषयश्च महाभाग याति चैवं पृथक् पृथक् । दिवान्धाः प्राणिनः केचिद्रात्रावन्धास्तथापरे ॥ ४८ ॥ केचिद्दिवा तथा रात्रौ प्राणिनस्तुल्यदृष्टयः । ज्ञानिनो मनुजाः सत्यं किं तु ते न हि केवलम् ॥ ४९ ॥ यतो हि ज्ञानिनः सर्वे पशुपक्षिमृगादयः । ज्ञानं च तन्मनुष्याणां यत्तेषां मृगपक्षिणाम् ॥५०॥ मनुष्याणां च यत्तेषां तुल्यमन्यत्तथोभयोः । ज्ञानेऽपि सति पश्यैतान् पतङ्गाञ्छावचञ्चुषु ॥ ५१ ॥ कणमोक्षादृतान्मोहात्पीड्यमानानपि क्षुधा । मानुषा मनुजव्याघ्र साभिलाषाः सुतान् प्रति ॥५२॥ लोभात्प्रत्युपकाराय नन्वेतान् किं नपश्यति । तथापि ममतावर्ते मोहगर्ते निपातिताः ॥५३॥ महामायाप्रभावेण संसारस्थितिकारिणा । तन्नात्र विस्मयः कार्यो योगनिद्रा जगत्पतेः ॥५४॥ महामाया हरेश्चैषा तया संमोह्यते जगत् । ज्ञानिनामपि

al Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathma

. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding:

चेतांसि देवी भगवती हि सा ॥ ५५ ॥ बलदाकृष्य मोहाय महामाया प्रयच्छति । तया विसृज्यते विश्वं जगदेतच्चराचरम् ॥५६॥ सैषा प्रसन्ना वरदा नृणां भवति मुक्तये । सा विद्या परमा मुक्तेर्हेतुभूता सनातनी ॥५७॥ संसारबन्धहेतुश्च सैव सर्वेश्वरेश्वरी ।५८।

राजोवाच ॥५९॥

भगवन् का हि सा देवी महामायेति यां भवान् ॥ ६० ॥ ब्रवीति कथमुत्पन्ना सा कर्मास्याश्च किं द्विज । यत्प्रभावा च सा देवी यत्स्वरूपा यदुद्भवा ॥६१॥ तत्सर्वं श्रोतुमिच्छामि त्वत्तो ब्रह्मविदां वर ॥ ६२ ॥

ऋषिरुवाच ॥६३॥

नित्यैव सा जगन्मूर्तिस्तया सर्वमिदं ततम् ॥६४॥ तथापि तत्समुत्पत्तिर्बहुधा श्रूयतां मम । देवानां कार्यसिद्ध्यर्थमाविर्भवति सा यदा ॥६५॥ उत्पन्नेति यदा लोके सा नित्याप्यभिधीयते । योगनिद्रां तदा विष्णुर्जगत्येकार्णवीकृते ॥ ६६ ॥ आस्तीर्य शेषमभजत्कल्पान्ते भगवान प्रभुः । तदा द्वावसुरौ घोरौ विख्यातौ मधुकैटभो ॥६७॥ विष्णुकर्णमलोद्भूतौ हन्तुं ब्रह्माणमुद्यतौ । स नाभिकमले विष्णोः स्थितो ब्रह्मा प्रजापतिः ॥६८॥ दृष्ट्वा तावसुरौ चोग्रो प्रसुप्तं च जनार्दनम् । तुष्टाव योगनिद्रां तामेकाग्रहृदयस्थितः ॥६९॥ विबोधनार्थाय हरेर्हरिनेत्रकृतालयाम् । विश्वेश्वरीं जगद्धात्रीं स्थितिसंहारकारिणीम् ॥ ७ ॥ निद्रां भगवतीं विष्णोरतुलां तेजसः प्रभुः ॥ ७१ ॥

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

Public Domain. Digitization by eGangotri.Fundin

ब्रह्मोवाच ॥७२॥

त्वं स्वाहा त्वं स्वधा त्वं हि वषट्कारः स्वरात्मिका ॥७३॥ सुधा त्वमक्षरे नित्ये त्रिधा मात्रात्मिका स्थिता। अर्धमात्रास्थिता नित्या यानुच्चार्या विशेषतः ॥७४॥ त्वमेव सन्ध्या सावित्री त्वं देवी जननी परा। त्वयैतद्धार्यते विश्वं त्वयैतत्सृज्यते जगत् ॥७५॥ त्वयैतत्पाल्यते देवि त्वमत्स्यन्ते च सर्वदा। विसृष्टौ सृष्टिरूपा त्वं स्थितिरूपा च पालने ॥७६॥ तथा संहृतिरूपान्ते जगतोऽस्य जगन्मये। महाविद्या महामाया महामेधा महास्मृतिः ॥७७॥ महामोहा च भवती महादेवी महासुरी। प्रकृतिस्त्वं च सर्वस्य गुणत्रयविभाविमी ॥ ७८ ॥ कालरात्रिर्महारात्रिर्मोहरात्रिश्च दारुणा। त्वं श्रीस्त्वमीश्वरी त्वं ह्रस्त्वं बुद्धिर्बोधलक्षणा ॥७९ ॥ लज्जा पुष्टिस्तथा तुष्टिस्त्वं शान्तिः क्षान्तिरेव च। खड्गिनी शूलिनी घोरा गदिनी चक्रिणी तथा ॥ ८० ॥ शङ्खिनी चापिनी बाणभुशुण्डीपरिघायुधा। सौम्या सौम्यतराशेष सौम्येभ्यस्त्वति सुन्दरी ॥ ८१ ॥ परापराणां परमा त्वमेव परमेश्वरी। यच्च किंचित्क्वचिद्वस्तु सदसद्वाखिलात्मिके ॥ ८२ ॥ तस्य सर्वस्य या शक्तिः सात्वं किं स्तूयसे तदा। यया त्वया जगत्स्रष्टा जगत्पात्यत्ति यो जगत् ॥ ८३ ॥ सोऽपि निद्रवशं नीतः कस्त्वां स्तोतु मिहेश्वरः। विष्णुः शरीरग्रहणमहमीशान एव च ॥८४॥ कारितास्ते यतोऽतस्त्वां कः स्तोतुं शक्तिमान् भवेत्। सा त्वमित्थं प्रभावैः स्वैरुदारैर्देवि संस्तुता ॥ ८५ ॥ मोहयैतौ दुराधर्षावसुरौ मधुकैटभौ। प्रबोधं च जगत्स्वामी नीयतामच्युतो लघु ॥ ८६ ॥ बोधश्च क्रियतामस्य हन्तुमेतौ महासुरौ ॥ ८७ ॥

al Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathma

. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding:

ऋषिरुवाच ॥८८॥

एवं स्तुता तदा देवी तामसी तत्र वेधसा ॥८९॥ विष्णोः प्रबोध नार्थाय निहन्तुं मधुकैटभौ। नेत्रास्यनासिकाबाहु हृदयेभ्यस्तथो- रसः ॥ ९० ॥ निर्गम्य दर्शने तस्थौ ब्रह्मणोऽव्यक्तजन्मनः। उत्तस्थौ च जगन्नाथस्तया मुक्तो जनार्दनः ॥ ९१ ॥ एकार्णवेऽहि शयनात्ततः स ददृशे च तौ। मधुकैटभौ दुरात्माना वतिवीर्यपरा- क्रमौ ॥९२॥ क्रोधरक्तेक्षणावत्तुं ब्रह्माणं जनितोद्यमौ। समुत्थाय ततस्ताभ्यां युयुधे भगवान् हरिः। पञ्चवर्ष सहस्राणि बाहुप्रहरणो विभुः। तावप्यतिवलोन्मत्तौ महामायाविमोहितौ ॥ ९४ ॥ उक्त- वन्तौ वरोऽस्मत्तो व्रियतामिति केशवम् ॥ ९५ ॥

श्रीभगवानुवाच ॥९६॥

भवेतामद्य मे तुष्टौ मम वध्यावुभावपि ॥९७॥ किमन्येन वरेणात्र एतावद्धि वृतं मम ॥ ९८ ॥

ऋषिरुवाच ॥९९॥

वञ्चिताभ्यामिति तदा सर्वमापोमयं जगत् ॥ १०० ॥ विलोक्य ताभ्यां गदितो भगवान् कमलेक्षणः। दैत्यावूचतुः १०१ आवां जहि न यत्रोर्वी सलिलेन परिप्लुता ॥ १०२ ॥

ऋषिरुवाच ॥१०३॥

तथेत्युक्त्वा भगवता शंखचक्रगदाभृता। कृत्वा चक्रेण वैच्छिन्ने जघने शिरसी तयोः ॥१०४॥ एवमेषा समुत्पन्ना ब्रह्मणा संस्तुता स्वयम्। प्रभावमस्या देव्यास्तु भूयः शृणु वदामि ते ॥ऐं ॐ१०५॥

इति श्रीमार्कण्डेयपुराणे सावर्णिके मन्वन्तरे देवीमाहात्म्ये मधुकैटभवधो नाम प्रथमोऽध्यायः ॥१॥

epal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmand

Public Domain. Digitization by eGangotri.Fundin

॥*॥ अथ द्वितीयोऽध्याय ॥*॥

विनियोगः

ॐ मध्यमचरित्रस्य विष्णुऋषिर्महालक्ष्मीर्देवता उष्णिक्छन्दः शाकम्भरी शक्तिः दुर्गा बीजं वायुस्तत्त्वं यजुर्वेदः स्वरूपं श्रीमहालक्ष्मीप्रीत्यर्थे मध्यमचरित्रजपे विनियोगः।

ध्यानम्

ॐ अक्षस्रक्परशुङ्गदेषुकुलिशं पद्मं धनुष्कुण्डिकां
दण्डं शक्तिमसिञ्च चर्म्मजलजंघण्टां सुराभाजनम्।
शूलम्पाश सुदर्शने च दधतीं हस्तैः प्रसन्नाननां
सेवे सैरिभमर्दिनीमिह महालक्ष्मीं सरोजस्थिताम्॥

'ॐ ह्रीं' ऋषिरुवाच ॥१॥

देवासुरमभूद्युद्धं पूर्णमब्दशतं पुरा। महिषेऽसुराणामधिपे देवानां च पुरन्दरे ॥२॥ तत्रासुरैर्महावीर्यैर्देवसैन्यं पराजितम्। जित्वा च सकलान् देवानिन्द्रोऽभून्महिषासुरः ॥ ३ ॥ ततः पराजिता देवाः पद्मयोनिं प्रजापतिम्। पुरस्कृत्य गतास्तत्र यत्रेशगरुडध्वजौ ॥४॥ यथावृत्तं तयोस्तद्वन्महिषासुरचेष्टितम्। त्रिदशाः कथयामासुर्देवाभिभवविस्तरम् ॥५॥ सूर्येन्द्राग्न्यनिलेन्दूनां यमस्य वरुणस्य च। अन्येषां चाधिकारान् स स्वयमेवाधितिष्ठति ॥६॥ स्वर्गान्निराकृताः सर्वे तेन देवगणा भुवि। विचरन्ति यथा मर्त्या महिषेण दुरात्मना ॥७॥ एतद्वः कथितं सर्वममरारिविचेष्टितम्। शरणं वः प्रपन्नाः स्मो वधस्तस्य विचिन्त्यताम् ॥८॥ इत्थं निशम्य देवानां

al Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathma

. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding:

वचांसि मधुसूदनः। चकार कोपं शम्भुश्च भ्रुकुटीकुटिलाननौ ॥९॥ ततोऽतिकोपपूर्णस्य चक्रिणो वदनात्ततः। निश्चक्राम महत्तेजो ब्रह्मणः शङ्करस्य च ॥ १० ॥ अन्येषाँ चैव देवानां शक्रादीनां शरीरतः। निर्गतं सुमहत्तेजस्तच्चैक्यं समगच्छत ॥ ११ ॥ अतीव तेजसः कूटं ज्वलन्तमिव पर्वतम्। ददृशुस्ते सुरास्तत्र ज्वालाव्याप्तदिगन्तरम्। १२॥ अतुलं तत्र तत्तेजः सर्वदेवशरीरजम्। एकस्थं तदभून्नारी व्याप्तलोकत्रयं त्विषा ॥ १३ ॥ यदभूच्छाम्भवं तेजस्तेनाजायत तन्मुखम्। याम्येन चाभवन् केशा बाहवो विष्णु तेजसा ॥ १४ ॥ सौम्येन स्तनयोर्युग्मं मध्यं चैन्द्रेण चाभवत्। वारुणेन च जङ्घोरू नितम्बस्तेजसा भुवः ॥ १५ ॥ ब्रह्मणस्तेजसा पादौ तदङ्गुल्योऽर्कतेजसा । वसूनाश्च कराङ्गुल्यः कौबेरेण च नासिका ॥१६॥ तस्यास्तु दन्ताः सम्भूताः प्राजापत्येन तेजसा। नयनत्रितयं यज्ञे तथा पावकतेजसा ॥१७॥ भ्रुवौ च सन्ध्ययोस्तेजः श्रवणावनिलस्य च। अन्येषाँचैव देवानां सम्भवस्तेजसांशिवा।१८। ततः समस्त देवानां तेजोराशिसमुद्भवाम्। ताँ विलोक्य मुदं प्रापुरमरा महिषार्दिताः ॥१९॥ शूलं शूलाद्विनिष्कृष्य ददौ तस्यै पिनाकधृक्। चक्रं च दत्तवान् कृष्णः समुत्पाद्य स्वचक्रतः ॥२०॥ शंखं च वरुणः शक्तिं ददौ तस्यै हुताशनः। मारुतो दत्तवांश्चापं बाणपूर्णे तथेषुधी ॥२१॥ वज्रमिन्द्रः समुत्पाद्य कुलिशादमराधिपः। ददौ तस्यै सहस्राक्षो घण्टामैरावताद् गजात् ॥ २२ ॥ कालदण्डाद्यमो दण्डं पाशं चाम्बुपतिर्ददौ। प्रजापतिश्चाक्षमालां ददौ ब्रह्मा कमण्डलुम् ॥ २३ ॥ समस्तरोमकूपेषु निजरश्मीन् दिवाकरः।

epal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmand

Public Domain. Digitization by eGangotri.Fundin

कालश्च दत्तवान् खड्गं तस्याश्चर्म च निर्मलम् ॥२४॥ क्षीरोदश्चामलं हारमजरे च तथाम्बरे। चूड़ामणिं तथा दिव्यं कुण्डले कटकानि ॥२५॥ अर्धचन्द्रं तथा शुभ्रं केयूरान्सर्वबाहुषु। नूपुरौ विमलौ तद्वद् ग्रैवेयकमनुत्तमम् ॥२६॥ अङ्गुलीयकरत्नानि समस्तास्वङ्गुलीषु च। विश्वकर्मा ददौ तस्यै परशुं चातिनिर्मलम् ।२७। अस्त्राण्यनेकरूपाणि तथाभेद्यं च दंशनम्। अम्लानपङ्कजां मालां शिरस्युरसि चापराम् ॥२८॥ अददज्जलधिस्तस्यै पङ्कजं चातिशोभनम्। हिमवान् वाहनं सिंहं रत्नानि विविधानि च ॥ २९ ॥ ददावशून्यं सुरया पानपात्रं धनाधिपः। शेषश्च सर्वनागेशो महामणिविभूषितम् ॥ ३० ॥ नागहारं ददौ तस्यै धत्ते यः पृथिवीमिमाम्। अन्यैरपि सुरैर्देवी भूषणैरायुधैस्तथा ॥३१॥ सम्मानिता ननादोच्चैः साट्टहासं मुहुर्मुहुः। तस्या नादेन घोरेण कृत्स्नमापूरितं नभः ॥ ३२ ॥ अमायतातिमहता प्रतिशब्दो महानभूत्। चुक्षुभुः सकला लोकाः समुद्राश्च चकम्पिरे ॥३३॥ चचाल वसुधा चेलुः सकलाश्च महीधराः। जयेति देवाश्च मुदा तामूचुः सिंहवाहिनीम् ॥ ३४ ॥ तुष्टुवुर्मुनयश्चैनां भक्तिनम्रात्ममूर्तयः। दृष्ट्वा समस्तं संक्षुब्धं त्रैलोक्यममरारयः ॥ ३५ ॥ सन्नद्धाखिलसैन्यास्ते समुत्तस्थुरुदायुधाः। आः किमेतदिति क्रोधादाभाष्य महिषासुरः ॥३६॥ अभ्यधावत तं शब्दमशेषैरसुरैर्वृतः। स ददर्श ततो देवीं व्याप्तलोकत्रयां त्विषा ॥३७॥ पादाक्रान्त्या नतभुवं किरीटोल्लिखिताम्बराम्। क्षोभिताशेषपाताला धनुर्ज्यानिःस्वनेनताम् ॥३८॥ दिशो भुजसहस्रेण समन्ताद् व्याप्य संस्थिताम्। ततः प्रववृते युद्धं तया देव्या सुरद्विषाम् ॥ ३९ ॥ शस्त्रास्त्रैर्बहुधा मुक्तैरादीपितदि-

al Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathma

. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding:

गन्तरम् । महिषासुरसेनानीश्चिक्षुराख्यो महासुरः ॥४०॥ युयुधे चामरश्चान्यैश्चतुरङ्गबलान्वितः । रथानामयुतैः षड्भिरुदग्राख्यो महासुरः ॥४१॥ अयुध्यतायुतानां च सहस्रेण महाहनुः । पञ्चा-शद्भिश्च नियुतैरसिलोमा महासुरः ॥ ४२ ॥ अयुतानां शतैः षड्भिर्बाष्कलो युयुधे रणे । गजवाजिसहस्रौघैरनेकैः परिवारितः४३ वृतो रथानां कोट्या च युद्धे तस्मिन्नयुध्यत । बिडालाख्योऽयुतानाँ च पञ्चाशद्भिरथायुतैः ॥४४॥ युयुधे संयुगे तत्र रथानां परिवा-रितः । अन्ये च तत्रायुतशो रथनागहयैर्वृताः ॥४५॥ युयुधुः संयुगे देव्या सह तत्र महासुराः । कोटिकोटिसहस्रैस्तु रथानां दन्तिनां तथा ॥४६॥ हयानाञ्च वृतो युद्धे तत्राभून्महिषासुरः । तोमरैर्भि-न्दिपालैश्च शक्तिभिर्मुसलैस्तथा ॥ ४७ ॥ युयुधुः संयुगे देव्या खड्गैः परशुपट्टिशैः । केचिच्च चिक्षिपुः शक्तीः केचित्पाशाँस्तथा परे ॥ ४८ ॥ देवीं खड्गप्रहारैस्तु ते तां हन्तुं प्रचक्रमुः । सापि देवी ततस्तानि शस्त्राण्यस्त्राणि चण्डिका ॥४९॥ लीलयैव प्रचि-च्छेद निजशस्त्रास्त्रवर्षिणी । अनायस्तानना देवी स्तूयमाना सुर-र्षिभिः ॥५०॥ मुमोचासुरदेहेषु शस्त्राण्यस्त्राणि चेश्वरी । सोऽपि क्रुद्धो धुतसटो देव्या वाहनकेशरी ॥ ५१ ॥ चचारासुरसैन्येषु वनेष्विव हुताशनः । निःश्वासान् मुमुचे याँश्च युध्यमाना रणेऽ-म्बिका ॥५२॥ त एव सद्यः सम्भूता गणाः शतसहस्रशः । युयु-धुस्ते परशुभिर्भिन्दिपालासिपट्टिशैः ॥५३॥ नाशयन्तोऽसुरगणान् देवीशक्त्युपबृंहिताः । अवादयन्त पटहान् गणाः शङ्खास्तथापरे ॥५४॥ मृदङ्गाश्च तथैवान्ये तस्मिन् युद्धमहोत्सवे । ततो देवी त्रिशूलेन गदया शक्तिवृष्टिभिः ॥ ५५ ॥ खड्गादिभिश्च शतशो

epal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmanc

Public Domain. Digitization by eGangotri.Fundin

निजघान महासुरान् । पातयामास चैवान्यान् घण्टास्वनविमोहितान् ॥ ५६ ॥ असुरान् भुवि पाशेन बद्ध्वा चान्यानकर्षयत् । केचिद् द्विधा कृतास्तीक्ष्णैः खड्गपातैस्तथापरे ॥ ५७ ॥ विपोथिता निपातेन गदया भुवि शेरते । वेमुश्च केचिद्रुधिरं मुसलेन भृशं हताः ॥ ५८ ॥ केचिन्निपतिता भूमौ भिन्नाः शूलेन वक्षसि । निरन्तराः शरौघेण कृताः केचिद्रणाजिरे ॥५९॥ श्येनानुकारिणः प्राणान् मुमुचुस्त्रिदशार्दनाः । केषाँचिद् बाहवश्छिन्नाश्छिन्नग्रीवास्तथापरे ॥ ६० ॥ शिराँसि पेतुरन्येषामन्ये मध्ये विदारिताः । विच्छिन्नजंघास्त्वपरे पेतुरुर्व्यां महासुराः ॥ ६१ ॥ एकबाह्वक्षिचरणाः केचिद्देव्या द्विधा कृताः । छिन्नेऽपि चान्ये शिरसि पतिताः पुनरुत्थिताः ॥ ६२ ॥ कबन्धा युयुधुर्देव्या गृहीतपरमायुधाः । ननृतुश्चापरे तत्र युद्धे तूर्यलयाश्रिताः ॥ ६३ ॥ कबन्धाश्छिन्नशिरसः खड्गशक्त्यृष्टिपाणयः । तिष्ठ तिष्ठेति भाषन्तो देवीमन्ये महासुराः ॥६४॥ पातितै रथनागाश्वैरसुरैश्च वसुन्धरा । अगम्या साभवत्तत्र यत्राभूत्स महारणः ॥६५॥ शोणितौघा महानद्यः सद्यस्तत्र प्रसुस्रुवुः । मध्ये चासुरसैन्यस्य वारणासुरवाजिनाम् ॥६६॥ क्षणेन तन्महासैन्यमसुराणां तथाम्बिका । निन्ये क्षयं यथा वह्निस्तृणदारुमहाचयम् ॥६७॥ स च सिंहो महानादमुत्सृजन्धुतकेसरः । शरीरेभ्योऽमरारीणामसूनिव विचिन्वति ॥६८॥ देव्या गणैश्च तैस्तत्र कृतं युद्धं महासुरैः । यथैषां तुतुषुर्देवाः पुष्पवृष्टिमुचो दिवि ॥ ॐ ॥ ६९ ॥

इति श्रीमार्कण्डेयपुराणे सावर्णिके मन्वन्तरे देवीमाहात्म्ये महिषासुरसैन्यवधो नाम द्वितीयोऽध्यायः ॥ २ ॥

al Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathma

. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding:

॥*॥ तृतीयोऽध्यायः ॥*॥

ध्यानम्

ॐ उद्यद्भानुसहस्रकान्तिमरुणक्षौमां शिरोमालिकां
रक्तालिप्तपयोधरां जपवटीं विद्यामभीतिं वराम्।
हस्ताब्जैर्दधतीं त्रिनेत्रविलसद्वक्त्रारविन्दश्रियं
देवीं बद्धहिमांशुरत्नमुकुटां वन्देऽरविन्दस्थिताम् ॥

'ॐ' ऋषिरुवाच ॥१॥

निहन्यमानं तत्सैन्यमवलोक्य महासुरः। सेनानीश्चिक्षुरः कोपा-
द्ययौ योद्धुमथाम्बिकाम् ॥२॥ स देवीं शरवर्षेण ववर्ष समरेऽसुरः।
यथा मेरुगिरेः शृङ्गं तोयवर्षेण तोयदः ॥ ३ ॥ तस्यच्छित्वा ततो
देवी लीलयैव शरोत्करान्। जघान तुरगान् बाणैर्यन्तारं चैव
वाजिनाम् ॥४॥ चिच्छेद च धनुः सद्यो ध्वजं चातिसमुच्छ्रितम्।
विव्याध चैव गात्रेषु छिन्नधन्वानमाशुगैः ॥ ५ ॥ सच्छिन्नधन्वा
विरथो हताश्वो हतसारथिः। अभ्यधावत तां देवीं खड्गचर्म-
धरोऽसुरः ॥ ६ ॥ सिंहमाहत्य खड्गेन तीक्ष्णधारेण मूर्धनि।
आजघान भुजे सव्ये देवीमप्यतिवेगवान् ॥७॥ तस्याः खड्गो भुजं
प्राप्य पफाल नृपनन्दन। ततो जग्राह शूलं स कोपादरुणलोचनः
॥८॥ चिक्षेप च ततस्तत्तु भद्रकाल्यां महासुरः। जाज्वल्यमानं
तेजोभी रविबिम्बमिवाम्बरात् ॥ ९ ॥ दृष्ट्वा तदापतच्छूलं देवी

epal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmand

Public Domain. Digitization by eGangotri.Fundin

शूलममुञ्चत। तच्छूलं शतधा तेन नीतं स च महासुरः ॥ १० ॥ हते तस्मिन्महावीर्ये महिषस्य चमूपतौ। आजगाम गजारूढश्चामरस्त्रिदशार्दनः ॥ ११ ॥ सोऽपि शक्तिं मुमोचाथ देव्यास्ताम्म्बिका द्रुतम्। हुंकाराभिहतां भूमौ पातयामास निष्प्रभाम् १२ भग्नां शक्तिं निपतितां दृष्ट्वा क्रोधसमन्वितः। चिक्षेप चामरः शूलं बाणैस्तदपि साच्छिनत् ॥ १३ ॥ ततः सिंहः समुत्पत्य गजकुम्भान्तरे स्थितः। बाहुयुद्धेन युयुधे तेनोच्चैस्त्रिदशारिणा ।१४। युद्ध्यमानौ ततस्तौ तु तस्मान्नागान्महीं गतौ। युयुधातेऽतिसंरब्धौ प्रहारैरतिदारुणैः ॥१५॥ ततो वेगात् खमुत्पत्य निपत्य च मृगारिणा। करप्रहारेण शिरश्चामरस्य पृथक्कृतम् ॥१६॥ उदग्रश्च रणे देव्या शिलावृक्षादिभिर्हतः। दन्तमुष्टितलैश्चैव करालश्च निपातितः ॥१७॥ देवी क्रुद्धा गदापातैश्चूर्णयामास चोद्धतम्। बाष्कलं भिन्दिपालेन बाणैस्ताम्रं तथान्धकम् ॥१८॥ उग्रास्यमुग्रवीर्यं च तथैव च महाहनुम्। त्रिनेत्रा च त्रिशूलेन जघान परमेश्वरी ॥१९॥ विडालस्यासिना कायात्पातयामास वै शिरः। दुर्धरं दुर्मुखं चोभौ शरैर्निन्येयमक्षयम् ॥२०॥ एवं संक्षीयमाणे तु स्वसैन्ये महिषासुरः। माहिषेण स्वरूपेण त्रासयामास तान् गणान् ॥ २१ ॥ काँश्चित्तुण्डप्रहारेण खुरक्षेपैस्तथापरान्। लाङ्गलताडिताँश्चान्याञ्छृङ्गाभ्यां च विदारितान् ॥ २२ ॥ वेगेन काँश्चिदपरान्नादेन भ्रमणेन च। निःश्वासपवनेनान्यान् पातयामास भूतले ॥२३॥ निपात्य प्रमथानीकमभ्यधावत सोऽसुरः। सिंहं हन्तुं महादेव्याः कोपं चक्रे ततोऽम्बिका ॥ २४ ॥ सोऽपि

al Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathma

. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding:

कोपान्महावीर्यः खुरक्षुण्णमहीतलः। शृङ्गाभ्यां पर्वतानुच्चाँश्चिक्षेप च ननाद च ॥ २५ ॥ वेगभ्रमणविक्षुण्णा मही तस्य व्यशीर्यत। लाङ्गूलेनाहतश्चाब्धिः प्लावयामास सर्वतः ॥२६॥ धुतशृङ्गविभिन्नाश्च खण्डं खण्डं ययुर्घनाः। श्वासानिलास्ताः शतशो निपेतुर्नभसोऽचलाः ॥ २७ ॥ इति क्रोसमाध्मातमापतन्तं महासुरम्। दृष्ट्वा सा चण्डिका कोपं तद्वधाय तदाकरोत् ॥२८॥ सा क्षिप्त्वा तस्य वै पाशं तं बबन्ध महासुरम्। तत्याज माहिषं रूपं सोऽपि बद्धो महामृध ॥ २९ ॥ ततः सिंहोऽभवत्सद्यो यावत्तस्याम्बिका शिरः। छिनत्ति तावत्पुरुषः खड्गपाणिरदृश्यत ॥ ३० ॥ तत एवाशु पुरुषं देवी चिच्छेद सायकैः। तं खड्गचर्मणा सार्द्धं ततः सोऽभून्महागजः ॥३१॥ करेण च महासिंहं तं चकर्ष जगर्ज च। कर्षतस्तु करं देवी खड्गेन निरकृन्तत ॥३२॥ ततो महासुरो भूयो माहिषं वपुरास्थितः। तथैव क्षोभयामास त्रैलोक्यं सचराचरम् ॥३३॥ ततः क्रुद्धा जगन्माता चण्डिका पानमुत्तमम्। पपौ पुनः पुनश्चैव जहासारुणलोचना ॥३४॥ ननर्द चासुरः सोऽपि बलवीर्यमदोद्धतः। विषाणाभ्यां च चिक्षेप चण्डिकां प्रति भूधरान् ॥३५॥ सा च तान् प्रहितास्तेन चूर्णयन्ती शरोत्करैः। उवाच तं मदोद्धूतमुखरागाकुलाक्षरम् ॥ ३६ ॥

देव्युवाच ॥ ३७ ॥

गर्ज गर्ज क्षणं मूढ मधु यावत्पिबाम्यहम्।
मया त्वयि हतेऽत्रैव गर्जिष्यन्त्याशु देवताः ॥३८॥

epal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmand

Public Domain. Digitization by eGangotri.Fundin

ऋषिरुवाच ॥ ३९ ॥

एवमुक्त्वा समुत्पत्य साऽऽरूढा तं महासुरम् । पादेनाक्रम्य कण्ठे च शूलेनैनमताडयत् ॥ ४० ॥ ततः सोऽपि पदाऽऽक्रान्तस्तया निजमुखात्ततः । अर्धनिष्क्रान्त एवासीत् देव्या वीर्येण संवृतः ४१ अर्धनिष्क्रान्त एवासौ युध्यमानो महासुरः । तया महासिना देव्या शिरश्छित्त्वा निपातितः ॥ ४२ ॥ ततो हाहाकृतं सर्वं दैत्य सैन्यं ननाश तत् । प्रहर्षं च परं जग्मुः सकला देवतागणाः ॥४३॥ तुष्टुवुस्तां सुरा देवीं सह दिव्यैर्महर्षिभिः । जगुर्गन्धर्वपतयो ननृतुश्चाप्सरोगणाः ॥ ४४ ॥

इति श्रीमार्कण्डेयपुराणे सावर्णिके मन्वन्तरे देवीमाहात्म्ये महिषासुरवधो नाम तृतीयोऽध्यायः ॥ ३ ॥

॥*॥ चतुर्थोऽध्यायः ॥*॥

ध्यानम्

ॐ कालाभ्राभां कटाक्षैररिकुलभयदां मौलिबद्धेन्दुरेखां
शंखं चक्रं कृपाणं त्रिशिखमपि करैरुद्वहन्तीं त्रिनेत्राम् ।
सिंहस्कन्धाधिरूढां त्रिभुवनमखिलं तेजसा पूरयन्तीं
ध्यायेद् दुर्गां जयाख्यां त्रिदशपरिवृतां सेवितां सिद्धिकामैः ॥

'ॐ' ऋषिरुवाच ॥ १ ॥

शक्रादयः सुरगणा निहतेऽतिवीर्ये तस्मिन्दुरात्मनि सुरारिबले च देव्या । तां तुष्टुवुः प्रणतिनम्रशिरोधरांसा वाग्भिः प्रहर्षपुलकोद्गमचारुदेहाः ॥ २ ॥ देव्या यया ततमिदं जगदात्मशक्त्या

al Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathma

. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding:

निश्शेषदेवगणशक्तिसमूहमूर्त्या । तामम्बिकामखिलदेवमहर्षि पूज्यां भक्त्या नताःस्म विदधातु शुभानि सा नः ॥३॥ यस्याः प्रभावमतुलं भगवाननन्तो ब्रह्मा हरश्च नहि वक्तुमलं बलं च सा चण्डिकाखिलजगत्परिपालनोय नाशाय चाशुभभस्य मतिं करोतु ॥४॥ या श्रीः स्वयं सुकृतिनां भवनेष्वलक्ष्मीः पापात्मनां कृतधियां हृदयेषु बुद्धिः । श्रद्धा सतां कुलजनप्रभवस्य लज्जा तां त्वां नताःस्म परिपालय देवि विश्वम् ॥५॥ किं वर्णयाम तव रूप मचिन्त्यमेतत् किं चातिवीर्यमसुरक्षयकारि भूरि । किं चाहवेषु चरितानि तवाद्भुतानि सर्वेषु देव्यसुरदेवगणादिकेषु ॥६॥ हेतुः समस्त जगतां त्रिगुणापि दोषैर्न ज्ञायसे हरिहरादिभिरप्यपारा । सर्वाश्रयाखिलमिदं जगदंशभूतमव्याकृता हि परमा प्रकृतिस्त्व माद्या ॥७॥ यस्याः समस्तसुरता समुदीरणेन तृप्तिं प्रयाति सक- लेषु मखेषु देवि । स्वाहासि वै पितृगणस्य च तृप्तिहेतु रुच्चार्यसे त्वमत एव जनैः स्वधा च ॥८॥ या मुक्तिहेतुरविचिन्त्यमहाव्रता त्वमभ्यस्यसे सुनियतेन्द्रियतत्त्वसारैः । मोक्षार्थिभिर्मुनिभिरस्त समस्त दोषैर्विद्यासि सा भगवती परमा हि देवि ॥९॥ शब्दात्मिका सुविमलर्ग्यजुषां निधान मुद्गीथरम्य पदपाठवतां च साम्नाम् । देवो त्रयी भगवती भवभावनाय वार्त्ता च सर्वजगतां परमार्त्ति- हन्त्री ॥१०॥ मेधासि देवि विदिताखिलशास्त्रसारा दुर्गासि दुर्ग भवसागरनौरसङ्गा । श्रीः कैटभारिहृदयैककृताधिवासा गौरी त्वमेव शशिमौलिकृतप्रतिष्ठा ॥११॥ ईषत्सहासममलं परिपूर्णचन्द्र

epal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmand

Public Domain. Digitization by eGangotri.Fundin

विम्बानुकारि कनकोत्तमकान्तिकान्तम् । अत्यद्भुतं प्रहृतमात्तरुषा तथापि वक्त्रं विलोक्य सहसा महिषासुरेण ॥ १२ ॥ दृष्ट्वा तु देवि कुपितं भ्रुकुटीकराल मुद्यच्छशाङ्कसदृशच्छवि यन्न सद्यः। प्राणान्मुमोच महिषस्तदतीव चित्रं कैर्जीव्यते हि कुपितान्तक दर्शनेन ॥ १३ ॥ देवि प्रसीद परमा भवती भवाय सद्यो विनाशयसि कोपवती कुलानि । विज्ञातमेतदधुनैव यदस्तमेतन्नीतं बलं सुविपुलं महिषासुरस्य ॥१४॥ ते सम्मता जनपदेषु धनानि तेषां तेषां यशांसि न च सीदति धर्मवर्गः। धन्यास्त एव निभृतात्मज भृत्यदारा येषां सदाभ्युदयदा भवती प्रसन्ना ॥ १५ ॥ धर्म्याणि देवि सकलानि सदैव कर्माण्यत्यादृतः प्रतिदिनं सुकृती करोति। स्वर्गं प्रयाति च ततो भवतीप्रसादाल्लोकत्रयेऽपि फलदा ननु देवि तेन ॥१६॥ दुर्गे स्मृता हरसि भीतिमशेषजन्तोः स्वस्थैः स्मृता मतिमतीव शुभां ददासि । दारिद्र्यदुःखभयहारिणि का त्वदन्या सर्वोपकारकरणाय सदाऽऽर्द्रचित्ता ॥१७॥ एभिर्हतैर्जगदुपैति सुखं तथैते कुर्वन्तु नाम नरकाय चिराय पापम् । संग्राममृत्युमधिगम्य दिवं प्रयान्तु मत्वेति नूनमहितान् विनिहंसि देवि ॥१८॥ दृष्ट्वैव किं न भवती प्रकरोति भस्म सर्वासुरानरिषु यत्प्रहिणोषि शस्त्रम्। लोकान् प्रयान्तु रिपवोऽपि हि शस्त्रपूता इत्थं मतिर्भवति तेष्वपि तेऽतिसाध्वी ॥ १९ ॥ खड्गप्रभानिकरविस्फुरणैस्तथोग्रैः शूलाग्रकान्तिनिवहेन दृशोऽसुराणाम् । यन्नागता विलयमंशुमदिन्दु खण्ड योग्याननं तव विलोकयतां तदेतत् ॥२०॥ दुर्वृत्तवृत्तशमनं तव देवि शीलं रूपं तथैतदविचिन्त्यमतुल्यमन्यैः । वीर्यं च हन्तृ

al Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathma

. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding:

हतदेवपराक्रमाणां वैरिष्वपि प्रकटितैव दया त्वयेत्थम् ॥ २१ ॥ केनोपमा भवतुतेऽस्य पराक्रमस्य रूपञ्च शत्रुभयकार्यंतिहारि कुत्र। चित्ते कृपा समरनिष्ठुरता च दृष्टा त्वय्येव. देवि वरदे भुवन-त्रयेऽपि ॥ २२ ॥ त्रैलोक्यमेतदखिलं रिपुनाशनेन त्रातं त्वया समरमूर्द्धनि तेऽपि हत्वा। नीता दिवं रिपुगणा भयमप्यपास्त-मस्माकमुन्मदसुरारिभवं नमस्ते ॥ २३ ॥ शूलेन पाहि नो देवि पाहि खड्गेन चाम्बिके। घण्टास्वनेन नः पाहि चापज्यानिःस्वनेन च ॥२४॥ प्राच्यां रक्ष प्रतीच्यां च चण्डिके रक्ष दक्षिणे। भ्रामणेनात्मशूलस्य उत्तरस्यां तथेश्वरि ॥२५॥ सौम्यानि यानि रूपाणि त्रैलोक्ये विचरन्ति ते। यानि चात्यर्थघोराणि तै रक्षा-स्मांस्तथा भुवम् ॥ २६ ॥ खड्गशूलगदादीनि यानि चास्त्राणि तेऽम्बिके। करपल्लवसङ्गीनि तैरस्मान् रक्ष सर्वतः ॥२७॥

ऋषिरुवाच ॥२८॥

एवं स्तुता सुरैर्दिव्यैः कुसुमैर्नन्दनोद्भवैः। अर्चिता जगतां धात्री तथा गन्धानुलेपनैः ॥२६॥ भक्त्या समस्तैस्त्रिदशैर्दिव्यैर्धूपैस्तु धूपिता। प्राह प्रसादसुमुखी समस्तान् प्रणतान् सुरान् ॥ ३० ॥

देव्युवाच ॥ ३१ ॥

व्रियतां त्रिदशाः सर्वे यदस्मत्तोऽभिवाञ्छितम् ॥ ३२ ॥

देवा ऊचुः ॥ ३३ ॥

भगवत्या कृतं सर्वं न किंचिदवशिष्यते ॥ ३४ ॥ यदयं निहतः शत्रुरस्माकं महिषासुरः। यदि चापि वरो देयस्त्वयास्माकं महेश्वरि ॥३५॥ संस्मृता संस्मृता त्वं नो हिंसेथाः परमापदः। यश्च मर्त्यः स्तवैरेभिस्त्वां स्तोष्यत्यमलानने ॥३६॥ तस्य वित्तर्द्धि

epal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmand

Public Domain. Digitization by eGangotri.Fundin

विभवैर्धनदारादिसम्पदाम् । वृद्धयेऽस्मत्प्रसन्ना त्वं भवेथाः सर्वदाम्बिके ॥ ३७ ॥

ऋषिरुवाच ॥ ३८ ॥

इति प्रसादिता देवैर्जगतोऽर्थे तथाऽऽत्मनः। तथेत्युक्त्वा भद्रकाली बभूवान्तर्हिता नृप ॥ ३९ ॥ इत्येतत्कथितं भूप सम्भूता सा यथा पुरा। देवी देवशरीरेभ्यो जगत्त्रयहितैषिणी ॥४०॥ पुनश्च गौरी-देहात्सा समुद्भूता यथाभवत्। वधाय दुष्टदैत्यानां तथा शुम्भ निशुम्भयोः ॥४१॥ रक्षणाय च लोकानां देवानामुपकारिणी। तच्छृणुष्व मयाऽऽख्यातं यथावत्कथयामि ते ॥ ह्रीं ॐ ॥४२॥

इति श्रीमार्कण्डेयपुराणे सावर्णिके मन्वन्तरे देवीमाहात्म्ये शक्रादिस्तुतिर्नाम चतुर्थोऽध्यायः ॥ ४ ॥

॥*॥ पञ्चमोऽध्यायः ॥*॥

विनियोगः

ॐ अस्य श्रीउत्तरचरित्रस्य रुद्रऋषिः, महासरस्वती देवता, अनुष्टुप्छन्दः, भीमा शक्तिः, भ्रामरी बीजं सूर्यस्तत्वं सामवेदः स्वरूपं महासरस्वती प्रीत्यर्थे उत्तरचरित्र पाठे विनियोगः।

ध्यानम्

घण्टाशूलहलानि शंखमुसले चक्रं धनुः सायकं
हस्ताब्जैर्दधतीं घनान्तविलसच्छीतांशुतुल्यप्रभाम्।
गौरीदेहसमुद्भवां त्रिनयनामाधारभूतां महा-
पूर्वामत्र सरस्वतीमनुभजे शुम्भादिदैत्यार्दिनीम् ॥

al Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathma

. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding:

ॐ क्लीं ऋषिरुवाच ॥ १ ॥

पुरा शुम्भनिशुम्भाभ्यामसुराभ्यां शचीपतेः । त्रैलोक्यं यज्ञभागाश्च हृता मदबलाश्रयात् ॥२॥ तावेव सूर्यतां तद्वदधिकारं तथैन्दवम् । कौबेरमथ याम्यं च चक्राते वरुणस्य च ॥३॥ तावेव पवनर्द्धिं च चक्रतुर्वह्निकर्म च । ततो देवा विनिर्धूता भ्रष्टराज्याः पराजिताः ॥ ४ ॥ हृताधिकारास्त्रिदशास्ताभ्यां सर्वे निराकृताः । महासुराभ्यां तां देवीं संस्मरन्त्यपराजिताम् ॥५॥ तयास्माकं वरो दत्तो यथाऽऽपत्सु स्मृताखिलाः । भवतां नाशयिष्यामि तत्क्षणात्परापदः ॥६॥ इति कृत्वा मतिं देवा हिमवन्तं नगेश्वरम् । जग्मुस्तत्र ततो देवीं विष्णुमायां प्रतुष्टुवुः ॥७॥

देवा ऊचुः ॥ ८ ॥

नमो देव्यै महादेव्यै शिवायै सततं नमः । नमः प्रकृत्यै भद्राय नियताः प्रणताः स्म ताम् ॥९॥ रौद्रायै नमो नित्यायै गौर्यै धात्र्यै नमो नमः । ज्योत्स्नायै चेन्दुरूपिण्यै सुखायै सततं नमः ॥१०॥ कल्याण्यै प्रणतां वृद्ध्यै सिद्ध्यै कुर्मो नमो नमः । नैर्ऋत्यै भूभृतां लक्ष्म्यै शर्वाण्यै ते नमो नमः ॥११॥ दुर्गायै दुर्गपारायै सारायै सर्वकारिण्यै । ख्यात्यै तथैव कृष्णायै धूम्रायै सततं नमः ॥१२॥ अतिसौम्यातिरौद्रायै नतास्तस्यै नमो नमः । नमो जगत्प्रतिष्ठायै देव्यै कृत्यै नमो नमः ॥१३॥ या देवी सर्वभूतेषु विष्णुमायेति शब्दिता । नमस्तस्यै ॥ १४ ॥ नमस्तस्यै ॥ १५ ॥ नमस्तस्यै नमो नमः ॥ १६ ॥ या देवी सर्वभूतेषु चेतनेत्यभिधीयते । नमस्तस्यै ॥१७॥ नमस्तस्यै ॥१८॥ नमस्तस्यै नमो नमः

epal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmand

Public Domain. Digitization by eGangotri.Fundin

॥१९॥ या देवी सर्वभूतेषु बुद्धिरूपेण संस्थिता । नमस्तस्यै ॥२०॥
नमस्तस्यै ॥२१॥ नमस्तस्यै नमो नमः ॥२२॥ या देवी सर्व
भूतेषु निद्रारूपेण संस्थिता । नमस्तस्यै ॥२३॥ नमस्तस्यै ॥२४॥
नमस्तस्यै नमो नमः ॥ २५ ॥ या देवी सर्वभूतेषु क्षुधारूपेण
संस्थिता । नमस्तस्यै ॥२६॥ नमस्तस्यै ॥२७॥ नमस्तस्यै नमो
नमः ॥ २८ ॥ या देवी सर्वभूतेषु च्छायारूपेण संस्थिता ।
नमस्तस्यै ॥२९॥ नमस्तस्यै ॥३०॥ नमस्तस्यै नमो नमः ।३१।
या देवी सर्वभूतेषु शक्तिरूपेण संस्थिता । नमस्तस्यै ॥३२॥
नमस्तस्यै ॥३३॥ नमस्तस्यै नमो नमः ॥३४॥ या देवी सर्व
भूतेषु तृष्णारूपेण संस्थिता । नमस्तस्यै ॥३५॥ नमस्तस्यै ॥३६॥
नमस्तस्यै नमो नमः ॥३७॥ या देवी सर्वभूतेषु क्षान्तिरूपेण
संस्थिता । नमस्तस्यै ॥३८॥ नमस्तस्यै ॥३९॥ नमस्तस्यै नमो
नमः ॥४०॥ या देवी सर्वभूतेषु जातिरूपेण संस्थिता । नमस्तस्यै
॥४१॥ नमस्तस्यै ॥४२॥ नमस्तस्यै नमो नमः ॥४३॥ या देवी
सर्वभूतेषु लज्जारूपेण संस्थिता । नमस्तस्यै ॥ ४४ ॥ नमस्तस्यै
॥४५॥ नमस्तस्यै नमो नमः ॥४६॥ या देवी सर्वभूतेषु शान्ति
रूपेण संस्थिता । नमस्तस्यै ॥४७॥ नमस्तस्यै ॥४८॥ नमस्तस्यै
नमो नमः ॥ ४९ ॥ या देवी सर्वभूतेषु श्रद्धारूपेण संस्थिता ।
नमस्तस्यै ॥५०॥ नमस्तस्यै ॥५१॥ नमस्तस्यै नमो नमः ॥५२॥
या देवी सर्वभूतेषु कान्तिरूपेण संस्थिता । नमस्तस्यै ॥५३॥
नमस्तस्यै ॥५४॥ नमस्तस्यै नमो नमः ॥५५॥ या देवी सर्व
भूतेषु लक्ष्मीरूपेण संस्थिता । नमस्तस्यै ॥५६॥ नमस्तस्यै ॥५७॥

al Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathma

. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding:

नमस्तस्यै नमो नमः ॥५८॥ या देवी सर्वभूतेषु वृत्तिरूपेण संस्थिता । नमस्तस्यै ॥५९॥ नमस्तस्यै ॥६०॥ नमस्तस्यै नमो नमः ॥६१॥ या देवी सर्वभूतेषु स्मृतिरूपेण संस्थिता । नमस्तस्यै ॥६२॥ नमस्तस्यै ॥६३॥ नमस्तस्यै नमो नमः ॥६४॥ या देवी सर्वभूतेषु दयारूपेण संस्थिता । नमस्तस्यै ॥६५॥ नमस्तस्यै ।६६। नमस्तस्यै नमो नमः ॥६७॥ या देवी सर्वभूतेषु तुष्टिरूपेण संस्थिता । नमस्तस्यै ॥६८॥ नमस्तस्यै ॥६९॥ नमस्तस्यै नमो नमः ॥७०॥ या देवी सर्वभूतेषु मातृरूपेण संस्थिता । नमस्तस्यै ॥७१॥ नमस्तस्यै ॥७२॥ नमस्तस्यै नमो नमः ॥७३॥ या देवी सर्वभूतेषु भ्रान्तिरूपेण संस्थिता । नमस्तस्यै ॥७४॥ नमस्तस्यै ॥७५॥ नमस्तस्यै नमो नमः ॥७६॥ इन्द्रियाणामधिष्ठात्री भूतानां चाखिलेषु या । भूतेषु सततं तस्यै व्याप्तिदेव्यै नमो नमः ॥७७॥ चितिरूपेण या कृत्स्नमेतद् व्याप्य स्थिता जगत् । नमस्तस्यै ॥७८॥ नमस्तस्यै ॥ ७९ ॥ नमस्तस्यै नमो नमः ॥ ८० ॥ स्तुता सुरैः पूर्वमभीष्टसंश्रया त्तथा सुरेन्द्रेण दिनेषु सेविता । करोतु सा नः शुभहेतुरीश्वरी शुभानि भद्राण्यभिहन्तु चापदः ।८१। या साम्प्रतं चोद्धतदैत्यतापितै रस्माभिरीशा च सुरैर्नमस्यते । याचस्मृता तत्क्षणमेव हन्तिनः सर्वापदो भक्तिविनम्रमूर्तिभिः ।८२।

ऋषिरुवाच ॥८३॥

एवं स्तवादियुक्तानां देवानां तत्र पार्वती । स्नातुमभ्याययो तोये जाह्नव्या नृपनन्दन ॥ ८४ ॥ साब्रवीत्तान् सुरान् सुभ्रूर्भवद्भिः

epal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmand

Public Domain. Digitization by eGangotri.Fundin

स्तूयतेऽत्रका । शरीरकोशतश्चास्याः समुद्भूता ब्रवीच्छिवा ॥८५॥
स्तोत्रं ममैतत् क्रियते शुम्भदैत्यनिराकृतैः । देवैः समेतैः समरे
निशुम्भेन पराजितैः ॥ ८६ ॥ शरीरकोशाद्यत्तस्याः पार्वत्या
निःसृताम्बिका । कौशिकीति समस्तेषु ततो लोकेषु गीयते ॥८७॥
तस्यां विनिर्गतायां तु कृष्णाभूत्सापिपार्वती । कालिकेति समाख्याता
हिमाचलकृताश्रया ॥८८॥ ततोऽम्बिकां परं रूपं बिभ्राणां सुमनो-
हरम् । ददर्श चण्डो मुण्डश्च भृत्यौ शुम्भनिशुम्भयोः ॥८९॥
ताभ्यां शुम्भाय चाख्याता अतीव सुमनोहरा । काप्यास्ते स्त्री
महाराज भासयन्ती हिमाचलम् ॥ नैव तादृक् क्वचिद्रूपं दृष्टं
केनचिदुत्तमम् । ज्ञायतां काप्यसौ देवी गृह्यतां चासुरेश्वर ॥९१॥
स्त्रीरत्नमतिचार्वङ्गी द्योतयन्ती दिशस्त्विषा । सा तु तिष्ठति
दैत्येन्द्र तां भवान् द्रष्टुमर्हति ॥९२॥ यानि रत्नानि मणयो गजा
श्वादीनि वै प्रभो । त्रैलोक्ये तु समस्तानि साम्प्रतं भान्ति ते
गृहे ॥९३॥ ऐरावतः समानीतो गजरत्नं पुरन्दरात् । पारिजात-
तरुश्चायं तथैवोच्चैःश्रवा हयः ॥९४॥ विमानं हंससंयुक्तमेतत्तिष्ठति
तेऽङ्गणे । रत्नभूतमिहानीतं यदासीद्वेधसोऽद्भुतम् ॥९५॥ निधि-
रेष महापद्मः समानीतो धनेश्वरात् । किञ्जल्किनीं ददौ चाब्धि
र्मालामम्लानपङ्कजाम् ॥ ९६ ॥ छत्रं ते वारुणं गेहे काञ्चनस्रावि
तिष्ठति । तथायं स्यन्दनवरो यः पुराऽऽसीत्प्रजापतेः ॥९७॥
मृत्योरुत्क्रान्तिदा नाम शक्तिरीश त्वया हृता । पाशः सलिल-
राजस्य भ्रातुस्तव परिग्रहे ॥९८॥ निशुम्भस्याब्धिजाताश्च समस्ता
रत्नजातयः । वह्निरपि ददौ तुभ्यमग्निशौचे च वाससी ॥९९॥

al Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathma

. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding:

एवं दैत्येन्द्र रत्नानि समस्तान्याहृतानि ते। स्त्रीरत्नमेषा कल्याणी त्वया कस्मान्न गृह्यते ॥१००॥

ऋषिरुवाच ॥१०१॥

निशम्येति वचः शुम्भः स तदा चण्डमुण्डयोः। प्रेषयामास सुग्रीवं दूतं देव्या महासुरम् ॥१०२॥ इति चेति च वक्तव्या सा गत्वा वचनान्मम। यथा चाभ्येति सम्प्रीत्या तथा कार्यं त्वया लघु ॥१०३॥ स तत्र गत्वा यत्रास्ते शैलोद्देशेऽतिशोभने। सा देवी तां ततः प्राहश्लक्ष्णं मधुरया गिरा ॥१०४॥

दूत उवाच ॥१०५॥

देवि दैत्येश्वरः शुम्भस्त्रैलोक्ये परमेश्वरः। दूतोऽहं प्रेषितस्तेन त्वत्सकाशमिहागतः॥ १०६ ॥ अव्याहताज्ञः सर्वासु यः सदा देवयोनिषु। निर्जिताखिलदैत्यारिः स यदाह शृणुष्व तत् ।१०७। मम त्रैलोक्यमखिलं मम देवा वशानुगाः। यज्ञभागानहं सर्वानु पाश्नामि पृथक् पृथक् ॥१०८॥ त्रैलोक्ये वररत्नानि मम वश्यान्य शेषतः। तथैव गजरत्नञ्च हृत्वा देवेन्द्रवाहनम् ॥१०९॥ क्षीरोद मथनोद्भूतमश्वरत्नं ममामरैः। उच्चैः श्रवससंज्ञं तत्प्रणिपत्य समर्पितम्॥ ११० ॥ यानि चान्यानि देवेषु गन्धर्वेपूरगेषु च। रत्नभूतानि भूतानि तानि मय्येव शोभने ॥१११॥ स्त्रीरत्नभूतां त्वां देवि लोके मन्यामहे वयम्। सा त्वमस्मानुपागच्छ यतो रत्न भुजो वयम् ॥११२॥ मां वा ममानुजं वापि निशुम्भमुरुविक्रमम्। भज त्वं चञ्चलापाङ्गि रत्नभूतासि वै यतः॥ ११३ ॥ परमैश्वर्य

epal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmand

Public Domain. Digitization by eGangotri.Fundin

मतुलं प्राप्स्यसे मत्परिग्रहात् । एतद् बुद्ध्या समालोच्य मत्परिग्रहतां व्रज ॥११४॥

ऋषिरुवाच ॥ ११५ ॥

इत्युक्ता सा तदा देवी गम्भीरान्तः स्मिता जगौ । दुर्गा भगवती भद्रा ययेदं धार्यते यगत् ॥११६॥

देव्युवाच ॥११७॥

सत्यमुक्तं त्वया नात्र मिथ्या किंचित्त्वयोदितम् । त्रैलोक्याधिपतिः शुम्भो निशुम्भश्चापि तादृशः ॥ ११८ ॥ किं त्वत्र यत्प्रतिज्ञातं मिथ्या तत्क्रियते कथम् । श्रूयतामल्पबुद्धित्वात्प्रतिज्ञा या कृता पुरा ॥११९॥ यो मां जयति संग्रामे यो मे दर्पं व्यपोहति । यो मे प्रतिबलो लोके स मे भर्ता भविष्यति ॥ १२० ॥ तदागच्छतु शुम्भोऽत्र निशुम्भो वा महासुरः । मां जित्वा किं चिरेणात्र पाणिं गृह्णातु मे लघु ॥१२१॥

दूत उवाच ॥१२२॥

अवलिप्तासि मैवं त्वं देवि ब्रूहि ममाग्रतः । त्रैलोक्ये कः पुमांस्तिष्ठेदग्रे शुम्भनिशुम्भयोः ॥१२३॥ अन्येषामपि दैत्यानां सर्वे देवा न वै युधि । तिष्ठन्ति सम्मुखे देवि किं पुनः स्त्री त्वमेकिका ॥१२४॥ इन्द्राद्याः सकला देवास्तस्थुर्येषां न संयुगे । शुम्भादीनां कथं तेषां स्त्री प्रयास्यसि सम्मुखम् ॥१२५॥ सा त्वं गच्छ मयैवोक्ता पार्श्वं शुम्भनिशुम्भयोः । केशाकर्षणनिर्धूतगौरवा मा गमिष्यसि ॥ १२६ ॥

al Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathma

. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding:

देव्युवाच ॥ १२७ ॥

एवमेतद् बली शुम्भो निशुम्भश्चातिवीर्यवान् । किं करोमि प्रतिज्ञा मे यदनालोचिता पुरा । ॥१२८॥ स त्वं गच्छ मयोक्तं ते यदेतत्सर्वमादृतः । तदाचक्ष्वासुरेन्द्राय स च युक्तं करोतु तत् ॥१२९॥

इति श्रीमार्कण्डेयपुराणे सावर्णिके मन्वन्तरे देवीमाहात्म्ये देव्या दूतसंवादो नाम पञ्चमोऽध्यायः ॥ ५ ॥

॥*॥ षष्ठोध्यायः ॥*॥

॥ ध्यानम् ॥

ॐ नागाधीश्वरविष्टरां फणिफणोत्तंसोरुरत्नावली
भास्वद्देहलतां दिवाकरनिभां नेत्रत्रयोद्भासिताम् ।
मालाकुम्भकपालनीरजकरां चन्द्रार्धचूडां परां
सर्वज्ञेश्वरभैरवाङ्कनिलयां पद्मावतीं चिन्तये ॥

'ॐ' ऋषिरुवाच ॥१॥

इत्याकर्ण्य वचो देव्याः स दूतोऽमर्षपूरितः । समाचष्ट समागम्य दैत्यराजाय विस्तरात् ॥२॥ तस्य दूतस्य तद्वाक्यमाकर्ण्यासुरराट् ततः । सक्रोधः प्राह दैत्यानामधिपं धूम्रलोचनम् ॥३॥ हे धूम्रलोचनाशु त्वं स्वसैन्यपरिवारितः । तामानय बलाद् दुष्टां केशाकर्षणविह्वलाम् ॥४॥ तत्परित्राणदः कश्चिद्यदि वोत्तिष्ठतेऽपरः । स हन्तव्योऽमरो वापि यक्षो गन्धर्व एव वा ॥५॥

epal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmand

n Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding

ऋषिरुवाच ॥६॥

तेनाज्ञप्तस्ततः शीघ्रं स दैत्यो धूम्रलोचनः । वृतः षष्ट्या सहस्रा-
णामसुराणां द्रुतं ययौ ॥७॥ स दृष्ट्वा तां ततो देवीं तुहिनाचल
संस्थिताम् । जगादोच्चैः प्रयाहीति मूलं शुम्भनिशुम्भयोः ॥८॥
न चेत्प्रीत्याद्य भवती मद्भर्तारमुपैष्यति । ततो बलान्नयाम्येष
केशाकर्षणविह्वलाम् ॥९॥

देव्युवाच ॥१०॥

दैत्येश्वरेण प्रहितो बलवान् बलसंवृतः । बलान्नयसि मामेवं ततः
किं ते करोम्यहम् ॥ ११ ॥

ऋषिरुवाच ॥ १२ ॥

इत्युक्तः सोऽभ्यधावत्तामसुरो धूम्रलोचनः । हुंकारेणैव तं भस्म
सा चकाराम्बिका ततः ॥ १३ ॥ अथ क्रुद्धं महासैन्यमसुराणां
तथाम्बिका । ववर्ष सायकैस्तीक्ष्णैस्तथा शक्तिपरश्वधैः ॥१४॥
ततो धुतसटः कोपात्कृत्वा नादं सुभैरवम् । पपातासुरसेनायां सिंहो
देव्याः स्ववाहनः ॥ १५ ॥ कांश्चित् करप्रहारेण दैत्यानास्येन
चापरान् । आक्रम्य चाधरेणान्यान् स जघान महासुरान् ॥१६॥
केषांचित्पाटयामास नखैः कोष्ठानि केसरी । तथा तलप्रहारेण
शिरांसि कृतवान् पृथक् ॥१७॥ विच्छिन्नबाहुशिरसः कृतास्तेन
तथापरे । पपौ च रुधिरं कोष्ठादन्येषाँ धुतकेसरः ॥१८॥ क्षणेन
तद्बलं सर्वं क्षयं नीतं महात्मना । तेन केसरिणा देव्या वाहने-
नातिकोपिना ॥१९॥ श्रुत्वा तमसुरं देव्या निहतं धूम्रलोचनम् ।
बलं च क्षयितं कृत्स्नं देवीकेसरिणा ततः ॥२०॥ चुकोप दैत्या-

pal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathma

. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding:

धिपतिः शुम्भः प्रस्फुरिताधरः । आज्ञापयामास च तौ चण्डमुण्डौ महासुरौ ॥२१॥ हे चण्ड हे मुण्ड बलैर्बहुभिः परिवारितौ । तत्र गच्छत गत्वा च सा समानीयतां लघु ॥ २२ ॥ केशेष्वाकृष्य बद्ध्वा वा यदि वः संशयो युधि । तदा शेषायुधैः सर्वैरसुरैर्विनिहन्यताम् ॥२३॥ तस्यां हतायां दुष्टायाँ सिंहे च विनिपातिते । शीघ्रमागम्यतां बद्ध्वा गृहीत्वा तामथाम्बिकाम् ।ॐ।२४।

इति श्रीमार्कण्डेय पुराणे सावर्णिके मन्वन्तरे देवीमाहात्म्ये शुम्भनिशुम्भ सेनानीधूम्रलोचनवधो नाम षष्ठोऽध्यायः ।६।

॥*॥ सप्तमोऽध्यायः ॥*॥

ध्यानम्

ॐ ध्यायेयं रत्नपीठे शुककलपठितं शृण्वतीं श्यामलाङ्गीं
न्यस्तैकाङ्घ्रिसरोजे शशिशकलधरां बल्लकीं वादयन्तीम् ।
कह्लाराबद्धमालाँ नियमितविलसच्चोलिकां रक्तवस्त्रां
मातङ्गीं शंखपात्रां मधुरमधुमदां चित्रकोद्भासिभालाम् ॥

'ॐ' ऋषिरुवाच ॥१॥

आज्ञप्तास्ते ततो दैत्याश्चण्डमुण्डपुरोगमाः । चतुरङ्गबलोपेता ययुरभ्युद्यतायुधाः ॥२॥ ददृशुस्ते ततो देवीमीषद्धासां व्यवस्थिताम् । सिंहस्योपरि शैलेन्द्रशृङ्गे महति काञ्चने ॥३॥ ते दृष्ट्वा तां समादातुमुद्यमं चक्रुरुद्यताः । आकृष्टचापासिधरास्तथान्ये तत्समीपगाः

epal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmand

n Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding

॥४॥ ततः कोपं चकारोच्चैरम्बिका तानरीन् प्रति। कोपेन
चास्या वदनं मषीवर्णमभूत्तदा ॥५॥ भ्रुकुटीकुटिलात्तस्या ललाट
फलकाद्द्रुतम्। काली करालवदना विनिष्क्रान्तासिपाशिनी ॥६॥
विचित्रखट्वाङ्गधरा नरमालाविभूषणा। द्वीपिचर्मपरीधाना शुष्क-
मांसातिभैरवा ॥७॥ अतिविस्तारवदना जिह्वाललनभीषणा।
निमग्नारक्तनयना नादापूरितदिङ्मुखा ॥८॥ सा वेगेनाभिपतिता
घातयन्ती महासुरान्। सैन्ये तत्र सुरारीणामभक्षयत तद्बलम् ॥९॥
पार्ष्णिग्राहाङ्कुशग्राहियोधघण्टासमन्वितान्। समादायैकहस्तेन मुखे
चिक्षेप वारणान् ॥१०॥ तथैव योधं तुरगै रथं सारथिना सह।
निक्षिप्य वक्त्रे दशनैश्चर्वयन्त्यतिभैरवम् ॥११॥ एकं जग्राह
केशेषु ग्रीवायामथ चापरम्। पादेनाक्रम्य चैवान्यमुरसान्यमपो-
थयत् ॥१२॥ तैर्मुक्तानि च शस्त्राणि महास्त्राणि तथासुरैः।
मुखेन जग्राह रुषा दशनैर्मथितान्यपि ॥१३॥ बलिनां तद्बलं
सर्वमसुराणां दुरात्मनाम्। ममर्दाभक्षयच्चान्यानन्यांश्चाताडयत्तथा
॥१४॥ असिना निहताः केचित्केचित्खट्वाङ्गताडिताः। जग्मुर्वि-
नाशमसुरा दन्ताग्राभिहतास्तथा ॥१५॥ क्षणेन तद्बलं सर्वमसुराणां
निपातितम्। दृष्ट्वा चण्डोऽभिदुद्राव तां कालीमतिभीषणाम् ॥१६॥
शरवर्षैर्महाभीमैर्भीमाक्षीं तां महासुरः। छादयामास चक्रैश्च
मुण्डः क्षिप्तैः सहस्रशः ॥१७॥ तानि चक्राण्यनेकानि विशमानानि
तन्मुखम्। बभुर्यथार्कबिम्बानि सुबहूनि घनोदरम् ॥१८॥ ततो
जहासातिरुषा भीमं भैरवनादिनी। काली करालवक्त्रान्तर्दुर्दर्श-
दशनोज्ज्वला ॥१९॥ उत्थाय च महासिंहं देवी चण्डमधावत।

pal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathma

. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding:

गृहीत्वा चास्य केशेषु शिरस्तेनासिनाच्छिनत् ॥२०॥ अथ मुण्डोऽभ्यधावत्तां दृष्ट्वा चण्डं निपातितम् । तमप्यपातयद्भूमौ सा खड्गाभिहतं रुषा ॥२१॥ हतशेषं ततः सैन्यं दृष्ट्वा चण्डं निपातितम् । मुण्डं च सुमहावीर्यं दिशो भेजे भयातुरम् ॥२२॥ शिरश्चण्डस्य काली च गृहीत्वा मुण्डमेव च । प्राह प्रचण्डाट्ट-हासमिश्रमभ्येत्य चण्डिकाम् ॥२३॥ मया तवात्रोपहृतौ चण्ड-मुण्डौ महापशू । युद्धयज्ञे स्वयं शुम्भं निशुम्भं च हनिष्यसि ।२४।

ऋषिरुवाच ॥२५॥

तावानीतौ ततो दृष्ट्वा चण्डमुण्डौ महासुरौ । उवाच कालीं कल्याणी ललितं चण्डिका वचः ॥२६॥ यस्माचण्डं च मुण्डं च गृहीत्वा त्वमुपागता । चामुण्डेति ततो लोके ख्याता देवि भविष्यसि । ॐ ॥२७॥

इति श्री मार्कण्डेयपुराणे सावर्णिके मन्वन्तरे देवीमाहात्मये चण्डमुण्डवधो नाम सप्तमोऽध्यायः ॥७॥

॥*॥ अष्टमोऽध्यायः ॥*॥

ध्यानम्

ॐ अरुणां करुणातरङ्गिताक्षीं धृतपाशाङ्कुशबाणचापहस्ताम् ।
अणिमादिभिरावृतां मयूखैरहमित्येव विभावये भवानीम् ॥

'ॐ' ऋषिरुवाच ॥१॥

चण्डे च निहते दैत्ये मुण्डे च विनिपातिते । बहुलेषु च सैन्येषु

epal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmand

Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding

च्चयितेष्वसुरेश्वरः ॥२॥ ततः कोपपराधीनचेताः शुम्भः प्रतापवान् । उद्योगं सर्वसैन्यानां दैत्यानामादिदेश ह ॥३॥ अद्य सर्वबलैर्दैत्याः षडशीतिरुदायुधाः । कम्बूनां चतुरशीतिर्निर्यान्तु स्वबलैर्वृताः ॥४॥ कोटिवीर्याणि पञ्चाशदसुराणां कुलानि वै । शतं कुलानि धौम्राणां निर्गच्छन्तु ममाज्ञया ॥५॥ कालका दौर्हृदा मौर्याः कालकेयास्तथासुराः । युद्धाय सज्जा निर्यान्तु आज्ञया त्वरिता मम ॥६॥ इत्याज्ञाप्यासुरपतिः शुम्भो भैरवशासनः । निर्जगाम महासैन्यसहस्रैर्बहुभिर्वृतः ॥७॥ आयान्तं चण्डिका दृष्ट्वा तत्सैन्यमतिभीषणम् । ज्यास्वनैः पूरयामास धरणीगगनान्तरम् ॥८॥ ततः सिंहो महानादमतीव कृतवान् नृप । घण्टास्वनेन तन्नादमम्बिका चोपबृंहयत् ॥९॥ धनुर्ज्यासिंहघण्टानां नादापूरितदिङ्मुखा । निनादैर्भीषणैः काली जिग्ये विस्तारितानना ॥१०॥ तं निनादमुपश्रुत्य दैत्यसैन्यैश्चतुर्दिशम् । देवी सिंहस्तथा काली सरोषैः परिवारिताः ॥११॥ एतस्मिन्नन्तरे भूप विनाशाय सुरद्विषाम् । भवायामरसिंहानामतिवीर्यबलान्विताः ॥१२॥ ब्रह्मेशगुहविष्णूनां तथेन्द्रस्य च शक्तयः । शरीरेभ्यो विनिष्क्रम्य तद्रूपैश्चण्डिकां ययुः ॥१३॥ यस्य देवस्य यद्रूपं यथा भूषणवाहनम् । तद्वदेव हि तच्छक्तिरसुरान् योद्धुमाययौ ॥१४॥ हंसयुक्तविमानाग्रे साक्षसूत्रकमण्डलुः । आयाता ब्रह्मणः शक्तिर्ब्रह्माणी साभिधीयते ॥१५॥ माहेश्वरी वृषारूढा त्रिशूलवरधारिणी । महाहिवलया प्राप्ता चन्द्ररेखाविभूषणा ॥१६॥ कौमारी शक्तिहस्ता च मयूरवरवाहना । योद्धुमभ्याययौ दैत्यानम्बिका गुह-

al Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathma

. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding:

रूपिणी ॥१७॥ तथैव वैष्णवी शक्तिर्गरुडोपरि संस्थिता। शंख चक्रगदाशार्ङ्गखड्गहस्ताभ्युपाययौ ॥१८॥ यज्ञवाराहमतुलं रूपं या बिभ्रतो हरेः। शक्तिः साप्याययौ तत्र वाराहीं बिभ्रती तनुम् ॥ १९ ॥ नारसिंही नृसिंहस्य बिभ्रती सदृशं वपुः। प्राप्ता तत्र सटाक्षेपक्षिप्तनक्षत्रसंहतिः ॥२०॥ वज्रहस्ता तथैवैन्द्री गजराजोपरि स्थिता। प्राप्ता सहस्रनयना यथा शक्रस्तथैवसा ।२१। ततः परिवृतस्ताभिरीशानो देवशक्तिभिः। हन्यन्तामसुराः शीघ्रं मम प्रीत्याऽऽह चण्डिकाम् ॥२२॥ ततो देवीशरीरात्तु विनिष्क्रान्तातिभीषणा। चण्डिकाशक्तिरत्युग्रा शिवाशतनिनादिनी ॥२३॥ सा चाह धूम्रजटिलमीशानमपराजिता। दूत त्वं गच्छ भगवन् पार्श्वं शुम्भनिशुम्भयोः ॥२४॥ ब्रूहि शुम्भं निशुम्भं च दानवावतिगर्वितौ। ये चान्ये दानवास्तत्र युद्धाय समुपस्थिताः ॥२५॥ त्रैलोक्यमिन्द्रो लभतां देवाः सन्तुहविर्भुजः। यूयं प्रयात पातालं यदि जीवितुमिच्छथ ॥२६॥ बलावलेपादथ चेद्भवन्तो युद्धकाङ्क्षिणः। तदागच्छत तृप्यन्तु मच्छिवाः पिशितेन वः ।२७। यतो नियुक्तो दौत्येन तया देव्या शिवः स्वयम्। शिवदूतीति लोकेऽस्मिंस्ततः सा ख्यातिमागता ॥२८॥ तेऽपि श्रुत्वा वचो देव्याः शर्वाख्यातं महासुराः। अमर्षापूरिता जग्मुर्यत्र कात्यायनी स्थिता ॥२९॥ ततः प्रथममेवाग्रे शरशक्त्यृष्टिवृष्टिभिः। ववर्षुरुद्धतामर्षास्तां देवीममरारयः ॥३०॥ सा च तान् प्रहितान् बाणाञ्छूलशक्तिपरश्वधान्। चिच्छेद लीलयाऽऽध्मातधनुर्मुक्तैर्महेषुभिः

epal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmand

Public Domain. Digitization by eGangotri.Fundin

॥३१॥ तस्याग्रतस्तथा काली शूलपातविदारितान् । खट्वाङ्ग-पोथितांश्चारीन् कुर्वती व्यचरत्तदा ॥३२॥ कमण्डलुजलाक्षेपहत-वीर्यान् हतौजसः । ब्रह्माणी चाकरोच्छत्रून् येन येन स्म धावति ॥३३॥ माहेश्वरी त्रिशूलेन तथा चक्रेण वैष्णवी । दैत्याञ्जघान कौमारी तथा शक्त्यातिकोपना ॥३४॥ ऐन्द्रीकुलिशपातेन शतशो दैत्यदानवाः । पेतुर्विदारिताः पृथ्व्यां रुधिरौघप्रवर्षिणः ॥३५॥ तुण्डप्रहारविध्वस्ता दंष्ट्राग्रक्षतवक्षसः । वाराहमूर्त्या न्यपतंश्चक्रेण च विदारिताः ॥३६॥ नखैर्विदारितांश्चान्यान् भक्षयन्ती महा-सुरान् । नारसिंही चचाराजौ नादापूर्णदिगम्बरा ॥३७॥ चण्डाट्ट-हासैरसुरा शिवदूत्यभिदूषिताः । पेतुः पृथिव्यां पतितांस्तांश्चखादाथ सा तदा ॥३८॥ इति मातृगणं क्रुद्धं मर्दयन्तं महासुरान् । दृष्ट्वा-भ्युपायैर्विविधैर्नेशुर्देवारिसैनिकाः ॥३९॥ पलायनपरान् दृष्ट्वा दैत्यान् मातृगणार्दितान् । योद्धुमभ्याययौ क्रुद्धो रक्तबीजो महा-सुरः ॥४०॥ रक्तबिन्दुर्यदा भूमौ पतत्यस्य शरीरतः । समुत्पतति मेदिन्यां तत्प्रमाणस्तदासुरः ॥४१॥ युयुधे स गदापाणिरिन्द्र-शक्त्या महासुरः । ततश्चैन्द्री स्ववज्रेण रक्तबीजमताडयत् ।४२। कुलिशेनाहतस्याशु बहु सुस्राव शोणितम् । समुत्तस्थुस्ततो योधा-स्तद्रूपास्तत्पराक्रमाः ॥४३॥ यावन्तः पतितास्तस्य शरीराद्रक्त-बिन्दवः । तावन्तः पुरुषा जातास्तद्वीर्यबलविक्रमाः ॥४४॥ ते चापि युयुधुस्तत्र पुरुषा रक्तसम्भवाः । समं मातृभिरत्युग्रशस्त्र-पातातिभीषणम् ॥४५॥ पुनश्च वज्रपातेन क्षतमस्य शिरो यदा । ववाह रक्तं पुरुषास्ततो जाताः सहस्रशः ॥४६॥ वैष्णवी समरे चैनं

al Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathma

. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding:

चक्रेणाभिजघान ह । गदया ताडयामास ऐन्द्री तमसुरेश्वरम् ।४७। वैष्णवीचक्रभिन्नस्य रुधिरस्रावसम्भवैः । सहस्रशो जगद्व्याप्तं तत्प्रमाणैर्महासुरैः ॥४८॥ शक्त्या जघान कौमारी वाराही च तथासिना । माहेश्वरी त्रिशूलेन रक्तबीजं महासुरम् ॥४९॥ स चापि गदया दैत्यः सर्वा एवाहनत् पृथक् । मातृः कोपसमाविष्टो रक्तबीजो महासुरः ॥५०॥ तस्याहतस्य बहुधा शक्तिशूलादिभिर्भुवि । पपात यो वै रक्तौघस्तेनासञ्छतशोऽसुराः ॥५१॥ तैश्चासुरासृक्सम्भूतैरसुरैः सकलं जगत् । व्याप्तमासीत्ततो देवा भयमाजग्मुरुत्तमम् ॥५२॥ तान् विषण्णान् सुरान् दृष्ट्वा चण्डिका प्राह सत्वरा । उवाच कालीं चामुण्डे विस्तीर्णं वदनं कुरु ॥५३॥ मच्छस्त्रपातसम्भूतान् रक्तबिन्दून्महासुरान् । रक्तबिन्दोः प्रतीच्छ त्वं वक्त्रेणानेन वेगिना ॥५४॥ भक्षयन्ती चर रणे तदुत्पन्नान्महासुरान् । एवमेष क्षयं दैत्यः क्षीणरक्तो गमिष्यति ॥५५॥ भक्ष्यमाणास्त्वया चोग्रा न चोत्पत्स्यन्ति चापरे । इत्युक्त्वा तां ततो देवी शूलेनाभिजघानतम् ॥५६॥ मुखेन काली जगृहे रक्तबीजस्य शोणितम् । ततोऽसावाजघानाथ गदया तत्र चण्डिकाम् ॥५७॥ न चास्या वेदनांचक्रे गदापातोऽल्पिकामपि । तस्याहतस्य देहात्तु बहु सुस्राव शोणितम् ॥५८॥ यतस्ततस्तद्वक्त्रेण चामुण्डा सम्प्रतीच्छति । मुखे समुद्गता येऽस्या रक्तपातान्महासुराः ।५९। तांश्चखादाथ चामुण्डा पपौ तस्य च शोणितम् । देवी शूलेन वज्रेण बाणैरसिभिरृष्टिभिः ॥६०॥ जघान रक्तबीजं तं चामुण्डापीतशोणितम् । स पपात महीपृष्ठे शस्त्रसङ्घसमाहतः ६१

epal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmand

Public Domain. Digitization by eGangotri.Fundin

नीरक्तश्च महीपाल रक्तबीजो महासुरः। ततस्ते हर्षमतुल-मवापुस्त्रिदशा नृप ॥६२॥ तेषां मातृगणो जातो ननर्तासृङ्-मदोद्धतः ॥ॐ॥ ६३ ॥

इति श्रीमार्कण्डेयपुराणे सावर्णिके मन्वन्तरे देवीमाहात्म्ये रक्तबीजवधो नामाष्टमोऽध्यायः ॥८॥

॥*॥ नवमोऽध्यायः ॥*॥

ध्यानम्

ॐ बन्धूककाञ्चननिभं रुचिराक्षमालां
पाशाङ्कुशौ च वरदां निजबाहुदण्डैः।
बिभ्राणमिन्दुशकलाभरणं त्रिनेत्र-
मर्धाम्बिकेशमनिशं वपुराश्रयामि ॥

'ॐ' राजोवाच ॥१॥

विचित्रमिदमाख्यातं भगवन् भवता मम। देव्याश्चरितमाहात्म्यं रक्तबीजवधाश्रितम् ॥२॥ भूयश्चेच्छाम्यहं श्रोतुं रक्तबीजे निपातिते। चकार शुम्भो यत्कर्म निशुम्भश्चातिकोपनः ॥३॥

ऋषिरुवाच ॥४॥

चकार कोपमतुलं रक्तबीजे निपातिते। शुम्भासुरो निशुम्भश्च हतेष्वन्येषु चाहवे ॥५॥ हन्यमानं महासैन्यं विलोक्यामर्ष-मुद्वहन्। अभ्यधावन्निशुम्भोऽथ मुख्ययासुरसेनया ॥६॥ तस्या-

al Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathma

. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding:

ग्रतस्तथा पृष्ठे पार्श्वयोश्च महासुराः। संदष्टौष्ठपुटाः क्रुद्धा हन्तुं देवीमुपाययुः ॥७॥ आजगाम महावीर्यः शुम्भोऽपि स्वबलैर्वृतः। निहन्तुं चण्डिकां कोपात्कृत्वा युद्धं तु मातृभिः ॥८॥ ततो युद्धमतीवासीद्देव्या शुम्भनिशुम्भयोः। शरवर्षमतीवोग्रं मेघयोरिव वर्षतोः ॥९॥ चिच्छेदास्ताञ्छरांस्ताभ्यां चण्डिका स्वशरोत्करैः। ताडयामास चाङ्गेषु शस्त्रौघैरसुरेश्वरौ ॥१०॥ निशुम्भो निशितं खड्गं चर्म चादाय सुप्रभम्। अताडयन्मूर्ध्नि सिंहं देव्या वाहनमुत्तमम् ॥११॥ ताडिते वाहने देवी क्षुरप्रेणासिमुत्तमम्। निशुम्भस्याशु चिच्छेद चर्म चाप्यष्टचन्द्रकम् ।१२। छिन्ने चर्मणि खड्गे च शक्तिं चिक्षेप सोऽसुरः। तामप्यस्य द्विधा चक्रे चक्रेणाभिमुखागताम् ॥१३॥ कोपाध्मातो निशुम्भोऽथ शूलं जग्राह दानवः। आयातं मुष्टिपातेन देवी तच्चाप्यचूर्णयत् ॥१४॥ आविध्याथ गदां सोऽपि चिक्षेप चण्डिकां प्रति। सापि देव्या त्रिशूलेन भिन्ना भस्मत्वमागता ॥१५॥ ततः परशुहस्तं तमायान्तं दैत्यपुङ्गवम्। आहत्य देवी बाणौघैरपातयत भूतले ॥१६॥ तस्मिन्निपतिते भूमौ निशुम्भे भीमविक्रमे। भ्रातर्यतीव संक्रुद्धः प्रययौ हन्तुमम्बिकाम् ॥१७॥ स रथस्थस्तथात्युच्चैर्गृहीतपरमायुधैः। भुजैरष्टाभिरतुलैर्व्याप्याशेषं बभौ नभः ॥१८॥ तमायान्तं समालोक्य देवी शङ्खमवादयत्। ज्याशब्दं चापि धनुषश्चकारातीव दुःसहम् ॥१९॥ पूरयामास ककुभो निजघण्टास्वनेन च। समस्त दैत्यसैन्यानां तेजोवधविधायिना ॥२०॥ ततः सिंहो महानादैस्त्याजितेभमहामदैः। पूरयामास गगनं गां तथैव

epal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmand

Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding

दिशो दश ॥२१॥ ततः काली समुत्पत्य गगनं क्ष्मामताडयत् । कराभ्यां तन्निनादेन प्राक्स्वनास्ते तिरोहिताः ॥२२॥ अट्टाट्टहासमशिवं शिवदूती चकार ह । तैः शब्दैरसुरास्त्रेसुः शुम्भः कोपं परं ययौ ॥२३॥ दुरात्मंस्तिष्ठ तिष्ठेति व्याजहाराम्बिका यदा । तदा जयेत्यभिहितं देवैराकाशसंस्थितैः ॥२४॥ शुम्भेनागत्य या शक्तिर्मुक्ता ज्वालातिभीषणा । आयान्ती वह्निकूटाभा सा निरस्ता महोल्कया ॥२५॥ सिंहनादेन शुम्भस्य व्याप्तं लोकत्रयान्तरम् । निर्घातनिःस्वनो घोरो जितवानवनीपते ॥२६॥ शुम्भमुक्ताञ्छरान्देवी शुम्भस्तत्प्रहिताञ्छरान् । चिच्छेद स्वशरैरुग्रैः शतशोऽथ सहस्रशः ॥२७॥ ततः सा चण्डिका क्रुद्धा शूलेनाभिजघानतम् । स तदाभिहतो भूमौ मूर्च्छितो निपपात ह ॥२८॥ ततो निशुम्भः सम्प्राप्य चेतनामात्तकार्मुकः । आजघान शरैर्देवीं कालीं केसरिणं तथा ॥२९॥ पुनश्च कृत्वा बाहूनामयुतं दनुजेश्वरः । चक्रायुधेन दितिजश्छादयामास चण्डिकाम् ॥३०॥ ततो भगवती क्रुद्धा दुर्गा दुर्गार्तिनाशिनी । चिच्छेद तानि चक्राणि स्वशरैः सायकांश्चतान् ॥३१॥ ततो निशुम्भो वेगेन गदामादाय चण्डिकाम् । अभ्यधावत वै हन्तुं दैत्यसेनासमावृतः ॥३२॥ तस्यापतत एवाशु गदां चिच्छेद चण्डिका । खड्गेन शितधारेण स च शूलं समाददे ॥३३॥ शूलहस्तं समायान्तं निशुम्भममरार्दनम् । हृदि विव्याध शूलेन वेगाविद्धेन चण्डिका ॥३४॥ भिन्नस्य तस्य शूलेन हृदयान्निःसृतोऽपरः । महाबलो महावीर्यस्तिष्ठेति पुरुषो वदन् ॥३५॥ तस्य निष्क्रामतो देवी

al Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathma

. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding:

प्रहस्य स्वनवत्ततः। शिरश्चिच्छेद खड्गेन ततोऽसावपतद्भुवि ।३६।
ततः सिंहश्चखादोग्रं दंष्ट्राक्षुण्णशिरोधरान् । असुरांस्तांस्तथा
काली शिवदूती तथापरान् ॥३७॥ कौमारीशक्तिनिर्भिन्नाः
केचिन्नेशुर्महासुराः। ब्रह्माणीमन्त्रपूतेन तोयेनान्ये निराकृताः
॥३८॥ माहेश्वरी त्रिशूलेन भिन्नाः पेतुस्तथापरे। वाराही
तुण्डघातेन केचिच्चूर्णीकृताभुवि ॥३९॥ खण्डं खण्डं च चक्रेण
वैष्णव्या दानवाः कृताः। वज्रेण चैन्द्रीहस्ताग्रविमुक्तेन तथा-
परे ॥४०॥ केचिद्विनेशुरसुराः केचिन्नष्टा महाहवात्। भक्षिता-
श्चापरे काली शिवदूतीमृगाधिपैः ॥ॐ॥४१॥

इति श्रीमार्कण्डेयपुराणे सावर्णिके मन्वन्तरे देवीमाहात्म्ये
निशुम्भवधो नाम नवमोऽध्यायः ॥९॥

॥*॥ दशमोऽध्यायः ॥*॥

॥ ध्यानम् ॥

ॐ उत्तप्तहेमरुचिरां रविचन्द्रवह्नि-
नेत्रां धनुश्शरयुताङ्कुशपाशशूलम् ।
रम्यैर्भुजैश्च दधतीं शिवशक्तिरूपां
कामेश्वरीं हृदि भजामि धृतेन्दुलेखाम् ॥

'ॐ' ऋषिरुवाच ॥ १ ॥

निशुम्भं निहतं दृष्ट्वा भ्रातरं प्राणसम्मितम्। हन्यमानं बलं चैव

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

Public Domain. Digitization by eGangotri.Fundin

शुम्भः क्रुद्धोऽब्रवीद्वचः ॥२॥ बलावलेपाद्दुष्टे त्वं मा दुर्गे गर्वमावह । अन्यासां बलमाश्रित्य युद्ध्यसे यातिमानिनि ॥३॥

देव्युवाच ॥४॥

एकैवाहं जगत्यत्र द्वितीया का ममापरा । पश्यैता दुष्ट मय्येव विशन्त्यो मद्विभूतयः ॥५॥ ततः समस्तास्ता देव्यो ब्रह्माणी प्रमुखालयम् । तस्या देव्यास्तनौ जग्मुरेकैवासीत्तदाम्बिका ॥६॥

देव्युवाच ॥७॥

अहं विभूत्या बहुभिरिह रूपैर्यदास्थिता । तत्संहृतं मयैकैव तिष्ठाम्याजौ स्थिरोभव ॥८॥

ऋषिरुवाच ॥९॥

ततः प्रववृते युद्धं देव्याः शुम्भस्य चोभयोः । पश्यतां सर्वदेवानामसुराणां च दारुणम् ॥१०॥ शरवर्षैः शितैः शस्त्रैस्तथास्त्रैश्चैव दारुणैः । तयोर्युद्धमभूद्भूयः सर्वलोकभयङ्करम् ॥११॥ दिव्यान्यस्त्राणि शतशो मुमुचे यान्यथाम्बिका । बभञ्ज तानि दैत्येन्द्रस्तत्प्रतीघातकर्तृभिः ॥१२॥ मुक्तानि तेन चास्त्राणि दिव्यानि परमेश्वरी । बभञ्ज लीलयैवोग्रहुङ्कारोच्चारणादिभिः ॥१३॥ ततः शरशतैर्देवीमाच्छादयत सोऽसुरः । सापि तत्कुपिता देवी धनुश्चिच्छेद चेषुभिः ॥१४॥ छिन्ने धनुषि दैत्येन्द्रस्तथा शक्तिमथाददे । चिच्छेद देवी चक्रेण तामप्यस्य करे स्थिताम् ॥१५॥ ततः खड्गमुपादाय शतचन्द्रं च भानुमत् । अभ्यधावत्तदा देवीं

al Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathma

. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding:

दैत्यानामधिपेश्वरः ॥१६॥ तस्यापतत एवाशु खड्गं चिच्छेद चण्डिका। धनुर्मुक्तैः शितैर्बाणैश्चर्म चार्ककरामलम् ॥१७॥ हताश्वः स तदा दैत्यश्छिन्नधन्वा विसारथिः। जग्राह मुद्गरं घोरमम्बिकानिधनोद्यतः ॥१८॥ चिच्छेदापततस्तस्य मुद्गरं निशितैः शरैः। तथापि सोऽभ्यधावत्तां मुष्टिमुद्यम्य वेगवान् ॥१९॥ स मुष्टिं पातयामास हृदये दैत्यपुङ्गवः। देव्यास्तं चापि सा देवी तलेनोरस्यताडयत् ॥२०॥ तलप्रहाराभिहतो निपपात महीतले। स दैत्यराजः सहसा पुनरेव तथोत्थितः ॥२१॥ उत्पत्य च प्रगृह्योच्चैर्देवीं गगनमास्थितः। तत्रापि सा निराधारा युयुधे तेन चण्डिका ॥२२॥ नियुद्धं खे तदा दैत्यश्चण्डिका च परस्परम्। चक्रतुः प्रथमं सिद्धमुनिविस्मयकारकम् ॥२३॥ ततो नियुद्धं सुचिरं कृत्वा तेनाम्बिका सह। उत्पात्य भ्रामयामास चिक्षेप धरणीतले ॥२४॥ स क्षिप्तो धरणीं प्राप्य मुष्टिमुद्यम्य वेगितः। अभ्यधावत दुष्टात्मा चण्डिकानिधनेच्छया ॥२५॥ तमायान्तं ततो देवी सर्वदैत्यजनेश्वरम्। जगत्यां पातयामास भित्त्वा शूलेन वक्षसि ॥२६॥ स गतासुः पपातोर्व्यां देवीशूलाग्रविक्षतः। चालयन् सकलां पृथ्वीं साब्धिद्वीपां सपर्वताम् ॥२७॥ ततः प्रसन्नमखिलं हते तस्मिन् दुरात्मनि। जगत्स्वास्थ्यमतीवाप निर्मलं चाभवन्नभः ॥२८॥ उत्पातमेघाः सोल्का ये प्रागासंस्ते शमं ययुः सरितो मार्गवाहिन्यस्तथासंस्तत्र पातिते ॥२९॥ ततो देवगणाः सर्वे हर्षनिर्भरमानसाः। बभूवुर्निहते तस्मिन् गन्धर्वा ललितं जगुः ॥३०॥ अवादयंस्तथैवान्ये ननृतुश्चाप्सरोगणाः।

epal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmand

Public Domain. Digitization by eGangotri.Fundin

ववुः पुण्यास्तथा वाताः सुप्रभोऽभूद्दिवाकरः ॥३१॥ जज्वलुश्चा-
ग्नयः शान्ताः शान्ता दिग्जनितस्वनाः ॥ॐ॥३२॥

इति श्रीमार्कण्डेयपुराणे सावर्णिके मन्वन्तरे देवीमाहात्म्ये
शुम्भवधो नाम दशमोऽध्यायः ॥१०॥

॥*॥ एकादशोऽध्यायः ॥*॥

ध्यानम्

बालरविद्युतिमिन्दुकिरीटां तुङ्गकुचां नयनत्रययुक्ताम् ।
स्मेरमुखीं वरदाङ्कुशपाशाभीतिकरां प्रभजे भुवनेशीम् ॥

'ॐ' ऋषिरुवाच ॥१॥

देव्या हते तत्र महासुरेन्द्रे सेन्द्राः सुरा वह्निपुरोगमास्ताम् ।
कात्यायनीं तुष्टुवुरिष्टलाभाद्विकाशिवक्त्राब्जविकाशिताशाः ॥२॥
देवि प्रपन्नार्तिहरे प्रसीद प्रसीद मातर्जगतोऽखिलस्य ।
प्रसीद विश्वेश्वरि पाहि विश्वं त्वमीश्वरी देवि चराचरस्य ॥३॥
आधारभूता जगतस्त्वमेका महीस्वरूपेण यतः स्थितासि ।
अपां स्वरूपस्थितया त्वयैतदाप्यायते कृत्स्नमलङ्घ्यवीर्ये ॥४॥
त्वं वैष्णवी शक्तिरनन्तवीर्या विश्वस्य बीजं परमासि माया ।
सम्मोहितं देवि समस्तमेतत् त्वं वै प्रसन्ना भुवि मुक्तिहेतुः ॥५॥
विद्याः समस्तास्तव देवि भेदाः स्त्रियः समस्ताः सकला जगत्सु ।
त्वयैकया पूरितमम्बयैतत् का ते स्तुतिः स्तव्यपरा परोक्तिः ॥६॥

al Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathma

. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding:

सर्वभूता यदा देवी स्वर्गमुक्तिप्रदायिनी । त्वं स्तुता स्तुतये का वा भवन्तु परमोक्तयः ॥७॥ सर्वस्य बुद्धिरूपेण जनस्य हृदि संस्थिते । स्वर्गापवर्गदे देवि नारायणि नमोऽस्तु ते ॥८॥ कला-काष्ठादिरूपेण परिणामप्रदायिनि । विश्वस्योपरतौ शक्ते नारा-यणि नमोऽस्तु ते ॥९॥ सर्वमङ्गलमङ्गल्ये शिवे सर्वार्थसाधिके । शरण्ये त्र्यम्बके गौरि नारायणि नमोऽस्तु ते ॥१०॥ सृष्टिस्थिति विनाशानां शक्तिभूते सनातनि । गुणाश्रये गुणमये नारायणि नमोऽस्तु ते ॥११॥ शरणागतदीनार्तपरित्राणपरायणे । सर्वस्या-र्त्तिहरे देवि नारायणि नमोस्तु ते ॥१२॥ हंसयुक्तविमानस्थे ब्रह्माणीरूपधारिणी । कौशाम्भःक्षरिके देवि नारायणि नमोऽस्तु ते ॥१३॥ त्रिशूलचन्द्राहिधरे महावृषभवाहिनी । माहेश्वरी स्वरूपेण नारायणि नमोऽस्तु ते ॥१४॥ मयूरकुक्कुटवृते महा-शक्तिधरेऽनघे । कौमारीरूपसंस्थाने नारायणि नमोऽस्तु ते ।१५ शङ्खचक्रगदाशार्ङ्गगृहीतपरमायुधे । प्रसीद वैष्णवीरूपे नारायणि नमोऽस्तु ते ॥१६॥ गृहीतोग्रमहाचक्रे दंष्ट्रोद्धृतवसुन्धरे । वराहरूपिणि शिवे नारायणि नमोऽस्तु ते ॥१७॥ नृसिंहरूपे-णोग्रेण हन्तुं दैत्यान् कृतोद्यमे । त्रैलोक्यत्राणसहिते नारायणि नमोऽस्तु ते ॥१८॥ किरीटिनि महावज्रे सहस्रनयनोज्ज्वले । वृत्रप्राणहरे चैन्द्रि नारायणि नमोऽस्तु ते ॥१९॥ शिवदूती स्वरूपेण हतदैत्यमहाबले । घोररूपे महारावे नारायणि नमोऽस्तु ते ॥२०॥ दंष्ट्राकरालवदने शिरोमालाविभूषणे । चामुण्डे मुण्डमथने नारायणि नमोऽस्तु ते ॥२१॥ लक्ष्मि लज्जे महाविद्ये

epal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmanc

n Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding

श्रद्धे पुष्टिस्वधे ध्रुवे । महारात्रि महाऽविद्ये नारायणि नमोऽस्तु ते ॥२२॥ मेधे सरस्वति वरे भूति बाभ्रवि तामसि । नियते त्वं प्रसीदेशे नारायणि नमोऽस्तु ते ॥२३॥ सर्वस्वरूपे सर्वेशे सर्वशक्ति समन्विते । भयेभ्यस्त्राहि नो देवि दुर्गे देवि नमोऽस्तु ते ॥२४॥ एतत्ते वदनं सौम्यं लोचनत्रयभूषितम् । पातु नः सर्वभीतिभ्यः कात्यायनि नमोऽस्तु ते ॥२५॥ ज्वालाकरालमत्युग्रमशेषासुरसूदनम् । त्रिशूलं पातु नो भीतेर्भद्रकालि नमोऽस्तु ते ॥२६॥ हिनस्ति दैत्यतेजांसि स्वनेनापूर्य या जगत् । सा घण्टा पातु नो देवि पापेभ्योऽनः सुतानिव ॥२७॥ असुरासृग्वसापङ्कचर्चितस्ते करोज्ज्वलः । शुभाय खड्गो भवतु चण्डिके त्वां नता वयम् ॥२८॥

रोगानशेषानपहंसि तुष्टा रुष्टा तु कामान् सकलानभीष्टान् । त्वामाश्रितानां न विपन्नराणां त्वामाश्रिता ह्याश्रयतां प्रयान्ति २९ एतत्कृतं यत्कदनं त्वयाद्य धर्मद्विषाँ देवि महासुराणाम् । रूपैरनेकैर्बहुधाऽऽत्ममूर्तिं कृत्वाम्बिके तत्प्रकरोति कान्या ॥३०॥ विद्यासु शास्त्रेषु विवेकदीपेष्वाद्येषु वाक्येषु च का त्वदन्या । ममत्वगर्तेऽतिमहान्धकारे विभ्रामयत्येतदतीव विश्वम् ॥३१॥ रक्षांसि यत्रोग्रविषाश्च नागा यत्रारयो दस्युबलानि यत्र । दावानलो यत्र तथाब्धिमध्ये तत्र स्थिता त्वं परिपासि विश्वम् ३२ विश्वेश्वरि त्वं परिपासि विश्वं विश्वात्मिका धारयसीति विश्वम् । विश्वेशवन्द्या भवती भवन्ति विश्वाश्रया ये त्वयि भक्तिनम्राः ।३३। देवि प्रसीद परिपालय नोऽरिभीतेर्नित्यं यथासुरवधादधुनैव सद्यः ।

pal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathma

. In Public Domain. Digitization by eGangotri Funding:

पापानिसर्वजगतां प्रशमं नयाशुउत्पातपाकजनिताश्च महोपसर्गान् ३४
प्रणतानां प्रसीद त्वं देवि विश्वार्तिहारिणि। त्रैलोक्यवासिना-मीड्ये लोकानां वरदा भव ॥३५॥

देव्युवाच ॥३६॥

वरदाहं सुरगणा वरं यन्मनसेच्छथ। तं वृणुध्वं प्रयच्छामि जगतामुपकारम् ॥३७॥

देवा ऊचुः ॥३८॥

सर्वाबाधाप्रशमनं त्रैलोक्यस्याखिलेश्वरि। एवमेव त्वया कार्य-मस्मद्वैरिविनाशनम् ॥३९॥

देव्युवाच ॥४०॥

वैवस्वतेऽन्तरे प्राप्ते अष्टाविंशतिमे युगे। शुम्भो निशुम्भश्चै-वान्यावुत्पत्स्येते महासुरौ ॥४१॥ नन्दगोपगृहे जाता यशोदा गर्भसम्भवा। ततस्तौ नाशयिष्यामि विन्ध्याचलनिवासिनी ॥४२॥ पुनरप्यतिरौद्रेण रूपेणपृथिवीतले। अवतीर्य हनिष्यामि वैप्र-चित्तांस्तु दानवान् ॥४३॥ भक्षयन्त्याश्च तानुग्रात् वैप्रचित्तान्म-हासुरान्। रक्ता दन्ता भविष्यन्ति दाडिमीकुसुमोपमाः ॥४४॥ ततो मां देवताः स्वर्गे मर्त्यलोके च मानवाः। स्तुवन्तो व्याह-रिष्यन्ति सततं रक्तदन्तिकाम् ॥४५॥ भूयश्च शतवार्षिक्या-मनावृष्ट्यामनम्भसि। मुनिभिः संस्तुता भूमौ संभविष्याम्य-योनिजा ॥४६॥ ततः शतेन नेत्राणां निरीक्षिष्यामि यन्मुनीन्। कीर्तयिष्यन्ति मनुजाः शताक्षीमिति मां ततः ॥४७॥ ततोऽह-मखिलं लोकमात्मदेहसमुद्भवैः। भरिष्यामि सुराः शाकैरावृष्टेः

epal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmand

n Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding

प्राणधारकैः ॥४८॥ शाकम्भरीति विख्यातिं तदा यस्याम्यहं भुवि। तत्रैव च वधिष्यामि दुर्गमाख्यं महासुरम् ॥४९॥ दुर्गा देवीति विख्यातं तन्मे नाम भविष्यति। पुनश्चाहं यदा भीमं रूपं कृत्वा हिमाचले ॥५०॥ रक्षांसि भक्षयिष्यामि मुनीनां त्राणकारणात्। तदा मां मुनयः सर्वे स्तोष्यन्त्यानम्रमूर्तयः ॥५१॥ भीमा देवीति विख्यातं तन्मे नाम भविष्यति। यदारुणाख्यस्त्रैलोक्ये महाबाधां करिष्यति ॥५२॥ तदाहं भ्रामरं रूपं कृत्वाऽसंख्येयषट्पदम्। त्रैलोक्यस्य हितार्थाय वधिष्यामि महासुरम् ॥५३॥ भ्रामरीति च मां लोकास्तदा स्तोष्यन्ति सर्वतः। इत्थं यदा यदा बाधा दानवोत्था भविष्यति ॥५४॥ तदा तदावतीर्याहं करिष्याम्यरिसंक्षयम् ॥ॐ॥५५॥

इति श्रीमार्कण्डेयपुराणे सावर्णिके मन्वन्तरे देवीमाहात्म्ये देव्याः स्तुतिर्नामैकादशोऽध्यायः ॥११॥

॥*॥ द्वादशोऽध्यायः ॥*॥

ध्यानम्

ॐ विद्युद्दामसमप्रभां मृगपतिस्कन्धस्थितां भीषणां
कन्याभिः करवालखेटविलसद्धस्ताभिरासेविताम्।
हस्तैश्चक्रगदासिखेटविशिखांश्चापं गुणं तर्जनीं
बिभ्राणामनलात्मिकां शशिधरां दुर्गां त्रिनेत्रां भजे॥

pal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathma

. In Public Domain. Digitization by eGangotri Funding:

'ॐ' देव्युवाच ॥१॥

एभिः स्तवैश्च मां नित्यं स्तोष्यते यः समाहितः। तस्याहं सकलां बाधां नाशयिष्याम्यसंशयम् ॥२॥ मधुकैटभनाशं च महिषासुरघातनम्। कीर्तयिष्यन्ति ये तद्वद् वधं शुम्भनिशुम्भयोः ॥३॥ अष्टम्यां च चतुर्दश्यां नवम्यां चैकचेतसः। श्रोष्यन्ति चैव ये भक्त्या मम माहात्म्यमुत्तमम् ॥४॥ न तेषां दुष्कृतं किञ्चिद् दुष्कृतोत्था न चापदः। भविष्यति न दारिद्र्यं न चैवेष्टवियोजनम् ॥५॥ शत्रुतो न भयं तस्य दस्युतो वा न राजतः। न शस्त्रानलतोयौघात्कदाचित्सम्भविष्यति ॥६॥ तस्मान्ममैतन्माहात्म्यं पठितव्यं समाहितैः। श्रोतव्यं च सदा भक्त्या परं स्वस्त्ययनं हि तत् ॥७॥ उपसर्गानशेषांस्तु महामारी समुद्भवान्। तथा त्रिविधमुत्पातं माहात्म्यं शमयेन्मम ॥८॥ यत्रैतत्पठ्यते सम्यङ्नित्यमायतने मम। सदा न तद्विमोक्ष्यामि सांनिध्यं तत्र मे स्थितम् ॥९॥ बलिप्रदाने पूजायामग्निकार्ये महोत्सवे। सर्वं ममैतच्चरितमुच्चार्यं श्राव्यमेव च ॥१०॥ जानताऽजानता वापि बलिपूजां तथा कृताम्। प्रतीच्छिष्याम्यहं प्रीत्या वह्निहोमं तथा कृतम् ॥११॥ शरत्काले महापूजा क्रियते या च वार्षिकी। तस्यां ममैतन्माहात्म्यं श्रुत्वा भक्तिसमन्वितः ॥१२॥ सर्वाबाधाविनिर्मुक्तो धनधान्यसुतान्वितः। मनुष्यो मत्प्रसादेन भविष्यति न संशयः ॥१३॥ श्रुत्वा ममैतन्माहात्म्यं तथा चोत्पत्तयः शुभाः। पराक्रमं च युद्धेषु जायते निर्भयः पुमान् ॥१४॥ रिपवः संक्षयं यान्ति कल्याणं

epal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmand

Public Domain. Digitization by eGangotri.Fundin

चोपपद्यते । नन्दते च कुलं पुंसां माहात्म्यं मम शृण्वताम् ॥१५॥ शान्ति कर्मणि सर्वत्र तथा दुःस्वप्नदर्शने । ग्रहपीडासु चोग्रासु माहात्म्यं शृणुयान्मम ॥१६॥ उपसर्गाः शमं यान्ति ग्रहपीडाश्च दारुणाः । दुःस्वप्नं च नृभिर्दृष्टं सुस्वप्नमुपजायते ॥१७॥ बाल-ग्रहाभिभूतानां बालानां शान्तिकारकम् । संघातभेदे च नृणां मैत्रीकरणमुत्तमम् ॥१८॥ दुर्वृत्तानामशेषाणां बलहानिकरं परम् । रक्षोभूतपिशाचानां पठनादेव नाशनम् ॥१९॥ सर्वं ममैतन्मा-हात्म्यं मम सन्निधिकारकम् । पशुपुष्पार्घ्यधूपैश्च गन्धदीपैस्तथो-त्तमैः ॥२०॥ विप्राणां भोजनैर्होमैः प्रोक्षणीयैरहर्निशम् । अन्यैश्च विविधैर्भोगैः प्रदानैर्वत्सरेण या ॥२१॥ प्रीतिर्मे क्रियते सास्मिन् सकृत्सुचरिते श्रुते । श्रुतं हरति पापानि तथाऽऽरोग्यं प्रयच्छति रक्षां करोति भूतेभ्यो जन्मनां कीर्तनं मम । युद्धेषु चरितं यन्मे दुष्टदैत्यनिबर्हणम् ॥२३॥ तस्मिञ्छ्रुते वैरिकृतं भयं पुंसां न जायते । युस्माभिः स्तुतयो याश्च याश्च ब्रह्मर्षिभिः कृताः ।२४। ब्रह्मणा च कृतास्तास्तु प्रयच्छन्ति शुभां मतिम् । अरण्ये प्रान्तरे वापि दावाग्निपरिवारितः ॥२५॥ दस्युभिर्वा वृतः शून्ये गृहीतो वापि शत्रुभिः । सिंहव्याघ्रानुयातो वा वने वा वनहस्तिभिः २६। राज्ञा क्रुद्धेन चाज्ञप्तो वध्यो बन्धगतोऽपि वा । आघूर्णितो वा वातेन स्थितः पोते महार्णवे ॥२७॥ पतत्सु चापि शस्त्रेषु संग्रामे भृशदारुणे । सर्वाबाधासु घोरासु वेदनाभ्यर्दितोऽपि वा ॥२८॥ स्मरन्ममैतच्चरितं नरो मुच्येत सङ्कटात् । मम प्रभावात्सिंहाद्या दस्यवो वैरिणस्तथा ॥२९॥ दूरादेव पलायन्ते स्मरतश्चरितंमम ।३०।

al Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathma

. In Public Domain. Digitization by eGangotri. Funding:

ऋषिरुवाच ॥ ३१ ॥

इत्युक्त्वा सा भगवती चण्डिका चण्डविक्रमा ॥३२॥ पश्यतामेव देवानां तत्रैवान्तरधीयत । तेऽपि देवा निरातङ्काः स्वाधिकारान् यथा पुरा ॥३३॥ यज्ञभागभुजः सर्वे चक्रुर्विनिहतारयः । दैत्याश्च देव्या निहते शुम्भे देवरिपौ युधि ॥३४॥ जगद्विध्वंसिनि तस्मिन् महोग्रेऽतुलविक्रमे । निशुम्भे च महावीर्ये शेषाः पातालमाययुः ॥३५॥ एवं भगवती देवी सा नित्यापि पुनः पुनः । सम्भूय कुरुते भूप जगतः परिपालनम् ॥३६॥ तयैतन्मोह्यते विश्वं सैव विश्वं प्रसूयते । सा याचिता च विज्ञानं तुष्टा ऋद्धिं प्रयच्छति ॥३७॥ व्याप्तं तयैतत्सकलं ब्रह्माण्डं मनुजेश्वर । महाकाल्या महाकाले महामारीस्वरूपया ॥३८॥ सैव काले महामारी सैव सृष्टिर्भवत्यजा । स्थितिं करोति भूतानां सैवकाले सनातनी ॥३९॥ भवकाले नृणां सैव लक्ष्मीर्वृद्धिप्रदा गृहे । सैवाभावे तथाऽलक्ष्मी-र्विनाशायोपजायते ॥४०॥ स्तुता सम्पूजिता पुष्पैर्धूपगन्धादि-भिस्तथा । ददाति वित्तं पुत्रांश्च मतिं धर्मे गतिं शुभाम् ॥४१॥

इति श्रीमार्कण्डेयपुराणे सावर्णिके मन्वन्तरे देवीमाहात्म्ये फलस्तुतिर्नाम द्वादशोऽध्यायः ॥१२॥

epal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmand

Public Domain. Digitization by eGangotri.Fundin

॥*॥ त्रयोदशोऽध्यायः ॥*॥

ध्यानम्

ॐ बालार्कमण्डलाभासां चतुर्बाहुं त्रिलोचनाम् ।
पाशाङ्कुशवराभीतीर्धारयन्तीं शिवां भजे ॥

'ॐ' ऋषिरुवाच ॥१॥

एतत्ते कथितं भूप देवीमाहात्म्यमुत्तमम् । एवंप्रभावा सा देवी ययेदं धार्यते जगत् ॥२॥ विद्या तथैव क्रियते भगवद्विष्णुमायया । तया त्वमेष वैश्यश्च तथैवान्ये विवेकिनः ॥३॥ मोह्यन्ते मोहिताश्चैव मोहमेष्यन्ति चापरे । तामुपैहि महाराज शरणं परमेश्वरीम् ॥४॥ आराधिता सैव नृणां भोगस्वर्गापवर्गदा ॥५॥

मार्कण्डेय उवाच ॥६॥

इति तस्य वचः श्रुत्वा सुरथः स नराधिपः॥ ७॥ प्रणिपत्य महाभागं तमृषिं शंसितव्रतम् । निर्विण्णोऽतिममत्वेन राज्यापहरणेन च ॥८॥ जगाम सद्यस्तपसे स च वैश्यो महामुने । संदर्शनार्थमम्बाया नदीपुलिनसंस्थितः ॥९॥ स च वैश्यस्तपस्तेपे देवीसूक्तं परं जपन् । तौ तस्मिन् पुलिने देव्याः कृत्वा मूर्तिं महीमयीम् ॥१०॥ अर्हणां चक्रतुस्तस्याः पुष्पधूपाग्नितर्पणैः । निराहारौ यताहारौ तन्मनस्कौ समाहितौ ॥११॥ ददतुस्तौ बलिं चैव निजगात्रासृगुक्षितम् । एवं समाराधयतोस्त्रिभिर्वर्षैर्यतात्मनोः ॥१२॥ परितुष्टा जगद्धात्री प्रत्यक्षं प्राह चण्डिका ॥१३॥

देव्युवाच ॥१४॥

यत्प्रार्थ्यते त्वया भूप त्वया च कुलनन्दन । मत्तस्तत्प्राप्यतां सर्वं परितुष्टा ददामि तत् ॥१५॥

al Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathma

. In Public Domain. Digitization by eGangotri. Funding:

मार्कण्डेय उवाच ॥१६॥

ततो वव्रे नृपो राज्यमविभ्रंश्यन्यजन्मनि । अत्रैव च निजं राज्यं हतशत्रुबलं बलात् ॥१७॥ सोऽपि वैश्यस्ततो ज्ञानं वव्रे निर्विण्ण-मानसः । ममेत्यहमिति प्राज्ञः सङ्गविच्युतिकारकम् ॥१८॥

देव्युवाच ॥१९॥

स्वल्पैरहोभिर्नृपते स्वं राज्यं प्राप्स्यते भवान् ॥२०॥ हत्वा रिपूनस्खलितं तव तत्र भविष्यति ॥२१॥ मृतश्च भूयः सम्प्राप्य जन्म देवाद्विवस्वतः ॥२२॥ सावर्णिको नाम मनुर्भवान् भुवि भविष्यति ॥२३॥ वैश्यवर्य त्वया यश्च वरोऽस्मत्तोऽभिवा-ञ्छितः ॥२४॥ तं प्रयच्छामि संसिद्ध्यै तव ज्ञानं भविष्यति ।२५।

मार्कण्डेय उवाच ॥२६॥

इति दत्त्वा तयोर्देवी यथाभिलषितं वरम् ॥२७॥ बभूवान्तर्हिता सद्यो भक्त्या ताभ्यामभिष्टुता । एवं देव्या वरं लब्ध्वा सुरथः क्षत्रियर्षभः ॥२८॥ सूर्याज्जन्म समासाद्य सावर्णिर्भविता मनुः ॥२९॥ एवं देव्या वरं लब्ध्वा सुरथः क्षत्रियर्षभः । सूर्याज्जन्म समासाद्य सावर्णिर्भविता मनुः ॥ क्लीं ॐ ॥

इति श्रीमार्कण्डेयपुराणे सावर्णिके मन्वन्तरे देवी-माहात्म्ये सुरथ-वैश्ययोर्वरप्रदानं नाम त्रयोदशोऽध्यायः ॥१३॥

epal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmand

Public Domain. Digitization by eGangotri.Fundin

हृदयादिन्यासः

ॐ खड्गिनी शूलिनी घोरा गदिनी चक्रिणी तथा। शंखिनी चापिनी बाणभुशुण्डीपरिघायुधा ॥ हृदयाय नमः ॥ ॐ शूलेन पाहि नो देवि पाहि खड्गेन चाम्बिके। घण्टास्वनेन नः पाहि चापज्यानिःस्वनेन च ॥ शिरसे स्वाहा ॥ ॐ प्राच्यां रक्ष प्रतीच्यां च चण्डिके रक्ष दक्षिणे। भ्रामणेनात्मशूलस्य उत्तरस्यां तथेश्वरि ॥ शिखायै वषट् ॥ ॐ सौम्यानि यानि रूपाणि त्रैलोक्ये विचरन्ति ते। यानि चात्यर्थघोराणि तै रक्षास्मांस्तथा भुवम् ॥ कवचाय हुम् ॥ ॐ खड्गशूलगदादीनि यानि चास्त्राणि तेऽम्बिके। करपल्लवसङ्गीनि तैरस्मान् रक्ष सर्वतः ॥ नेत्रत्रयाय वौषट् ॥ ॐ सर्वस्वरूपे सर्वेशे सर्वशक्तिसमन्विते। भयेभ्यस्त्राहि नो देवि दुर्गे देवि नमऽस्तु ते ॥ अस्त्राय फट् ॥

ध्यानम्

ॐ विद्युद्दामसमप्रभां मृगपतिस्कन्धस्थितां भीषणां
कन्याभिः करवालखेटविलसद्धस्ताभिरासेविताम्।
हस्तैश्चक्रगदासिखेटविशिखांश्चापं गुणं तर्जनीं
बिभ्राणामनलात्मिकां शशिधरां दुर्गां त्रिनेत्रां भजे ॥

॥*॥ ऋग्वेदोक्तं देवीसूक्तम् ॥*

ॐ अहमित्यष्टर्चस्य सूक्तस्य वागाम्भृणी ऋषिः, सच्चित्सुखात्मकः सर्वगतः परमात्मा देवता द्वितीयाया ऋचो जगती, शिष्टानां त्रिष्टुप्छन्दः, देवीमाहात्म्यपाठे विनियोगः।

al Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathma

. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding:

ध्यानम्

ॐ सिंहस्था शशिशेखरा मरकतप्रख्यैश्चतुर्भिर्भुजैः
शंखं चक्रधनुःशरांश्च दधती नेत्रैस्त्रिभि शोभिता ।
आसुक्ताङ्गदहारकङ्कणरणत्काञ्चीरणन्नूपुरा
दुर्गा दुर्गतिहारिणी भवतु नो रत्नोल्लसत्कुण्डला ॥

देवीसूक्तम्

ॐ अहं रुद्रेभिर्वसुभिश्चराम्यहमादित्यैरुत विश्वदेवैः । अहं मित्रा वरुणोभा बिभर्म्यहमिन्द्राग्नी अहमाश्विनोभा ॥१॥ अहं सोम-माहनसं बिभर्म्यहं त्वष्टारमुत पूषणं भगम् । अहं दधामि द्रविणं हविष्मते सुप्राव्ये यजमानाय सुन्वते ॥२॥ अहं राष्ट्री संगमनी वसूनां चिकितुषो प्रथमा यज्ञियानाम् । तां मा देवा व्यदधुः पुरुत्रा भूरिस्थात्रां भूर्यावेशयन्तीम् ।३॥ मया सो अन्नमत्ति यो विपश्यति यः प्राणिति यं ईं श्रृणोत्युक्तम् । अमन्तवो मां त उपक्षियन्ति श्रुधि श्रुत श्रद्धिवं ते वदामि ॥४॥ अहमेव स्वयमिदं वदामि जुष्टं देवेभिरुत मानुषेभिः । यं कामये तं तमुग्रं कृणोमि तं ब्रह्माणं तमृषिं तं सुमेधाम् ॥५॥ अहं रुद्राय धनुरा तनोमि ब्रह्मद्विष शरवेहन्तवा उ । अहं जनाय समदं कृणोम्यहं द्यावापृथिवी आ विवेश ॥६॥ अहं सुवे पितरमस्य मूर्द्धन्मम योनिरप्स्वन्तः समुद्रे । ततो वितिष्ठे भुवनानि विश्वोता-मूद्यां वर्ष्मणोप स्पृशामि ।।७।। अहमेव वात इव प्रवाम्यारभमाणा भुवनानिविश्वा । परोदिवापरएना पृथिव्यैतावती महिना संबभूव।८।

epal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmand

Public Domain. Digitization by eGangotri.Fundin

॥ अथ तन्त्रोक्तं देवीसूक्तम् ॥

नमो देव्यै महादेव्यै शिवायै सततं नमः। नमः प्रकृत्यै भद्रायै नियताः प्रणताःस्मताम् ॥१॥ रौद्रायै नमो नित्यायै गौर्यै धात्र्यै नमो नमः। ज्योत्स्नायै चेन्दुरूपिण्यै सुखायै सततं नमः ॥२॥ कल्याण्यै प्रणतां वृद्ध्यै सिद्ध्यै कुर्म्यै नमो नमः। नैऋत्यै भूभृतां लक्ष्म्यै शर्वाण्यै ते नमो नमः ॥३॥ दुर्गायै दुर्गपारायै सारायै सर्वकारिण्यै। ख्यात्यै तथैव कृष्णायै धूम्रायै सततं नमः ॥४॥ अतिसौम्यातिरौद्रायै नतास्तस्यै नमो नमः। नमो जगत्प्रतिष्ठायै देव्यै कृत्यै नमो नमः ॥५॥ या देवी सर्वभूतेषु विष्णुमायेति शब्दिता। नमस्तस्यै नमस्तस्यै नमस्तस्यै नमो नमः ॥६॥ या देवी सर्वभूतेषु चेतनेत्यभिधीयते। नमस्तस्यै नमस्तस्यै नमस्तस्यै नमो नमः ॥७॥ या देवी सर्वभूतेषु बुद्धिरूपेण संस्थिता। नमस्तस्यै नमस्तस्यै नमस्तस्यै नमो नमः ॥८॥ या देवी सर्वभूतेषु निद्रारूपेण संस्थिता। नमस्तस्यै नमस्तस्यै नमस्तस्यै नमो नमः ॥९॥ या देवी सर्वभूतेषु क्षुधारूपेण संस्थिता। नमस्तस्यै नमस्तस्यै नमस्तस्यै नमो नमः ॥१०॥ या देवी सर्वभूतेषु छायारूपेण संस्थिता। नमस्तस्यै नमस्तस्यै नमस्तस्यै नमो नमः ॥११॥ या देवी सर्वभूतेषु शक्तिरूपेण संस्थिता। नमस्तस्यै नमस्तस्यै नमस्तस्यै नमो नमः ॥१२॥ या देवी सर्वभूतेषु तृष्णारूपेण संस्थिता। नमस्तस्यै नमस्तस्यै नमस्तस्यै नमो नमः ॥१३॥ या देवी सर्वभूतेषु क्षान्तिरूपेण संस्थिता। नमस्तस्यै नमस्तस्यै नमस्तस्यै नमो नमः ॥१४॥

al Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathma

. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding:

या देवी सर्वभूतेषु जातिरूपेण संस्थिता। नमस्तस्यै नमस्तस्यै
नमस्तस्यै नमो नमः ॥१५॥ या देवी सर्वभूतेषु लज्जारूपेण
संस्थिता। नमस्तस्यै नमस्तस्यै नमस्तस्यै नमो नमः ॥१६॥
या देवी सर्वभूतेषु शान्तिरूपेण संस्थिता। नमस्तस्यै नमस्तस्यै
नमस्तस्यै नमो नमः ॥१७॥ या देवी सर्वभूतेषु श्रद्धारूपेण
संस्थिता। नमस्तस्यै नमस्तस्यै नमस्तस्यै नमो नमः ॥१८॥
या देवी सर्वभूतेषु कान्तिरूपेण संस्थिता। नमस्तस्यै नमस्तस्यै
नमस्तस्यै नमो नमः ॥१९॥ या देवी सर्वभूतेषु लक्ष्मीरूपेण
संस्थिता। नमस्तस्यै नमस्तस्यै नमस्तस्यै नमो नमः ॥२०॥
या देवी सर्वभूतेषु वृत्तिरूपेण संस्थिता। नमस्तस्यै नमस्तस्यै
नमस्तस्यै नमो नमः ॥२१॥ या देवी सर्वभूतेषु स्मृतिरूपेण
संस्थिता। नमस्तस्यै नमस्तस्यै नमस्तस्यै नमो नमः ॥२२॥
या देवी सर्वभूतेषु दयारूपेण संस्थिता। नमस्तस्यै नमस्तस्यै
नमस्तस्यै नमो नमः ॥२३॥ या देवी सर्वभूतेषु तुष्टिरूपेण
संस्थिता। नमस्तस्यै नमस्तस्यै नमस्तस्यै नमो नमः ॥२४॥
या देवी सर्वभूतेषु मातृरूपेण संस्थिता। नमस्तस्यै नमस्तस्यै
नमस्तस्यै नमो नमः ॥२५॥ या देवी सर्वभूतेषु भ्रान्तिरूपेण
संस्थिता। नमस्तस्यै नमस्तस्यै नमस्तस्यै नमो नमः ॥२६॥
इन्द्रियाणामधिष्ठात्री भूतानां चाखिलेषु या। भूतेषु सततं तस्यै
व्याप्तिदेव्यै नमो नमः ॥२७॥ चितिरूपेण या कृत्स्नमेतद्व्याप्य
स्थिता जगत्। नमस्तस्यै नमस्तस्यै नमस्तस्यै नमो नमः ॥२८॥
स्तुता सुरैः पूर्वमभीष्टसंश्रयात्तथा सुरेन्द्रेण दिनेषु सेविता।

epal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmand

Public Domain. Digitization by eGangotri.Fundin

करोतु सा नः शुभहेतुरीश्वरी शुभानि भद्राण्यभिहन्तु चापदः ।२९।
या साम्प्रतं चोद्धतदैत्यतापितैरस्माभिरीशा च सुरैर्नमस्यते।
या च स्मृता तत्क्षणमेव हन्ति नः सर्वापदो भक्तिविनम्रमूर्तिभिः ३०

॥ अथ प्राधानिकं रहस्यम् ॥

ॐ अस्य श्रीसप्तशतीरहस्यत्रयस्य नारायण ऋषिरनुष्टुप्छन्दः, महाकाली महालक्ष्मी महासरस्वत्योदेवता यथोक्तफलावाप्त्यर्थं जपे विनियोगः ।

राजोवाच

भगवन्नवतारा मे चण्डिकायास्त्वयोदिताः । एतेषां प्रकृतिं ब्रह्मन् प्रधानं वक्तुमर्हसि ॥१॥ आराध्यं यन्मया देव्याः स्वरूपं येन तद् द्विज । विधिना ब्रूहि सकलं यथावत्प्रणतस्य मे ॥२॥

ऋषिरुवाच

इदं रहस्यं परममनाख्येयं प्रचक्षते । भक्तोऽसीति न मे किञ्चित्तवावाच्यं नराधिप ॥३॥ सर्वस्याद्या महालक्ष्मीस्त्रिगुणा परमेश्वरी । लक्ष्यालक्ष्यस्वरूपा सा व्याप्य कृत्स्नं व्यवस्थिता ॥४॥ मातुलिङ्गं गदां खेटं पानपात्रं च बिभ्रती । नागं लिङ्गं च योनिं च बिभ्रती नृप मूर्द्धनि ॥५॥ तप्तकाञ्चनवर्णाभा तप्तकाञ्चनभूषणा । शून्यं तदखिलं स्वेन पूरयामास तेजसा ॥६॥ शून्यं तदखिलं लोकं विलोक्य परमेश्वरी । बभार परमं रूपं तमसा केवलेन हि ॥७॥ सा भिन्नाञ्जनसंकाशा दंष्ट्राङ्कित वरानना । विशाल लोचना नारी बभूव तनुमध्यमा ॥८॥ खड्गपात्रशिरःखेटैरलंकृत-

al Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathma

. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding:

चतुर्भुजा । कबन्धहारं शिरसा बिभ्राणा हि शिरःस्रजम् ॥९॥ सा प्रोवाच महालक्ष्मीं तामसी प्रमदोत्तमा । नाम कर्म च मे मातर्देहि तुभ्यं नमो नमः ॥१०॥ तां प्रोवाच महालक्ष्मीस्तामसीं प्रमदोत्तमाम् । ददामि तव नामानि यानि कर्माणि तानि ते ।११। महामाया महाकाली महामारी क्षुधा तृषा । निद्रा तृष्णा चैकवीरा कालरात्रिदुरत्यया ॥१२॥ इमानि तव नामानि प्रतिपाद्यानि कर्मभिः । एभिः कर्माणि ते ज्ञात्वा योऽधीते सोऽश्नुते सुखम् ॥१३॥ तामित्युक्त्वा महालक्ष्मीः स्वरूपमपरं नृप । सत्त्वाख्येनातिशुद्धेन गुणेनेन्दुप्रभं दधौ ॥१४॥ अक्षमालाङ्कुशधरा वीणापुस्तकधारिणी । सा बभूव वरा नारी नामान्यस्यै च सा ददौ ॥१५॥ महाविद्या महावाणी भारती वाक् सरस्वती । आर्या ब्राह्मी कामधेनुर्वेदगर्भा च धीश्वरी ॥१६॥ अथोवाच महालक्ष्मीर्महाकालीं सरस्वतीम् । युवां जनयतां देव्यौ मिथुने स्वानुरूपतः ॥१७॥ इत्युक्त्वा ते महालक्ष्मीः ससर्ज मिथुनं स्वयम् । हिरण्यगर्भौ रुचिरौ स्त्रीपुंसौ कमलासनौ ॥१८॥ ब्रह्मन् विधे विरिञ्चेति धातरित्याह तं नरम् । श्रीः पद्मे कमले लक्ष्मीत्याह माता च तां स्त्रियम् ॥१९॥ महाकाली भारती च मिथुने सृजतः सह । एतयोरपि रूपाणि नामानि च वदामि ते ॥२०॥ नीलकण्ठं रक्तबाहुं श्वेताङ्गं चन्द्रशेखरम् । जनयामास पुरुषं महाकाली सितां स्त्रियम् ।२१॥ स रुद्रः शंकरः स्थाणुः कपर्दी च त्रिलोचनः । त्रयी विद्या कामधेनुः सा स्त्री भाषाक्षरा स्वरा ॥२२॥ सरस्वती स्त्रियं गौरीं कृष्णं च पुरुषं नृप । जनयामा नामानि

epal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmand

n Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding

तयोरपि वदामि ते ॥२३॥ विष्णुः कृष्णो हृषीकेशो वासुदेवो जनार्दनः । उमा गौरी सती चण्डी सुन्दरी सुभगा शिवा ॥२४॥ एवं युवतयः सद्यः पुरुषत्वं प्रपेदिरे । चक्षुष्मन्तो नु पश्यन्ति नेतरेऽतद्विदो जनाः ॥२५॥ ब्रह्मणे प्रददौ पत्नीं महालक्ष्मीर्नृप त्रयीम् । रुद्राय गौरीं वरदां वासुदेवाय च श्रियम् ॥२६॥ स्वरया सह सम्भूय विरिञ्चोऽण्डमजीजनत् । बिभेद भगवान् रुद्रस्तद् गौर्या सह वीर्यवान् ॥२७॥ अण्डमध्ये प्रधानादि कार्यजात मभून्नृप । महाभूतात्मकं सर्वं जगत्स्थावरजङ्गमम् ॥२८॥ पुपोष पालयामास तल्लक्ष्म्या सह केशवः । संजहार जगत्सर्वं सह गौर्या महेश्वरः ॥२९॥ महालक्ष्मीर्महाराज सर्वसत्वमयीश्वरी । निराकारा च साकारा सैव नानाभिधानभृत् ॥३०॥ नामान्तरैर्निरूप्यैषा नाम्ना नान्येन केनचित् ॥ॐ॥३१॥

इति प्राधानिक रहस्य सम्पूर्णम्

॥ अथ वैकृतिकं रहस्यम् ॥

ऋषिरुवाच

ॐ त्रिगुणा तामसी देवी सात्त्विकी या त्रिधोदिता । सा सर्वा चण्डिका दुर्गा भद्रा भगवतीर्यते ॥१॥ योगनिद्रा हरेरुक्ता महाकाली तमोगुणा । मधुकैटभनाशार्थं यां तुष्टावाम्बुजासनः ॥२॥ दशवक्त्रा दशभुजा दशपादाञ्जनप्रभा । विशालया राजमाना त्रिंशल्लोचनमालया ॥३॥ स्फुरद्दशनदंष्ट्रा सा भीमरूपापि

pal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathma

. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding:

भूमिप । रूपसौभाग्यकान्तीनां सा प्रतिष्ठा महाश्रियः ॥४॥ खड्गबाणगदाशूलचक्रशंखभुशुण्डिभृत् । परिघं कार्मुकं शीर्ष निश्च्योतद्रुधिरं दधौ ॥५॥ एषा सा वैष्णवी माया महाकाली दुरत्यया । आराधिता वशीकुर्यात् पूजाकर्तुश्चराचरम् ॥६॥ सर्वदेव शरीरेभ्यो याऽऽविर्भूतामितप्रभा । त्रिगुणा सा महालक्ष्मीः साक्षान्महिषमर्दिनी ॥७॥ श्वेतानना नीलभुजा सुश्वेतस्तन-मण्डला । रक्तमध्या रक्तपादा नीलजङ्घोरुरुन्मदा ॥८॥ सुचित्र जघना चित्रमाल्याम्बरविभूषणा । चित्रानुलेपना कान्तिरूप-सौभाग्यशालिनी ॥९॥ अष्टादशभुजा पूज्या सा सहस्रभुजा सती । आयुधान्यत्र वक्ष्यन्ते दक्षिणाधःकरक्रमात् ॥१०॥ अक्ष-माला च कमलं बाणोऽसिः कुलिशं गदा । चक्रं त्रिशूलं परशुः शंखो घण्टा च पाशकः ॥११॥ शक्तिर्दण्डश्चर्म चापं पानपात्रं कमण्डलुः । अलंकृतभुजामेभिरायुधैः कमलासनाम् ॥१२॥ सर्वदेव-मयीमीशां महालक्ष्मीमिमां नृप । पूजयेत्सर्वलोकानां स देवानां प्रभुर्भवेत् ॥१३॥ गौरीदेहात्समुद्भूता या सत्त्वैकगुणाश्रया । साक्षात्सरस्वती प्रोक्ता शुम्भासुरनिबर्हिणी ॥१४॥ दधौ चाष्ट-भुजा बाणमुसले शूलचक्रभृत् । शंखं घण्टां लाङ्गलं च कार्मुकं वसुधाधिप ॥१५॥ एषा सम्पूजिता भक्त्या सर्वज्ञत्वं प्रयच्छति । निशुम्भमथिनी देवी शुम्भासुरनिबर्हिणी ॥१६॥ इत्युक्तानि स्वरूपाणि मूर्तीनां तव पार्थिव । उपासनं जगन्मातुः पृथगासां निशामय ॥१७॥ महालक्ष्मीर्यदा पूज्या महाकाली सरस्वती । दक्षिणोत्तरयोः पूज्ये पृष्ठतो मिथुनत्रयम् ॥१८॥ विरञ्चिः स्वरया

epal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmand

n Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding

मध्ये रुद्रो गौर्या च दक्षिणे। वामे लक्ष्म्या हृषीकेशः पुरतो देवतात्रयम् ॥१९॥ अष्टादशभुजा मध्ये वामे चास्या दशानना। दक्षिणेऽष्टभुजा लक्ष्मीर्महतीति समर्चयेत् ॥२०॥ अष्टादशभुजा चैषा यदा पूज्या नराधिप। दशानना चाष्टभुजा दक्षिणोत्तरयोस्तदा ॥ २१ ॥ दशानना यदापूज्या दक्षिणोत्तरयेस्तदा। कालमृत्यू च सम्पूज्यौ सर्वारिष्टप्रशान्तये। यदा चाष्टभुजा पूज्या शुम्भासुरनिबर्हिणी ॥ २२ ॥ नवास्याः शक्तयः पूज्यास्तदा रुद्रविनायकौ। नमो देव्या इति स्तोत्रैर्महालक्ष्मीं समर्चयेत् ॥२३॥ अवतारत्रयार्चाया स्तोत्रमन्त्रास्तदाश्रयाः। अष्टादशभुजा चैषा पूज्या महिषमर्दिनी ॥२४॥ महालक्ष्मीर्महाकाली सैव प्रोक्ता सरस्वती। ईश्वरी पुण्यपापानां सर्वलोकमहेश्वरी ॥२५॥ महिषान्तकरी येन पूजिता स जगत्प्रभुः। पूजयेज्जगतां धात्रीं चण्डिकां भक्तवत्सलाम् ॥२६॥ अर्घ्यादिभिरलंकारैर्गन्धपुष्पैस्तथाक्षतैः। धूपैर्दीपैश्च नैवेद्यैर्नानाभक्ष्यसमन्वितैः ॥२७॥ रुधिराक्तेन बलिना मांसेन सुरया नृप। (बलिमांसादिपूजेयं विप्रवर्ज्या मयेरिता॥ तेषां किल सुरामांसैर्नोक्ता पूजा नृप क्वचित्।) प्रणामाचमनीयेन चन्दनेन सुगन्धिना २८ सकर्पूरैश्च ताम्बूलैर्भक्तिभावसमन्वितैः। वामभागेऽग्रतो देव्याश्छिन्नशीर्षं महासुरम् ॥ ९॥ पूजयेन्महिषं येन प्राप्तं सायुज्यमीशया। दक्षिणे पुरतः सिंहं समग्रं धर्ममीश्वरम् ॥३०॥ वाहनं पूजयेद्देव्या धृतं येन चराचरम् ॥३१॥ ततः कृताञ्जलिर्भूत्वा स्तुवीत चरितैरिमैः। एकेन वा मध्यमेन नैकेनेतरयोरिह ॥३२॥ चरितार्धं

pal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathma

. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding:

तु न जपेज्जपञ्छिद्रमवाप्नुयात्। प्रदक्षिणानमस्कारान् कृत्वा मूर्ध्नि कृताञ्जलिः ॥३३॥ क्षमापयेज्जगद्धात्रीं मुहुर्मुहुरतन्द्रितः। प्रतिश्लोकं च जुहुयात्पायसंतिलसर्पिषास्तोत्रमन्त्रैर्वा चण्डिकायै शुभं हविः। भूयो नामपदैर्देवीं पूजयेत्सुसमाहितः।३५। प्रयतः प्राञ्जलिः प्रह्वः प्रणानारोप्य चात्मनि। सुचिरं भावयेदीशां चण्डिकां तन्मयो भवेत् ॥३६॥ एवं यः पूजयेद्भक्त्या प्रत्यहं परमेश्वरीम्। भुक्त्वा भोगान् यथाकामं देवीसायुज्यमाप्नुयात् ॥३८॥ यो न पूजयते नित्यं चण्डिकां भक्तवत्सलाम्। भस्मीकृत्यास्य पुण्यानि निर्दहेत्परमेश्वरी। यथोक्तेन विधानेन चण्डिकां सुखमाप्स्यसि३६

इति वैकृतिकं रहस्यं सम्पूर्णम्।

॥ अथ मूर्तिरहस्यम् ॥

ऋषिरुवाच

ॐ नन्दा भगवती नाम या भविष्यति नन्दजा। स्तुता सा पूजिता भक्त्या वशीकुर्याज्जगत्त्रयम् ॥१॥ कनकोत्तमकान्तिः सा सुकान्तिकनकाम्बरा। देवी कनकवर्णाभा कनकोत्तमभूषणा ॥२॥ कमलाङ्कुशपाशाब्जैरलंकृतचतुर्भुजा। इन्दिरा कमला लक्ष्मीः सा श्री रुक्माम्बुजासना ॥३॥ या रक्तदन्तिका नाम देवी प्रोक्ता मयानघ। तस्याः स्वरूपं वक्ष्यामि शृणु सर्वभया-

epal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmand

n Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding

पहम् ॥४॥ रक्ताम्बरा रक्तवर्णा रक्तसर्वाङ्गभूषणा। रक्तायुधा रक्तनेत्रा रक्तकेशातिभीषणा ॥५॥ रक्ततीक्ष्णनखा रक्तदशना रक्तदन्तिका। पतिं नारीवानुरक्ता देवी भक्तं भजेज्जनम् ॥६॥ वसुधेव विशाला सा सुमेरुयुगलस्तनी। दीर्घौ लम्बावतिस्थूलौ तावतीव मनोहरौ ॥७॥ कर्कशावतिकान्तौ तौ सर्वानन्दपयोनिधी। भक्तान् सम्पाययेद्देवी सर्वकामदुघौस्तनौ ॥८॥ खड्ग पात्र शिरः खेटैरलंकृत चतुर्भुजा। आख्याता रक्तचामुण्डा देवी योगेश्वरीति च ॥९॥ अनया व्याप्तमखिलं जगत्स्थावर-जङ्गमम्। इमां यः पूजयेद्भक्त्या स व्याप्नोति चराचरम् ॥१०॥ (भुक्त्वा भोगान् यथाकामं देवीसायुज्यमाप्नुयात्।) अधीते य इमं नित्यं रक्तदन्त्या वपुःस्तवम्। तं सा परिचरेद्देवी पतिं प्रियमिवाङ्गना ॥११॥ शाकम्भरी नीलवर्णा नीलोत्पलविलोचना। गम्भीरनाभिस्त्रिवली विभूषिततनूदरी ॥१२॥ सुकर्कशसमोत्तुङ्गवृत्तपीनघनस्तनी। मुष्टिं शिलीमुखापूर्णं कमलं कमलालया ॥१३॥ पुष्पपल्लवमूलादिफलाढ्यं शाकसञ्चयम्। काम्यानन्तरसैर्युक्तं क्षुत्तृण्मृत्युभयापहम् ॥१४॥ कार्मुकं च स्फुरत्कान्ति बिभ्रती परमेश्वरी। शाकम्भरी शताक्षी सा सैव दुर्गा प्रकीर्तिता ॥१५॥ विशोका दुष्टदमनी शमनी दुरितापदाम्। उमा गौरी सती चण्डी कालिका सा च पार्वती ॥१६॥ शाकम्भरीं स्तुवन् ध्यायञ्जपन् सम्पूजयन्नमन्। अक्षय्यमश्नुते शीघ्रमन्नपानामृतं फलम् ॥१७॥ भीमापि नीलवर्णा सा दंष्ट्रादशनभासुरा। विशाललोचना नारी वृत्तपीनपयोधरा ॥१८॥

al Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathma

. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding:

चन्द्रहासं च डमरुं शिरः पात्रं च बिभ्रती। एकवीरा कालरात्रिः सैवोक्ता कामदास्तुता ॥१९॥ तेजोमण्डलदुर्धर्षा भ्रामरी चित्रकान्तिभृत्। चित्रानुलेपना देवी चित्राभरणभूषिता ॥२०॥ चित्रभ्रमरपाणिः सा महामारीति गीयते। इत्येता मूर्तयो देव्या या ख्याता वसुधाधिप ॥२१॥ जगन्मातुश्चण्डिकायाः कीर्तिताः कामधेनवः। इदं रहस्यं परमं न वाच्यं कस्यचित्त्वया ॥२२॥ व्याख्यानं दिव्यमूर्तीनामभीष्टफलदायकम्। तस्मात् सर्वप्रयत्नेन देवीं जप निरन्तरम् ॥२३॥ सप्तजन्मार्जितैर्घोरैर्ब्रह्महत्यासमैरपि। पाठमात्रेण मन्त्राणां मुच्यते सर्वकिल्विषैः ॥२४॥ देव्या ध्यानं मया ख्यातं गुह्याद् गुह्यतरं महत्। तस्मात् सर्वप्रयत्नेन सर्वकामफलप्रदम् ॥२५॥ (एतस्यास्त्वं प्रसादेन सर्वमान्यो भविष्यसि। सर्वरूपमयी देवी सर्वं देवीमयं जगत्। अतोऽहं विश्वरूपां तां नमामि परमेश्वरीम्।)

इति मूर्तिरहस्यं सम्पूर्णम्।

॥ क्षमा-प्रार्थना ॥

अपराधसहस्राणि क्रियन्तेऽहर्निशं मया। दासोऽयमिति मां मत्वा क्षमस्व परमेश्वरि ॥१॥ आवाहनं न जानामि न जानामि विसर्जनम्। पूजां चैव न जानामि क्षम्यतां परमेश्वरि ॥२॥ मन्त्रहीनं क्रियाहीनं भक्तिहीनं सुरेश्वरि। मत्पूजितं मया देवि

epal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmand

n Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding

परिपूर्णं तदस्तु मे ॥३॥ अपराधशतं कृत्वा जगदम्बेति चोच्चरेत् । यां गतिं समवाप्नोति न तां ब्रह्मादयः सुराः ॥४॥ तापराधोऽस्मि शरणं प्राप्तस्त्वां जगदम्बिके । इदानीमनुकम्प्योऽहं यथेच्छसि तथा कुरु ॥५॥ अज्ञानाद्विस्मृतेर्भ्रान्त्या यन्न्यूनमधिकं कृतम् । तत्सर्वं क्षम्यतां देवि प्रसीद परमेश्वरि ॥६॥ कामेश्वरि जगन्मातः सच्चिदानन्दविग्रहे । गृहाणार्चामिमां प्रीत्या प्रसीद परमेश्वरि ॥७॥ गुह्यातिगुह्यगोप्त्री त्वं गृहाणास्मत्कृतं जपम् । सिद्धिर्भवतु मे देवि त्वत्प्रसादात्सुरेश्वरि ॥८॥

॥ श्रीदुर्गार्पणमस्तु ॥

——:०:——

al Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathma

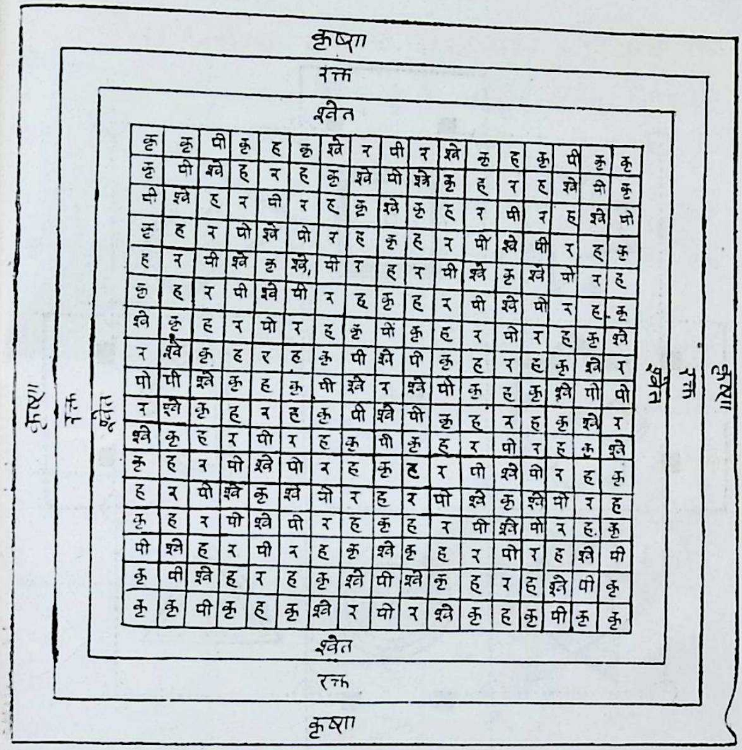

देविमूर्तिस्थापने सर्वतोभद्रमण्डलस्थाने गौरीतिलकमण्डलं ज्ञातव्यम् ॥ प्राच्योदीच्याः कृतारेखा अष्टादशैवाष्टादश पदेषु स्थापये देवान्नवाशीति शतद्वयम् ॥१॥

n Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding

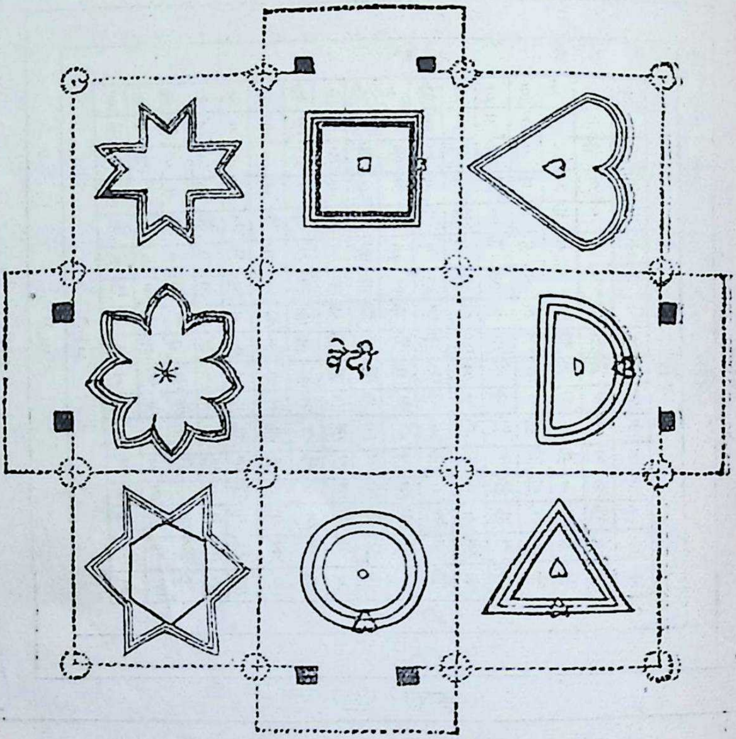

प्रथमा मेखला तत्र द्वादशांगुलविस्तृता।
चतुर्भिरंगुलैस्तस्याश्चोन्नतिश्च समन्ततः ॥
तस्याश्चोपरि वप्रःस्याच्चतुरंगुलमुन्नतः।
अष्टाभिरंगुलैः सम्यग् विस्तीर्णस्तु समन्ततः ॥
तस्योपरि पुनः कार्योवप्रः सोऽपि तृतीयकः।
चतुरंगुलविस्तीर्णश्चोन्नतश्च तथाविधः ॥

pal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathma

. In Public Domain. Digitization by eGangotri Funding.

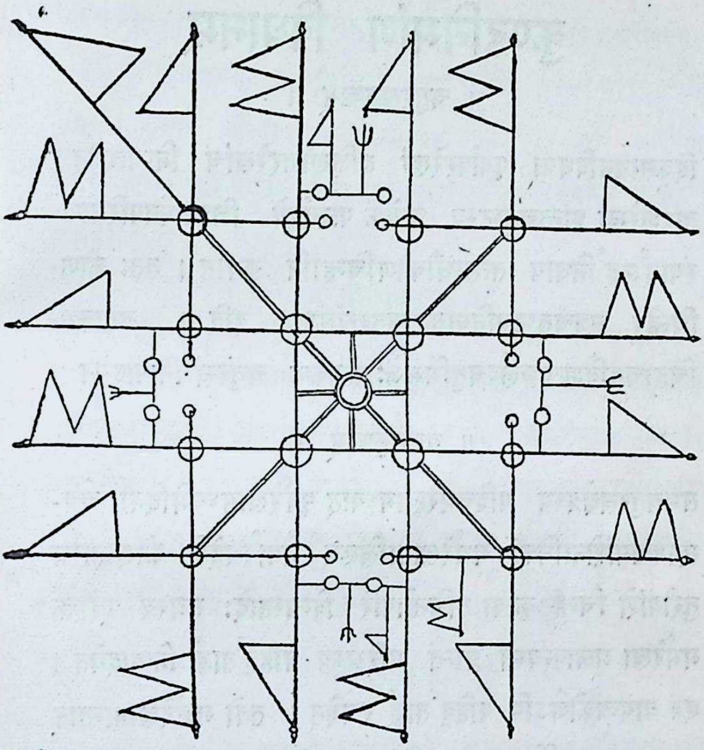

आम्रपल्लवमालाढ्यं वितानैरुपशोभितम् ।
विचित्रवस्त्रसंछन्नः घण्टाभिश्चविराजितम् ॥
सफलैः कदलीस्तम्भैः क्रमुकैर्नारिकेलकैः ।
फलैर्नानाविधिर्भोज्यैर्दर्पणैश्चामरैरपि ॥
भूषितं मण्डपं कुर्यान्नानापुष्पसुशोभितम् ।
कलशैर्घटिकाभिश्च साधारैः करकैस्तथा ॥

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

n Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding

॥*॥ श्री गणेशाय नमः ॥*॥

कुण्डनिर्माण विधानम्

॥ चतुरस्रकुण्डम् ॥

दिक्साधनविधया पूर्वापररेखां दक्षिणोत्तररेखांच निष्पादयेत्। तादृशरेखा प्रान्तचतुष्टस्य प्रत्येकं पार्श्वद्वये चिकीर्षितपरिमाण-स्यार्द्धमर्द्धं निधाय तत्सन्धौकोणचिन्हानि कुर्यात्। ततः कोण-चिन्हेषु सूत्रचतुष्टयनियातनाच्चतुरस्रंसंपद्यत इति॥ यथाकथं-चिद्वाचतुर्विंशत्यङ्गुलैश्चतुर्भिर्भुजैः समकर्णं चतुरस्रं निष्पादयेत्॥

॥ योनिकुण्डम् ॥

समचतुरस्रक्षेत्रस्य पश्चिमरेखामध्यात् पूर्वरेखामध्यभेदिनो क्षेत्र-सूत्रपञ्चमांशेनाधिकां गर्भरेखामालिख्य नैर्ऋत्यदेशे कोणसूत्रस्य तुरीयांशे चिन्हं कृत्वा तच्चिन्होपरि विन्यस्तादेः सूत्रस्य पूर्वोक्त गर्भरेखा मूलावन्यस्तं प्रान्तं परिभ्रम्य बहिर्वृत्तार्द्धं निष्पादयेत्। एवं वायव्यकोणेऽपि बहिर्वृत्तार्द्धं रचयेत्। ततो गर्भरेखाप्रान्तात् वृत्तद्वयप्रान्तस्पर्शिसूत्रद्वयं निपात्य पिप्पलपत्राकारं योनिकुण्डं विदध्यादिति॥

॥ अर्धचन्द्रकुण्डम् ॥

चतुरस्रक्षेत्रं नवधाविभज्य तत्राद्यन्तौ भागौ त्यक्त्वा अवशिष्ट सप्तभागादिमरेखागर्भदेशे सूत्रादिंनिधाय तस्यैव भागसप्तक-स्यान्तिमरेखा गर्भदेशे सूत्रान्तं निवेश्य तत्सूत्रपरिभ्रमेण प्रथम रेखातुल्यविश्रान्तप्रान्तंवृत्तार्द्धं रचयेत्। अथ प्रथमरेखाप्रान्त द्वयमपि वृत्तार्द्धं संयोज्यचन्द्रार्द्धं सम्पादयेत्॥

pal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathma

. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding:

॥ त्रिकोणकुण्डम् ॥

समचतुरस्रक्षेत्रस्य पश्चिमरेखामध्यात् पूर्वस्थितरेखामध्यभेदिनीं क्षेत्रसूत्रतृतीयभागाधिकां गर्भरेखामालिख्य पश्चिमरेखा प्रान्तद्वयमपि क्षेत्रसूत्रतृतीयभागाधिकं कुर्यात् ततो गर्भरेखा प्रान्तात् पश्चिमरेखाप्रान्तद्वयस्पर्शिसूत्रद्वयं निपात्य त्रिको[illegible] सम्पादयेत् ॥

॥ वर्तुलकुण्डम् ॥

चतुरस्रक्षेत्रे कोणात् कोणान्तरगामिनसूत्रस्यार्द्धं कोणार्द्ध शब्देनोच्यते । कोणार्द्धस्याष्टधाविभक्तस्य यावानष्टमोभागस्तावन्तंभागं चतुर्दिक्षुबहिर्विन्यसेत् । ततः क्षेत्रगर्भदेशे सूत्रादिनिधाय वहिःस्थिताष्टमभागं विन्यस्तं तस्यैव सूत्रस्य प्रान्तंसर्वतः परिभ्रम्य वृत्तकुण्डं सम्पादयेत् ॥

॥ षट्कोणकुण्डम् ॥

समचतुरस्रक्षेत्रं स्वषष्ठांशमानेनोत्तरतोदक्षिणतश्च वर्द्धयित्वातदाय चतुरस्रं सम्पादयेत् । तस्मिश्च दक्षिणोत्तरायतां गर्भरेखां रचयेत् । गर्भरेखाया मध्यविन्दोस्तदुत्तरप्रान्तविन्दोश्च समभुज त्रिकोणं पूर्वैशान्यन्तराले पश्चिमवायव्यान्तरालेच मत्स्यमुत्पाद्य सम्पादयेत् । एवमेव गर्भरेखामध्यात् तद्दक्षिणप्रान्तान्न समत्रिकोणं पूर्वाग्नेयान्तराले पश्चिमनैर्ऋत्यान्तराले च मत्स्येन सम्पादयेत् । तदित्थं चत्वारो मत्स्या द्वौ च गर्भरेखाप्रान्तावित्येतेषु षट्सुकोणविन्दुषु षण्णां योगसूत्राणां निपातनात् षट्कोणं सम्पद्यते ॥

epal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmand

n Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding

॥ पद्मकुण्डम् ॥

चतुरस्रक्षेत्रं पूर्वापरतो दक्षिणोत्तरतश्चाष्टधाविभज्य क्षेत्राद्बहिरप्यष्टमभागेन चतुर्दिक्षुवर्द्धयेत्। ततः क्षेत्रमध्यादष्टमांशत्रिज्यया कृतं प्रथमं वृत्तं कर्णिकास्यात्। पुनर्द्वितीयेन अष्टमांशेन वर्द्धितया त्रिज्यया कृतं चतुर्थं वृत्तं हलकोटयःस्युः। हलानामुपरितनो भूमितो कोटिः मध्यतश्चतुर्थेऽष्टमांशे चतुरस्रक्षेत्रं परिसमाप्यते। ततः क्षेत्राद्बहिः परिवर्द्धितेन पञ्चमेनाष्टमांशेन वर्द्धितया त्रिज्यया कृतं पञ्चमं वृत्तंदलाग्राभूमिः स्यात्। पञ्चस्वेतेषु वृत्तेषु सर्वत्र वृत्तद्वयपाल्योनन्तरं त्र्यंगुलं द्रष्टव्यम्। हस्तमात्रे क्षेत्रेक्षेत्राष्टमांशस्य त्र्यङ्गुलात्मकत्वात्॥ अथ कर्णिकां स्वविस्तारतुल्योच्चां विहाय खनेत्। तदिदमष्टदलं पद्मं संपद्यते॥

॥ अष्टकोणकुण्डम् ॥

चतुरस्रक्षेत्रस्य पूर्वापरं दक्षिणोत्तरञ्च गर्भसूत्रं त्रयोदशभागैः स्वीयद्वात्रिंशांशसहितैश्चतुर्दिक्षुवर्द्धयेत्। वर्द्धितयोःप्रान्तयोःसूत्रदाने नान्यच्चतुरस्रं वाह्यंक्रियते। ततो गर्भसूत्रं कोणसूत्रं चान्तरान्तरांतए पुनरन्यारेखा अष्टौकार्याः तासामन्तररेखाणां वाह्यचतुरस्रे यत्र योगस्तत्र तत्र चिन्हंकृत्वा तेषु योगचिन्हेषु सूत्रं निपातयेत्। ततोष्टभुजक्षेत्रं सम्पद्यते।

॥ तत्र विशेषः ॥

एतेषु कुण्डेषु खातादीनि पञ्चागनि यथायथं रचयेत्। तथा च चतुरस्रे, त्रिकोणे, वर्तुले, षट्कोणे, पद्मे, अष्टकोणे तु पश्चिम मेखलासु पूर्वमुखीं तथैव अर्द्धचन्द्रे दक्षिण मेखलासूत्तरामुखी योनिंविन्यसेत्। योनिकुण्डेतु योनिं न दापयेत्॥

pal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathma

. In Public Domain. Digitization by eGangotri Funding:

epal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmand

n Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding

दर्ता नं० — ६४०१४

NEW SHANKAR PRINTING WORKS.
2, Hari Sarkar Lane, Calcutta-7

pal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathma

. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding:

epal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmanc

n Public Domain. Digitization by eGangotri.Fundin

वाल्मीकिविद्यापीठपुस्तकालयः

प्रत्यावर्तनतिथिः

०५२।१।८

pal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathma

. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding:

यः

294.5574 Acc. No. 6414
Class No ... ... Book No SHA
Author ... शर्मा नारायण ...
Title ... श्री दुर्गा पूजन पद्धति
Due on | Borrower's Name | Returned on

294.5574 6414
2° SHA

MAHENDRA SANSKRIT UNIVERSITY
महेन्द्र संस्कृत विश्वविद्यालय
वाल्मीकि विद्यापीठ
पुस्तकालय

epal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmand

n Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding

pal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathma